सूची

काल-क्रम

जार्ज वाशिगटन १७३२-१७६६

१७३२	२२ फरवरी (११ फरवरी पुरानी पद्धति के अनुसार)	ब्रिज्स क्रीक (वेक-फील्ड), वैस्टमोरलैण्ड काऊंटी, वर्जीनिया, में जन्म।
१७४३	१२ अप्रैल	पिता-आगस्टीन वाशिगटन की मृत्यु।
१७४६	२० जुलाई	वर्जीनिया की कलपैपर काऊंटी के भू-मापक के रूप मे नियुक्ति।
१७५१	सितम्बर से मार्च, १७५२ तक	अपने सौतेले भाई, वाशिगटन के साथ बारबैडोस जाना।
१७५२	६ नवम्बर	वर्जीनिया मिलिशिया मे मेजर बनना।
१७५३	३१ अक्तूबर से १६ जनवरी, १७५४ तक	गवर्नर डिनविड्डी द्वारा (फोर्ट ले बौफ) मे फ्रासीसी सेनापति की ओर अन्तिम चेतावनी-पत्र देने के लिए भेजा जाना।
१७५४	मार्च से अक्तूबर तक	सीमान्त क्षेत्र के अभियान में मिलिशिया का लैफ्टीनैन्ट कर्नल बनाया जाना।
१७५५	अप्रैल से जुलाई तक	जैनरल ब्रैडाक का परिसहाय बनाया जाना।
	अगस्त १७५५ से दिसम्बर १७५८ तक	सीमान्त क्षेत्र की सुरक्षा का दायित्व निभाने के लिए वर्जीनिया रेजीमेन्ट में कर्नल का पद प्राप्त करना।
१७५८	जून-नवम्बर	फोर्ट ड्यूकवैने के विरुद्ध फोर्ब्ज अभियान मे भाग लिया।
	२४ जुलाई	फ्रैड्रिक काऊंटी, वर्जीनिया के बर्गेस चुने गए।
१७५६	६ जनवरी	कमीशन से त्याग-पत्र दिया। श्रीमती मर्था डैडरिज कस्टिस से विवाह किया।
१७६१	१८ मई	पुन. बर्गेस निर्वाचित हुए।
१७६२	२५ अक्तूबर	ट्रूरो पैरिश, फेयर फैक्स काऊंटी, के वैस्ट्रीमैन नियुक्त हुए।
१७६३	३ अक्तूबर	ट्रूरो पैरिश के पोहिक गिर्जाघर के वार्डन नियुक्त हुए।
१७६५	१६ जुलाई	फेयर फैक्स काऊंटी के बर्गेस चुने गए

		(पुन: १७६८, १७६६, १७७१, १७७४ मे बर्गेस चुने गए)
१७७०	अक्तूबर	फेयर फैक्स काऊंटी के शांति-न्यायाधीश नियुक्त हुए।
१७७३	मई-जून	न्यूयार्क नगर को ओर यात्रा ।
१७७४	जुलाई	फेयर-फैक्स काऊंटी मे सम्पन्न बैठक के सदस्य तथा सभा-पति इसके द्वारा कई प्रस्ताव पारित हुए।
	अगस्त	विलियम्जबर्ग मे सम्पन्न प्रथम वर्जीनिया प्रान्तीय सम्मेलन मे शामिल हुए।
	सितम्बर-अक्तूबर	फिलेडैल्फिया मे सम्पन्न प्रथम सार्वदेशिक काग्रेस मे वर्जीनिया के प्रतिनिधि के रूप मे सम्मिलित हुए।
१७७५	मई-जून	दूसरी सार्वदेशिक काग्रेस मे प्रतिनिधि के रूप मे।
	१६ जून	संयुक्त-राज्य अमेरिका की सेना के प्रधान-सेनापति चुने गए।
	३ जुलाई	बैस्टन के क्षेत्र मे सार्वदेशिक सेना की बागडोर हाथ मे ली।
१७७६	१७ मार्च	बोस्टन कब्जे मे आ गया।
	२७ अगस्त	लाग द्वीप का सग्राम।
	२८ अक्तूबर	ह्वाइट प्लेनज का युद्ध।
	२५-२६ दिसम्बर	ट्रेन्टन, न्यू जर्सी मे हैसियनो पर विजय।
१७७७	३ जनवरी	प्रिन्सटन पर विजय, मोरिस टाउन, न्यू जर्सी मे शरद् मुख्यालय।
	११ सितम्बर	ब्रैन्डीवाइन की लड़ाई।
	४ अक्तूबर	जर्मन टाऊन की लड़ाई।
	१७ अक्तूबर	साराटोगा पर बरगोयने का आत्म-समर्पण।
१७७७-७८		वैलीफोर्ज में शरद् गुजारना।
१७७८	जून	ब्रिटिश-सेना द्वारा फिलेडैल्फिया को खाली किया जाना। मोनामाऊथ की लडाई।
१७७८-७६		मिडल-ब्रुक, न्यू जर्सी, में शरद् मुख्यालय।

१७८०	जुलाई	(रोचम्ब्यू के अधीन) फ्रासीसी बेड़े व सेना का न्यूपोर्ट, रोड द्वीप, में पहुचना ।
१७८१	अगस्त-अक्तूबर	यार्कटाऊन, वर्जीनिया पर अभियान, जिसके फल-स्वरूप कार्नवालिस का हथियार डाल देना (१९ अक्तूबर) ।
१७८३	१५ मार्च	असंतुष्ट अफसरो का 'न्यूवर्ग भाषण' के प्रति उत्तर ।
	८ जून	राज्यो को परिपत्र ।
	१९ जून	सिनसिनेटी सोसाइटी का प्रमुख-प्रधान निर्वाचित होना ।
	४ दिसम्बर	फ्रासीस टेवर्न, न्यू यार्क नगर, में अफसरो से विदाई ।
	२३ दिसम्बर	एनापोलिस मे काग्रेस को कमीशन से त्यागपत्र की सूचना देना ।
१७८४	दिसम्बर	पौटोमैक नदी मे नौनाम्यता के विषय मे एनापोलिस मे सम्पन्न सम्मेलन में भाग लेना ।
१७८५	१७ मई	पोटोमैक कम्पनी का प्रधान बनना ।
१७८७	२८ मार्च	फिलेडैल्फिया मे सम्पन्न फैड्रल सम्मेलन मे वर्जीनिया के प्रतिनिधि के रूप मे शरीक होना ।
	२५ मई	सम्मेलन का अध्यक्ष चुना जाना ।
	१७ सितम्बर	संविधान के प्रारूप पर हस्ताक्षर होना: सम्मेलन का स्थगन ।
१७८८	१८ जनवरी	विलियम एण्ड मेरी कालेज का चान्सलर निर्वाचित होना ।
१७८९	४ फरवरी	सर्व-सम्मति से संयुक्त-राज्य अमेरिका का राष्ट्रपति चुना जाना ।
	३० अप्रैल	न्यूयार्क नगर के फैड्रल हाल मे राष्ट्रपति पद का आसन ग्रहण करना ।
	२५ अगस्त	माता मेरी वाशिंगटन की फैड्रिक्सबर्ग, वर्जीनिया मे मृत्यु ।
	अक्तूबर-नवम्बर	न्यू इगलैण्ड (रोड द्वीप को छोड़कर) का दौरा ।

१७९०	अगस्त	रोड द्वीप का दौरा।
	सितम्बर	संयुक्त-राज्य अमेरिका की अस्थायी राजधानी फिलेडैल्फिया मे पहुँचना।
१७९१	अप्रैल-जून	दक्षिणी-राज्यो मे घोडा-गाड़ी के द्वारा दौरा करना (१८८७ मील ६६ दिनों मे तय किए गए।)
१७९२	५ दिसम्बर	दुबारा सर्व-सम्मति से राष्ट्र-पति का चुना जाना।
१७९३	४ मार्च	फिलेडैल्फिया के 'इन्डीपैंन्डैन्स' हाल में दूसरी अवधि के लिए राष्ट्रपति पद सभालना।
	२२ अप्रैल	तटस्थता की घोषणा।
	१८ सितम्बर	संघानीय राजधानी का शिलान्यास (वाशिंगटन डी०सी०)।
	३१ दिसम्बर	थामस जैफर्सन का राज्य-मन्त्री पद से त्याग-पत्र।
१७९४	सितम्बर-अक्तूबर	पैंनसिलवेनिया के 'मद्य-सम्बन्धी विद्रोह' के विषय मे निरीक्षणार्थ दौरा।
१७९५	३१ जनवरी	अलैक्जैण्डर हैमिल्टन का वित्त-मन्त्री पद से त्याग-पत्र।
१७९६	१९ सितम्बर	फिलेडैल्फिया के 'डेली अमेरिकन एड-वर्टाईजर' मे (अंक १७, सितम्वर) विदाई भाषण का छपना।
१७९७	मार्च	कार्य-निवृत्ति तथा माऊंट-वर्नन वापस लौटना, उसके पश्चात् जान एडम्ज का राष्ट्रपति के पद पर आसीन होना।
१७९८	४ जुलाई	सयुक्त-राज्य अमेरिका की सेनाओ का लैंफटीनेन्ट जनरल और प्रधान-सेना-पति नियुक्त होना।
१७९९	१४ दिसम्बर	माऊट वर्नन मे मृत्यु। परिवार के निवास वाले भाग की महरावदार छत के नीचे १८ दिसम्बर को दफनाया जाना।
१८०२	२२ मई	मर्था वाशिंगटन की मृत्यु।

अध्याय – १

वाशिंगटन स्मारक

'लोग सुदूर भविष्यत्काल तक वर्नन की पावन भूमि पर आदर और भय की मिश्रित भावनाओं के साथ अपने पांव रखेंगे। पोटोमैक नदी के कूल पवित्र भूमि समझी जायगी।'

चार्ल्स पिकने समनेर द्वारा—
सुप्रसिद्ध वाशिंगटन के प्रति श्रद्धाजलि—
फरवरी, १८००

लोगो का कहना है कि जार्ज वाशिंगटन का स्मारक ५५५ फुट ऊँचा है—अर्थात् यह न सिर्फ कोलोन के प्रमुख गिरजाघर तथा रोम के सेंट पीटर गिरजाघर से ही ऊँचा है, बल्कि यह मिश्र देश के पिरामिडों को भी ऊंचाई में मात करता है। जार्ज वाशिंगटन का दिसम्बर, १७९९ में देहान्त हुआ। उस से पूर्व ही उनके सम्मान में अमेरिका की राजधानी का नामकरण उनके नाम पर कर दिया गया था। बाद मे उस महापुरुष का इस से भी अधिक सम्मान करने के लिये अमेरिका के प्रतिनिधि-सदन ने यह निश्चय किया कि उनका सगमरमर का 'इस ढंग का स्मारक तैयार किया जाय जो उनके सैनिक एवं राजनैतिक जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं की याद ताजा कराता रहे।' उस समय यह भी निश्चय हुआ कि

वाशिंगटन महोदय का मृत शरीर उसी पवित्र स्मारक की तह में समाधिस्थ किया जाये। किन्तु कई एक कारणों से इस संगमरमर के स्मारक का निर्माण नही हो सका। यह उल्लिखित ऊँचा मीनार, जिसे हम वाशिंगटन का स्मारक कहते है, वस्तुतः बाद की योजना थी। यह उस समय पूर्ण हुई जबकि जार्ज वाशिंगटन को विजय प्राप्त किए और देश को आजाद कराए सौ वर्ष व्यतीत हो चुके थे।

इस स्मारक की नीव मे हजारो टन कंकरीट है, किन्तु उस महापुरुष का कीर्ति-स्तम्भ होते हुए भी उनकी अस्थियाँ इस में नहीं है। वे उस स्थान की बजाए कई मीलों के अन्तर पर उनके माऊंट वर्नन घर के तहखाने मे दबी पड़ी है।

इस माऊंट वर्नन वाले घर को असख्य यात्री देखने आते है। पर्यटक इस बात की साक्षी देगे कि यह एक रमणीक स्थान है। इसकी साज-सज्जा रुचिपूर्ण तरीके से की गई है और इसे स्वच्छ तथा व्यवस्थित रीति से रखा गया है। किन्तु यह मानना होगा कि इस सफाई-धुलाई मे उसकी असलियत गायब हो गई है। अब यह घर नही, एक अजायब घर और मन्दिर जैसा लगता है। हम से यह छिपा नहीं है कि इसी मकान मे जार्ज वाशिंगटन रहे। यही वे दिवगत हुए। किन्तु इस स्थान में पहुच कर हम इस बात का अनुभव नही कर पाते कि वे सचमुच यहाँ रहे होंगे — जिस प्रकार हम स्ट्रैटफोर्ड-ऑन-एवन मे पहुच कर इस बात को महसूस करने में असमर्थ रहते है कि कभी विलियम शेक्सपीयर वहां रहे थे।

हम वाशिंगटन और शेक्सपीयर — इन दोनो महानुभावों को आज तक सही रूप में नही समझ पाए है। वे दोनों विलक्षण रूप से महान् थे, किन्तु हमारे लिये दोनों का व्यक्तित्व धुंधला रहा है। एक अमरीकी लेखक ने इनके बारे में कहा है कि इगलैड की सबसे बड़ी देन शेक्सपीयर का साहित्य है और अमेरिका की महानतम देन वाशिंगटन का चरित्र है। लोगों ने इनकी महानता को इस मापदण्ड से नापा है, किन्तु क्या यह पैमाना किसी भी मानव को नापने के लिए उपयुक्त है ?

इन दोनो महापुरुपो मे एक वास्तविक अन्तर है। जबकि हमे शेक्सपीयर के विषय मे प्राय. कुछ जानकारी उपलब्ध नही होती, वाशिगटन के वारे मे ज्ञातव्य बातो का वहुत वडा भण्डार मिलता है। हमे शेक्सपीयर का एक भावशून्य चित्र मिलता है, किन्तु वाशिगटन के चित्र इतनी बडी सख्या में प्राप्त है—और इन में से कई तो उनकी आकृति से हूबहू मिलते है—कि यदि उनकी अनुसूची ही बनाई जाय तो उसके लिये तीन सम्पूर्ण ग्रन्थ चाहिये। शेक्सपीयर द्वारा हस्तलिखित कोई चीज उपलब्ध नही। किन्तु वाशिगटन की अपने हाथों से लिखी चिट्ठियां और डायरियां छपने पर चालीस ग्रन्थो मे आ सकी है। शेक्सपीयर का उल्लेख शायद ही किसी समकालीन लेखक ने किया हो, किन्तु जहाँ तक वाशिगटन का सम्बन्ध है उनके वीसो मित्रों, जान-पहचानवालो और यदा-कदा के मुलाकातियो ने उनके बारे में अपने संस्मरण लेखनीबद्ध किये है। यह कहना गलत न होगा कि जहां शेक्सपीयर का व्यक्तित्व एक विचित्र प्रकार की अन्धकारमयी चादर में लिपटा हुआ ही लगता है, वहाँ वाशिगटन सांसारिक ख्याति के देदीप्यमान प्रकाश मे चमचमा रहे है। किन्तु जहाँ तक दृष्टि का सम्बन्ध है, परिणाम दोनों दिशाओ मे एक सा है—अर्थात् इस अन्धकार तथा चकाचौध करनेवाले प्रकाश ने दोनों के व्यक्तित्व को गोपनीय रखने में सहायता दी है।

इसमे सन्देह नही कि इन दोनों महापुरुषों के जीवनी-लेखक इस बात का प्रयत्न करते रहे कि दिनों दिन वृद्धि को प्राप्त करती हुई इन की अवैयक्तिक गाथाओं मे से वास्तविक व्यक्ति को खोज निकाला जाय। किन्तु न केवल वे इस प्रयास में असफल ही रहे, बल्कि उन पर विविध रूप से इसकी प्रतिक्रिया भी हुई। जहाँ तक शेक्सपीयर का सम्बन्ध है, उनके विषय मे कइयो ने यहाँ तक कह दिया कि वे उन नाटको के लेखक ही न थे जो उनके नाम से प्रचलित हैं। उनके स्थान मे उन्होने मार्लो अथवा बैकन को उनका असली रचयिता बतलाया। वाशिगटन के वारे मे स्वाभाविक रूप

से प्रतिक्रिया इससे भिन्न रही है। कारण, कि साक्ष्य की इतनी भारी सामग्री होते हुए कोई यह कहने का साहस कैसे कर सकता था कि उनका अस्तित्व था ही नही, अथवा उनके स्थान पर कोई और श्रेय प्राप्त करने का अधिकारी था ? किन्तु उनकी जीवन-कहानी के काल्पनिक भाग ने मानों एक स्मारक के सदृश उन्हें अपने अन्दर समाधिस्थ कर लिया है। हमारा कहने का आशय यह है कि वाशिंगटन के इस लाक्षणिक स्मारक ने वास्तविक वाशिंगटन को अपने अन्दर इस प्रकार छुपा लिया है कि हमारी आखें उसे देख नही पातीं। जैसे-जैसे साल गुजरते चले गये, नई-नई कहानियां गढ़ी जाती रहीं। परिणामतः यह स्मारक ऊंचा उठता ही चला गया—ठीक उस समाधि की तरह जिस पर राह चलते लोग पत्थर रखते चले जाते है। इन पत्थरों के छोटे-छोटे टुकड़ों के समान ही पुस्तिकाएं, भाषण, लेख और ग्रन्थ उस स्मारक के आकार को बढाते ही रहे। परन्तु यह कितनी विचित्र बात है कि इन भिन्न-भिन्न स्तर और मूल्यों की जीवन-झाँकियों, पाण्डित्यपूर्ण लेखों एवं प्रशस्तियो ने उनके जीवन के रहस्य को जितना खोजने की चेष्टा की, इस रहस्य के तार उतने ही उलझते चले गये।

वास्तव मे वाशिंगटन न केवल एक गाथा नायक ही बन गये हैं, बल्कि उनमे सम्बन्ध रखने वाली किम्वदंतियां इतनी रस-हीन हो गई है कि दम घुटने का अनुभव होने लगता है। ऐसा लगता है कि वाशिंगटन नागरिक श्लीपद के शिकार हो गये हैं। जब हम अपने सामने वाशिगटन के स्तुति ग्रन्थो की अल्मारियां भरी पाते है तो महसूस होता है कि इस मिठास को कम करने के लिये यदि थोडी सी खटाई रहती तो कितना अच्छा होता। और कैसे हैं ये स्तुति ग्रन्थ — सब के सब ऐसे कि उनसे सरस गाभीर्य, पुनरोक्ति-पूर्ण तथा अध श्रद्धात्मक ध्वनि सुनाई पड़ती है। ये सब ऐसे श्लाघात्मक ग्रन्थ हैं जिनको पढने का प्रयत्न करते समय जँभाई आना अनिवार्य है। इसीलिये इमरसन से सहमत होने का लालच हो आता है। इमरसन ने कहा था : प्रत्येक नायक अन्त में ऊबा

देने वाला व्यक्ति बन जाता है ····· ये लोग जब कंठ फाड-फाड़ कर जार्ज वाशिंगटन के गुण बखान करते है, तो जेकोबिन लोग (फ्रास के राजतत्र विरोधी क्रान्तिकारी) केवल एक वाक्य द्वारा इस पुराणपथ का खण्डन कर दिया करते है और वह है 'वाशिंगटन जाय जहन्नुम में ।' जब हम इस प्रकार की आस्थाहीनता द्वारा आराम की सांस लेते है, तब ही वाशिंगटन का एक मानव के रूप मे मूल्यांकन कर सकते है। यद्यपि स्मारक -- गाथा नायकत्व -- तब भी क्षितिज पर छाया रह सकता है और ध्यान मे आये बिना नहीं रह सकता, फिर भी हमको इसमें सन्देह है कि वाशिंगटन सम्बन्धी किम्वदतियों को उनके मानवीय गुण-दोषों से सर्वथा पृथक् किया जा सकता है। और वाशिंगटन के स्वभाव और सार्वजनिक जीवन में उनके उच्च स्थान को समझने के लिये इस तथ्य से मूल्यवान सूत्र मिल सकते है।

वाशिंगटन के स्मारक पक्ष को समझने के लिये सब से पहली बात यह याद रखनी चाहिये कि उनसे सम्बन्धित किम्वदतियो का निर्माण-कार्य उनके जीवन काल में ही आरम्भ हो गया था। कहा जाता है कि वेस्पासियन नामक रोमन सम्राट ने मरते समय कहा था कि 'खेद है कि अब मै देवत्व प्राप्त करने वाला हूँ।' इस प्रकार की हास्यजनक क्षुद्रता और विशालता के सम्मिश्रण की वाशिंगटन के सम्बन्ध में कल्पना नही की जा सकती। किन्तु फिर भी यदि जब वह माउट वर्नन मे सन् १७९९ मे मृत्यु शैय्या पर पड़े थे अपने बारे में ऐसा कहते तो अनुचित न मालूम होता। उनके नाम पर सन् १७७५ से ही बच्चों के नाम रखे जाने लगे थे और जब वह राष्ट्रपति-पद पर विराजमान थे, तभी उनके देशवासियों ने उनका मोम का पुतला तैयार कर लिया था। अपने प्रशसकों की दृष्टि में वह देव-सदृश्य वाशिंगटन थे जब कि उनके आलोचक एक दूसरे से शिकायत करते रहते थे कि वाशिंगटन को अर्ध-देवता के रूप में पेश किया जा रहा है और उनकी आलोचना करना देशद्रोह समझा जाता है। एजरा इस्टाइल्स नामक पादरी ने सन्

१७८३ में ईशोपदेश देते हुये कहा था "हे वाशिगटन ! मुझको तेरे नाम से कितना प्रेम है ! कितनी बार मैने तेरे भगवान को तुझ जैसे मानव, जाति के आभूषण को गढने के लिये साधुवाद कहा है। हमारे शत्रु भी जब तेरा नाम सुनते है तो अपने पागलपन की आग को बुझाने लगते है और अपने द्वारा की जाने वाली वदनामी की सयमहीनता को कम कर देते है, मानो उन्हें स्वय भगवान ने धिक्कारते हुये कहा हो, 'खबरदार यदि मेरे चन्दन-वदन पुत्र को हाथ लगाया या मेरे नायक की कोई हानि की।' तेरी ख्याति अरब देशों के मसालों से अधिक सुगधमय है। देवता इस सुगध को ग्रहण करके स्वर्ग मे पहुंचा देगे और इस प्रकार ब्रह्माड को सुगन्धित कर देगे।"

निस्सन्देह इस प्रकार वाशिगटन गाथा की शुरूआत हुई। उनके समकालीन लोगों मे उनके प्रति श्रद्धाजलि अर्पित करने की होड सी लगी हुई थी। समस्त प्रयास का अभिप्राय यह जाहिर करना था कि वाशिंगटन के सम्बन्ध में कोई मानवेतर बात है। हमको यह बताने की जरूरत नही कि मृत्यु के पश्चात् 'देव-सदृश्य वाशिगटन' गाथा के नायक के रूप में और भी उच्चतर स्तर पर पहुँच गये। उनका वशगत नाम एक अमरीकी राज्य, सात पर्वतों, आठ प्रपातों, दस झीलों, तेतीस जिलों, नौ कालिजो, और एक सौ इक्कीस अमरीकी नगरों और गाँवों के लिये प्रयुक्त किया जाने लगा। उनका जन्म-दिन तो चिरकाल से राष्ट्रीय छुट्टी का दिन रहा ही है। उनकी मुखाकृति सिक्कों, नोटों और डाक टिकटों पर पायी जाती है। उनका चित्र जिसमें उनको गिल्वर्ट स्टुअर्ट के चित्र 'एथेनेयम' के अनुरूप वनाया गया है और जिसमें उनको मुह वन्द किये गम्भीर मुद्रा मे दिखाया गया है, न जाने कितने कारोडोरों और दफ्तरो मे लगा दिखाई देता है। दक्षिण डकोटा राज्य में एक पर्वत के कक्ष को काट कर उनके सिर की मूर्ति तैयार की गई है जो ठोढी से चोटी तक ६० फुट की है। उनकी मूर्तिया अमेरिका मे यत्र-तत्र मिलती है – इतना

ही नही, दुनिया भर में मिलती है। उनकी मूर्ति लन्दन में है, पैरिस में है, ब्यूनस आयर्स में है, रियोडी जेनीरी में है, कराकास, बूडापैस्ट और टोकियो में है। वाशिंगटन के अलौकिक नायकत्व की सांसारिक प्रतिष्ठा के ये सब बाहरी चिन्ह है। किन्तु हमको इस स्मारक को तनिक गौर से देखना चाहिये। यदि स्मारक लक्षणा को थोडा और आगे बढा दे, तो हम देखेगे कि इसके चार पहलू हैं – ये हैं वे चार भूमिकाए जो उन्होने आने वाली पीढियों के लिये अपने जीवन-नाटक में पूरी की। ये चारों स्पष्ट रूप से एक दूसरे से भिन्न है – ऐसा नही है – इस दिव्य लोक में स्पष्ट तो कुछ भी नही है। किन्तु यदि हम उन घटनाओं के विवेचन से पहले जिनके कारण वाशिंगटन गाथाओ का सूत्रपात हुआ इनमें से प्रत्येक पर दृष्टिपात करे तो अधिक लाभ होगा। निस्सन्देह इसका यह तात्पर्य नही कि वाशिंगटन प्रशसा के पात्र थे ही नही। उनमें वास्तविक और बहुमुखी गुण थे। सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उनके वास्तविक गुणों को इतना बढा चढा कर और इतने विकृत रूप में रखा गया है कि इनमे अवास्तविकता का आभास होने लगता हैं, और उनका यह अतिरंजित चित्र ही है जो उनके नाम का उल्लेख होते ही हमारे सामने आ जाता है। वाशिंगटन निम्न चार वेशों मे या उनमे से किसी एक मे हमारे सामने प्रस्तुत हो सकते है : १. पाठ्य पुस्तकों के नायक के रूप मे, २. अपनी जनता के पिता के रूप में, ३. निस्वार्थ देश-भक्त के रूप मे और ४ क्रान्तिकारी नेता के रूप में। ये चारों हमारे नायक के भिन्न-भिन्न वेश ही हैं। पर इनमें से प्रत्येक मे वह देव-वृ द के सदस्य के रूप में हमारे सामने आते हैं और जब उनको देवत्व से परिवेष्टित किया जाता है तव दूसरों को उनके प्रतिकूल पतित नायकों के रूप में दिखाया जाता है।

पुस्तकों के नायक के रूप में

वाशिंगटन का सम्पूर्ण जीवन प्राय. १८ वी शताब्दी में बीता, किन्तु वे प्रमुखतया १६ वी शताब्दी के आंगल-भापा-भाषी संसार की

सृष्टि थे – उस संसार की जिसकी विशेषता थी व्यस्तता, उपदेश एव धार्मिकता पर जोर । इस युग में छोटी-छोटी पुस्तके, प्रारम्भिक पाठमालाये, चेम्बर महोदय के अनेक विषयक लेखो के संग्रह, मैकगफे की पाठ्य पुस्तके, सैम्युल स्माइल्ज तथा होरेशो एल्जर की कृतियां, यान्त्रिकी सस्थायें, अरस्तु के धर्मोपदेश, स्व-हस्तलिखित एल्वम, भेंट-स्वरूप दिये जाने वाले वार्षिक ग्रन्थ सर्वप्रिय थे । उस समय मडियो तथा पुलों के उद्घाटन होते थे, शिलान्यास की रस्में अदा की जाती थी, पारितोषिक एव प्रमाण-पत्र वितरित होते थे, मद्यसेवियो का तर्जन और उद्धार किया जाता था तथा दासों को स्वतन्त्र किया जाता था । डेविड रीस्मैन की सरल शव्दावलि में इसे 'अन्तर्निर्दिष्ट व्यक्तित्व' का युग कहना चाहिये । इसमे उन गुणो का समावेश आवश्यक समझा जाता है जो स्माईल्स महोदय द्वारा लिखित विनिध पुस्तकों के नामों – स्वावलम्वन, मितव्ययता, कर्तव्यपरायणता, सच्चरित्र आदि नामक पुस्तकों से प्रकट होते है, अथवा जो एमर्सन की छोटी कविता 'सच्चरित्र' मे उपादेय समझे गए है । इस कविता मे एमर्सन कहते है .—

तारे डूबे, किन्तु उसकी आशा नहीं डूबी ।
तारे निकले, उसकी निष्ठा उससे पूर्व आविर्भूत हुई ।

तारामण्डल से भरे विस्तीर्ण आकाश पर उसने गहरी और चिरकाल तक दृष्टि गाड़ी ।

उसका तप और त्याग उसकी निष्ठा के अनुरूप थे । उस समय की स्तव्धता · · ।

जार्ज वाशिंगटन के विषय मे जो भी सामान्य धारणा है उसमें चरित्र का प्रमुख स्थान है, जैसा कि हमने ऊपर उनको शेक्सपीयर की तुलना मे देखा है । लार्ड ब्राहम भी यही सम्मति रखते थे । वे कहते है :– 'मनुष्य जाति की प्रगति की कसौटी इस वात में होगी कि वह वाशिंगटन के उच्च चरित्र की कहा तक कदर करती है ।'

पार्सन वीम्स एक साहसी लेखक था । विक्टोरिया युग से पहले

होते हुए भी उसकी विचारधारा विक्टोरिया कालीन थी। वह सर्वप्रथम व्यक्ति था जिसने वाशिगटन को उन्नीसवी शताब्दी के आदर्शो के अनुरूप प्रस्तुत किया। सन् १८०० मे बीम्स ने अपने प्रकाशक को विस्तार से वताया कि वाशिगटन महोदय की जीवनी लिखने का उसका क्या प्रयोजन है। अपने पत्र मे उसने लिखा है कि उसका उद्देश्य उस महापुरुष के 'इन महान् गुणो को (ससार के सामने) लाना है – १ – उनकी ईश्वर के प्रति श्रद्धा, अथवा उनके धार्मिक सिद्धान्त, २ – उनकी देश भक्ति, ३ – उनकी उदारता, ४– उनका अध्यवसाय, ५– उन की मदिरादि से अरुचि तथा धीर-गम्भीर स्वभाव, ६– उनकी न्याय-प्रियता, इत्यादि।' सक्षेप में यह पाठ्य-पुस्तकों के नायक के गुणों की रूपरेखा है।

यद्यपि बीम्स स्वयं इतने उदात्त विचारों का नही था जितना कि उसके इस कथन से प्रकट होता है, तथापि इसमे सन्देह नही कि वाशिगटन के लिये उसके हृदय में उतना ही आदर और भक्ति थी जितनी कि किसी भी अमरीकी को उनके लिये हो सकती है। बीम्स ने उस प्रकाशक से यह बात भी कही कि इस तजवीज से उन्हे 'रुपया और लोकप्रियता' दोनों प्राप्त हो सकते हैं। अत. वह घटनाओं को गढने से नही चूका। न ही उसने अपने आप को माऊंट वर्नन के अस्तित्वहीन गिरजाघर का 'पादरी' कहलाने से सकोच किया। उसकी इस छोटी सी पुस्तिका ने कपोल-कल्पित कहानियो के समावेश के कारण धीरे-धीरे एक ग्रन्थ का आकार धारण कर लिया। उदाहरणार्थ उसने एक कहानी वाशिगटन के चेरी के पेड काटने के बारे में लिखी, जिसमे वाशिगटन के मुख से कहलाया गया – 'पिता जी, मै झूठ नही बोल सकता। मैंने ही इस पेड़ को अपनी कुल्हाडी से काटा था।' इस पर वाशिगटन के पिता आनन्द-विभोर हो कर बोले – 'मेरे बेटे! मेरी आँखो के तारे! मेरी गोदी में आ जाओ।' एक और कहानी मे दिखाया गया है कि वाशिगटन अपने विद्यालय के छात्रों को परस्पर लडने के कारण झिड़क रहे है।

यह लिपिवद्ध घटना बाद में धीरे – धीरे उनके जीवन सम्बन्धी अभिलेखो से निकाल दी गई, क्योकि आनेवाली पीढियो ने इसमे दम्भ की बू पाई। इस कहानी मे वाशिंगटन अपने विद्यालय के साथियों से कहते है – 'साथियो! आपके इस बुरे आचरण को मैं कभी पसन्द नही कर सकता। दासों और कुत्तो मे भी आपसी झगडा और लड़ाई बुरी मानी जाती है, फिर विद्यालय के बालकों में इस प्रकार का घृणित आचरण पाया जाय तो यह बहुत बदनामी की बात है। आप बालको को आपस मे भाई-भाई की तरह रहना चाहिये।'

बालक वाशिंगटन के बल का परिचय देने के लिये एक घटना मे बताया गया है कि उसने रैपाहैनौक नदी के दूसरे तीर पर पत्थर का टुकडा फेंका। उसकी प्रशंसा करते हुए ग्रन्थ मे कहा गया – 'आधुनिक समय मे ऐसा आदमी मिलना कठिन है जो इतनी दूर पत्थर फेंक सके।' ब्रैडाक की हार मे सौभाग्य से ही वाशिंगटन की प्राणरक्षा हुई थी। इस बारे मे एक ऐसे प्रसिद्ध इण्डियन योद्धा की कहानी कही जाती है जिसको उस निर्मम, दुखान्त संग्राम में प्रमुख भाग लेने वाला दिखाया गया। वह प्राय सौगन्ध उठा कर कहा करता था – 'वाशिंगटन गोली से मरने के लिए पैदा ही नही हुए थे। मैंने इस लडाई में १७ गोलियां उन पर चलाईं, पर निशाना लगने पर भी मैं उन्हे धराशायी नही कर सका।' एक और घटना का यो वर्णन किया गया है – 'जहा तक मुझे याद है, पोटस नाम के एक क्वैकर ने, वाशिंगटन महोदय को फोर्ज घाटी में प्रार्थना करते पाया।' जैसे ही वह उस स्थान मे पहुचा, वह यह देख कर अचम्भे मे आ गया कि अमेरिका की सेनाओं के प्रधान-सेनापति घुटनों के बल प्रार्थना मे तल्लीन है।' इसी प्रकार की अनेक कहानियां उपरोक्त पुस्तक के पृष्ठों मे मिलती है।

होरेशो एल्जर के समान ही वीम्स ने इस सारी पुस्तक मे निरन्तर रूप से यह हृदयाकित करने की चेष्टा की कि किस प्रकार

कर्त्तव्य-परायणता और लाभ – यह दोनो साथ-साथ चलते है। जार्ज वाशिंगटन ने अपने बड़े भाई के साथ सदैव सज्जनता का व्यवहार किया। इसके परिणामस्वरूप उनके बड़े भाई की मृत्यु के बाद सारी जायदाद उन्हे उत्तराधिकार मे मिली, क्योकि सिवाए एक बीमार शिशु के उनके भाई की कोई और सन्तान नही थी। इसी प्रकार आदर्श शिष्ट व्यवहार के कारण ही वाद मे कस्टिस नामक विधवा ने, जिसकी अपनी सम्पत्ति एक लाख डालर के करीब थी, उनके साथ विवाह करना मजूर किया।

इस प्रकार के धर्मोपदेश अपना प्रभाव डाले बिना कैसे रह सकते थे? १८२५ तक वीम्स द्वारा लिखित जीवनी के चालीस सस्करण निकले और वाद में चालीस सस्करण और छपने वाले थे। चेरी पेड वाली कथा जो अन्त मे आकर मैक्गफे की अत्यन्त लोकप्रिय पाठमाला मे ले ली गई, पाठ्य-पुस्तक परम्परा मे विशेष रूप से सर्वप्रिय हुई। सन् १८६३ मे मौरीसन हैडी ने वाशिगटन की अल्पकाय जीवनी छपवाई जिसका नाम था – 'किसान का लडका किस प्रकार प्रधान-सेनापति बना'। इसमें अनेक नई वाते आविष्कृत करके जोड़ दी गईं। चेरी पेड वाली कहानी मे हैडी ने अनेक नई बातें जोड़ दी। उसने वतलाया कि पेड़ काटने का आरोप एक नीग्रो बालक पर लगाया गया था और वाशिगटन ने स्वय अपना अपराध स्वीकार करके उसकी निर्दयतापूर्वक बेतो से दी जाने वाली सजा से रक्षा की। वास्तव मे उस धर्म-निरपेक्ष सत-चरित्र काल में वाशिगटन का सम्बन्ध चेरी पेड से उसी प्रकार जोडा गया जिस प्रकार धार्मिक क्षेत्र में सेंट लारेस और सेट कैथरीन का सम्बन्ध क्रमश: छड लगे ढाचे तथा पहिये से जोडा जाता है – या यू कहिये कि जिस प्रकार न्यूटन और विलियम टैल्ल का सेबो के साथ, वाट का केतली के साथ, ब्रूस का मकड़ी के साथ, कोलम्बस का अण्डे के साथ, एलफ्रेड का रोटियो के साथ और फिलिप सिडनी का पानी की बोतल के साथ।

जहां तक वाशिगटन महोदय का सम्बन्ध है, उनके साथ केवल

एक घटना ही नही जोडी गई, किन्तु अनेक अलौकिक बाते उनके समस्त जीवन के साथ जोड दी गईं। क्रान्ति-सम्बन्धी लड़ाई के दौरान मे जो उन्होंने हिसाब-किताब रखा, उसका ठीक-ठीक प्रतिरूप मुद्रित किया गया — यह प्रमाणित करने के लिये कि वे अपने राष्ट्र के लिये कितने मितव्ययी थे और उनमे कार्य-कुशलता कितनी उच्च-कोटि की थी। वीम्स तथा अन्य लेखकों द्वारा उनके धार्मिक विचार उन्नीसवी शताब्दी की धाराओं के साचे में ढाले गये। एक कहानी है कि वह एगलीकन चर्च छोड़ कर प्रैसबाई-टेरियन समुदाय मे शामिल हो गये। एक और कथा के अनुसार वे गुप्त रूप से वैप्टिस्टों मे शामिल हो गये। हमे इस बात पर बल देने की आवश्यकता प्रतीत नही होती कि इस प्रकार की समस्त धारणाए, चाहे वे वीम्स के उपजाऊ मस्तिष्क से निकली हो या किसी अन्य स्रोत से, विवरण के विचार से असत्य थी तथा अधिक व्यापक दृष्टिकोण से इतिहास के प्रतिकूल थी। वीम्स और उसके अनुगामी लेखकों ने वाशिगटन की जीवनी, अपना ज्ञान व पाण्डित्य प्रदर्शन करने के ख्याल से नहीं लिखी थी। उनका बिल्कुल जाना-बूझा अभिप्राय यह था कि वाशिगटन के जीवन से लोगो को शिक्षा मिले और इसीलिए कथा को खूब सजाया जाय। यही कारण है कि लोग वीम्स की प्रशसा मे, जिसे वीम्स की पुस्तक के मुखपृष्ठ पर उद्धृत किया गया है, हैनरी ली के साथ अक्षरश सहमत है। प्रशंसा करते हुए ली ने कहा है — 'उस (अर्थात् वीम्स) से अधिक कौन प्रशंसा के योग्य होगा ? उसका पुस्तक लिखने का मुख्य उद्देश्य तरुणो के अन्दर उन श्रेष्ठ गुणों के लिये गहरा अनुराग पैदा करना है, जिन्हें साकार रूप से उसने ऐसी विभूति मे दिखाए है, जिसे सब राज्य सर्वाधिक प्यार करते है।' वाशिगटन की चित्रमयी जीवनी, जो १८४५ मे छपी, के लेखक होरेशो हैस्टिंग्स वैल्ड ने कहा है — "शिशु जब पहले पहल बोलना सीखे, तो पहला शब्द 'माता' होना चाहिये, दूसरा, 'पिता' और तीसरा, 'वाशिंगटन।'

हम यह महसूस करते है कि बीम्स तथा अन्य लेखक जिन्होंने आचार-धर्म के सम्बन्ध मे शिक्षाएँ देने की बात सोची, इस बात में किसी हद तक दोषी है कि उन्होने वाशिगटन की सारी धारणा को धुधला कर दिया है। हा, उनके बचाव मे हम यह जरूर कह सकते है कि वे वाशिगटन को मिट्टी के यन्त्र मे परिवर्तित नहीं करना चाहते थे। वे भली भाति जानते थे कि लोग इस ओर प्रवृत्त हो सकते है। बीम्स ने लिखा — 'वाशिंगटन की प्रशसा में की गई बहुत सी सुन्दर वक्तृताओ मे उस महापुरुप के बारे मे आप बादलों के नीचे पृथ्वी तल पर कुछ भी नही देखते। — केवल एक वीर पुरुष और अर्ध-ईश्वर के रूप में वे दृष्टिगोचर होते हैं। — वाशिगटन जो सभा मे सूर्य की न्यायी चमकते थे और समर-भूमि मे तूफान की तरह दिखाई देते थे।' बीम्स उन्हे मानवीय स्वरूप देना चाहता था। वह यह भी चाहता था कि उन्हे 'कापीबुक' (पाठ्य-पुस्तकीय) चरित्र के रूप मे भी पेश किया जाय। निश्चय ही बीम्स की प्रवाहमयी कहानी मे रसहीन कोई चीज नही दीखती। इस सरसता के कारण ही एक शताब्दी तक वह सारे राष्ट्र पर एक नकली वाशिगटन लाद सका।

इसमें शक नहीं कि बीम्स इस वात का दावा कर सकता है कि यदि लोग इसे असत्य समझते, तो वह ऐसा करने मे असमर्थ रहता। वाशिगटन के कुल का आदर्श-वाक्य था —'परिणाम से कार्य के अच्छे-बुरे का अनुमान होता है।' उसे अपने लिये ठीक-ठीक जंचने के लिए तथा उसकी कल्पित कहानियों के प्रमाणीकरण के लिए बीम्स ने उसे इस प्रकार गलत तरीके से अनूदित किया— 'साध्य स्वत· साधन के औचित्य को सिद्ध करता है।' उसने वाशिगटन का चित्रण ऐसा मानव मान कर किया, जिसके अन्दर न सिर्फ कोई दोप ही नही पाया जाता, वल्कि जिसमे उन्नीसवी शताब्दी की धारणा के अनुसार — जैसे साहस से लेकर समय पर उपस्थित होने तक, विनयशीलता से लेकर मितव्ययता तक समस्त मानवोचित गुण मिलते है, जिनके कारण सफलता मनुष्य के चरण चूमती है।

अपने राष्ट्र के पिता के रूप में

यह ठीक है कि अनेक लोगों की नजरों में वाशिंगटन भूमितल से ऊपर बादलों मे ही वास करते थे। हैनरी ली के उन शब्दों को अनेक बार दोहराया जाता है कि 'वाशिंगटन लड़ाई के समय सब से आगे दिखाई देते थे, शान्तिकाल मे वे अग्रणी हुआ करते थे और अपने देशवासियो के हृदय मे भी उनका स्थान सर्वप्रथम ही हुआ करता था।' वे केवल कालक्रम के अनुसार ही नही, बल्कि भावनाओ के विचार से भी सर्वप्रथम थे। वे अमेरिका के सर्वप्रथम प्रधान सेनापति रहे और इस देश के पहले ही राष्ट्रपति थे। वे अपने देश के प्रमुख वीर पुरुष थे, जो हर नये देश की आवश्यक सृष्टि हुआ करती है। अत. जब 'जार्ज गुइल्फ' (अर्थात् जैफसेन) के बदले जार्ज वाशिंगटन को स्थान मिला, तो ऐसा होना स्वाभाविक ही था। न्यूयार्क मे भी इसी ढग का प्रतिस्थापन हुआ था जबकि जार्ज ३ की विनष्ट पत्थर की मूर्ति के निचले भाग पर वाशिंगटन की मूर्ति खड़ी की गई। इस कारण योरूप-निवासी यात्री पाल स्विनिन ने जार्ज से इतना पहले सन् १८१५ मे टिप्पणी करते हुए लिखा था—'हर अमेरिका-निवासी यह अपना पुनीत कर्तव्य समझता है कि अपने घर में वाशिंगटन का चित्र अथवा मूर्ति रखे, जिस प्रकार कि हम भगवद्भक्त सन्तो की प्रतिमूर्तियाँ बड़े उत्साह से अपने यहाँ रखते हैं। अमरीकियो की राय मे वाशिंगटन जहाँ उनके राष्ट्र निर्माता थे, वहा उनकी मान-मर्यादा के भी रक्षक थे। वे देश-भक्त महात्मा तो थे ही, साथ ही साथ वे धार्मिक आदर्शों और विश्वासो के प्रतिरक्षक भी थे। इस प्रकार वे विचित्र रूप से मानों चार्लमैगने, सैंट जोन और नेपोलियन बोनापार्ट — तीनो के सम्मिश्रित प्रतिरूप थे।

वाशिंगटन के बाद केवल अब्राहम लिंकन ही ऐसे महापुरुष हुए जिन्होने राष्ट्र मे उनके सदृश यश-कीर्ति प्राप्त की। कई पहलुओ से आज लिंकन को वाशिंगटन से बढ कर सुयोग्य वीर-पुरुष माना जाता है। राष्ट्र के अभिलेखों मे लिंकन का दूसरा उद्घाटन-

-सम्बन्धी भाषण वाशिंगटन के विदाई-भाषण की तुलना मे, पुरानी 'बाईबल' के मुकाबिले मे नयी 'बाईबल' लगता है. तथापि लिंकन आज भी ऐसे मानव के रूप मे माने जाते है जो कालचक्र के परि-णामो से मुक्त न थे और उन पर समय के छीटे भी पड़े। कोई भी लिंकन को ब्रूमिडी के 'वाशिंगटन गुण-कीर्तन' सरीखे रंगीन-चित्र मे पाने की कल्पना नही कर सकता। ब्रूमिडी का यह चित्र संसद् भवन की गुंबद पर है जिसके एक ओर स्वतन्त्रता देवी विराजमान है और दूसरी ओर विजय। न ही कोई इस बात की कल्पना कर सकता है कि यदि कोई लिंकन के विषय मे गल्पात्मक विवरण पेश करे, तो कोई अमरीकी समालोचक उस पर किसी किस्म की आपत्ति उठा सकता है। इस विषय मे अपवाद-स्वरूप केवल रौबर्ट ई० ली को कहना चाहिये।

थैकरे ने जब अपनी पुस्तक 'दी वर्जीनियनस' मे वाशिंगटन के सम्बन्ध मे कुछ बाते कही थी, उस पर अमेरिका मे काफी नुक्ताचीनी हुई। एक आलोचक ने क्रोधावेश मे लिखा—'यह सफेद झूठ है। वाशिंगटन अन्य मनुष्यो के समान नही थे। उनके उदार चरित्र को साधारण जीवन के अशिष्ट मनोविकारो के स्तर पर ले आना मानव-जाति के इतिहास के एक गौरवमय अध्याय को झुठलाना है।' एक दूसरे आलोचक ने थैकरे को धमकाते हुए लिखा—'वाशिंगटन का चरित्र हमे निष्कलंक रूप से परम्परा से मिला है। यदि तुम इस प्रकार की छोटी-छोटी मूर्खता की बाते, जो अन्य बडे आदमियों मे पाई जाती रही है, उनके जीवन के साथ भी जोड़ोगे, तो वाशिंगटन की वही शानदार अलौकिक छाया जिसको तुम ने याद किया है और जो वैसी ही पवित्र और निर्मल है, जैसी कि वह हौडन की बनी हुई मूर्ति में तुम्हे दीखती है, वह तुम्हारे पास पहुँचेगी और अपनी शान्त, तर्जनापूर्ण दृष्टि से तुम्हे ऐसा चुप कराएगी कि तुम्हारी सब बकवक बन्द हो जायगी।'

इसमे शक नही कि यह गजब की धमकी है और इससे ज्ञात होता है कि एक शताब्दी पूर्व अमेरिका मे वाशिंगटन के सम्बन्ध मे

कितनी गहरी श्रद्धा की भावना मौजूद थी। जैयर्ड स्पार्क्स ने इसी प्रकार की ही प्रतिरक्षात्मक गहरी प्रतिष्ठा उस समय अभिव्यक्त की, जबकि उसने सन् १८३० मे वाशिगटन की चिट्ठियो का सग्रह सम्पादित किया। बाद मे उस पर यह आरोप लगा कि उस सग्रह में इसलिए हेरफेर किया गया कि वाशिंगटन को अधिक गौरवपूर्ण प्रकाश मे पेश किया जाय। उसके सम्पादन करने के तरीके भी आधुनिक मापदण्डो के अनुसार दोष-पूर्ण नजर आते है। इन मे इतनी लापरवाही दृष्टिगोचर होती है कि किसी के लिए भी उपयुक्त प्रणाली की कोई स्पष्ट रेखा देख पाना बहुत कठिन है। इसमे जरा भी असत्य नही कि स्पार्क्स ने कुछ ऐसे अंश छोड़ दिए अथवा बदल दिए जिन्हे अशिष्ट माना जा सकता था। हम यहाँ ऐसे ही दो कुख्यात उदाहरणों का उल्लेख करते है। वाशिगटन ने जिसको 'ओल्डपुट' कहा था उसको 'जनरल पुटनम' बताया गया। और जहा 'किन्तु इस समय भी थोड़ी बहुत असुविधा' कहा गया था वहां उसको 'हमारी इस समय की आवश्यकताओं के लिए सर्वथा अपर्याप्त है' कर दिया गया। जाने-अनजाने मे स्पार्क्स, जो वैसे कई तरह से सुयोग्य इतिहासकार था, इस अमरीकी विश्वास को प्रतिबिम्बित करता था कि 'वाशिगटन अन्य मनुष्यो की भाति नही थे'। अत. उनमे किसी प्रकार की खामी को स्वीकार करना अमेरिका के मान्यताओं के ढाचे पर वार करना था। इस विषय मे जे०पी० मार्गन ने भी एक धार्मिक प्रतिरक्षक के रूप मे ही कार्य किया जब कि १९२० के आस-पास उसने वाशिंगटन द्वारा लिखित कुछ पत्र जो उसके हाथ लगे थे इसलिये जला डाले कि वे 'छपने के योग्य नही थे'। यही कारण था कि बेनीडिक्ट आर्नल्ड जैसे लोगो को जिन्होंने वाशिगटन से तथा अपने देश से विश्वासघात किया था अमेरिका मे सर्वत्र घृणा की दृष्टि से देखा गया। वे लोग न केवल विद्रोही ही माने गये, अपितु इसलिये दोषी भी ठहराये गये कि उन्होने पवित्रता को नष्ट किया।

यह सब होते हुए भी अमेरिका मे कुछ ऐसे लोग भी थे जो

वाशिगटन के इस अन्धाधुन्ध पूजन से खीझ गये थे। इन लोगों में जान एडम्ज़ का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वे अनुभव करते थे कि खुशामद अपनी सीमा को बहुत कुछ उलांघ गई है। उदाहरण के लिए उन्होने इस कथन की ओर सकेत किया जिसमें कहा गया था कि परमात्मा ने वाशिगटन को इसलिये सन्तान-रहित रखा कि वे समस्त राष्ट्र के पिता बन सकें। किन्तु एडम्स भी उन लोगों में से थे जो विदेशियों के किसी भी दोषारोपण से वाशिगटन की रक्षा करने को सर्वदा उद्यत रहते थे। कारण यह कि वे अमेरिका मे जन्मे थे। उन लोगों का यह कहना था कि वाशिगटन मे विद्यमान गुण अमेरिका की मिट्टी के गुण हैं, न कि इसके उलट। उनके मन में वाशिंगटन इसलिये महान् थे, क्योंकि इस देश की मिट्टी इस प्रकार के गुणों का विकास करती है और उन्हे अन्तिम रूप देती है।

इस प्रकार वाशिंगटन के बारे में दो प्रकार की धारणाएं दृष्टिगोचर होती हैं। एक यह कि वे अमेरिका की जनता के पिता थे और इसलिये अतिश्रेष्ट अमेरिकन थे। दूसरी धारणा यह कि वे अमेरिका के प्रतिनिधि स्वरूप थे। किन्तु दोनों दशाओं में, जैसा कि रुफुस ग्रिसवोल्ड ने कहा था, उन्होंने अपने आपको अतुल्य अंश तक "अपने देश से एकात्मक कर लिया था"। 'वे अपने देश का दिल और दिमाग थे। यह देश उनकी प्रतिमूर्ति तथा निर्देशन-मात्र था।' नाम के विचार से यह नितान्त सत्य है। हमने जैसा कि पहले देखा है, वाशिंगटन का नाम सम्पूर्ण अमेरिका के कोने कोने में फैला और इसे मनुष्यों तथा स्थानों के लिये अपनाया गया। एक अमेरिकी सज्जन वाशिंगटन इर्विंग हुए। वाल्ट ह्विटमैन के एक भाई जार्ज वाशिंगटन ह्विटमैन कहलाए। भूतपूर्व दास-बालक, बुकर टेलियाफेरो ने 'वाशिंगटन' शब्द को उपनाम के रूप में अपनाया—मानो यह एक प्रकार से अमेरिका की नागरिकता को धारण करना था।

निःस्वार्थ देश-भक्त के रूप में

यह सत्य है कि राष्ट्र-पिता के रूप मे वाशिंगटन का अनुपम स्थान है, यद्यपि किंचित न्यून अंश मे बेंजामिन फ्रैंकलिन उनके साझीदार वनते हैं। जान एडम्स ने एक बार खीझते हुए लिखा—'ऐसा लगता है कि हमारा क्रान्ति का इतिहास एक सिरे से दूसरे सिरे तक निरन्तर झूठ पर आधारित रहेगा। लोगो के कहने का सार यह हुआ कि डाक्टर फ्रैंकलिन ने विद्युत् दण्ड जमीन पर मारा और जनरल वाशिंगटन पृथ्वी के भीतर से वाहर निकल आये और फिर फ्रैंकलिन महोदय ने अपने डण्डे से उन्हें विद्युतित किया और तदनन्तर दोनो मिलकर नीति-सम्वन्धी पत्र-व्यवहार, संविधान-सम्बन्धी कार्यवाहिया तथा लड़ाई आदि का संचालन करते रहे।'

निस्स्वार्थ देश-भक्त के रूप में वाशिंगटन कुछ एक चुनी हुई विभूतियों मे से थे। अमेरिका मे दो सर्वाधिक शक्तिशाली पदों पर सुशोभित हुये रहने के पश्चात्, लगभग सभी ऐतिहासिक परम्परा के विरुद्ध उन्होंने उन पदों का त्याग करके दो वार वैयक्तिक जीवन मे प्रवेश किया। उनकी इस प्रकार की विनम्रता से आश्चर्यचकित हो कर लोगों ने उनकी तुलना कोरिन्थ के टिमोलियन से की कि जिसने सिसली मे शान्ति स्थापित करके वही एकान्त का जीवन विताया था। लोग उनकी तुलना सिनासिनेटस से भी करते है, जिसके विषय में कहा गया है —

'इस प्रकार प्राचीन काल मे रोम के आदेश पर एक विख्यात किसान, सिनसिनेटस, अपने हथियार ले कर लड़ाई के मैदान मे उतरा। उसने शीघ्र ही अहकारी वाल्साई सैनिकों को मैदान मे हरा कर अपने अधीन किया, अपने देश को वचाया और जव उसने महिमापूर्ण विजय पा ली, तो वह अपने खेतो को पहले की तरह जोतने लगा।'

ये पक्तियां, जिन्हें मेरीलैण्ड के कवि चालेस हेनरी वार्टन ने लिपिवद्ध किया था, 'कविता के रूप में लिखी गई साहित्यिक रचना'

से ली गई है, जो सन् १७७९ मे वाशिगटन को सम्बोधित करते हुए की गई थी ।

वाशिंगटन की तुलना एडीसन के नाटक के पात्र छोटे केटो से की जा सकती है । इस नाटक की इन दो पक्तियों को—वाशिंगटन बड़े चाव से उद्धृत किया करते थे —

'सफलता मनुष्य के वश की चीज नही ।' तथा

'अपना वैयक्तिक दर्जा ही प्रतिष्ठा का पद है ।'

लोग वाशिंगटन की विरोधी तुलना उन असख्य लोगों से कर सकते है, जिन्हे उनके मुकाबले में स्वार्थी देश-भक्त कहा जा सकता है । इनके अन्तर्गत सुला, सीजर, वेलन्स्टीन, क्रामवेल और इन सबसे अधिक बद्धहित देशभक्त उनका समकालीन नैपोलियन आ जाता है । वाशिंगटन और नैपोलियन का पारस्परिक व्यतिरेचन आश्चर्यजनक रूप से बिलकुल स्पष्ट है । बायरन, जिसने इस सम्बन्ध मे वाशिगटन को 'पश्चिम का सिनसिनेटस' कहकर पुकारा था, उन अनेक लोगों मे से था जिन्होने इस विषय मे अपनी कलम उठाई थी । इसके अतिरिक्त जो इने-गिने निष्काम देशभक्त माने जाते है, सूक्ष्म जांच करने पर उनके कई एक कार्य अवांछनीय से प्रतीत होते है । प्लूटार्क के शब्दों मे —

'किन्तु अन्य महान् नेताओं के यशस्वी कामो मे भी हम हिसा, पीड़ा और श्रम का सम्मिश्रण पाते है, यही कारण है कि उनमें कई एक तो भर्त्सना से और अन्य पश्चाताप से प्रभावित हुए है ।'

यह प्लूटार्क के शब्द टिमोलियन की प्रशसा मे लिखे गए । किन्तु प्लूटार्क को यह स्वीकार करने मे सकोच नही कि एक बार टिमोलियन ने भी दुष्टतापूर्वक व्यवहार किया था । इससे जाहिर है कि विशुद्ध देश-भक्तो के समुदाय मे सिवाए अर्धकाल्पनिक लूसियस किकटीयस सिनसिनेटस के कोई और जार्ज वाशिगटन से टक्कर नही ले सकता । इस उच्चकोटि के समुदाय मे हम कई और नाम भी जोड सकते है — जैसे, एपाभीनौडस, एजीसीलास, ब्रूटस और कई एक अन्य । वाशिगटन ने इस समुदाय मे जो स्थान प्राप्त

किया है उसके कारण हमारी उनके बारे में जो अवास्तविक कल्पना है वह पहले से भी अधिक स्वप्नवत् और कालचक्र से असम्बन्धित हो जाती है। इस बारे मे जो उन्होने कार्य किया, वह अमेरिका के उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भिक शास्त्रीय पुनरुन्नयन से बहुत मेल खाता है, यद्यपि यह सत्य है कि यह बीम्स के अधिक सुखद और गृह्यक विचार-धारा से कुछ-कुछ विपरीत चला जाता है। हमे यह भूलना नही चाहिए कि सन् १८४० के आस-पास वाशिगटन के वृहदाकार सगमरमर के बुत का उपहास किया गया था। यह बुत होरेशो ग्रीनोफ ने बनाया था, और इसमें वाशिगटन को चोगा पहने हुए दिखाया गया था। एक पर्यटक ने, जो ग्रीनोफ की कृति देखने के लिए गया था, देखा कि 'किसी श्रद्धाहीन नास्तिक ने मेहनत से ऊपर चढ़ कर एक बड़ा वनस्पति-सिगार अमरीकी जनता के पिता के होठों के बीच खिसका दिया है।—"मै यह सोचने पर मजबूर हो गया कि यदि वाशिंगटन की मूर्ति को ओल्यम्पिक जोव के तुल्य निर्मित करने की बजाए उनके अपने अनुरूप बनाया गया होता, तो वह आवारा व्यक्ति, जिसने सिगार-सम्बन्धी अनुचित कार्य किया, स्वप्न में भी ऐसा अपवित्र काम करने का साहस न करता।"

क्रान्तिकारी नेता के रूप में

वाशिगटन के बारे मे यह धारणा मुख्य रूप से अमरीका से बाहर मौजूद थी कि वह क्रान्ति की नीव डालने वाले है। इस ख्याल में विशेष रूप से उनके जीवन की अन्तिम दशाब्दी में जोर पकड़ा, यद्यपि इसकी गूज अगले सौ वर्षो में रही। इस धारणा मे विशेष विचारधारा की पुट मिलती है, जिसके अनुसार वाशिगटन प्रमुख अधिनायक, अपने राष्ट्र के बधन-मोचक, राष्ट्रीयता के प्रति-रक्षक तथा आधुनिक समय की क्रान्ति मे सबसे महान विजेता के रूप मे माने गए। इस क्रान्तिकारी नेता की हैसियत मे वह उस समिति के अध्यक्ष जान पडते है जिनके सदस्य उग्रवादी, साहसी और वीरतापूर्वक लड़ने वाले थे और जिनमें हम लिफायट, मैडियस,

क्‍काँसी अस्को, टाऊसैण्ट लाऊवर्चर, बालीवर तथा गेरीबाल्डी को प्रायः गिना करते हैं। उस समिति मे कुछ स्थान ऐसे भी है जो इसलिए खाली पड़े है क्योंकि इन स्थानों को घेरने वालों ने अपने अशोभनीय व्यवहार के कारण अपने आप को कलंकित कर लिया था। इस श्रेणी मे हम आइटरबाइड तथा उसके अन्य साथियों को शामिल कर सकते है।

फ्रांसीसियों के लिए वाशिगटन का विशेष महत्व था। इसका कारण यह था कि वह स्वयं अमरीका के आदर्श पर फ्रांस मे क्रान्ति लाने का प्रयास कर रहे थे। फ्रांस के लोग उनके नाम का उच्चारण विविध प्रकार से करते थे—यथा, 'वासिगटन', 'वाशिगटन', अथवा 'वास्सिंगटन'। फ्रांसीसियों के लिए वाशिंगटन एक प्रकार से क्रान्ति के प्रतीक बने, जिनका उन्होने अपने नाटकों मे भी उल्लेख किया। इस प्रसग में बिलाईन डी सौविगने के नाटक 'वासिंगटन ऑला लिब्रर्टट डू वौविओ भोण्डे' का नाम उल्लेखनीय है। यह चार अकों का दुखान्त नाटक है और इसे सन् १७६१ मे पेरिस में पहली बार खेला गया।

जब दक्षिण अमेरिका के देशों ने स्पेन के शासन के विरुद्ध विद्रोह किया, तब भी वाशिंगटन उनके लिए एक क्रान्ति के प्रतीक बने। बाद में उन सब देशों के लिए भी वाशिगटन प्रेरणा के स्रोत बने जिन्होने अपने यहाँ क्रान्तिकारी संग्राम का सूत्रपात किया। इन लोगों की नजरो मे वाशिंगटन एक ऐसे नागरिक सैनिक थे, जिन्होंने क्रान्ति लाने के लिए नागरिक सेना की कमांड अपने हाथों में सम्भाली। इस नागरिक सेना (अथवा अंग्रेजों की दृष्टि में 'लुटेरे गिरोह') के सरदार की हैसियत मे वाशिगटन को भीषण परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। उनका हथियारबन्द सेना द्वारा पीछा किया गया। उन्हें जगह-जगह निराशाओं का मुँह देखना पड़ा। उन्हें अकेले ही सारा कार्य-भार सम्भालना पड़ा। तथा अपने से बहुत अधिक सख्या मे शत्रु सेना से लोहा लेना पड़ा। इस पर तुर्रा यह कि घोर शीत की रातो में जाग-जाग कर चौकसी

करनी पड़ी। एक तरफ तो वाशिंगटन के सैनिक थे जो भूखे पेट थे और जिनके पहनने के लिए जूते तक नहीं थे। दूसरी ओर जिस शत्रु-सेना से उन्हें जूझना पड़ा उसका व्यवसाय ही लड़ना-मरना था। और उसे पहनने को बढ़िया वर्दी और खाने-पीने को विपुल और उत्तम भोजन मिलता था। वाशिगटन के सैनिक यद्यपि फटी-पुरानी वर्दी मे थे, तथापि वे लोकहित के लिए अपने प्राणों तक को भी न्योछावर करने के लिए सदैव उद्यत रहते थे। एक कहानी है कि इन्हीं सैनिकों के नामो पर ही फ्रांसीसी क्रान्तिकारियों के नामकरण हुए।

निस्सन्देह वाशिंगटन महोदय का कार्य दुष्कर था, किन्तु लक्ष्य की महानता तथा टामपेन की ओजस्वी लेखनी ने उनके उत्साह को बधाए रखा। उन्होंने बर्फ की पट्टियों पर मार्ग बनाते हुए, डेलावेयर नदी को पार किया और अन्त मे विजय-श्री प्राप्त की। उन्होंने सहायता के लिए भगवान से प्रार्थना की और हाथ जोडे किन्तु अपने मस्तक को ऊँचा रखा।

इस काल में कई एक मदमस्त करने वाली विचार-धाराएँ थीं—गणतन्त्रवाद, शत्रुओं के विरुद्ध षड़यन्त्र, फ्रीमेसन सस्था की सदस्यता, इत्यादि। (लिफायट, मौजर्ट, तथा उस काल के कई अन्य उदार-हृदय यूरोप-निवासियो की तरह वाशिंगटन भी फ्री मेसन थे)। यह एक नए युग का आरम्भ था—पहनावे में नए फैशनों का प्रचलन हो रहा था, नए राष्ट्र गान तैयार हो रहे थे और नई प्रकार के ध्वजो का निर्माण हो रहा था। (एक कल्पित कथा के अनुसार वाशिगटन ने बैटसी रौस से मिलकर अमेरिका के नये ध्वज की रूपरेखा तैयार की थी)। उन्ही दिनों लिफायट ने बैस्टिले की मुख्य चाबी यह कहकर वाशिंगटन को भेजी कि यह तानाशाही के गढ की मुख्य कुंजी है। उस समय लिफायट ने लिखा—'यह एक उपहार है जो मुझे अपने अभिस्वीकृत पिता का पुत्र होने के नाते, अपने सेनापति के 'ऐड-डे-कांग' के नाते तथा अध्यक्ष के आदेश पर चलने वाले स्वतन्त्रता के एक प्रचारक

के नाते, भेंट-स्वरूप पेश करना ही चाहिए।' (यह उल्लेखनीय है कि जुलाई, १७८९ में पैरिस के अनियन्त्रित जन-समूह ने बैस्टिले को उडा कर भस्मसात् कर दिया था। अत. इसको कुजो माऊंट-वर्नन में होते हुए भी किसी के लिए असुविधा का कारण नही बन रही है)।

बाद में, सन् १७८२ मे स्वतन्त्रता के एक और पुजारी और प्रचारक ने अपने अध्यक्ष (वाशिंगटन) को नमस्कार किया। यह थे कवि कौलरिज। वह उन दिनो कैम्ब्रिज में अभी पूर्व-स्नातक कक्षाओ में अध्ययन कर रहे थे। उस समय उनके रहने के कमरे यथार्थ रूप में वाम-पक्ष की कोठरियां कहे जाते थे। कौलरिज, यह प्रगट करने के लिए कि वह पूर्व-स्थापित व्यवस्था के घोर विरोधी है तथा प्रतिक्रियावाद को समाप्त करके उससे सर्वथा मुक्त होना चाहते है, अपने पानी के कमरे में जाकर खुल्लमखुल्ला वाशिंगटन के स्वास्थ्य की कामना से जल पिया करते थे। इन उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि वाशिगटन उन दिनों इतने व्यापक रूप से एक विशेष विचार-धारा के प्रतीक बन चुके थे।

विलियम ब्लैक की 'अमेरिका' शीर्षक कविता में वाशिगटन को मूल रूप मे मनुष्य न मान कर अलौकिक पैगम्बर के रूप में माना गया है। इस कवि ने लिखा है :—

'तव वाशिंगटन बोले—अमेरिका के बन्धुओ ! अन्ध महासागर पर दृष्टिपात करो। एक झुकी-मुडी हुई कमान आकाश में ऊपर उठाई गई है और एक वोझिल लोहे की जंजीर, एक-एक कड़ी करके, एलवियन की चोटी से समुद्र-तल पर उतर रही है। इस जंजीर से अमेरिका के रहने वाले भाइयों और पुत्रों को जकड़कर बाँध दिया जायगा। हमारे पीले और कुम्हलाये हुए चेहरों, नतशीर्ष, निर्बल ध्वनियों, झुकी हुई आँखों, घोर परिश्रम से घायल हाथो, तपती रेत पर पड़े लहुलुहान पजों पर पीढ़ियों तक चाबुक पड़ते रहेंगे—उस समय तक जब तक हम अपने उन बन्धनों को भूल न जाये।'

कुछ ही वर्ष बाद क्रान्ति के नायक, वाशिगटन, दक्षिण अमेरिका

में भी स्वतन्त्रता की भावनाओं को जागृत करने के मूल कारण बने। वहाँ का नेता, बालीवर, उनका आलेख्यात्मक पदक उठाये स्थान-स्थान पर घूमा। उसका यह कहना था कि जहाँ वाशिंगटन और अमेरिका के सयुक्त-राज्य अपने आपको योरुपीय बन्धनों से मुक्त होने में अग्रणी बने हैं, वहाँ अन्य अमरीकी देशों के लिए उनका अनुसरण करना कैसे कठिन हो सकता है? इस प्रकार वाशिंगटन के सिद्धान्त तथा उतना ही महत्वपूर्ण उनका उदाहरण दक्षिणी अमेरिका के लिए पथ प्रदर्शक बने रहे। उनका विदाई-भाषण सम्पूर्ण दक्षिण अमेरिका मे उस समय तक सुनाया और उद्धृत किया जाता रहा जब तक कि उसके अन्तर्गत आदेश सयुंक्त-राज्य अमेरिका के समान ही प्रभावोत्पादक नही बने। वहाँ के राजनीतिज्ञ वाशिगटन के शब्दों को स्थान स्थान पर दुहराया करते। लोगों ने भवनों के नाम वाशिंगटन के नाम पर रखे। इस प्रकार हम वाशिगटन के जीवन के एक और कार्य की धुधली वाह्य रेखाओं को देखते है जिसे हम उनके जीवन का पाँचवा कार्य कह सकते हैं और जिसे मौका पड़ने पर वे सम्भवतः अपने हाथों में ले लेते—और वह कार्य था सर्व-अमरीकीय राज्यों के महान प्रतिभाशाली नेता के रूप में।

कहना न होगा कि वाशिगटन उन अनेक महापुरुषो में से है जिनकी जीवनी को उत्तरवर्ती पीढ़ियों के प्रयोग के लिए आदर्श रूप में पेश किया जाता है। प्रत्येक युग अतीत में अपने लिए प्रेरणा अथवा सुख ढूँढता है। मृत उस समय तक भूत ही रहते है जब तक हम उनसे प्रेरणा पाने के लिए उन्हे याद नही करते। वे हम मे तथा हमारे माध्यम से जिन्दगी पाते है। हमारी उनमें रुचि आत्माभिमान की तुष्टि के लिए होती है। हम उनसे वही सीखने की इच्छा रखते है जो हमारी तबियत और विचारधारा के अनुरूप होता है।

वाशिंगटन महोदय को आधुनिक समय के जाँच स्तर से समझने की चेष्टा करना असंगत बात नही है। इतिहासकार भी न्यूनाधिक रूप से यही किया करते है, चाहे उनका कोई भी विशेष विषय

क्यों न हो। यह सत्य है कि इन इतिहासकारों में भी कुछ एक ऐसे भी है जो साक्ष्य-सामग्री का प्रयोग करते समय अत्यन्त सावधानी वरतते हैं। जहाँ तक ऐतिहासिक परिशुद्धता का सम्बन्ध है, हमारे युग मे बीम्ज अथवा जेअर्ड स्पार्क्स के युग से कही अधिक ऊँचा स्तर है। किन्तु क्या कभी ऐसा समय आयगा जब एडॉल्फ हिटलर अथवा फ्रैंक्लिन रूजवैल्ट या चर्चल की भी 'पक्षपात रहित' जीवनी लिपिबद्ध की जा सकेगी ?

वाशिंगटन ही केवल इस प्रकार के महापुरुष नही है जिन्हें दैत्याकार में बढा-चढ़ा कर पेश किया गया। रोई सो लेल सरीखी अत्यन्त कपोल-कल्पित कहानी के विस्तार के रूप मे लूई १४ ने अपना निजी स्मारक बनाने के लिये अपनी समस्त शक्ति लगाई। मार्लबरो को मूल्यवान सेवाओं के कारण ड्यूक बनाया गया। उसे रहने के लिये इतना बड़ा महल मिला कि माऊंट वर्नन उसकी तुलना मे एक माली की झोपड़ी दीखती है। अमरीकी-उत्तराधिकारिणी, कन्सुए लो वैण्डर बिल्ट, जिसने मार्ल बरो के एक वंशज से विवाह किया था, हमे बतलाती है कि ब्लैनहिम महल के रसोईघर खाने के कमरे से पांच सौ गज की दूरी पर है। (इतने दूर रसोई-घर होने से भोजन के स्वाद मे जो अरुचि उत्पन्न होती होगी, उसे कल्पना में लाया जा सकता है।)

नैल्सन के कृतज्ञ देशवासियों ने उन्हें वाईकाऊंट बनाया और ट्रैफाल्गर की विजय के बाद एक चौरस स्थान का नाम उनके नाम पर रखा। उसी जगह नैल्सन के नाम पर एक बृहदाकार स्तम्भ बड़ी शान से आज भी खड़ा है। वैलिंगडन महोदय को भी मूल्यवान सेवाओं की वजह से ड्यूक की उपाधि मिली। साथ ही उन्हें इतनी अधिक सख्या में प्रतिष्ठा-स्वरूप वस्तुएँ प्राप्त हुई कि उन्हें देखकर दिमाग चकराने लगता है। (विजयोपहारों की संख्या इतनी ज्यादा है कि उन से एक अच्छा-खासा विचित्रालय भर सकता है।) नैल्सन और वैलिंगडन के नामों पर सैन्य-दलों, स्कूलों, सार्वजनिक भवनों, जंगी जहाजों के नाम पड़े। कुछ प्रतिष्ठित विदेशियों के नाम भी इन

इस देश का वर्णन करते हुए कहा था) भोजन, मकान, सुरक्षा तथा भूमि उस समय कही अधिक महत्वपूर्ण समस्याएं थीं।

किन्तु जो कोई भी घटना ब्रिटेन में होती, उसका महत्व देर-सवेर, वर्जीनिया के लिए भी हुआ ही करता था। उन दिनों एक घटना हुई, जिसके प्रचुर परिणाम निकले। चार्ल्स द्वितीय ने सन् १६४९ में अपने पिता की मृत्यु के कुछ ही मास पीछे, अपने एक वफादार अनुयायी को पोटोमैक और रैपाहैन्नोक नदियों के बीच के उत्तरीय भाग का बहुत बड़ा इलाका दे दिया। यह एक कारुणिक चेष्टा थी, क्योंकि उन दिनों चार्ल्स निर्वासित था और इस बात में सन्देह था कि वह अपने आदेशों को कार्यान्वित करा भी सकेगा या नही। प्रकार उसने वह जागीर प्रदान की, जो उसकी नही थी और जिसे न तो उसने स्वयं और न ही नये 'स्वामी' ने अपनी आँखों से देखा था या उसे देखने की आशा ही की थी।

इंगलैंड के इस गृह-युद्ध में एक और छोटी सी घटना हुई, जिस में इंगलिस्तान के एक गिरजे के एक पादरी को 'प्योरीटन' लोगों ने १६४३ में अपनी आजीविका वाले स्थान से खदेड़ दिया। इसी प्रकार का व्यवहार इस गृह-युद्ध के दिनों में सहस्रों अन्य अभागे लोगों के साथ किया गया था। उस पादरी का नाम था लारेंस वाशिंगटन। इससे पूर्व वह साधारण सुख-सुविधा में अपना जीवन काट रहा था। उसके कुटुम्ब के लोगों के पास नारथैम्पटनशायर में सल्ग्रेव की जागीर थी और वह स्वयं आक्सफोर्ड के ब्रेसनोज कालेज का अधिसदस्य था। जागीर छिन जाने से जीवन-भार वहन करना कठिन हो गया। जब वह १६५३ में मरा, तो उसके दो पुत्रों ने निश्चय किया कि वे वर्जीनिया में जाकर बसेंगे और नये सिरे से जीवन शुरू करेंगे। उनमें से एक पुत्र, जिसका नाम जान था, जहाज का अफसर बनकर वर्जीनिया पहुंचा। उसने वर्जीनिया के एक जमींदार की लड़की से विवाह कर लिया और प्रायः दैवयोग से वही बस गया। साधारणतया उसने सुख-समृद्धि पाई। उसे भूमि मिली। वह शान्ति-न्यायाधीश बना और बाद में उसे वर्जीनिया की

साधारण विधान-सभा का सदस्य चुन लिया गया। उसका भाई भी काफी सफल रहा। इस प्रकार वर्जीनिया में वाशिंगटन वंश के पाँव जमे, यद्यपि इस समय तक इसे वश का नाम नही दिया जा सकता था। दोनों भाइयों में से कोई भी धनी नहीं बना। कारण यह कि वहाँ जीवन सदैव खतरो से घिरा और अशान्त रहता था। मौत हर समय सिर पर खड़ी रहती थी। उदाहरण के रूप मे जान को ही ले ले। उसने तीन शादियाँ कीं। जिस स्त्री से इसने तीसरी शादी की उसके तीन पति पहले मर चुके थे और जव जान १६७७ मे मरा, तो उसकी आयु चालीस वर्ष के आसपास ही थी।

इस प्रकार वर्ड, कार्टर, कार्बिन, फिटस्हुग, हैरीसन, ली, पेज, रैंडाल्फ नामों के साथ वाशिंगटन नाम भी वर्जीनिया से धीरे से जुड़ गया। जान के सबसे वड़े लड़के लारेन्स ने अपने वंश को चलाया। बड़ा लड़का होने की हैसियत से उसे वहां के उत्तराधिकार नियमों से लाभ पहुचा। लारेन्स भी वर्जीनिया की साधारण संविधान सभा का सदस्य वना, किन्तु वह अपनी इर्द-गिर्द की परिस्थितियों पर कावू पाने के पूर्व ही सन् १६९८ में उन्तालीस वर्ष की आयु मे ही परलोक को सिधार गया। तत्पश्चात् पैतृक उत्तराधिकारों, भूमि सम्बन्धी दावो, अन्तर्विवाह और मुकदमे-वाजी की भूलभुलैयो से होती हुई, जो उन दिनों वर्जीनिया उपनिवेश की जटिलताए थी, इस वश की कहानी आगे बढ़ी। लारेन्स की पत्नी अपने वच्चो को लेकर इगलैण्ड चली गई, जहां उस समय की प्रथा के अनुसार उसका शीघ्र ही पुनर्विवाह हो गया। इस परिवार के दो लड़के, वैस्ट मोरलैंड के एपलवी स्कूल में पढ़ने के लिए डाल दिये गये। सम्भव है कि उनका सौतेला बाप उन्हे इंगलैण्ड में ही रखता और इसके फलस्वरूप उनका वर्जीनिया की जागीर पर अधिकार समाप्त हो जाता। किन्तु उनकी माता का शीघ्र ही देहान्त हो गया और इसलिए वे पुन वर्जीनिया लौट आये। उनकी भूमि से सम्वन्धित कानूनी उलझनें धीरे-धीरे सुलझ गईं। उनमे से एक लड़के आगस्टीन ने, जो उस समय लगभग २१ वर्ष का था

(जिस आयु में वर्जीनिया में पुरुष सामान्यतः विवाह कर लिया करते थे), जेन बटलर से लगभग सन् १७१५ में शादी कर ली। इस पाणिग्रहण के फलस्वरूप जो बच्चे पैदा हुए उनमें जीवित बच रहने वाले पहले लड़के का नाम अपने दादा और परदादा के नाम पर लारेन्स रखा गया।

आगस्टीन ने जहां कड़ा परिश्रम किया, वहां उसने साहसिक मनोवृत्ति का भी परिचय दिया। अपने पिता और दादा की तरह वह भी जिले का न्यायाधीश बना। अपनी और अपनी धर्मपत्नी की जागीरों को मिलाने से उसका अधिकार 'उत्तरी नैक' के भिन्न-भिन्न भागों में १७५० एकड़ भूमि पर हो गया। इसके अतिरिक्त सन् १७२६ में उसने पौटोमैक नदी पर 'लिटल हंटिंग क्रीक' नाम के भूमि-भाग पर, जो क्षेत्र में २५०० एकड़ थी, अपने स्वत्व अधिकार प्राप्त कर लिये। इस भूमि को उसके दादा, जान ने अपने नाम कर लिया था। इन जागीरों के अलावा यह लोहे के कारखाने में भी हिस्सेदार बना।

सन् १७२९ में आगस्टीन की पत्नी की मृत्यु हो गई। दो वर्ष बाद, जो समय कि उन दिनों अपेक्षाकृत लम्बी अवधि माना जाता था, उसने पुनः विवाह किया। उसकी दूसरी पत्नी का नाम मेरी बाल था। उसकी आयु २३ वर्ष की थी। माता-पिता जीवित नहीं थे, परन्तु साधारण रिश्तेदार थे। उसके पास साधारण सी सम्पत्ति थी। वह विलियम बाल की वंशज थी, जो लन्दन के वकील का लड़का था और जो सन् १६५० में वर्जीनिया में आकर बसा था। मेरीबाल अपने अभिभावक, जार्ज इस्किज, से जो एक अच्छे स्वभाव का वकील था, बहुत स्नेह रखती थी। इसी वजह से मेरी ने उसके नाम पर ही अपनी सबसे पहली सन्तान का नाम जार्ज वाशिंगटन रखा। अन्यथा उसका नामकरण शायद पारिवारिक नाम 'जान' शब्द से किया जाता क्योंकि उसके सौतेले भाइयों का नाम पूर्व ही लारेन्स और आगस्टीन रख दिया गया था। अस्तु, कोई भी कारण हो, उसे जार्ज नाम दिया गया।

शिशु जार्ज ने वेस्टमोर लैंण्ड प्रदेश की एक रोप-स्थली मे जन्म लिया। बाद मे इसका नाम वेकफील्ड पड़ा। इस स्थान को पोटस क्रीक अथवा ब्रिज क्रीक भी कहा जाता था, क्योंकि यह उन दो नालों के बीच मे पड़ता था जो हटिग क्रीक की जागीर से पोटोमैक नदी के निचले भाग मे गिरते थे। जार्ज का जन्म १७३२ मे ११ फरवरी को हुआ था। (जब १७५२ मे नया कैलेण्डर बनाया गया, तो इसमें ग्यारह दिन और मिलाये गये थे। इस प्रकार यह तिथि नई पद्धति के अनुसार २२ फरवरी हो गई।) इसके बाद, जल्दी-जल्दी पाच बच्चे और पैदा हुए—एलजाबैथ, सैम्मुअल, जान, आगस्टीन, चार्ल्स और मिल्डरैंड, जिसका सन् १७४० में शैशवावस्था मे देहान्त हो गया।

उस समय बाल जार्ज अपने तीसरे घर मे रहा करता था। उसके पिता १७३५ मे प्रिस विलियम प्रदेश मे जा कर बसे थे। तीन वर्ष बाद उन्होने वह स्थान छोड़ दिया और रैपहैन्नाक नदी पर स्थित फ्रैडरिकस्बर्ग की छोटी बस्ती के पास फैरीफार्म पर जाकर रहने लगे। पिता को चिन्तायें और निराशायें घेरे रखती थी, विशेष रूप से लोहे की ढलाई का कारखाना उन्हे तंग कर रहा था, किन्तु यह सब होते हुए भी वे चोटी के न सही, पर ऊपर के दर्जे के वर्जीनिया निवासी के रूप मे मजे से जीवन वहन कर रहे थे। उनके पास पचास दास थे। जितनी भूमि वे घेर सके, उन्होने इस पर स्वत्वाधिकार प्राप्त कर लिया। उनके वसीयत नामे के अनुसार यह भूमि दस हजार एकड़ से ऊपर थी। उन्होने अपनी पहली शादी से उत्पन्न दोनों लड़कों को उत्तरी इग्लैण्ड के एपलबी स्कूल मे पढ़ने के लिए भेजा, जहाँ उन्होने स्वयं शिक्षा पाई थी। उनका उद्देश्य यह था कि इस शिक्षा से जहां वे दोनों वर्जीनिया वासी भद्र पुरुषों के योग्य बौद्धिक-विस्तार और शिष्टता प्राप्त करे, वहां वे सौभाग्य बुद्धिपूर्वक नियोजन और सतर्कतापूर्ण विवाह से अपने प्रमार्जित आचारों के साथ ही साथ धनोपार्जन भी कर सके।

किन्तु इसके बाद चित्र वदला। जब जार्ज केवल ग्यारह वर्ष का ही था, तो उसके पिता, आगस्टीन, इस ससार से चल बसे।

उनकी बहुत सी जायदाद उसके सौतेले भाइयों—लारेन्स और आगस्टीन—के हिस्से मे आई। जार्ज के हिस्से मे फैरीफार्म आया, किन्तु वह उसे बालिग होने पर ही मिल सकता था। इस बीच में वह इसी स्थान मे अपनी माता के पास रहा। वह इस समय बाल्यावस्था को पार करके अल्पकालीन तरुणावस्था को प्राप्त कर चुका था। उन उपनिवेशीय समयो मे यह अवस्था शीघ्र प्रौढ़ता मे संविलीन हो जाया करती थी।

वाशिंगटन के साथ बचपन मे क्या-क्या बीता, इसका हम केवल अनुमान ही लगा सकते है। अलबत्ता यह हो सकता है कि हम उसके विषय में उन रम्य और मनोहर कहानियों पर विश्वास करे, जिन्हे वीम्ज तथा अन्य लेखको ने लिपि-बद्ध किया है। एक आम प्रचलित कहानी यह है कि 'दण्डित सेवक ने, जिन्हे उसके पिता स्कूल-अध्यापक बनाकर लाये थे' उसे लिखना और पढना सिखाया। यह बात सम्भव हो सकती है। दण्डित एव अनुबद्ध-सेवक बहुत बडी सख्या मे वर्जीनिया मे लाए जाते थे। और उनमे से कुछ दण्डित निस्सन्देह अच्छी शिक्षा पाये हुये लोग थे और उनके अपराध विशेष रूप से गर्हित नही थे। किन्तु इस कहानी को सत्य सिद्ध करने के लिए हमारे पास कोई प्रमाण नही है। न ही यह निश्चय-पूर्वक कहा जा सकता है कि जार्ज ने रैवरैंड जेम्ज़ मारये के फ्रैडरिक्स बर्ग वाले स्कूल मे विद्याध्ययन किया। हा, यह बात अधिक सम्भाव्य अवश्य है। हमे ज्यादा से ज्यादा इतना अवश्य मान लेना चाहिये कि जार्ज ने सात और ग्यारह वर्ष की आयु के बीच की अवधि मे स्कूल मे बैठ कर कुछ न कुछ शिक्षा पाई। इस विषय मे कोई उल्लेख नहीं मिलता कि कभी उसे एपलबी भेजने की बात सोची गई हो, शायद इसलिए कि वहा भेजने से पढ़ाई पर बहुत खर्च उठता। हो सकता है कि इस का कारण यह भी था कि उसकी माता नही चाहती थी कि वह परदेश मे इतने बरस बिताये। जो भी कारण हो, उसकी शिक्षा-दीक्षा प्रान्तीय ढग की ही थी।

अपने पिता के देहावसान के पश्चात् जार्ज प्रकटतः किसी न किसी प्रकार की शिक्षा पाता ही रहा। उसकी किशोरावस्था की नोट-बुकों से यह प्रकट होता है कि तरुण वाशिगटन ने लातीनी भाषा और गणित का कुछ प्राथमिक ज्ञान प्राप्त किया, सदाचरण की आधारभूत बातो को सीखा और अग्रेजी साहित्य का कुछ-कुछ अनुशीलन किया। योरुप के स्तर के अनुसार इतनी शिक्षा एक भद्रपुरुष के लिए अधूरी थी, किन्तु जैसी कि उसकी परिस्थिति थी, उसे इतनी ही औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिल सका। उसे यह सौभाग्य नही मिल सका कि वह अपने समकालीन तरुणो के समान वर्जीनिया की राजधानी विलियम्ज-बर्ग के विलियम और मेरी कालेज मे शिक्षा पा सके। हम नही कह सकते कि ऐसा क्यों हुआ। सम्भव है कि इस मे भी उसकी माता की मितव्ययता और उसे अपने बिल्कुल निकट रखने की लालसा——यह दो कारण इसके मूल मे हों। संक्षेप मे—यह स्पष्ट है कि जार्ज वाशिगटन उच्च शिक्षा प्राप्त करने मे असमर्थ रहे और इसलिये वे बुद्धिजीवी नही बन सके। इस पहलू मे जान एडम्ज़ सरीखे अमरीकियो से उसका अत्यधिक व्यतिरेक पाया जाता है। बाद में जान एडम्ज़ को कटुतापूर्ण शब्दो मे कहना ही पडा——'यह तो निश्चित बात है ही कि वाशिगटन विद्वान नही थे, पर यह बात भी इतनी ही निर्विवाद है कि उनकी उच्च स्थिति एवं सुकीर्ति को देखते हुए वे प्रायः निरक्षर, अशिक्षित और अनपढ थे।'

यह भी सत्य है कि बौद्धिक तय्यारी तथा क्षमता की दृष्टि से वाशिगटन का मुकाबला थामस जैफर्सन और जेम्ज मैडीसन जैसे उनके वर्जीनिया के समकालीन विद्वानों से नही किया जा सकता। शायद कई वर्ष बाद तक वाशिगटन स्वयं इस कमी को महसूस करते रहे। जब कभी कोई व्यवस्थित वाद-विवाद होता अथवा अमूर्त विषयों पर चर्चा होती, तो वे अकुला जाते। हॉ, उन्होने दीर्घकालीन अभ्यास के कारण कागज पर लिख कर अपने मनोभावों को किसी अश तक स्पष्ट और ओजस्वी ढग से व्यक्त करना सीख लिया था

और उनके हिज्जों का भी अभ्यास के कारण सुधार हुआ था—— किन्तु वे कभी प्रतिभावान् लेखक नही वन सके । अपनी परिपक्वावस्था मे पहुंचने पर वाशिगटन मे जो सशोधनात्मक-प्रवृत्ति नज़र आती है, इसका कुछ-कुछ कारण यह भी हो सकता है कि वे अपनी वौद्धिक सीमाओ से परिचित थे। ——युवावस्था मे ही उन्हें फ्रांसीसी भाषा न जानने के कारण हानि उठानी पड़ी । वाद मे भी उन्हे फ्रांस जाने का निमन्त्रण इसलिए अस्वीकर करना पड़ा कि उन्हे द्विभाषिये के माध्यम से वात-चीत करने के लिए विवश होना पड़ता, जिससे कि उन्हे कुढन होती । अतः वे जैफ़र्सन और एडम्ज़ की तरह कभी योरुप नही जा सके ।

किन्तु हमे इस वात पर आवश्यकता से ज्यादा बल नही देना चाहिए । वर्जीनिया मे कोई भी व्यक्ति जैफर्सन अथवा मैंडीसन के समान वौद्धिक स्तर पा लेता तो यह अपवाद समझा जाता । धनाढ्य से धनाढ्य वाग़ान-मालिक भी पुस्तकीय-ज्ञान के विषय मे उदासीन थे । सांस्कृतिक परिष्कार की प्राप्ति मे भी उन्हे कोई विशेष दिलचस्पी नही थी । वर्जीनिया की मध्यम-श्रेणी जनता में वैस्टीवर के विलियम वर्ड को, जिसके पुस्तकालय मे सम्भवत· तीन हजार पुस्तके थी, एक अनुपम व्यक्ति माना जाता था । यहां के लोग, इगलैण्ड के सामन्त-वर्ग के समान ही सुख का जीवन वसर किया करते थे । उन्हे खाने-पीने, सुन्दर आयातित वस्त्र पहनने तथा वाहर से मगाये गये उत्तम फर्नीचर को प्रयोग मे लाने का शौक था, किन्तु उनके जीवन में उस हद तक परिष्करण नही था, जितना कि इतिहासकार वताते है । उनके मकान आश्चर्यजनक रूप से छोटे थे । उनकी लम्वी-चौड़ी भूमि योरुप के लोगों को 'विखरी-विखरी और अव्यवस्थित लगती थी—समय और स्थान दोनो के लिहाज़ से करीव-क़रीव जगल सी । जहां तक भावनाओं और व्यापार का सम्वन्ध है, वे अपने मातृ-देश (इगलैण्ड) के अधिक निकट थे । उनकी वोली मैसाचुसटेस की अपेक्षा इगलैण्ड की भाषा के ज्यादा नज़दीक थी । (कहा जाता था कि मैसाचूसेट्स

के लोग अपने बच्चों को नीग्रो-दासों की अस्पष्ट बोली सीखने की खुली छुट्टी दे देते थे)। किन्तु अन्य बातों में अठारहवी शताब्दी के मध्य का वर्जीनिया अपने आप मे एक अलग ससार था जो योरुप अथवा शहरी सस्कृति के किसी भी नमूने से बहुत भिन्न था। एक वार मजाक में युवा वाशिगटन ने विलियम्जबर्ग को बड़ी राजधानी कह दिया था। उन्होने लन्दन के विषय में भी यही, शब्द प्रयुक्त किये थे, किन्तु उस वड़े नगर की तो अलग बात रही विलियम्जबर्ग उन दिनों बोस्टन अथवा फिलेडैल्फिया के मुकावले मे भी एक छोटा सा कस्बा ही था। उस समय वर्जीनिया मे केवल विलियम्जबर्ग, यार्कटाऊन, हेम्पटन और नारफौक ही बड़ी आबादी के कस्वे थे। अन्य कस्बो मे भी आबादी धीरे-धीरे वढ़ती जा रही थी। इस प्रकार वर्जीनिया एक देहाती उपनिवेश था, जिसमें रहने वाले लोगों की रुचिया ग्रामीणो की सी थी। यद्यपि यह वृहदाकार और वैभवयुक्त उपनिवेश था, इसके जीवन की इकाइयां—वागान, पादरी-क्षेत्र, 'काउण्टी'—उसके अपने ढंग पर ही थीं। सविधान-सभा के सदस्य जो विलियम्जबर्ग में सभा की वैठको में शरीक होने के लिये आया करते थे, प्रायः इस कस्बे के सीमित और उत्तेजना-पूर्ण जीवन का आनन्द उठाया करते थे। यहां उन्हें नृत्य देखने को मिलते थे, वे शाम के खाने की दावतें उड़ाते, ताश खेलते और रग-मंच के मजे लूटते। यहा के बहुत साधारण किसान जो आबादी का मुख्य अंश थे, उनकी बात तो दूर रही, वर्जीनिया के बागान के मालिक भी ग्रामीण ही थे। वे अपने अपने कार्यो में व्यस्त रहने वाले जमीदार और स्थानीय सरदार थे।

प्रत्येक वर्जीनिया-वासी भूमि मे अत्यन्त रुचि रखता था। औसत दर्जे का खेतिहर कई भू-भागों का स्वामी हुआ करता था। किसी भू-खण्ड को वह यदि स्वय जोतता और उसमें फसल वोता जो मुख्यतया तम्बाकू हुआ करती तो अन्य खण्डों को वह खेती के लिये लगान पर दे दिया करता था। जो उसके अन्य खण्ड पश्चिमी क्षेत्रो में होते, वह उन्हे लगान पर देने की वजाए, जंगली दशा मे

ही छोड़े रखता। हा, जब कोई उन्हे अनधिकृत रूप से घेर लेता, तो और बात थी। भूमि पर ही उसकी समृद्धि निर्भर थी। उसका एव उसके परिवार का भविष्य इस बात पर था कि वह अधिकाधिक भूमि का अधिग्रहण करता चला जाय। वर्जीनिया के बड़े आदमी—नोमिनी के राबर्ट कार्टर सरीखे—अपनी सम्पति दस हज़ार एकड़ के हिसाब (पैमाने) से आका करते थे।

उस समय से सौ वर्ष बाद लोग सोना पाने की आशा से कैलिफोर्निया की तरफ खिचे चले गये। यह सनक बुखार की मानिद थी जो अचानक उन के सिर पर सवार हुई, और होते-होते इसने उग्र रूप धारण कर लिया। वर्जीनिया-वासियो पर अधिकाधिक भूमि हथियाने का ज्वर यद्यपि इतना शीघ्र नही चढ़ा था, किन्तु इसके प्रभाव उतने ही जोरदार थे। और इसमे कोई आश्चर्य की बात भी नही, क्योकि उस समय पश्चिम की ओर बहुत मात्रा मे भूमि उपलब्ध थी और वर्जीनिया के (अथवा मेरीलैण्ड और पैनसिलवेनिया के) अपने प्रतिद्वन्द्वियों को छोड कर, इसके केवल दो ही दावेदार थे—फ्रासीसी और आदिवासी इण्डियन लोग।

वर्जीनिया के भूमि-प्रेम मे कभी-कभी अतिव्ययता और असावधानी भी देखी जाती थी। वहा के कृषक भूमि जोतते थे और इस बात का भी ज्ञान रखते थे कि इसे जोतने के क्या तरीके हैं, किन्तु उनमें योरोपीय किसानों जैसी छोटी-छोटी बातो मे मितव्ययता न थी। यदि तम्बाकू से भूमि की उपजाऊ-शक्ति क्षीण होती थी, जैसी कि निश्चय से हुआ ही करती थी, तो उन्हे खेद तो होता ही था, किन्तु वे अन्यत्र नयी जमीन लेकर अपनी और जागीर बना लेते। इस प्रकार हर वर्जीनिया-वासी का यह स्वप्न हुआ करता था—ऐसा स्वप्न जिसकी खातिर उसे मुकदमे लड़ने पड़ते थे, प्रतिद्वन्द्विता बर्दाश्त करनी पड़ती थी और अशान्त, उद्विग्न जीवन व्यतीत करना पड़ता था। इसके साथ उसे चेतावनियों, विपदाओ तथा व्यवहार में असभ्यता का मुकावला

करना पड़ता था। यह सब होते हुए भी भूमि-प्राप्ति उसका एक प्रकार का आदर्श था। अग्रेजी शब्द 'स्पैकूलेशन' का मूलरूप से यह अर्थ होता था--'किसी असूर्त समस्या पर गहरे ढंग से विचार करना।' बाद मे (आक्सफोर्ड कोष के अनुसार सन् १७७४ में) इसका प्रयोग एक दूसरे अर्थ को प्रकट करने के लिए होने लगा। तब से इस शब्द का यह अर्थ हुआ—किसी व्यावसायिक कार्य अथवा साहसिक या खतरेवाले सौदे मे अपनी शक्ति लगाना, जिस मे बहुत बडे लाभ की आशा हो।' इस अर्थ से वर्जीनिया के सावधान खेतिहर के सही दृष्टिकोण का उपयुक्त विवरण मिलता है। किन्तु इस प्रकार के दृष्टिकोण से यह अन्दाजा नही लगना चाहिये कि वे लोग रुपये-पैसे से अपेक्षतया अधिक बुनियादी समस्याओ की, समय आने और आवश्यकता पड़ने पर, कभी सोचा ही नही करते थे। हर वह व्यक्ति जो बड़े लाभ की लालसा रखता था, तर्क-वितर्क करना और (कोई अन्याय होने पर) विरोध प्रगट करना जानता था।

बागान के मालिकों के आमोद-प्रमोद स्वाभाविक रूप से उनके दनिक जीवन से मेल खाते थे। उन्हे कई घण्टो तक लगातार घुड़-सवारी करनी पड़ती थी, इसलिये उन्होने इसे अपने मनोरजन का रूप दिया। कर्नल विलियम बर्ड के शब्दों में—'मेरे प्रिय देश-वासी घुड-सवारी के इतने अधिक शौकीन है कि वे अक्सर सवारी की खातिर दो-दो मील चल कर घोड़ा पकडने जाते है।' बागान के स्वामी घुड-दौड़ के मुकावले देखते और उन पर बाजी लगाया करते। उन्हे लोमडियों और जगली जानवरो का शिकार करने में रुचि थी। कभी कभी वे निर्दयतापूर्वक मुर्गों की लड़ाई करवाते और उन पर दाव लगाया करते थे। इस प्रकार यहां का जीवन शक्तिदायी भी था और किसी हद तक क्रूरतापूर्ण भी। इस से जहा उन मे निर्दयता की भावनाएं उत्तेजित होती थी, वहां पर्याप्त मात्रा मे साहस भी पनपता था। अन्य उपनिवेशो के समान ही यहा इण्डियनो की खोपड़ियो के लिये पारितोषिक मिलते थे।

यहा की दण्ड-संहिता, यद्यपि अधिकांश मे इगलैण्ड के दण्ड-विधान से अधिक क्रूरतापूर्ण नही थी, तो भी इसके मातहत मुकदमो के निर्णय बिना विलम्ब के हो सकते थे—विशेषरूप से नीग्रो-जातियों के लिये, जिन्हे गम्भीर अपराधो के लिये फांसी पर चढ़ा दिया जाता था अथवा यहा तक कि जिन्दा भी जला दिया जाता था।

वर्जीनिया के प्रभाव

यह तरुण वाशिगटन का वर्जीनिया था। उसकी शिक्षा इस उपनिवेश की आवश्यकताओ के अनुरूप हुई थी। यह अचूक निशानाबाज और उत्तम घुड़सवार था। इन दोनो बातो मे उसे अपनी उमर के युवकों मे, एकदम से, सर्वश्रेष्ठ गिना गया। उसका कद लम्बा था और शरीर दृढ और गठा हुआ। अपनी आदतो में वह चुस्त और फुर्तीला था। उसने कभी अपना सन्तुलन नही खोया। यह सत्य है कि हमारे पास कोई ऐसा प्रमाण नही जो यह जाहिर कर सके कि उस पर अपनी माता का कोई परिस्कारात्मक संस्कार पड़ा। यद्यपि उसकी माता के तारीफ के पुल बाधे जाते है, वह एक सकीर्ण-हृदय, कुढने-झकने वाली, कल्पना-शक्ति-रहित स्त्री मालूम होती है। बाद के सालों मे जार्ज महोदय उसका सन्मान तो अवश्य करते रहे, किन्तु इस समादर के साथ वह प्रेम की अधिक उष्णता न जोड़ सके। हमे उस महिला का एक ही विधेयात्मक कार्य मालूम पड़ता है और वह था उस सुझाव पर अमल न होने देना कि जिस में किशोर जार्ज का समुद्र पर 'मिडशिपमेन' के रूप मे भेजने की बात सोची गई थी। सम्भवतः इसी मे ही बुद्धिमता थी।

सौभाग्य से उस परिवार मे अन्य लोग भी थे, जिनका वाशिगटन पर प्रभाव पड़ा। इनमे हम विशेष रूप से उनके सौतेले भाई, लारैन्स, का उल्लेख कर सकते है। लारैन्स जार्ज से चौदह वर्ष बड़ा था और उसका सच्चा हितैषी बन्धु था। उसने इंगलैण्ड मे शिक्षा ग्रहण की थी। उसका रग-रूप आकर्षक था और वह व्यवहार-कुशल था। वह जार्ज के लिए दिवंगत पिता का अभिमत स्थानापन्न था। जब वाशिगटन

आठ वर्ष का था, तो लारैन्स अमरीकियों के नव-निर्मित दस्ते में कप्तान होकर वैस्ट इण्डीज गया था। (जिन चार वर्जीनियों को कप्तान बनने का सम्मान मिला था, उनमे से लारैन्स भी था।) वैस्ट इण्डीज पहुँच कर उसे कार्टेजना के स्पेनियो के विरुद्ध एडमिरल वर्नन के साथ मोर्चा लेना था। दुर्भाग्य की बात कि वर्नन की इस चढाई मे बुरी तरह हार हुई और उसे भारी हानि उठानी पड़ी। यद्यपि इसमें उसका कोई दोष न था। अमरीकी दस्तों के बहुत से सैनिक पीले ज्वर से ग्रस्त होकर मौत की भेट हुए। वचे-खुचे लोगो मे लारैन्स भी था, परन्तु वह पहले ही घर लौट आया था। वापस आकर उसने आधे वेतन पर सरकारी सेवा से निवृत्ति हासिल की। बाद मे उसने वर्जीनिया के 'एडजूटैण्ट जनरल' के पद के लिये प्रार्थना-पत्र-भेजा, जो स्वीकृत हुआ। फलत. उसे इस पद पर नियुक्त किया गया। इस प्रकार यदि हम यह जानना चाहे कि तरुण वाशिगटन पर निर्माणकारी प्रभाव क्या-क्या पडे, तो स्पष्ट है कि इस समय उस पर जो सस्कार पड़े, वे सैनिक-जीवन से सम्बन्धित थे। भले ही उसका सौतेला भाई यश-कीर्ति प्राप्त न कर सका हो, इस मे सन्देह नही कि उसने उस शानदार और साहसिक चढ़ाई मे अपना दायित्व बड़ी खूबी के साथ निभाया था। लारैन्स एडमिरल का अत्यधिक प्रशसक था---यहाँ तक कि उसने अपनी हटिग क्रीक की जागीर का नाम ही माऊंट वर्नन रख लिया और वहाँ जो भवन उसने बनवाया, उसमे वर्नन का चित्र टाँगा।

लारैन्स के कारण वाशिगटन पर जो दूसरा प्रभाव पड़ा, वह सामाजिक था। सन् १७४३ मे अर्थात् उसी वर्ष जिसमें कि उसके पिता का देहान्त हुआ था, लारैन्स ने अपनी आकाक्षा के अनुकूल कन्या से विवाह कर लिया। दुल्हन का नाम एनी फेयरफैक्स था। यह माऊंट वर्नन के करीब ही बैलवायर जागीर के समृद्ध मालिक कर्नल वर्नन विलियम फेयरफैक्स, की लड़की थी। कर्नल फेयरफैक्स वर्जीनिया के रईस थे। इस विवाह से प्रतिष्ठित होने के कारण लारैन्स वर्जीनिया की विधान-सभा के उच्च-सदन अर्थात् कौसिल का

सदस्य बना। इस कौंसिल मे वर्जीनिया के बारह प्रतिष्ठित व्यक्ति थे, जो इस उपनिवेश के अग्रणी माने जाते थे। जार्ज के विकास मे लारैन्स के जरिये फेयरफेक्स परिवार का बहुत महत्वपूर्ण हाथ रहा। जब वह सोलह वर्ष का हुआ तो वह अधिकतर माऊट वर्नन ही रहने लगा। इन लोगो की सगति से उसने विलियर्डस, हिस्ट और लू जैसे खेलों को खेलना सीखा। उसे नृत्य की भी शिक्षा मिली।

इस समय पहली वार उसने कुछ तो दिल्लगी मे और कुछ उत्सुकता पूर्वक लड़कियो की ओर ध्यान देना आरम्भ किया। उसकी चिट्ठियाँ तथा वृद्ध-पत्रों मे 'निम्नतल भूमि की सुन्दरी' तथा अन्य ध्यान आर्कषित करने वाली युवतियों का उत्सुकतापूर्वक एवं व्यंग्य से उल्लेख मिलता है। उसकी जीवनी पर कलम उठाने वालो ने इन उल्लेखों पर पर्याप्त टीका-टिप्पणी की है। उन्होने उन परिस्थितियो का भी वर्णन किया है, जिनके कारण वह अपनी आयु के बीसवे वर्ष मे बैट्सी फाटलेरोय का, जिस पर वह जी-जान से आसक्त था, प्रेम पाने में असफल रहा। इस प्रकार के उल्लेखों में एक विचित्र आकर्पण है—अशतः इसलिए कि इन से तरुण वाशिंगटन एक भेद्य मानव प्रतीत होता है और अशतः इसलिये कि जिन व्यक्तियों का उनमें जिक्र है, वे छाया-मात्र ही है। यह होते हुए भी हमारे पास यह सिद्ध करने के लिये कोई पर्याप्त साक्ष्य नही कि जार्ज प्रेम-विषयक मामलों में असाधारण रूप से अनाड़ी था। हो सकता है कि उसे असफलताओ का मुँह इसलिये देखना पड़ा कि उसका स्वभाव गम्भीर था। वह हसी-मजाक से कोसो दूर रहा करता था और अभी अपरिपक्व अवस्था में था। तो क्या वह अपने स्थानीय प्रतिद्वन्द्वियो से किन्ही बातो में भिन्न था? नही कहा जा सकता कि सचाई क्या थी। इस विषय मे हम केवल कयासी घोड़े ही दौड़ा सकते है।

एक प्रासांगिक, किन्तु (समझ मे न आने के कारण) कष्टकर समस्या सैराह (सैली) केरी के कारण खड़ी होती है। यह कर्नल विल्सन केरी की लड़की थी, जिसकी हैम्पटन के समीप ही, जेम्ज

नदी के किनारे, अपनी जागीर थी। दिसम्बर १७४८ मे अठारह वरस की आयु मे उसने जार्ज विलियम के साथ, जो कर्नल फेयरफैक्स का सबसे बड़ा लडका था, शादी की। वैल्वायर को उसने अपना निवास-स्थान बनाया। उसका पति एक उत्तम स्वभाव का युवक था। जार्ज वाशिगटन उसे अपने मित्रों मे शुमार करता था, यद्यपि कुछ मास पूर्व उसने अपनी डायरी में विनीत-भाव से 'श्री फेयरफैक्स' लिख कर उसका उल्लेख किया था। इस विवाह के उपरान्त जार्ज को अनेक वर्षो तक सैली को बहुत नजदीक से जानने के अवसर प्राप्त हुए। कभी-कभी वह उसे चिट्ठियां भी लिखा करता। यह भी सम्भव है कि वह उससे प्रेम करने लगा हो। उसने जो सैली के नाम पत्र लिखे, उनसे सिद्ध होता है कि वह निस्सन्देह उसे बहुत चाहता था और उससे मैत्री बनाए रखने को वह काफी महत्त्व देता था। उन पत्रो से यह भी जाहिर होता है कि इन बातो के बावजूद वह उससे बिल्कुल घुल-मिल नही सका था। सैली ने वाशिगटन को जो थोड़े से पत्र लिखे, उनसे पता चलता है कि सैली अपनी प्रशंसा से फूले नहीं समाती थी और हल्की क्रीड़ामय बातचीत तथा चोचलेपन मे कोई बडा भेद नही मानती थी। क्या हम इससे यह अनुमान लगाएं कि वह उससे वास्तव मे प्रेम करता था? हमारे पास इस सम्बन्ध में जो साक्ष्य है वह इतना अधूरा है कि हमे इस विषय मे कुछ कहने का साहस नही होता। पर यदि यह सत्य है तो हम लगभग निश्चय से कह सकते है कि उनके पारस्परिक सम्बन्ध भावना तक सीमित रहे और व्यक्तिगत रूप से उन्हे आहत करते रहे।

कुछ भी हो, निस्सन्देह उस महिला ने, युवक फेयरफेक्स लारैन्स और एनी फेयरफेक्स ने जार्ज को सुखद और विशेषाधिकारात्मक जीवन की झाकी दी। यदि उसके व्यवहार मे कुछ भद्दापन था, तो भी वह सह्य था, क्योकि आखिर वह छोटा पुत्र ही तो था। और वह भी सौतेला पुत्र। उसके सम्बन्ध उपयोगी थे और उसे रुपये-पैसे की कोई कमी नही थी। लारैन्स और आगस्टीन

के साथ रहते हुए उसकी दशा सिडरैला जैसी नही थी, जिसे अपनी कुरूपा बहनों के साथ समय काटना पड़ा था। किन्तु यह उसने अवश्य अनुभव किया होगा कि उसे आखिर अपने पैरो पर खड़े होना है, अथवा कम से कम उन सब अवसरों का लाभ उठाना है, जो उसके जीवन मे आएं। अन्ततोगत्वा एवं दैवयोग से उसकी स्थिति इस प्रकार बनी कि उसका कदम आगे बढ़ता ही गया। उसके साथ तुलना करने पर फेयरफेक्स सन्तान कुछ कुछ बिगड़ी हुई लगती है—जिस प्रकार कि जार्ज के अपने सौतेले बेटे और उसकी सन्तान आगे चल कर हुई। यद्यपि उसे अभाव के कारण होने वाले कष्टों का वास्तविक अनुभव नही हो सका, तथापि वह इन से भलीभाति परिचित था। अतः उसकी महत्वाकांक्षा दबने की अपेक्षा अधिक उभरती गई। यही कारण है कि उसने सन् १७५५ में निम्न परामर्श अपने छोटे भाइयो में से एक को दिया:—

"मुझे यह जान कर खुशी होगी कि तुम बैल्वायर मे परिवार के अन्य सदस्यो के साथ घुल-मिल कर तथा मित्रतापूर्वक रह रहे हो, क्योंकि वे चाहे तो हमारे लिये, जो अभी तरुण और जीवन की आरम्भिक अवस्था मे है, अनेक मौकों पर अत्यन्त उपयोगी हो सकते है। मै तुम्हे यह सलाह दूगा कि तुम इससे भी एक कदम आगे बढ़ो और उन्हे अक्सर मिलते रहा करो।"

तरुण जार्ज पर लारेन्स और फेयरफेक्स परिवार के तीसरे प्रकार के प्रभाव भी पडे। इन्हे हम प्रदेशीय प्रभाव कह सकते है। सन् १७५० मे वर्जीनिया के एक नेता ने प्रदेश के व्यापार-बोर्ड को स्मरण कराया था कि इस उपनिवेश के पश्चिम की ओर के भूमि-अधिकार 'कैलीफोर्निया' को मिला कर 'दक्षिणी समुद्र' (अर्थात प्रशान्त महासागर) तक चले गये है। यह एक बहुत बडा दावा था—साथ ही साथ अनिश्चित भी। खासतौर पर यह इसलिये कि कुछ ही वर्ष पूर्व बालक जार्ज ने अपनी स्कूल की कापी मे आईस-लैण्ड, ग्रीनलैण्ड, बार्बेडोज और अवशिष्ट कैरिबी द्वीपो इत्यादि के साथ 'कैलीफोर्निया' को उत्तरी अमेरिका का

एक 'प्रमुख द्वीप' करके लिखा था। प्रत्येक महत्त्वाकांक्षी वर्जीनिया वासी इस वात को किंचित् स्पष्ट रूप से जानता था कि पश्चिम की ओर ब्लूरिज पर्वत हैं। उनके आगे शैननडोह् की उपजाऊ धरती थी और समानान्तर रेखा पर एलेघनीज की आड़ सी थी। शैननडोह् के निम्नतर भाग के पश्चिमोत्तर में ओहियो घाटी की विवादास्पद भूमि थी जो मिसिसिपी नदी के विस्तृत क्षेत्र तक चली जाती थी। यह समस्त भूमि हर वर्जीनिया-वासी के लिये— उसके बच्चों और वच्चों के वच्चों के लिये—भरपूर पुरस्कार के रूप में थी और इसलिए कोई भी उपनिवेश-वासी उसे छोड़ना नहीं चाहता था। वह हर उपाय और हर साधन से अपने दावे को वलपूर्वक प्रस्तुत किया करता था।

सन् १७४४ में वर्जीनिया, मेरीलैण्ड तथा आइरोक्विस प्रसंधान के इण्डियनों के वीच एक समझौता हुआ। इस के अनुसार गोरे लोगों के वसने के लिये एलघनीस के क्षेत्र को पश्चिमी सीमा के रूप मे स्वीकार किया गया। उससे पूर्व इण्डियन ब्लूरिज को ही गोरों की सीमा मानते थे। इस प्रकार गोरी वस्तियों के लिये शैननडोह् घाटी भी खुल गई। कुछ ही मास अनन्तर लन्दन में प्रीवी कौंसिल ने एक मामले पर ऐसा निर्णय दिया जो चार्ल्स द्वितीय के पचनवे वर्ष पहले के कमजोर वायदे को सम्पुष्ट करता था। जव चार्ल्स राजगद्दी पर वैठा था, उस समय उसका एक भाग्यशाली अनुयायी 'नार्दरन नैक' का मालिक वना था। सन् १७४४ मे यह भू-भाग थामस लार्ड फेयरफेक्स के विरसे में आया। प्रीवी कौंसिल ने भूमि-अधिकारों और सीमाओं के पुराने झगड़ों को उसके हक मे तय किया। परिणामतः उसकी जागीर पुनः निर्धारित हुई। उसका नतीजा यह हुआ कि पोटोमैक नदी के ऊपर वाले भाग और रैपाहैन्नोक नदी के मध्य का वहुत वडा क्षेत्र उसे मिलकीयत मे मिला।

कर्नल फेयरफेक्स जो लार्ड फेयरफेक्स के चचेरे भाई थे, लार्ड फेयरफेक्स के कारिंदे के रूप में कार्य कर रहे थे और इस प्रकार

पर्याप्त सत्ता इनके हाथों में आ गई थी। मालिक क्षुद्रबुद्धि एवं सदेहशील व्यक्ति था। उसने जार्ज की इतनी सहायता नही की जितनी कि प्रायः समझी जाती है। परन्तु उसके बारे में अनेकों काल्पनिक बाते प्रचलित थी। इसलिये जब सन् १७४८ मे वह वर्जीनिया में अपनी सम्पत्ति की देख-रेख के लिए आया तो लोगो मे जो उत्तेजना और उत्साह पैदा हुआ होगा, उसका हम अनुमान कर सकते है।

लार्ड फेयरफेक्स आरम्भ में बैल्वायर आ कर रहा। उस समय तक लारैन्स तथा अन्य सट्टा करनेवाले व्यक्तियों ने 'ओहियो कम्पनी' की नीव डाल ली थी। इस कम्पनी का उद्देश्य यह था कि पोटोमेक नदी के ऊपरी भाग वाले क्षेत्र मे बहुत बड़े इलाके को विकसित किया जाय। यह इलाका उन्हे अनुदान में मिला था। इस प्रकार वर्जीनिया की सीमा (धीरे-धीरे) आगे वढ़ती जा रही थी। इसके अलावा उन्ही दिनों एक और साहसिक समुदाय ने 'लायल कम्पनी' बना कर इससे भी कही अधिक महत्वाकाक्षी विकास-योजना का सूत्र-पात किया।

इन विशाल प्रदेशीय परियोजनाओं तथा तरुण वाशिगटन के आरम्भिक जीवन-व्यवसाय का आपसी सम्बन्ध स्पष्ट है। चूंकि भूमि का इतना बड़ा महत्त्व था, इस कारण वाशिगटन का पहला व्यवसाय एक भूमापक के रूप में शुरू हुआ। शायद लारेन्स की भी इसमें किसी हद तक जिम्मेदारी थी। वह यद्यपि जार्ज पर अपनी कृपा-दृष्टि रखता था, किन्तु उसने उसे ठाठ-बाट का जीवन बिताने की शिक्षा नही दी थी। सम्भव है कि लारैन्स ने जार्ज को समुद्री-व्यवसाय अपनाने की सलाह दी हो, किन्तु उसके चाचा इस सलाह के विरुद्ध थे, क्योंकि उनके विचार में यह कोई शोभनीय पेशा नही था। न ही, उनकी नजरों मे, इसमे 'उन्नति' के अधिक अवसर थे। अतः उसके इस चुनाव के लिए हमे किन्ही लम्बी-चौड़ी व्याख्याओं की आवश्यकता प्रतीत नही होती। सम्भवतः वर्जीनिया उपनिवेश मे प्रत्येक बागान-स्वामी भूमिति के बारे में जानकारी उपलब्ध करता

था और जार्ज की तरह उसे भी छोटी उम्र में ही भूमि की बिक्री के बिल, न्यायवादी-नियुक्ति-पत्र एवं वचन-पत्र का प्रारूप लिखना सिखाया जाता था।

जब जार्ज सोलह वर्ष का हुआ, तो उसे भूमिति का इतना ज्ञान हो गया कि वह रेखांकण कार्य में सहायता कर सके। चुनाचे सन् १७४८ मे उसने फेयरफैक्स दल के साथ शैननडोह प्रदेश में जाकर भूमिति कार्य में सहायता की। वह 'ब्यूरिज' के पार की उसकी पहली यात्रा थी। अगले वर्ष उसे उप-भूमापक के पद पर नियुक्त कर दिया गया। उसका काम यह था कि माऊंट वर्नन के उत्तर मे कुछ ही मील दूर पोटोमैक नदी पर बैलहैवन (जिसे बाद में अलैक्जैण्डरिया का नाम दिया गया) नगर के नक्शे तैयार करे। लारैन्स अलैक्जैण्डरिया के न्यासियों मे से था। इस प्रकार जार्ज को पहले पहल पारिवारिक संरक्षण मे ही कार्य करना पड़ा। तुरन्त बाद वह 'कलपैपर' काउंटी का भूमापक नियुक्त हो गया। जैसे-जैसे वह उत्तरीय वर्जीनिया के इलाकों में भूमिति-कार्य करता चला गया, वैसे ही उसका व्यवसाय छोटे पैमाने पर जोरो से बढ़ता गया। सन् १७५० के अन्त तक इस अठारह वर्षीय भूमापक ने शैननडोह नदी के निचले भाग के क्षेत्र में तीन खण्डो पर अपने अध्यवसाय से मालिक के अधिकार प्राप्त कर लिये। यह तीनों खण्ड मिला कर १४५० एकड़ भूमि बनती थी। चूंकि फेरी-फार्म उसे कुछ ही दिनो में उत्तराधिकार मे मिलने वाला था, अत वह अपने भावी जीवन के विषय मे किंचित् सतोष की सांस ले सकता था। चाहे वह बौद्धिक दृष्टि से प्रतिभावान नही भी था और चाहे कोई बड़ी सम्पत्ति उसे विरसे में मिली नहीं थी, यह स्पष्ट है कि वह उद्योगी, विश्वसनीय और किफयातशार था।

सन् १७५१ के अन्त में उसके स्थायी रूप से चलने वाले दैनिक कार्यक्रम मे बाधा उपस्थित हुई। लारैन्स वाशिंगटन के प्रथम तीन बच्चे मौत की गोदी में सो चुके थे और वह स्वय खांसी से बहुत तंग था। खांसी का जोर दिनों दिन बढ़ता जा रहा था। निराश

होकर उसने बारबडीस जाने का निश्चय किया। उसे यह आशा थी कि अतीव्र जलवायु से उसे शीघ्र स्वास्थ्य-प्राप्ति होगी। लारैन्स की पत्नी को विवश हो कर अपने चौथे बच्चे के साथ घर पर ही रुकना पडा। अतः जार्ज लारैन्स के साथ गया। यह उसकी महाद्वीप अमेरिका से बाहर की पहली यात्रा थी। लारैन्स का यह परीक्षण असफल रहा। उसके स्वास्थ्य में तिल भर भी सुधार न हुआ, बल्कि दुर्भाग्य से जार्ज चेचक रोग से ग्रस्त हो गया। जब उसका बीमारी से पीछा छूटा, तो वह अकेला वर्जीनिया लौट आया। उसने आ कर शोकप्रद सूचना दी कि लारैन्स की तबियत पहले से अधिक बिगड़ गई है और इलाज की तलाश मे शायद वह आगे बरमूडा जाय। इस बीच मे उसने फिर अपने भूमिति-कार्य को शुरू कर दिया। कुछ समय बाद उसने शैननडोह क्षेत्र मे एक और टुकड़ा मोल लिया, जिससे कि कुल मिला कर उसके पास दो हजार एकड़ भूमि हो गई।

किन्तु कुछ एक अन्य कारणों से सन् १७५२ का वर्ष, वाशिंगटन परिवार के लिये क्लेशपूर्ण रहा। जार्ज को प्लूरिसी हो गयी। कुमारी फांटलेराम से उसका विवाह तय नही हो सका। ग्रीष्म ऋतु में लारैन्स बरमूडा से वापस लौटा और कुछ ही समय बाद तपेदिक से उसकी मृत्यु हो गई। ऐसा लगता था कि मानों मृत्यु मानुषी दावों पर हस रही है।

इन दैवी विपदाओं के बीच एक दो बाते ऐसी भी थी जिनसे परिवार के लोगों को अप्रत्याशित रूप से सान्त्वना मिली। एक तो लारैन्स के वसीयत-नामे से और दूसरे उसके द्वारा निर्दिष्ट मार्गो पर चलने के अवसर। भाई के वसीयत-नामे की शर्तों के मुताबिक श्रीमती लारैन्स को जीवन-पर्यन्त प्रयोग के लिये, माऊट वर्नन की जायदाद मिली। यह इसलिये कि वह लारैन्स के अवशिष्ट बालक की मां होने से उसकी न्यासधारिणी थी। दूसरी शर्त यह थी कि यदि बालक निःसन्तान संसार से चल बसे, तो माऊंट वर्नन जार्ज की सम्पत्ति समझा जाय। विधवा के मरने पर जार्ज को

लारैन्स की फेयरफैक्स काउंटी वाली जायदाद भी हस्तान्तरित हो जाय। इस वसीयत-नामे की शर्तें, जहाँ तक जार्ज का सम्बन्ध था, निस्सन्देह काफी उदार थी।

एनी फेयरफेक्स का अवशिष्ट बालक ज्यादा देर जिन्दा नही रह सका। वह भी अपने अन्य भाइयों की तरह शीघ्र मृत्यु का ग्रास बना और दफनाया गया।

लारैन्स की मृत्यु से वर्जीनिया के मिलिशिया एडजूटैंट का स्थान रिक्त हो गया। जार्ज ने इस स्थान के लिये प्रार्थना-पत्र भेजा, जो मन्जूर हो गया। सन् १७५३ में वाशिगटन वालिग हो गया। उस समय उसकी आर्थिक दशा अच्छी और मजबूत थी। उसने फ्रैडरिक्सबर्ग के नये 'फ्रीमैसन' भवन मे अपना नाम सदस्यों मे दर्ज कराया। काऊटी का भूमापक होने की हैसियत मे उसे वर्ष-भर में पच्चास पौण्ड की वृत्ति मिलती थी। उसे अपने व्यवसाय से अच्छी-खासी आमदनी हो रही थी। शैननडोह की दो हजार एकड़ की जायदाद के अतिरिक्त उसे उत्तराधिकार मे जो भूमि मिली वह सब मिलाकर चार हजार एकड़ थी। एडजूटैंट होने के नाते उसे सौ पौड वेतन के रूप में और प्राप्त हो जाते थे। इसके साथ ही उसे 'मिलिशिया' मे मेजर के पद से प्रतिष्ठित किया गया। थोड़े ही समय बाद उसने अपनी बड़ी भौजाई से माऊंट वर्नन किराये पर ले लिया और फेरीफैक्स की बजाए उसे अपना निवास-स्थान बनाया। तब से लेकर मृत्युपर्यन्त वह इसी घर मे रहा। कुछ काल के अनन्तर उसने इसे खरीद लिया। लगभग चालीस वर्ष तक यही स्थान उसका केन्द्र-बिन्दु बना रहा। उसकी गृह-सम्बन्धी सुरक्षा की सम्पूर्णता के लिए अब उसकी एक ही आवश्यकता थी—केवल एक धर्म-पत्नी।

तरुण-सैनिक

किन्तु कुछ समय के लिए उसे पत्नी की तलाश को स्थगित करना पड़ा। यह बागान का युवा स्वामी एक और स्वप्न में खो गया। वह स्वप्न था एक सैनिक योद्धा के रूप मे नाम पैदा करना।

वाशिंगटन के जीवन की यह धारा इस ओर पांच वर्षों तक बहती रही। यह उचित लगता है कि इसे कुछ विस्तार से कहा जाय।

सर्वप्रथम हम वाशिंगटन के शुरू के सैनिक जीवन की मुख्य-मुख्य घटनाएं सक्षेप से रखेंगे। यह एक प्रकार से उसकी आशातीत सफलता की कहानी है। उसके बाद हम किंचित् गहराई मे जायेंगे और यह देखना चाहेंगे कि उन बातो का उसके चरित्र और आकांक्षाओं पर प्रकाश डालने मे क्या महत्व है।

सन् १७५३ मे ब्रिटेन का उत्तर-अमरीकी-उपनिवेशीय साम्राज्य समुद्र के पूर्वी तट से लेकर एलघनीज की पर्वतमालाओ तक फैला हुआ था। इन पर्वतमालाओं के दूसरी ओर फ्रास था, जिसके साथ ब्रिटेन अर्ध-शताब्दी से लगातार लडता आ रहा था। फ्रांस का अमरीकी साम्राज्य ब्रिटिश साम्राज्य के उत्तर और पश्चिम में घेरती हुई विशाल चाप के आकार में था। यह चाप सेंट लारैन्स नदी के ऊपरी भाग से होती हुई 'ग्रेट लेक्स' मे से गुजरती थी और मिसिसिपी नदी के निचले भाग को छूती हुई 'न्यू ओरलियन्ज' तक चली जाती थी। यह एक हल्की-पतली चाप थी; पर स्थिति यह थी कि यदि फ्रांस अपने कब्जे मे आये क्षेत्र को सुदृढ बना लेता है, तो वर्जीनिया तथा अन्य उपनिवेश सिमट कर समुद्र-तट तक ही रह जाते है। दूसरी तरफ, यदि ब्रिटेन ओहियो घाटी पर कब्जा कर लेता है, तो चाप टुकड़े-टुकड़े हो जाती है। उस अवस्था मे मिसिसिपी भी फ्रांसीसियो के कब्जे से छीनी जा सकती थी। इस प्रकार कि वर्जीनिया और विशेषकर ओहियो कम्पनी दोनों ही इस सघर्ष मे उलझे हुए थे। कहने के लिए तो फ्रांस और ब्रिटेन मे सन् १७४८ से सन्धि थी, लेकिन वास्तव मे उनमे लड़ाई की आग कभी भी भड़क सकती थी, क्योंकि यह शान्ति नही थी, बल्कि युद्ध-विश्रान्ति थी। हालात को देखते हुए ओहियो कम्पनी ने यह दृढ निश्चय किया कि ओहियो के संगम पर, जहां मोननगहेला और एलघैनी नदिया मिलती है, एक दुर्ग बनाया जाय। उसके जासूसों ने खबर दी कि फ्रासीसी झील एरी के दक्षिण से ओहियो नदी तक मुकाबले मे किलों की एक

शृंखला सी बना रहे है और ये किले प्रैस्क आईल, लेबाफ और सम्भवत: बैननगो और लौग्सटाऊन पर होंगे। (इस खबर से चौक कर) वर्जीनिया के लैफ्टीनैण्ट गवर्नर, रौबर्ट डिनविड्डी ने फ्रांसीसियों को चेतावनी के रूप में एक अन्तिम प्रस्ताव भेजा और उसको लेकर गये मेजर वाशिंगटन।

डिनविड्डी के इस शिष्टतापूर्ण किन्तु दृढ़ शब्दों मे लिखे हुए पत्र को लेकर, फ्रासीसी सेनापति को देने के लिए, वाशिगटन ने १७५३ में अक्तूबर मास में प्रस्थान किया। उन्होने अपने साथ क्रिस्टोफर नाम के एक सुयोग्य, सीमान्त प्रदेश के निवासी को लिया। इसके अलावा उन्होने हालैण्ड के द्विभाषिये बानब्राम और अन्य चार आदमियों को भी लिया। वाशिंगटन को आने-जाने में ढाई महीने लगे। विलियम्जबर्ग लौटने पर जो वह लेवाफ किले से उत्तर मे पत्र लाये, वह मूल-पत्र के समान ही शिष्टतापूर्ण, किन्तु दृढ़ भाषा में लिखा हुआ था।

रास्ते का सफर जोखम का था। मौसम भी खराब था। जाती बार वे नाव मे और घोड़े पर सवार होकर गये। शुरू में वे लोग ओहियो कम्पनी की इस पगडण्डी से गये जिसे जिस्ट साफ कर रहा था। इससे होते हुए वे बीहड़ जगल में घुसे। पोटोमैक नदी को पार करके वे घाटी में आये। वहां से वे उस स्थान पर पहुंचे जहां यौधियोघैनी नदी मौननगहेला नदी में विलीन हो जाती है। तत्पश्चात् वे ओहियो सगम के बिल्कुल ही पास इण्डियनों की बस्ती, शन्नोपिन, मे पहुंचे। उसके बाद वे लौग्सटाऊन और वैननगो गए और वहां से लेवाफ पहुंच गये जो झील एरी के किनारे पर स्थित था। वाशिगटन के लिए हर वस्तु नई-नई थी—वनाच्छादित तथा टूटा-फूटा भू-भाग; इण्डियनों के भिन्न-भिन्न रहन-सहन के ढंग और आदतें; विनीत, किन्तु जिद्दी फ्रांसीसी, उन्होने 'उन्हें बताया कि उनकी यह निश्चित योजना है कि ओहियो पर पूरी तरह कब्जा जमाया जाय और भगवान ने चाहा तो वे इसे लेकर छोड़ेंगे।'

जिस्ट को साथ लेकर वाशिंगटन शीघ्रता से लौटे। उन्हे इस

लिये बहुत जल्दी थी, क्योंकि वह आकुलता-पूर्ण सूचना शीघ्राति-शीघ्र देना चाहते थे। आती बार मार्ग में उन्हें अत्यधिक कठिनाइयों और भीषण स्थितियों का सामना करना पड़ा। एक इण्डियन ने उन पर बिल्कुल सामने से गोली चलाई। सौभाग्य की बात कि वह निशाना चूक गया। इसलिये कि उसे उनके मार्ग का पता न चले, वे रात-भर सफर करते रहे। दिखावा यह किया कि वे वहां खेमे गाड़ रहे है। दूसरे दिन भी वे पैदल सफर करते रहे। एलघैनी नदी आधी जमी हुई थी। उसे पार करने के लिये उन्हे विशेष प्रकार का बेड़ा बनाना पड़ा। वे लोग नदी पार कर ही रहे थे कि वाशिंगटन उसके तख्ते पर से नदी मे जा गिरे। वह डूबने वाले ही थे कि उन्हे पानी से निकाल लिया गया। नदी मे गिरने के कारण उनके कपड़े पानी में तर-बतर हो गये। इन्ही गीले कपड़ों मे ही उन्हे कडाके की सर्दी में रात गुजारनी पड़ी। विचित्र बात यह हुई कि जार्ज वाशिगटन की बजाय जिस्ट तुषार-ग्रस्त हुआ।

अन्त मे जब वाशिगटन विलियम्जबर्ग वापस लौटे, तो डिनविड्डी के कहने पर उन्होने शीघ्रता-पूर्वक उस यात्रा का विवरण लिखा। डिनविड्डी ने उस विवरण को छपवा लिया। इससे उसका निस्सन्देह अभिप्राय यह था कि सविधान सभा के सदस्यों पर स्थिति की गम्भीरता हृदयांकित की जाय। लन्दन मे इसे तीन विभिन्न प्रकाशनों द्वारा पुन मुद्रित किया गया, जिनमे वाशिगटन को (उनके साहसपूर्ण कार्य के लिए) यथोचित श्रेय दिया गया। सविधान-सभा पर इसका काफी प्रभाव पडा और उसने वाशिंगटन को देने के लिये पचास पौड की रकम स्वीकार की। डिनविड्डी उनका नया पृष्ट-पोपक बना। कहानी है कि वाशिगटन की प्रशंसा करते हुए उसने उन्हे 'बहादुर बेटा' कहा था। मेजर वाशिगटन का सितारा बुलन्दी पर था।

जो घटनाए बाद में हुईं, उनसे यह सिद्ध होता है कि नियति ने उनके लिए उच्च स्थान निश्चित कर रखा था। डिनविड्डी ने ओहियो देश को कब्जे में रखने के लिए आक्रमण की योजना बनाई।

वाशिंगटन को वर्जीनिया की मिलिशिया मे लेफ्टीनैण्ट कर्नल के रूप मे कमीशन देकर उप-सेनापति के लिए चुन लिया गया। जिन दिनों वाशिगटन अपनी सेना की भर्ती मे मसरूफ थे, जिस्ट और ओहियो कम्पनी के दूसरे कारिंदे, विलियम ट्रैण्ट, सीमा पर मोननगेहला नदी के किनारे कम्पनी का गोदाम और सगम पर कम्पनी का एक किला बना रहे थे। ट्रैण्ट को कैप्टन का कमीशन मिला और उसे आदेश मिला कि वह सीमा-प्रान्त निवासियों का एक दस्ता भर्ती करे। लेफ्टीनैण्ट कर्नल वाशिगटन से कहा गया कि वह दो और दस्ते भर्ती करके ट्रैण्ट की सेना को कुमक पहुँचाएं।

वाशिगटन, अप्रैल, १७५४ मे, अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए अलैक्जैण्डरिया से रवाना हो गये। उनके साथ उनके आठ अधीन अफसर थे। (जिनमे वामब्राम भी था जिसे वाशिगटन ने कैप्टन की कमीशन दिला दी थी।) (इनके अलावा उन्होने एक सर्जन, एक स्वीडन देश का 'भद्र स्वय-सेवक' तथा एक सौ पचास आदमी और लिए। तीन सप्ताह के अभिनिर्माण के बाद वे लोग पौटोमैक नदी के ऊपरी भाग मे विल्सक्रीक पर पहुँच गए। (इसी स्थान पर बाद मे कम्बरलैण्ड का दुर्ग बना।) यहाँ आकर यह भयप्रद किवदन्ती सम्पुष्ट हुई कि ट्रैण्ट को ओहियो सगम पर अधिक शक्तिशाली फ्रांसीसी सेना ने खदेड़ दिया है और अब वह पीछे हटता हुआ विल्ज-क्रीक की तरफ ही लौट रहा है। किन्तु जब पड़ौसी इण्डियनो ने दुबारा अपनी वफादारी की घोषणा की, तो इससे प्रोत्साहन पाकर और अपनी उपयोगिता सिद्ध करने के लिए वाशिंगटन ने अपने अफसरो की बात मान ली कि उन्हे मौननगहेला के गोदाम तक आगे बढना ही चाहिए। यदि वे ऐसा करते तो वे ऐसे स्थान पर पहुँच जाते जो ओहियो सगम से कुल चालीस मील दूर है। यह जगह इसलिए सैनिक महत्व की थी, क्योकि फ्रांसीसी वहाँ अपना एक किला बना रहे थे, जिसका नाम उन्होने बाद में ड्यूक्वैने रखा।

अपने निश्चय के अनुसार वे मोननगहेला की ओर धीरे-धीरे बढे। रास्ते मे इस कदर बीहड जगल थे और भूमि-तल इतना

टूटा-फूटा था कि सैनिक-सामग्री को आगे खींचना दुष्कर हो गया। पन्द्रह दिन की अवधि मे वह केवल बीस मील आगे वढ सके। किन्तु उन्होने हिम्मत न हारी और वह ग्रेट मीडोज में से होते हुए लारल माऊटेन तक आगे वढ़ते गये। यहाँ उन्हें जिस्ट मिला जो अपने अभीक्षण से यह सूचना लेकर आया कि फ्रांसीसियों का एक सैन्यदल निकट ही लुका-छिपा हुआ है। दूसरे दिन प्रातः ही वाशिंगटन की उनसे भिड़न्त हुई। किस पक्ष ने सबसे पहले गोली चलाई—यह नही कहा जा सकता। असल वात तो यह है कि दोनों देशों में से किसी को भी गोली चलानी नही चाहिये थी, क्योंकि औपचारिक रूप से उन में अव तक युद्ध की स्थिति नही थी। किन्तु वे युद्ध के इतने निकट थे कि इस प्रश्न पर बहस करना अप्रासंगिक सा जान पड़ता है। तथ्य यह है कि वाशिंगटन के आदमियों ने फ्रांसीसियों पर अकस्मात् धावा बोल दिया और इस अल्पकालीन लड़ाई मे उन्होंने फ्रांसीसियों के छक्के छुड़ा दिये। परिणामतः फ्रांसीसियों के दस सैनिक मारे गये और वीस आदमी वन्दी बना लिये गये। इन मरने वालो मे फ्रांसीसी नेता एम० डी० जुमनविल भी था। वाशिंगटन के इण्डियन सैनिकों ने इन मृतक-सैनिकों में से कइयों की खोपड़ियाँ काट डाली। वाशिंगटन की निजी क्षति अधिक नहीं थी — केवल एक ही आदमी मरा था और दो या तीन आहत हुए थे।

यह घटना मई के अन्त की है। वाशिंगटन ने इन वन्दियो को वर्जीनिया भेज दिया। उन्होने जो कार्य किए थे, उनके लिए उन्हे 'वाह'—'वाह' मिली। चूकि सेना-पति की मृत्यु हो चुकी थी, इसलिए उन्हे अव सम्पूर्ण कर्नल का पद देकर वर्जीनिया के सारे दस्ते का सेना-पति बना दिया गया। जो दस्ते अन्य उपनिवेशो से आकर शामिल होने थे, वे उनके अधीन नही थे। किन्तु एक ही दस्ता अन्य उपनिवेशों से पहुँचा, जिससे कोई ज्यादा फर्क नही पड़ा। सन् १७५४ के जून मास के अन्त तक वाशिंगटन को और बड़ा दायित्व सौप दिया गया। अब वर्जीनिया की मिलिशिया के अतिरिक्त नार्थ कैरोलिना की नियमित स्थायी सेना तथा इण्डियनों के कवीले भी उनके अधीन थे।

वाशिगटन को सूचना मिली कि फ्रांसीसियों ने ड्यूक्वैने के दुर्ग पर भारी संख्या में सेना एकत्र कर ली है और वे शीघ्र ही आक्रमण करने वाले है। रसद की कमी के कारण, इण्डियन सैनिकों के धीरे-धीरे साथ छोड़ जाने के कारण तथा अन्य समस्याओं से खीझ कर उन्होने शीघ्रतापूर्वक अपनी सेना 'ग्रेट मीडोज' के भण्डारागार पर पीछे हटा ली। यह आगार जल्दी-जल्दी बनाया गया था, अतः इसे 'नैसेसिटी' (आवश्यकता) दुर्ग का नाम दिया गया। ३ जुलाई को फ्रांसीसियों ने उस किले को घेर लिया। उस समय तक सब इण्डियन सैनिक वाशिंगटन को छोड़ कर जा चुके थे। जुमनविल के साथ जो युद्ध हुआ था, उसके विपरीत यह लड़ाई लगभग सारा दिन चलती रही और जब तक सघर्ष रहा, जोरो की वर्षा होती रही। फ्रांसीसी निरन्तर गोली चलाते रहे और वाशिंगटन की सेना के अधिकाधिक पास आते गये। 'नैसेसिटी' का किला सेना की रक्षा नही कर सका। वाशिगटन के आदमियों की गम्भीर क्षति हुई। उनके मवेशी और घोडे शत्रु की गोलियों के शिकार हुए। उपनिवेशों की सेना की स्थिति सचमुच सकटमय थी। उसके पास खुराक और बारूद दोनों नही बचे थे और इस पर तुर्रा यह कि शत्रु भारी सख्या में चारों तरफ से उन्हे घेरे हुए था। परिणामत वाशिगटन को विवश होकर आत्म-समर्पण करना पड़ा। फ्रासीसियों ने उन्हे सैनिक प्रबन्ध में बाहर जाने की आज्ञा इस शर्त पर दे दी कि वह अपनी सेना को वर्जीनिया वापस ले जाए। उनके दो अफसर बन्धक के रूप मे वही रख लिए गए। इनमे से एक वानब्राम था जो अब भी द्विभाषिये के तौर पर काम कर रहा था। इसी ने ही समर्पण-पत्र का अनुवाद किया था, जिस पर हस्ताक्षर करने के लिये वाशिगटन को विवश होना पडा था।

इस तरुण अफसर के लिये यह हार एक कड़वा घूट थी। कइयों का विचार था कि उन्होने इस युद्ध मे दोष-पूर्ण निर्णय-शक्ति का परिचय दिया है। वह जो कुछ भी कर सकते थे, उन्होने किया। लदन और विलियम्बर्ग, दोनो स्थानो में प्रतिक्रिया अच्छी हुई और

उनके कामों की साधारणतः सराहना की गई। उम्र मे अपेक्षतया छोटा होते हुए भी उनकी ख्याति चारों तरफ फैल गई। उनका एक निजी पत्र जिसमे उन्होने जुमनबिल के साथ की गई लड़ाई का वर्णन किया था 'लन्दन मैगजीन' मे छपा। इस पत्र मे, जो वाशिंगटन द्वारा अपने भाई को लिखा गया था, उन्होंने लिखा था—'हमने उस युद्ध मे शानदार विजय प्राप्त की।' साथ ही उन्होने युवकोचित उत्साह से यह शब्द भी उसमे जोड़ दिये थे—'मैने गोलियो को सॉए-सॉए करते सुना। मेरा विश्वास कीजिए कि उस ध्वनि मे कोई मनोहारी बात अवश्य है।' होरेस वालपोल कहता है कि उसने इस बारे मे उस समय के ब्रिटिश सम्राट् जार्ज द्वितीय से भी जिक्र किया। उसके कथनानुसार बादशाह जार्ज ने इस पर यह टिप्पणी की—'यदि वाशिंगटन इतनी गोलियो की आवाज सुन लेता, तो यह न कह पाता।' इस टिप्पणी की जानकारी उस समय वाशिंगटन अथवा उसके वर्जीनिया के समकालीन लोगों को न थी। परन्तु उन्हे यह अवश्य मालूम था कि जो कोई भी घटना वर्जीनिया में होती है, उसे पेरिस और लन्दन मे गौर से देखा-जॉचा जाता है। वाशिंगटन जैसे प्रदेश के एक सैनिक को यह विचार सचमुच मादकता लाने वाला था कि एक स्थानीय घटना, जिसके होने मे उनका अपना हाथ था, विश्वव्यापी महत्व ग्रहण कर चुकी है।

वाशिंगटन थोड़े समय के लिए अवश्य बदनाम हुए, जब कि फ्रासीसियों ने उनकी निजी डायरी का, जो दैवयोग से नैसेसिटी दुर्ग मे छूट गई थी, मुद्रण करवाया। उन्होने अपने पक्ष मे प्रचार करने के लिए इसका उपयोग किया—यह सिद्ध करने के लिए कि इन सीमा-प्रान्त की लड़ाइयों मे अग्रेजो ने पहले-पहल आक्रमण किया था। उनका यह कहना था कि कुछ मास पूर्व वाशिंगटन की तरह ही जुमनविल भी शान्तिमय उद्देश्य के लिए उन क्षेत्रो मे गया था, किन्तु फिर भी उसकी निर्दयतापूर्वक 'हत्या कर दी गई'। चूकि वानब्राम समर्पण-पत्र मे उस बेहूदा शब्द को नही देख पाया था—जो अनेक बार उसमे प्रयुक्त हुआ था—फ्रासीसियों ने दलील दी कि

वाशिंगटन ने उस हस्ताक्षरित पत्र में अपना अपराध स्वीकार किया है। चूंकि फ्रांसीसी वाशिंगटन को बहुत बड़ा धूर्त कह कर पुकारते थे और उन्होंने एक लम्बी कविता मे, जो इसी अवसर के लिए लिखी गई थी, उन्हें इसी प्रकार का घृणास्पद व्यक्ति चित्रित किया था, अंग्रेज इस कारण उनका पक्ष अधिक उत्साह से लेने लगे। अंग्रेजों का कहना था कि वाशिंगटन ने जल्दी में और दबाव में आकर समर्पण-पत्र पर हस्ताक्षर किये थे। फिर, यदि वर्जीनिया के अधिकारियों ने, 'नैसेसिटी' दुर्ग के समझौते में वाशिंगटन द्वारा दिए गये इस वचन को कि जुमनविल-संघर्ष के कैदियों को छोड़ दिया जायगा, पूरा नहीं किया, तो इसमें उनका क्या दोष ?

धीरे-धीरे यह हल्ला-गुल्ला समाप्त हुआ। कई महीने बीत जाने पर वाशिंगटन फिर उलझनो में फँस गये। उन्होंने सन् १७५४ में अपने कमीशन से त्याग-पत्र दे दिया। कारण यह था कि वह उन योजनाओं में होने वाली गड़बड़ी से निराश हो उठे थे जो सीमा-प्रान्त की चढ़ाइयों मे बनाई जाती रहीं। किन्तु १७५५ की वसन्त ऋतु में उन्होंने फिर ओहियो सगम की ओर जाने वाला परिचित मार्ग पकड़ा। इस बार वह बिना किसी सरकारी पदस्थिति के एक स्वयं-सेवक के रूप में थे—ठीक उसी तरह जिस तरह कि एक वर्ष पूर्व स्वीडन देश का भद्र पुरुष उनकी सेना के साथ गया था। उस समय ऐसा प्रतीत होता था कि सफलता उनके कदम चूमेगी। जनरल एडवर्ड ब्रैडॉक भी अपने दो ब्रिटिश बटैलियनों के साथ वर्जीनिया पहुंच गये। यह एक श्रेष्ठ, अनुभवी योद्धा थे, जो अपने विचारों में निर्भ्रम और दृढ़ थे। इनका लक्ष्य ब्रिटेन-अधीन अमेरिका के ओहियो भाग से फ्रांसीसियों को खदेड़ना था। वाशिंगटन को ब्रेडाक के परिसहाय 'परिवार' का अवैतनिक सदस्य बनने का निमन्त्रण मिला।

पहले की तरह देर ही पर देर हो रही थी जो कष्टकारक थी। आखिर सन् १७५५ के मई मास के अन्त में ब्रैडॉक की सेना (जिसमें दो हजार से अधिक नियमित सैनिक, स्वयं-सेवक और मिलिशिया के आदमी थे) डयूक्विने दुर्ग तक एक सौ पचास मील की यात्रा

तय करने के लिए कैम्बरलैण्ड के दुर्ग से चल पड़ी। बोझल सामान और तोपों के कारण सेना इतनी धीमी गति से जा रही थी कि—जैसा कि वाशिंगटन ने स्वयं लिखा है कि उनके सुझाव पर—कम गति वाली वस्तुएं सेना के पिछले भाग में अलग ही चल रही थीं। वह इनके साथ थे। मार्ग में उन्हें पेचिश हो गई। छः सप्ताह अनन्तर जो गोलियों की ध्वनि उनके कानों मे पड़ी, वह पहले की तरह आकर्षक नहीं थी।

अभी ब्रैडॉक की सेना का अगला भाग डयूक्विने से कुछ ही मील की दूरी पर था और वन में सावधानी से आगे बढ रहा था जब कि फ्रांसीसियों और इण्डियनों की एक टुकड़ी ने अचानक उन पर हमला बोल दिया। वे इण्डियनों के वस्त्र धारण किये हुए थे और उनका नेतृत्व एक निर्भीक फ्रांसीसी अफसर कर रहा था। वे पेड़ों के झुरमुट में से अकस्मात् निकले और उसके आदेश पर इधर-उधर बिखर कर गोलियों की वर्षा करने लगे। कुछ क्षण स्थिति ब्रिटिश सेना के काबू में रही और फ्रांसीसियों के कदम उखड़ने लगे, किन्तु तुरन्त वाद पांसा पलटा और ब्रैडॉक के प्रतिकूल पड़ा। इसके अनेक कारण थे। ब्रिटिश सैनिक लाल वर्दी में थे और एक जगह इकट्ठे होने और विशेष वस्त्र धारण करने के कारण स्पष्टरूप से पहचाने जाते थे। इसके अलावा शत्रु-सैनिक बिना निशाना चूके गोलियां दाग रहे थे—जिससे ब्रिटिश सैनिक घबरा उठे। इनके अतिरिक्त उनका प्रशिक्षण जिस ढंग से हुआ था, वे उस प्रकार से यहां पंक्तिबद्ध होकर लड़ भी न सकते थे। परिणामतः वे असहाय और उन्मत्त लोगों की तरह बीसों की सख्या मे धराशायी होते चले गये। अफसरों का यह हाल था कि वे सैनिको को इकट्ठा करके लड़ाने की जो कोशिश कर रहे थे उसके कारण उनमे से तीन चौथाई हताहत हुए। मृतकों में से ब्रैडॉक भी था। वह क्रोधावेश मे, घोड़े पर सवार, इधर से उधर, साहस के साथ भागता रहा था, किन्तु इस कदर जख्मी हुआ कि जिंदा वच न सका। वाशिंगटन भी लड़ाई में शरीक होने के लिए तेज रफ्तार से आगे वढ़े। उनके

कथनानुसार वर्जीनिया की फौज अधिक जम कर और धैर्य-पूर्वक लड़ी। किन्तु उनकी अपनी और दूसरों की सब कोशिशें बेकार गईं। वास्तव में उनका भाग्य ही अच्छा था कि वह स्वयं जिन्दा बच निकले। उनके दोनों घोड़े मारे गए और उनके वस्त्र गोलियों से चीथडे-चीथड़े हो गए। उनके पक्ष के अनेक सैनिक थे जो इतने खुशकिस्मत नही थे। यह जगल का भाग मानों एक कत्लेआम की जगह बन गया। बैडॉक के करीब नौ सौ आदमी या तो मारे गये और या आहत हुए। इतनी अधिक मौतों के कारण, खुशी से नारे लगाते हुए इण्डियनों को, बहुत बड़ी संख्या में खोपड़ियाँ उतारने का अवसर मिला। (बाद मे एक ब्रिटिश अफसर ने, जबकि निराश बचे-खुचे सैनिक पीछे हट रहे थे, यह कहा—'खोपड़ियां उतारते हुए इन इण्डियनों की भयंकर चिल्लाहट मुझे मृत्युकाल के समय तक व्याकुल करती रहेगी।')

यदि ब्रैडॉक का उप-सेनापति बचे-खुचे सैनिकों को इकट्ठा करके ड्यूक्विने पर धावा बोल देता, तो सम्भव है कि इस विध्वंस का परिशोधन हो जाता। वास्तव मे तब युद्ध का सहज में पांसा पलट सकता था। किन्तु ब्रैडॉक इतना मूर्ख नही था जितना कि उसे समझा जाता है। उसके सैनिको पर भी अचानक हमला नहीं हुआ था, इसके अलावा उसकी सेना फ्रांसोसी सेना से कहीं अधिक थी। और यदि ड्यूक्विने का हमला इतना साहसपूर्ण न होता, तो फ्रांसीसियों को हार का मुह देखना पड़ता। लेकिन इस प्रकार सोचने से हार की लज्जाजनक वास्तविकता में कोई अन्तर नहीं पड़ता। ड्यूक्विने पर फ्रासीसियों का कब्जा था और इसलिए वर्जीनिया का सम्पूर्ण सीमान्त क्षेत्र लूट-पाट में अभ्यासी और विजय से उल्लसित इण्डियनों के लिए सर्वथा खुला मैदान बन गया।

वाशिंगटन के लिए किंचित् सतोष की बात अवश्य थी। उस करारी हार की वजह से कितनी ही घनी उदासी क्यों न आई हो और कितने ही आरोप-प्रत्यारोप एक दूसरे पर क्यों न लगाये गये हो, उनके निर्मल यश पर आच नही आई। उनके विषय मे मशहूर

था कि बीमार होने के बावजूद वह बहादुरी के साथ लड़े। नार्थ कैरोलीना के गवर्नर ने उन्हे लिखा—'श्रीमन् ! मुझे आज्ञा दे कि कि मैं आपको गत युद्ध मे आपके प्राणों की रक्षा के कारण बधाई दू। आपने ओहियो नदी के तट पर अमर कीर्ति प्राप्त की है।' इसके अतिरिक्त ऐसे ही प्रशसा के और भी पत्र उन्हे मिले। वह दुबारा वर्जीनिया सरकार मे कर्नल के पद पर नियुक्त किये गये, किन्तु अब उन्हें वर्जीनिया की सेना का प्रधान सेनापति बनाया गया। यह सन् १७५५ के अगस्त मास की बात है, जबकि वह अभी केवल तेईस वर्ष के थे।

पदवी तो बड़ी थी, किन्तु कार्य इतना दुष्कर था कि कोई भी उससे ऊब सकता था। उनके पास कुछ ही सौ सैनिक थे, किन्तु उनसे अपेक्षा यह की जाती थी कि वह साढे तीन सौ मील की सीमा-पंक्ति की रक्षा करेंगे। वर्जीनिया मे बसने वाले तथा सट्टा करने वाले दोनों श्रेणियो के लोगो को जो बड़ी बडी आशाए थी, वे मिट्टी मे मिलती नजर आई। ब्रिटेन और फ्रास के बीच मे मई, १७५६ तक सरकारी तौर पर युद्ध घोषित नही हुआ था और जो जो मुख्य अभियान थे, वे उत्तर अमेरिका मे अन्य स्थानो मे हुए थे। वाशिंगटन और उनके साथी जो पश्चिम की चौकियो पर तैनात थे, यह महसूस करने लगे थे कि उनकी स्थिति विस्मृत सीमा पर विस्मृत मनुष्यो सरीखी है। सन् १७५७ के अन्तिम भाग मे वाशिगटन पुनः पेचिश के रोग से ग्रस्त हो गये। अन्त मे उन्हे अपनी नौकरी छोडनी पड़ी, क्योकि उनकी तबीयत बहुत बिगड़ चुकी थी। अतः विवश ही कर उन्हे माऊट वर्नन लौटना पडा। उनके बिगड़े स्वास्थ्य को देख कर यह शंका उत्पन्न होती थी कि कही वह भी अपने पिता तथा सौतेले भाई का अनुसरण करते हुए मृत्यु का ग्रास न बन जाएं। अभी तक उन्होने विवाह नही किया था। इसलिए उनकी पीढ़ी को चलाने के लिए उनका कोई उत्तराधिकारी पैदा नही हुआ था। उनकी लम्बी अनुपस्थिति के कारण माऊट वर्नन की ओर ध्यान नही दिया गया था। इसी प्रकार उनके

अन्य मामले ज्यो के त्यों पड़े थे। उन्होने दो बार नगरपालिका के चुनाव लड़े थे और दोनों ही बार उन्हे चुनावों में मुह की खानी पड़ी थी।

परन्तु सन् १७५८ की वसन्त ऋतु में यह फिर स्वस्थ हो गये और इस योग्य हो गये कि किसी दूसरे अभियान मे शामिल हो सके। ब्रिगेडियर जनरल फोर्ब्स के अधीन ब्रिटिश सेना ने, जो उत्तर अमेरिका की अग्रेजी सेनाओं में से थी, पुनः ड्यूक्वैने पर चढ़ाई की योजना बनाई। तदनुसार वाशिंगटन के लिए उस ओर प्रस्थान करने का चौथा अवसर बन गया। किन्तु उन्हे यह जान कर अचम्भा हुआ और इस बात पर गुस्सा भी आया कि फोर्ब्स बजाए पुराने सुपरिचित मार्ग के एक नई सड़क का निर्माण करने लगे है जो पैनासिलवेनिया के रेसटाऊन से आरम्भ होकर पश्चिम की ओर जायगी। वाशिंगटन ने उस पुराने मार्ग के गुण और लाभ जताते हुए फोर्ब्स के इरादे को बदलने का यत्न किया, किन्तु सब बेकार गया। फोर्ब्स अन्त तक अपने निर्णय पर अड़ा रहा। इसके परिणाम-स्वरूप जैसा कि वाशिंगटन अफसोस से देख रहे थे—सप्ताह धीरे-धीरे महीने बने और गर्मी का मौसम भी समाप्ति पर आ गया। अभी तक फोर्ब्स की सेना ओहियो सगम की ओर मार्ग-निर्माण मे जुटी हुई थी। इस विलम्ब के कारण ब्रिटिश सेना लगभग इस निश्चय पर पहुँची ही थी कि उस वर्ष शरद ऋतु में आगे बढ़ने के प्रयास छोड़ दिये जायं, जब कि सन् १७५८ के नवम्बर मास के अन्त में फ्रांसीसियों ने ओहियो घाटी मे लड़ाई जारी रखने का विचार ही अंन्तिम रूप से त्याग दिया। उन्होने अग्रेजी फौज द्वारा घेरा डालने की प्रतीक्षा नही की, बल्कि उससे पूर्व ही ड्यूक्वैने दुर्ग को आग लगा दी। इस सफलता में, जिसके पाने में एक बूद भी रक्त नही बहा था, रुचिहीनता का तत्व अवश्य था, इसे प्राप्त करने के लिये किसी प्रकार के सघर्ष की जरूरत नहीं पड़ी थी। तो भी, यथेष्ट उद्देश्य की पूर्ति तो हो ही चुकी थी। बाद में उसी ड्यूक्वैने की राख पर ब्रिटेन का सुदृढ़ किला बना। इसे 'पिट' दुर्ग का नाम दिया गया। इस विजय

का फल यह हुआ कि वर्जीनिया उपनिवेश की पश्चिमी सीमा पर काफी हद तक शान्ति की व्यवस्था हो गई।

वाशिंगटन सैनिक-जीवन से विदाई लेने को तैयार थे, यद्यपि अन्य स्थानों पर फ्रांसीसियों से लड़ाई चल रही थी। इस अभियान के अन्त में उनकी पद-स्थिति अवैतनिक ब्रीगेडियर की थी। सन् १७५८ मे वह आखिरकार फ्रेड्रिक काऊंटी के निर्वाचन-क्षेत्र से नगरपालिका के लिए चुन लिये गये और उनकी सगाई भी हो गई। वर्जीनिया के सैनिक-अफसरों ने जब यह सुना कि वाशिंगटन अपने पद से त्याग-पत्र दे रहे है, तो उन्होंने अपने 'विनयपूर्वक आवेदन' में उन्हे एक वर्ष और अपने पद पर रहने के लिए आग्रह करते हुए कहा—

'श्रीमन्! इस बात को सोचिये कि इतने उत्कृष्ट सेनापति, सच्चे मित्र और मधुर और मिलनसार साथी का वियोग हमारे लिए कितना दु:खकर होगा।'

'जब हम इस बात को और अधिक सोचते है, तो हमें यह सोच कर और भी दु ख होता है कि आपकी विदाई से, हमारी ही तरह इस अभागे देश को जो क्षति होगी उसकी पूर्ति करना नामुमकिन होगा। हमारे देश को आपके समान सेना-सम्बन्धी मामलों मे अनुभवी कहाँ मिलेगा? इसे ऐसा व्यक्ति भला कहां प्राप्त होगा जो अपने देश-प्रेम, साहस और आचार-व्यवहार के कारण इतना कीर्तिमान हो? आप में हमारा अक्षुण्ण विश्वास है। हम आपको भलीभांति जानते-पहचानते है और आपसे हमारा सच्चा प्यार है। उस समय जबकि आप हमारा नेतृत्व कर रहे होते है, तो आपकी मौजूदगी हमारे सभी के अन्दर दृढ़ता और शक्ति का संचार करती है, हमें भयंकर से भंयकर खतरों का सामना करने की हिम्मत बंधाती है, और हमे इस योग्य बनाती है कि हम भारी परिश्रम और कठिनाइयों की परवाह तक न करें।'

इस प्रकार के प्रशंसा-युक्त शब्दों की सचाई मे कोई सन्देह नहीं कर सकता। न ही हम उनके उस पत्र में सन्निहित सारभूत सचाई

की उपेक्षा ही कर सकते है जो उन्होंने सन् १७५७ के सितम्बर मास में डिनविड्डी को लिख कर भेजा था--

"मेरे अन्दर कमजोरियां है और सम्भवतः बहुत सी है—मैं इससे इनकार नही कर सकता। यदि मै पूर्णता का मिथ्या अभिमान करूं, तो यह मेरे लिए अपने मुह मिया मिट्ठू बनने वाली बात होगी और यह मेरा खोखलापन होगा। ससार भी मुझे इन्ही नजरों से देखेगा। किन्तु मैं यह जानता हूं—और मुझे इससे अत्यधिक सान्त्वना मिलती है कि आज तक किसी सार्वजनिक कर्तव्य पर नियुक्त व्यक्ति ने मेरे से ज्यादा दयानतदारी से और देश-हित के लिए मेरे से अधिक उत्साह के साथ अपने कर्तव्य को नही निभाया होगा।"

किन्तु यह घोषणा हमे कुछ विचित्र सी लगती है। सेवा-निवृत्त कर्नल वाशिंगटन की कहानी को आगे चलाने से पहले हमे जरूरत महसूस होती है कि हम इसकी और भी जाच करे। वाशिंगटन ने इन पाच सालों मे जो चिट्ठियाँ लिखी उनसे पता चलता है कि उन्हे इन वर्षो मे मुख्यरूप से निराशाओ और दीनता का मुह देखना पड़ा। इस कारण हम उन्हें बार-बार खीझ उठने की वजह से दोषी नही ठहरा सकते। उनके अफसरों ने जैसा कि विश्वासपूर्वक कहा था, उन्होने सीमान्त-प्रदेश-सम्बन्धी लड़ाइयों के स्वरूप एवं सम्भावनाओं की जानकारी इतनी ही पूर्ण रीति से उपलब्ध कर ली थी, जितनी कि किसी भी वर्जीनिया-वासी के लिए सम्भव थी और यह जानकारी निश्चय से उन ससद-सदस्यो से काफी अधिक थी जो सुदूर विलियम्जबर्ग मे थे। यह उनकी तीव्र इच्छा थी कि फ्रांसीसियों को अधिक शक्तिशाली होने से पूर्व ही खदेड़ दिया जाय तथा वहाँ के इण्डियनो को अपने पक्ष में कर लिया जाय। उनके मार्ग मे जो रुकावटें आईं वे किसी को भी पागल बना सकती थी। उन्हे ऐसा महसूस हुआ कि विधान-सभा भी देश के हितों की 'अवहेलना' कर रही है। एक सदस्य ने तो यहां तक कह दिया कि ओहियो प्रदेश पर फ्रांसीसियों का हक है। डिनविड्डी (तथा ओहियो कम्पनी, जिसके साथ कि गवर्नर का सम्बन्ध था) की नीयत पर सन्देह हो

थी। यह सच है कि उनका इस समय का दृष्टिकोण वर्जीनिया-वासियों सरीखा संकीर्ण था। उन्होंने लडाई के बारे में सम्पूर्ण रूप से नही सोचा था। जव १७५८ में फोर्ब्स ने रेजटाऊन वाला मार्ग चुना तो वाशिगटन का विरोध लगभग अवज्ञा की सीमा तक पहुँच गया था। उन्हे यह विश्वास हो चुका था कि फोर्ब्स पैनसिलवेनिया की उस "कपटपूर्ण नीति" का शिकार हो गया है, जिसके अनुसार ओहियो के पिछड़े देश तक पहुँचने का मार्ग बन जाने से वहाँ का सारा व्यापार इस प्रतिद्वन्द्वी उपनिवेश के हाथों चला जायगा। किन्तु उन्हे यह न सूझा कि दूसरे लोग भी उनके अपने रवैये से यही अर्थ निकाल सकते है——अर्थात् वर्जीनिया से ओहियो तक सड़क निकालना वर्जीनिया के लोगो की 'कूटनीति' हो सकती है। कुछ भी हो, वह वर्जीनिया के प्रति पूरी तरह वफादार थे। आदर्श रूप में वह यह चाहते थे कि उन्हें वर्जीनिया की रक्षा करने के लिए कमीशन मिल जाय। यदि वह अन्य उपायों से कमीशन लेना चाहते, तो निश्चय ही वह तरुण ब्रायन फेयरफैक्स की तरह ही रुपया देकर इसे खरीद सकते थे।

अधिमान-पद की लालसा के साथ ही साथ 'प्रतिष्ठा' की प्यास भी उन्हे सताए हुए थी। वाशिगटन कभी-कभी इसकी परिभाषा इस प्रकार करते थे जैसे कि यह शब्द अधिमान-पद का पर्यायवाची हो। उनके विचार में इस शब्द (प्रतिष्ठा') का यह भी अभिप्राय था— 'मेरे परिचितों की मेरे प्रति मित्र जैसी सम्मान-भावना का होना।' (सम्भवत इन परिचितों की सूची मे सैली फेयरफेक्स का उच्च स्थान था।) ऐसा लगता है कि अपनी प्रौढ़ावस्था मे वाशिगटन को अधिक चिन्ता अपनी कीर्ति की रही। वह इस बात का ध्यान रखते थे कि जो कोई कार्य भी वह करें या कोई दूसरा उनके प्रति कुछ करे, तो उसका लिखित रिकार्ड रख लिया जाय। इससे अंशत: उनकी व्यवहार-कुशलता प्रकट होती थी। इससे आगे वाशिगटन अपनी तसल्ली के लिए केवल सार्वजनिक अनुमोदन चाहते थे। उन्होंने दृढ़ संकल्प कर लिया था कि वे वही करेंगे जो उचित होगा

और उन्हे आशा थी कि उनकी व्यवहार-शुद्धता को स्वीकार किया जायगा, चाहे उनके कामों का परिणाम खराब क्यो न हो। अन्तत उनके लिए 'प्रतिष्ठा' (और अपने उपनिवेश मे प्रतिष्ठा पाने) का 'अधिमान-पद' से कही अधिक महत्व था। यह सच है कि कर्नल वाशिगटन के व्यक्तित्व का अभी विकास हो रहा था, किन्तु बुनियादी तौर पर वह एक शिष्ट मानव थे। यद्यपि उनकी सैनिक महत्वाकाक्षाएं काफी थी, किन्तु वे मर्यादा का उल्लघन नही करती थी, इसलिये वह उन्हे अपने मन के एक कोने मे छुपाये लिए फिरते थे। वे आकांक्षाये कितनी गहरी दबी हुई थी—हमारे लिए यह बतलाना कठिन है। हम इतना जानते है कि सन् १७५९ मे जब वह माऊट वर्नन को सजा रहे थे, उन्होने लन्दन से छः अर्धप्रतिमाएं मगवाए जाने का आदेश दिया। ये सिकन्दर महान्, जूलियस सीजर, स्वेडन के चार्ल्स १, प्रशिया के फ्रैडरिक द्वितीय, यूजीन राजकुमार और मार्लबोरो के ड्यूक की थी। ये सब सैनिक वीर-पुरुष हुए है। उनका एजेण्ट इन्हे खरीद कर भेज नही सका, किन्तु वाशिगटन ने उनके स्थान में प्रस्तावित कवियो और दार्शनिको की अर्ध-प्रतिमाओं को लेने से इन्कार कर दिया।

एक बार जब वाशिगटन का मन उदास हो गया, तो कर्नल फेयरफेक्स ने इन शब्दो मे उन्हे सान्त्वना दी—'सीजर सम्बन्धी टीका टिप्पणियों और सम्भवतः क्विटस कर्टियस (जो अलैक्जैण्डर के जीवन-चरित्र का लेखक था) की कृति को पढने से आप को यह ज्ञात हुआ होगा कि आपकी तुलना मे इन महापुरुषों की जिन्दगियों मे अत्यधिक परेशानियाँ आई,—इनके विरुद्ध लोगों मे असन्तोष की भावनाए रही और जनता ने विद्रोह किये तथा साथियों ने साथ छोड़े। यदि आपके जीवन मे इस प्रकार की कोई परेशानी की बात आपकी शान्ति को भग करे, तो मुझे तनिक भी सन्देह नही कि आप इन महापुरुषो के ही समान महानुभावता से उन बातों को वर्दाश्त कर सकोगे।'

सेवा-निवृत्त होने के बाद भी यदि वाशिंगटन को सान्त्वना की

जरूरत थी, तो उन्हे यह सोचकर मिल जानी चाहिये थी कि सीजर को जान से मार दिया गया और अलैक्जैण्डर, जो उन्नीस वर्ष की आयु में राजगद्दी पर बैठा, बत्तीस साल की आयु में ही परलोक सिधारा। उनके समकालीन जनरल बुल्फ ने अपने जीवन में शानदार काम किये, किन्तु क्यूबैक के परिग्रहण के समय बत्तीस वर्ष की आयु मे ही मृत्यु का ग्रास बना। वाशिगटन के जितने भी संगी-साथी थे, उनमे से कोई भी उनसे आगे नही बढ़ा, बल्कि कुछ ने तो अपने आप को कलंकित कर लिया। अन्य साथी मर चुके थे। उदाहरण के लिए उनका पुराना साथी, क्रिस्टोफर जिस्ट, चेचक के कारण ससार से चल बसा था। वाशिंगटन कम से कम इस विशेष भयंकर रोग से इस समय परिमुक्त थे, क्योंकि इससे पूर्व वह बारबेडीस में इसका शिकार हो चुके थे।

सेवा-निवृत्त बागान का स्वामी

अनेकों ठोस कारण थे जिनकी वजह से उन्हें सन्तोष मिलना ही चाहिए था। फेयरफेक्स परिवार के लोग अब भी उनके हितैषी मित्र थे। इस समय वह मूल्यवान जागीरों के स्वामी थे। उन्हे यह भी आशा थी कि फ्रासीसियो के साथ जो झगड़े चल रहे है, उनकी समाप्ति पर वह अपनी भूमि बढ़ा सकेंगे। इन सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि वह अपने अविवाहित जीवन से छुट्टी ले रहे थे। उन्होंने एक विधवा से विवाह कर लिया, जिसका नाम मर्था डैडरिज कस्टिस था। वह मधुर स्वभाव की तथा समृद्ध युवती थी। उसका पहला पति डैनियल पार्क का वशज था, जिसने साम्राज्ञी ऐने को ब्लैनहम युद्ध-विषयक सरकारी पत्र ला कर दिये गये थे। मर्था जार्ज से उम्र मे कुछ मास बड़ी थी। उसके पहले विवाह से दो बच्चे हुए थे। वाशिगटन उससे कब सर्वप्रथम मिले और उनका किस प्रकार पारस्परिक प्रेम बढ़ा, इसके बारे में निश्चय से नही कहा जा सकता। एक प्रेम-पत्र, जो उनके द्वारा मर्था के नाम १७५८ की ग्रीष्म ऋतु मे लिखा हुआ माना जाता है, हमे नकली जान पडता है। कुछ साक्ष्य-सामग्री ऐसी है जिससे यह प्रकट होता है कि सगाई

के समय के आस-पास भी जार्ज के हृदय मे सैली फेयरफेक्स के लिए तड़पन थी। उनके एक पत्र में, जो उन्होने उस समय सैली को लिखा, इस प्रकार के उद्धरण थे कि जिनसे प्राय: यह अर्थ लिया जा सकता है कि वह उससे प्रेम करते थे। यह सदिग्ध है कि जार्ज और मर्था मे परस्पर प्रेम होने के कारण विवाह-बधन हुआ। यह वैसा प्रेम नही था, जैसा कि प्राय. रोमान्स के उपन्यासकार इस शब्द से अर्थ लेते है। किन्तु यह बन्धन दोनों की बुद्धि और विवेक का परिचायक है। अन्य लाभों में मर्था को एक यह भी लाभ हुआ कि उसे अपनी भू-सम्पत्ति के लिए एक प्रबन्धक मिल गया। जार्ज को यह लाभ हुआ कि उन्होने एक धनाढ्य युवती से शादी की, किन्तु यह मानने की हमारे पास कोई दलील नही कि यह विवाह सुविधा की खातिर हुआ था अथवा जार्ज हताश हो जाने के कारण सैली का स्थानापन्न चाहते थे। जिन लेखकों की सम्मतियाँ इस समय उपलब्ध है उनमे से किसी एक ने भी यह नहीं कहा कि जार्ज और मर्था का विवाह अननुरूप अथवा अनुपयुक्त था। यह सम्भव है कि यदि उनके दीर्घकालीन सम्बन्ध मे किसी भी अवसर पर किसी प्रकार का तनाव होता, तो उस पर काफी टीका-टिप्पणी होती।

जार्ज का विवाह १७५९ के जनवरी मास मे हुआ। सितम्बर मास में उन्होने अपने एक सम्बन्धी को, जो लन्दन में था, लिखा:—

'मेरा विश्वास है कि अब मैं अपने ही अनुरूप जीवन-सगी के साथ अपने निवास-स्थान से बँध गया हू। मुझे आशा है कि मैने जितना इस विस्तृत और शोरगुल की दुनिया मे कभी आनन्द उठाया है उससे कही अधिक आनन्द मुझे सेवा-निवृत्ति के बाद मिलेगा।'

उसी पत्र में वह खेद प्रकट करते है कि 'इस बात के बावजूद कि उनकी चिरकाल से लन्दन जाने की अभिलाषा रही है, वह इस लिये नही जा सकेंगे, क्योंकि अब वह अपने ही स्थान से दृढता से बंध गये है। इस कारण उन्हे अपनी उत्सुकता को टालना ही पड़ेगा।' किन्तु कोई ऐसी बात नही दीखती जिससे यह अनुमान लगाया जा सके कि मर्था के साथ उनका जीवन किसी प्रकार क्लेशमय था।

विलक्षण बात यह लगती है कि उन्होने फोर्ट कम्बरलैण्ड सरीखे स्थानों में बिताये जीवन से सर्वथा भिन्न रहन-सहन के लिए भी अपने आपको इतना शीघ्र ढाल लिया।

इसकी एक व्याख्या यह हो सकती है कि, जैसा कि उन्होंने दृढ़तापूर्वक कहा था, वह सैनिक-जीवन से ऊब उठे थे और उन्हे अब सैनिक अधिमान-पद की कोई आशा नही रही थी। उनके लिए वैशिष्ट्य-प्राप्ति का एक दूसरा मार्ग भी था, जो यद्यपि इतना रोमांचकारी तो नही था, किन्तु था अधिक स्थिर। यह वर्जीनिया के भू-स्वामी का जीवन बिताने का मार्ग था। दूसरी व्याख्या यह हो सकती है कि वह बहुत व्यस्त थे। उन्हें माऊट वर्नन के फार्मो पर बहुत कुछ काम करना बाकी था क्योंकि उनकी अनुपस्थिति के कारण वे दुरवस्था मे थे। इसके अतिरिक्त मकान को भी पर्याप्त पैमाने पर सजाना था। लन्दन को सकुल बीजक भेजे गये, जिन में अनेक प्रकार की चीजे थी—जैसे '७॥ फुट लम्बाई के टैस्टर पलंगों' से 'बिल्कुल आधुनिक और प्रामाणिक वनस्पति-शास्त्र पर पुस्तकें', 'नीग्रो-सेवकों के गर्मी के फ्राकों के लिए ४० गज मोटी जीन' या 'मोटे सूती कपड़े से 'पढ़ना आरम्भ करने वाले बच्चों के लिए छः छोटी पुस्तकों' तक थी। बच्चे जो अभी पढना प्रारम्भ कर रहे थे, वे थे जार्ज के सौतेले बच्चे—श्रौनपार्क (जैकी) और मर्थापार्क (पैट्सी) कस्टिस। उन्होने खिलौने और वेशभूषा की छोटी-छोटी वस्तुएं आभूषणादि भी उनके लिए मँगवाए। वम्स्तव मे उन्होंने उन बच्चो का अत्यधिक ध्यान रखा और उन सब बच्चों का भी जो उनके अपने दायरे में आए। दोषान्वेषी सम्भवतः कहेगे कि जैकी और पैट्सी के कारण जो बोझ वाशिगटन पर पडा, वह उनके लिए प्रसन्नतापूर्वक वहन करने योग्य था, क्योकि उनकी तथा उनकी स्त्री की जागीर से उन्हे काफी सम्पत्ति प्राप्त हुई थी। किन्तु जहां तक हमे वाशिगटन के वारे मे मालूम है, हमे यह सम्मति सख्त प्रतीत होती है।

एक क्रियाशील सत्ताईस वर्षीय युवक के वारे मे 'कुलपति' शब्द

का प्रयोग हास्यास्पद जान पड़ता है। किन्तु यह कहना पड़ेगा कि वाशिंगटन का रहन-सहन का ढंग कुलपतियों जैसा था। वह राज्य के किसी शासक के समान ही माऊंट वर्नन के अध्यक्ष थे। माऊंट दरअसल एक छोटे से गॉव की न्याई था, जो धीरे-धीरे वाशिंगटन गोत्र का प्रमुख-बन गया। अपने सब भाइयो और बहनों मे जार्ज ही सबसे अधिक सफल हुए और इस कारण वे परामर्श और सहायता के लिए उनका मुह ताका करते थे। जब वह अपने पारिवारिक मामलो मे व्यस्त नही होते थे अथवा जब वह संकट-ग्रस्त परिचितों की प्रार्थनाओ पर विचार नही कर रहे होते थे, तब वह कस्टिस परिवार की जाय-दादों के प्रबन्ध को देखा करते। वर्गेस के रूप में उन्हे विलियम्जबर्ग की बैठकों में उपस्थित होना पड़ता था और अपने मत-दाताओ को सतुष्ट रखना होता था।

विवाह के थोड़े ही समय बाद उन्हे काऊटी-मजिस्ट्रेट बनाया गया। तत्पश्चात् वह अपने पिता के कदमों पर चलते हुए टूरो गिरजे के क्षेत्राधिकार की प्रबन्धकर्तृ सभा के सदस्य और (बाद मे उसके प्रतिनिधि) बने। सन् १७६६ में जब अलैक्जैण्डरिया के न्यासी का स्थान रिक्त हुआ तो उन्हे उस पद पर आसीन किया गया। इसके अतिरिक्त अब भी उनमे पूर्ववत् अधिक लाभ की उत्सुकता रही और वह जहा-तहां मौका पड़ने पर जमीन खरीदते रहे। सन् १७५४ में स्वयं-सेवकों को उपहार रूप में जमीने देने के वायदे हुए थे। उन्होने उस वचन के आधार पर पन्द्रह हजार एकड़ जमीन का दावा किया। इसमें उन्हे अन्ततोगत्वा सफलता मिली। भूमि सम्बन्धी साहसिक उपक्रमो में भी वह शामिल हुए, जैसे (दक्षिण वर्जीनिया मे स्थापित) डिस्मल एवैम्प कम्पनी तथा मिसिसिपी कम्पनी—जो मिसीसिपी नदी के तट पर भूमि का विकास करने के लिए बनाई गई थी। आयु मे तरुण होते हुए भी वह अपनी जिम्मेदारियो के कारण अपेक्षतया बड़े थे।

जब कर्नल वाशिंगटन ४० वर्ष के हुए, उस समय तक वर्जी-निया मे उनका एक महत्वपूर्ण स्थान बन चुका था, यद्यपि वह

अभी तक अत्यधिक शक्ति-सम्पन्न व्यक्तियों के छोटे दायरे में प्रवेश नहीं पा सके थे। सम्भवतः उस वक्त वह अपने सैनिक-जीवन के समय को किंचित् पश्चाताप और निराशा से याद करते होंगे। शायद इस तथ्य मे कुछ महत्व हो कि १७७२ में जब चार्ल्स विल्सन पील के सामने वह तस्वीर खिंचवाने के लिए बैठे, तो उन्होने वर्जीनिया मिलिशिया के कर्नल की विशेष वेशभूषा धारण की हुई थी। किन्तु अधिक सम्भाव्य यह प्रतीत होता है कि उन्होने सैनिक-वेशभूषा इसलिए चुनी, क्योकि उन्हे सुन्दर वस्त्र पहनने का शौक था और वह इस बात को जानते थे कि सैनिक-वर्दी में वह विशेष रूप से प्रतिष्ठित जान पड़ते हैं। उस चित्र मे एक ऐसे युवा-पुरुष का चेहरा सामने आता है जो ससार में सबके साथ शान्ति से रह रहा हो। वह चेहरा उस आदमी का लगता है जो सम्पूर्ण और क्रिया-शील जीवन बिताने के कारण अपनी जिन्दगी से न तो ऊबता हो और न ही केवल अपने हाल में मस्त रहता हो, जिसे न तो ईर्ष्या ने और न ही हिसात्मक महत्वाकांक्षा ने कभी तडपाया हो, जो कर्ज के बोझ के कारण राते जाग कर नही काट रहा हो, जिसे धोखे की आशंका न हो तथा जिसकी अन्तरात्मा उसके किन्ही कामों के लिए उसे धिक्कारती न हो। वह चेहरा उस आदमी का है जो समाज में विशेष स्थान रखता हो, जो सब में लगभग प्रमुख हो। अन्त में वह एक ऐसे व्यक्ति का चेहरा लगता है जो सुख से गार्हस्थ्य-जीवन बसर कर रहा हो।

चूंकि चेहरे से प्रकट होने वाली ये सब बाते वास्तविक रूप में वाशिंगटन में पाई जाती थी, अत. हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि यह चित्र बिल्कुल सही था।

वाशिंगटन के अपने बच्चे नही थे, किन्तु जहां तक मर्था के बच्चों का सम्बन्ध है, वाशिंगटन को कुटुम्ब-कबीलेदार माना ही जाना चाहिए। यद्यपि पैट्सी की मृत्यु १७७३ में ही हो गई थी, जैकी का विवाह कुछ महीनों पीछे सम्पादित हुआ। थोड़े ही अर्से मे जैकी के दो बच्चे हुए, जिन्होने अपने दादा, कर्नल वाशिंगटन, के

वात्सल्य का आनन्द उठाया। घर के अन्य सम्पूर्ण बालक-समूह के या तो वह चाचा थे या संरक्षक।

यह मधुर कामना होती है कि काश कोई और भी इससे पहले का चित्र प्राप्त होता, जिसे पील्ज के चित्र के पार्श्व मे रख दिया जाता। मान लो कि हम वाशिंगटन को जैसा कि वह सन्१७५७ में थे चित्र के द्वारा देख लेते, तो हमे उस व्यक्ति की झांकी मिलती, जो इतना परिपक्व नही था। सन् १७७२ मे आकर एक प्रौढ़-बुद्धि महानुभाव के दर्शन होते है। यही कारण है कि उस समय उनके लिए 'बुद्धिमान' जैसे विशेषण प्रयुक्त हुआ करते थे। इस आयु मे वह सतुलित, सहृदय तथा अपने आपको एवं वातावरण को अपने वश में रखने वाले नजर आते है। मुकाबले में वह सन् १७५७ मे सुयोग्य अवश्य लगते होगे, किन्तु कुछ अशान्त और उद्विग्न। हम उनके बारे मे लगभग कल्पना कर सकते है कि उन दिनों वह किस प्रकार किचित् भौए चढाए हुए, लड़ने-मरने की दशा मे खड़े होते होंगे—ठीक उन गुमनाम, दयनीय और युवा नेताओं की तरह जो एक शताब्दी बाद अमेरिका के गृह-युद्ध मे शामिल हुए।

इन बीच के सालों मे जैसा कि हम उनकी चिट्ठियो से स्पष्ट-तया जान सकते है, उनका नैतिक उन्नयन हुआ। इसका यह अभिप्राय बिल्कुल नही कि उनमें कोई अकस्मात् परिवर्तन हुआ। माऊंट वर्नन का मार्ग उनके लिए कोई दमश्क का मार्ग नही था। इगनेशस लायल उस समय योद्धा का जीवन व्यतीत करता रहा, जब तक कि पैम्पलोना मे पुन. स्वास्थ्य लाभ करते हुए उसका मन खून-खराबे से ऊब नही गया। (अपने आरम्भिक जीवन मे) फ्रांसिस्को बरनार्डर भी उसी प्रकार एक योद्धा था। एक सैनिक अभियान के दौरान मे ही वह वापिस लौट गया और उसने असीसी के फ्रांसिस के रूप मे अपनी जिन्दगी नये सिरे से शुरू की। जार्ज वाशिंगटन में इस प्रकार कोई अकस्मात् परिवर्तन नही आया। उन्हें किसी क्षण कोई दैनिक सन्देश भी प्राप्त नहीं हुआ। यह सत्य है कि वह पक्के एपिस्कोपोलियन (अर्थात् पादरियो द्वारा शासित

धार्मिक-विधि-विधान के अनुयायी) थे, किन्तु अपने धर्म में सच्ची निष्ठा रखते हुए भी वह इसे एक सामाजिक अनुष्ठान की हैसियत में मानते थे, जिसमें फरिश्तों अथवा काल्पनिक चित्रों का, सिवाए उनके जिनका आविष्कार पार्सन बीम्ज ने किया, कोई स्थान नहीं था। वह ईसाई-धर्मावलम्बी थे—ठीक उन्ही अर्थों मे कि जिनमें वर्जीनिया के बागान के स्वामी इस 'ईसाई' शब्द को लेते थे। ऐसा प्रतीत नही होता कि उन्होंने कभी ईसामसीह के स्मरणार्थ भोज में भाग लिया हो। घुटनों के बल झुकने की बजाए वह सीधे खड़े होकर प्रार्थना किया करते थे। वह रविवार को नित्य-प्रति गिरिजा-घर जाते हों—सो बात भी नही थी। सम्भव है कि इसका कारण उनकी रुग्णता हो, जैसा कि लायला और सेंट फ्रांसिस के विषय मे बात थी। १७५७–५८ की सर्दियों मे वह भयंकर रूप से रोग-ग्रस्त हो गये थे। १७६१ में भी ऐसा ही हुआ, जबकि उन्होंने लिखा—'एक बार मुझे लगा कि क्रूर यमदेव मेरी जीवित रहने की अत्यधिक चेष्टाओं पर काबू पा लेगा और सज्जनोचित संघर्ष के बावजूद मुझे उसका ग्रास बनना होगा।' मृत्यु की सम्भावना मनुष्य के मन को अवश्य एकाग्र कर लेती है।

किन्तु एक योद्धा-सत के रूप में वाशिंगटन की कल्पना करने का प्रयास करना कोई अधिक लाभप्रद प्रतीत नही होगा। अधिक से अधिक हम यह कह सकते है (और यह बात भी बहुत बड़ी है) कि लायला अथवा सेंट फ्रांसिस के सदृश उन्होंने दिखा दिया कि उनमें बढ़ने, ऊंचा उठने की समुचित क्षमता है। उनका चरित्र उभरा, यद्यपि वह देवत्व की सीमा तक नही पहुंचा। इस प्रकार वाशिंगटन का कोई भी जीवनी-लेखक, जिसने कि उनके सन् १७५९ तक के जीवन-कार्यो की खोज की है, यह निर्विवाद रूप से कह सकता है कि उस समय वाशिंगटन, रुपये-पैसे को मुट्ठी में कस कर रखने वाले, यहाँ तक कि कजूस थे। उदाहरण के रूप मे, जब विवश होकर उन्हे वानब्राम को 'नैसैसिटी' के किले पर शरीर-बन्धक के तौर पर, फ्रांसीसियो के हवाले करना पड़ा, तब उन्होने वानब्राम को अपनी

एक सैनिक-वर्दी (देने की बजाय) बेंची थी—जबकि उसे अपने साथ उठा कर ले आना उनके लिए कष्टदायक भी सिद्ध होता। यह ठीक है कि यह कोई लज्जाजनक सौदा नहीं था, बल्कि यह एक प्रकार से शीघ्रतापूर्वक सम्पादित हुई बिक्री थी। सेवा-निवृत्ति के बाद वाशिंगटन उदारतापूर्वक, यहाँ तक कि बेतहाशा, रुपया उधार पर दिया करते थे, बावजूद इसके कि उन्हे उसकी वापिसी की कोई उम्मीद नही होती थी। कभी-कभी वह चुपचाप और बिना प्रार्थना के रुपये-पैसे से मदद दिया करते थे। सांसारिक सफलता बहुत लोगों को बिगाड़ देती है, किन्तु यह वाशिंगटन के हक में साबित हुई।

इस प्रकार जैसा कि हम देखते है, १७७० के आरम्भिक सालों में वाशिंगटन सन्तुष्ट, सच्चे और ईमानदार आदमी थे। जब वह अपने खेत-बगीचों के निरीक्षण में अथवा किन्हीं और कामों में व्यस्त नही होते थे, उस समय वह नृत्यों, ताश के खेलों और शिकार आदि में अपना मन लगाया करते थे। सन् १७७५ तक के सात वर्षों में दो हजार के लगभग अतिथि माऊंट वर्नन आ कर ठहरे। इनमें से बहुत से तो रात्रि के भोजन के समय भी रुके, जिनमें से बहुत से रात्रि को भी वहाँ रहे। विलियम्जबर्ग की सभाओं में उपस्थित होने के अलावा वह अन्नापोलिस, फ्रैड्रिक्सबर्ग, डिस्मल स्वैम्प तथा अन्य स्थानों में भी काम अथवा मनोरंजन के लिए आया-जाया करते थे। सन् १७७० में उन्होंने सीमान्त पर एक लम्बी यात्रा की, जिसमें वह फोर्ट पिट से आगे जा कर नौका में ओहियो नदी के निचले भाग की ओर गये, ताकि सम्भव भूमि-सम्बन्धी दावों की जांच कर सकें। उन्होंने एक और पश्चिमीय यात्रा की योजना बनाई, जिसे उन्होने सन् १७७५ में पूरा करने का इरादा किया।

किन्तु १७७५ की ग्रीष्म ऋतु के आरम्भ में, पश्चिमीय यात्रा की योजना बनाने की बजाय, वह उत्तर में बोस्टन की ओर बढ़े। उस समय श्री जार्ज वाशिंगटन, जनरल वाशिंगटन बन चुके थे। वर्जीनिया का राज-भक्त भद्र पुरुष अब विद्रोही हो चुका था। इस समय वह

केवल वर्जीनिया के ही नहीं, बल्कि जार्जिया से मैसाचूसैट्स तक समूचे तेरह अमरीकी उपनिवेशों के सेना-नायक थे।

अहंकार-रहित देश-भक्त

यहाँ हमारे पास इतना स्थान नहीं कि हम विस्तार से इस डांवा-डोल स्थिति का विश्लेषण कर सकें। संक्षेप में, उपनिवेशों के अपनी बात पर अड़े रहने के तीन प्रधान कारण हमें नजर आते है। पहला कारण यह था कि १७५६-६३ की लड़ाई में विजय-प्राप्ति के फलस्वरूप फ्रास के प्रभुत्व का खतरा सिर से टल चुका था। फ्रांस ने सन् १७६३ की संधि के द्वारा अपने उत्तर अमेरिका के सम्पूर्ण अधिकारो को तिलाजलि दे दी थी। जैसे ही उसकी सत्ता का अन्त हुआ, ये उपनिवेश अपने 'मातृ-देश' (इंगलैण्ड) पर अधिकाधिक निर्भर रहने लगे।

इस हठधर्मी का दूसरा कारण युक्तिसंगत रूप से प्रथम कारण का ही परिणाम-मात्र था। इस विजय के बाद ब्रिटेन ने अपने उपनिवेशीय साम्राज्य को नये सिरे से गठित करने का प्रयास किया। इस प्रकार का पुनर्गठन वैसे भी किसी न किसी अश में आवश्यक था, क्योंकि ब्रिटेन ने उन्ही दिनों कैनेडा के प्रान्तों को जीत कर अपने अधिकार में ले लिया था। किन्तु जब ब्रिटेन ने एलीघनीज और मिसिसिपी के बीच के पिछड़े प्रदेश को अमेरिका के मूल-निवासियों और रोवेदार खाल के व्यापारियों के लिये सुरक्षित कर दिया, तो उपनिवेश-वासियों को लगा कि ब्रिटेन ने फ्रास के साम्राज्य-सम्बन्धी विचारों को विरासत के तौर पर अपना लिया है। सन् १७६३ की सरकारी घोषणा से भी उन्हे इस प्रकार के उद्देश्य की बू आई। इस घोषणा के अनुसार एलीघनी जल-रेखा के उस पार गोरों का बसना वर्जित कर दिया गया, जबकि दूसरी ओर सन् १७७४ के क्यूबैक कानून के आधीन ओहियो नदी के उत्तरीय इलाके को कैनेडा के क्षेत्राधिकार में शामिल कर लिया गया। इन बीच के वर्षों में (१७६३ से १७७४ तक) ब्रिटेन ने अधिक योजना-बद्ध तरीके से अपने साम्राज्य के ढाचे को बनाने की कोशिश की। इसके अन्तर्गत

उसने पुराने तथा नये जीते गये अधिराज्यों को शामिल कर लिया। यह हो जाने पर राज-कर लगा कर समुद्र तट के उपनिवेशों को मजबूर किया कि वे साम्राज्य के खर्चे का अपना-अपना भाग दें। इन करों से उस वाणिज्य-सम्बन्धी रूप-रेखा का स्पष्ट पता चलता था, जिसके अनुसार ये उपनिवेश ब्रिटेन को कच्चा माल मुहय्या करते थे और स्वयं वहाँ के उत्पादकों के लिये एक मण्डी का काम देते थे। इस प्रकार के प्रस्तावित कर अपने आप में किसी प्रकार बोझिल नही थे, क्योकि सामान्य रूप से ये उपनिवेश समृद्ध थे और ब्रिटेन के मुकाबले मे उन पर राजकर-सम्बन्धी बोझ अधिक हल्के थे।

अमेरिका के उपनिवेश-वासियो को यह बात चुभती थी कि ब्रिटेन उन्हे अपना अग न मान कर सम्पत्ति के रूप मे मानता है। यह उनकी हठधर्मी का तीसरा कारण था। वास्तव में ये उपनिवेश जीवन के रहन-सहन के तरीकों मे तथा स्वशासन के संचालन में प्रौढ अथवा लगभग प्रौढ थे। किन्तु ब्रिटेन उन्हे शिशुओं की भांति मान कर चलता था। शिशुओं के समान ही उनके साथ आज्ञा मानने पर दुलार-प्यार का सलूक किया करता और 'शरारत' करने पर थप्पड़ों से उनकी मरम्मत की जाती। वास्तव में यह किसी प्रकार के निष्ठुर व्यवहार का प्रश्न नही था—चाहे तत्कालीन देश-भक्त वक्ता इस बारे मे जो भी कहते हों, बल्कि कई एक छोटी-मोटी शिकायतें थी, जिन्होने बड़ी-बड़ी शिकायतो का रूप धारण कर लिया था। इसलिये कि 'पिता' हतबुद्धि, जिद्दी और आश्रय प्रदान करने का इच्छुक था, जबकि सन्तान आयु की उस अवस्था में पहुँच चुकी थी, जहाँ हर व्यक्ति अपनी मर्जी से काम करना चाहता है। सन् १७७६ मे टाम पेन ने अपनी 'कामन-सैन्स' नामक पुस्तिका मे प्रश्न किया था—'क्या सारी आयु लडका वना रहना मानव के हित मे है?' और दस वर्षो से अधिक समय से भिन्न-भिन्न उत्तरों के साथ यही प्रश्न अन्य लोग भी पूछते आये थे।

इन उपनिवेश-वासियों मे अथवा उनके अन्तर्गत एक ही प्रकार

के समुदायों में कुछ एक मोटी-मोटी बातें समान रूप से पायी जाती थी। बोस्टन का व्यापारी फिलेडैल्फिया के व्यापारी को भली भांति समझ सकता था। दक्षिण में बागान का मालिक अपने आपको न्यूयार्क के किसी भी प्रतिष्ठित जायदाद वाले व्यक्ति के समकक्ष मानता था। सम्भव है कि सन् १७५६ में न्यूयार्क से गुजरते हुए जार्ज वाशिंगटन ने एक ऐसे ही किसी व्यक्ति की लड़की से विवाह-सम्बन्ध स्थापित करने की बात सोची हो। वकील लोग हर जगह समान भाषा बोलते थे। इसी प्रकार उपनिवेशों की विस्तृत सीमाओं पर बसे अन्य लोग भी एक ही भाषा का प्रयोग करते थे, यद्यपि वे उतने सुस्पष्ट ढंग से नहीं बोल पाते थे। इन बातों के अलावा प्रत्येक उपनिवेश के भीतर अपने-अपने विशेष कारणों से असन्तोष था। टाईडवाटर वर्जीनिया अपनी भीषण डावांडोल अर्थ-नीति में डूबा हुआ था। इस बात के बावजूद कि वाशिंगटन ने आटे की चक्की लगाकर और पोटोमैक मे मनों मछलियाँ पकड़वा कर और उनके निर्यात का प्रबन्ध करके अपने 'फार्म' की आमदनी में वृद्धि कर ली थी, तो भी माऊंट वर्नन वाले खेत-बगीचे उन्हे हर प्रकार की सावधानी बर्तते हुए भी, बहुत कम लाभ दे रहे थे। तम्बाकू के दाम कम थे और इसकी खेती से भूमि ऊसर होती जा रही थी। मुद्रा की कमी थी। चूकि वर्जीनिया उपनिवेश बेचने की अपेक्षा अधिक वस्तुएं खरीदता था, इसलिये यहां के बागान के स्वामी जिनमें वाशिंगटन भी एक था, ब्रिटेन-व्यापारियों के ऋणी हो चुके थे। कहा जाता है कि ये व्यापारी अपने बेबस देनदारों को अकसर ठग लिया करते थे। स्वयं वाशिंगटन ने अपनी भूमि और साधनों के ह्रास की रोक-थाम के लिए माऊंट वर्नन पर तम्बाकू की बजाय गेहूं बोना आरम्भ कर दिया था। यद्यपि जागरूक सट्टेबाज अब भी पश्चिम से लाभ पाने की आशा कर सकते थे, परन्तु ब्रिटेन की सरकारी घोषणाये उसके मार्ग मे रोड़ा बनने की आशंका पैदा कर रही थीं, क्योंकि वालपोल निधि नामक कोष से सहायता मिलने के कारण ब्रिटेन के सट्टेबाज इनसे प्रतियोगिता करने लग पड़े थे।

ब्रिटेन ने ओहियो कम्पनी के दावे रद्द करके पैन्सिलवेनिया के सट्टेबाजों के दावे स्वीकार कर लिये थे।

यह उचित प्रतीत नहीं होता कि इस तस्वीर को अधिक काली रंगत दी जाये। पहली बात यह थी कि वर्जीनिया की इस डांवा-डोल आर्थिक स्थिति के लिए 'ब्रिटेन' को सब प्रकार से दोषी नहीं ठहराया जा सकता था और संघर्ष से कुछ पूर्व समय तक उसे इस के लिए सर्वथा उत्तरदायी समझा भी नही गया था। दूसरी बात यह थी कि यद्यपि ब्रिटेन की भूमि-नीति से लोगों में क्रोधाग्नि भड़क उठी थी, तो भी इससे वर्जीनिया के व्यवसायों का गला नहीं घुटा था। अकेले वाशिंगटन ने बस्तियों में अपनी बारह हजार एकड़ भूमि को विशेष अधिकार-पत्र द्वारा प्राप्त कर लिया था। इन बातों के अलावा हमें इस मान्यता को कोई महत्व नहीं देना चाहिए कि ब्रैडाक की हार के परिणाम-स्वरूप ब्रिटेन की प्रतिष्ठा को कोई ठेस पहुंची थी। वाशिगटन और उसके वर्जीनिया के साथी यद्यपि अपना सारा ध्यान अपने उपनिवेश के अन्दर बीती घटनाओं पर ही केन्द्रित करते थे, फिर भी वे लूईसबर्ग और क्यूवैक में हुई लड़ाइयों में ब्रिटेन के शस्त्रास्त्रों के अद्भुत कारनामों से अवश्य ही सुपरिचित थे। वे जानते थे कि सन् १७६३ की विजय के बाद सम्राट् जार्ज-३ की प्रजा का कोई भी आदमी ससार के सुदृढ़तम राष्ट्र का एक सदस्य है। जब वर्जीनिया का निवासी 'मेरा देश' शब्दों का प्रयोग करता था, तो उसका अभिप्राय शक्तिशाली ब्रिटेन से होता था और वह वर्जीनिया को उसका पांचवां भाग मानता था। यदि मदिरा, सुरुचिपूर्ण वस्त्रों, अथवा घर-गृहस्थी की वस्तुओं के कारण किसी वर्जीनिया निवासी के सिर पर किसी व्यापारी का ऋण आ पड़ा था, तो वही हालत कितने ही अंग्रेजों की भी थी जो लन्दन के निकटतर रहते थे।

लेकिन गर्व दुधारी तलवार थी। विलियम्जवर्ड ने कहा था कि हमारी सरकार इतने अच्छे ढग से बनी है कि गवर्नर हम पर तभी अत्याचार कर सकता है जब वह हमको धोखे मे डाल दे और

हमसे तभी पैसा ऐंठ सकता है जब पहले सिद्ध करदे कि वह उसका अधिकारी है। तीस वर्ष पश्चात् जब ब्रिटेन ने स्टाम्प कानून पास किया, तो अमेरिका-वासियो को यह यकीन नही हुआ कि प्रस्तावित कर न्यायोचित है। इसका विरोध करते समय वे अपने आपको ब्रिटेन के स्वाधीनता-प्रेमी नागरिक ही समझते थे। उनकी वक्तृत्व-शक्ति उनकी विरासत और परिस्थितियों की स्वाभाविक देन थी। उनमे कुछ लोग अन्य लोगों की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली ढग से लिख-बोल सकते थे। वर्जीनिया मे युवा विद्वान् टामस जैफसर्नन, ओजस्वी पेट्रिक हेनरी अथवा अधिक मजे हुए जार्ज मेसन के पास ऐसे शब्द थे, जिनका तुरन्त प्रभाव होता था, किन्तु यह वाद-विवाद जो विचित्र ढग से कभी उच्च स्तर का होता और कभी बिल्कुल व्यावहारिक, बढते-बढते सभी उपनिवेशो मे फैल गया। 'कल्पना-शीलता' एक ऐसा शब्द था जिसको कर्नल वाशिंगटन जैसे व्यवहार कुशल बागान-स्वामी भी उसके पुराने अर्थ मे ही समझते थे। १७६५ ई० में उन्होंने लिखा था कि स्टाम्प कानून 'उपनिवेश वासियो के कल्पनाशील भाग की बातचीत का विषय बना हुआ है।' (शब्द को रेखांकित मैंने दिया है)

उस वर्ष न तो वाशिंगटन और न किसी अन्य उपनिवेश-वासी के मन मे ही पृथक्करण का विचार आया था। अमेरिका-वासियों के दावे को इंगलैण्ड मे भी समर्थन मिला, स्टाम्प कानून रद्द कर दिया गया, और वाशिंगटन ने अपने व्यापारियों को उस समय जो पत्र लिखे, वे ऐसे थे मानो कोई अंग्रेज दूसरे अंग्रेज को लिख रहा हो। उन्होंने लिखा कि 'स्टाम्प कानून को रद्द करवाने में जो लोग सहायक रहे है, वे ब्रिटिश प्रजा के प्रत्येक सदस्य के धन्यवाद के पात्र है और हार्दिक रूप में मेरे भी।' फिर भी उसी पत्र में उन्होंने उन दुष्परिणामों की ओर भी सकेत किया जो कानून रद्द न किये जाने के कारण पैदा हो सकते थे। उनके विचारों की यह कठोर धार अगले तीन-चार वर्षो मे फिर दृष्टिगोचर हुई।

स्टाम्प कानून के रद्द होने के बाद इंगलैण्ड मे टाउनशैंड-कानूनों

के रूप में कुछ और कर-कानून बना दिये गये। वाशिगटन अब इतने रोष मे आ चुके थे कि १७६९-७० मे वह इन वर्जीनिया-वासियो में अगुवा हो गये थे, जो ब्रिटेन से कर लगने वाला माल मँगाने के विरुद्ध थे। उन्होंने अपने पड़ोसी मित्र, गुनस्टन हाल के जार्ज मेसन से कहा—'यह कहा जाता है कि सम्राट् को एवं पार्लियामेन्ट को भेजी गई प्रार्थनाएं सिद्ध करती है कि हमारे वे प्रयत्न विफल हुए है जो हमने ब्रिटेन वालों को अपने साधारण और विशेष अधिकारों के प्रति उद्‌वोधित करने के लिए अथवा उनके व्यापार और उद्योगों को क्षति पहुंचाने के लिए किये थे। यह बात सही नहीं है। अभी तो इन दोनों उपायों का परीक्षण करना बाकी है।" उन्होने उग्र शब्दों मे मेसन को यह भी एक बार लिखा कि जरूरत पड़ने पर अमेरिका वालों को 'आखिरी उपाय के रूप में ब्रिटेन के शासक-स्वामियों के आक्रमणों से' अपनी पैतृक स्वतन्त्रता को बचाने के लिए हथियार तक उठा लेने के लिए तैयार रहना चाहिए।

बहुत कम लोग आशा रखते थे कि इस झगड़े मे खुले आम हिंसात्मक कार्यवाहियां होंगी। ब्रिटेन ने इस दबाव के आगे एक बार फिर घुटने टेक दिये। समस्त टाऊनशैंड-करों को रद्द कर दिया गया, सिवाय उस कर के जो उपनिवेशों में आने वाली चाय पर लगा था। इस कदम के फलस्वरूप यह आशा थी कि सारी गड़-बड़ समाप्त हो जायगी। आखिर वाशिगटन जैसे प्रख्यात व्यक्तियों को अपने निजी काम भी तो रहते थे। साथ ही साथ बार-बार दोहराये जाने के कारण उन युक्तियों मे अब कोई रोचकता नही रही थी।

किन्तु सन् १७७३ के अन्त में उग्रवादियों के एक अच्छे प्रकार से अभ्यस्त दल ने बोस्टन में प्रसिद्ध चाय-पार्टी का ड्रामा किया। विदेश से लाई गई चाय पर कर-शुल्क अदा करने की बजाय उसे बन्दरगाह मे ही फिकवा दिया गया। इस कार्य को करते समय उन बोस्टन-निवासियों ने 'इण्डियन' लोगों का, जो कि अमेरिका के

मूल-निवासी थे, भेस बनाया था। यह नहीं कहा जा सकता कि वे इस कार्य के लाक्षणिक अर्थ समझते भी थे या नहीं। परन्तु उनके इस कार्य का और जिस प्रकार मर्यादा-रहित ढंग से उनके द्वारा विनाश हुआ, उसका समर्थन सभी उपनिवेशों में नहीं हुआ। किन्तु जब संसद ने मेसाचूसैट्स के विरुद्ध यह मान कर कि यह उपनिवेशों का सरगना है, ऐसे कानून पास किये, जिनका प्रयोजन बदला लेना और वहां के लोगों को बलपूर्वक अपने अधीन बनाये रखना था, तो शेष उपनिवेश भी उसके पक्ष में हो गये।

संकटोन्मुख वर्जीनिया में वाशिंगटन ने दुबारा एक प्रमुख कार्य-कर्त्ता के रूप में भाग लिया। वह न तो उग्रवादी थे और न ही उन लोगों में से थे जो किसी भी प्रकार के परिवर्तन का विरोध करते हैं। सन् १७७४ में उनके विषय में यह राय थी कि वह एक अहंकार-रहित व्यक्ति है और यद्यपि कम बोलते हैं, वह हर बात में समझ से काम लेते हैं; अपने कार्यों में 'उस पादरी की तरह शान्तचित रहते है जो अपनी प्रार्थना में मग्न हो।' इस प्रकार की प्रकृति रखने के कारण वाशिंगटन ने पेट्रिक हेनरी जैसे तीक्ष्ण उग्रवादी और सर-कार के प्रमुख कानूनी सलाहकार जान रैंडाल्फ जैसे चिन्ताग्रस्त परिवर्तन-विरोधियों के बीच का मार्ग अपनाया। इस प्रकार यद्यपि उन्होंने कर वाले माल के आयात के विरुद्ध किये जा रहे प्रयोग का समर्थन किया, उन्होंने इस बात का विरोध किया कि अपने माल का निर्यात भी बद कर दिया जाय। कारण कि यदि वर्जीनिया के लोग अपने माल का निर्यात नहीं कर पायेंगे, तो वे ब्रिटेन के ऋणदाताओं का ऋण कैसे चुका सकेंगे ?

वाशिंगटन जब एक बार किसी निश्चय पर पहुँच जाते, तो वह अपने विचारों को दूसरों से छिपाते नही थे। यद्यपि वह स्वयं सुस्पष्ट ढग से वाद-विवाद करने मे दक्ष नहीं थे, तो भी उनमें यह गुण था कि वह तार्किक लोगों की युक्तियों को सावधानी से आत्म-सात् कर लिया करते थे। उदाहरण के लिये हम जार्ज मेसन का उल्लेख कर सकते हैं। वाशिंगटन ने उनकी सुस्पष्ट बातों को जुलाई १७७४

की फेयर-फेक्स क्षेत्रीय सभा में 'प्रस्तावों' के रूप में प्रस्तुत किया था। एक चिरानुभवी जिला-पालिका के सदस्य के नाते वह वर्जीनिया की विधान-सभा में अपने साथियों के साथ खुले विद्रोह की स्थिति तक, कदम-ब-कदम आगे बढ़ते ही चले गये।

कुछ साथी अवज्ञा के वातावरण से भयभीत हो कर पीछे हट गये। वर्जीनिया-वासी धनी रैंडाल्फ ही केवल ऐसा व्यक्ति न था, जिसका चित्त संदेहों से आकीर्ण हो। तो फिर, वाशिंगटन को यह क्यों नहीं सूझा कि वह भी आगे कदम बढ़ाने से ठिठक जायें ? क्या एक धनी-मानी वर्जीनियावासी के नाते उन्हे रैंडाल्फ की तरह ही राजभक्त बन कर अपने उपनिवेश को छोड़ कर चले नही जाना चाहिये था ? आखिरकार, वाशिंगटन के पिता और दो सौतेले भाई—इन सब ने इंगलैण्ड में शिक्षा ग्रहण की थी। उनके निकटवर्ती पडोसी और पक्के मित्र, फेयरफेक्स परिवार के सदस्य, भावना में पूरे अंग्रेज थे। सैली के पति, कर्नल जार्ज विलियम फेयरफेक्स के भाई, ब्राइअन फेयरफेक्स ने वाशिगटन को लिखा था कि उन्हे ब्रिटेन के साथ सन्धि कराने के लिये जोर लगाना चाहिये। ब्राइअन की युक्तियां किस कारण उन्हें प्रभावित न कर सकी ?

इन प्रश्नो का उत्तर स्पष्ट प्रतीत होता है। वाशिंगटन के लिये इनका उत्तर सुस्पष्ट था। न केवल उनकी प्रकृति ही उन्हें प्रतिरोध के लिये आगे धकेले जा रही थी, बल्कि उनके कथनानुसार 'मनुष्य-मात्र की आवाज भी उनके साथ थी।' मनुष्य-मात्र से उनका अभिप्राय निस्सन्देह वर्जीनिया निवासियों से था। वह जन्म से, लालन-पालन से, सहज प्रकृति और प्रवृत्ति से—यहाँ तक कि जायदाद के कारण भी (जो किसी और वस्तु से कम महत्व की चीज नही है) वर्जीनिया के ही थे। इसी उपनिवेश में ही उनकी भूमि अपनी थी और वह यही के ही थे। एक सच्चे और ईमानदार मनुष्य के नाते वह केवल इतना ही आश्वासन चाहते थे कि उनके देशवासी उनके तरह ही महसूस करते है।

इस कहानी मे मृगतृष्णा तुल्य अनेक सम्भावनायें है। उदाहर-

णार्थ यदि डिनविड्डी के साथ उनके सम्बन्ध मृदुतर होते---तो क्या हुआ होता ? या ड्यूक्वैंने के निकट मरुस्थल की लड़ाई में ब्रैडाक मारे न गये होते, उन्होने फ्रांस को हरा दिया होता और विजयोपरान्त सम्राट् से अपने वर्जीनिया सहकारी को मान दिये जाने के लिये सिफारिश की होती, तो क्या होता ? संक्षेप में यदि वाशिंगटन को उनका वाछनीय कमीशन मिल गया होता, तो क्या होता ? फ्रासीसियों के विरुद्ध युद्ध अनेक वर्ष चलता रहा था । यह समय इतना लम्बा था कि उनको वर्जीनिया के बाहर अनेक युद्ध-क्षेत्रों में लड़ने का मौका मिला । उन्हे इस प्रकार के अवसर भी प्राप्त हुए कि उनके अनेक नए सम्बन्ध-सम्पर्क बन सके और पुराने कमजोर हो सके। इस विषय में जितना ही सोचें, उतनी ही कौतूहलता बढती है ।

किन्तु छोटी-छोटी इतिहास की दुर्घटनाये मिल कर और ही कोई प्रसग तैयार कर रही थी । माऊंट वर्नन के कर्नल वाशिंगटन को सन् १७७४ के अगस्त मास मे विलियम्जबर्ग प्रान्तीय सम्मेलन में सम्मिलित होने के पश्चात् भावी सघर्ष में उलझना पड़ा । उनका मत ऐसे शब्दों का रूप धारण कर चुका था, जिसे दूसरो की शब्दावलि कहना चाहिये । ('नैसर्गिक अधिकार', 'नियम और सविधान' आदि वाक्यांशों को वह बातचीत के दौरान मे अनेक बार सुन चुके थे), किन्तु इससे भी अधिक महत्व की बात यह थी कि ये वाक्याश उस समय स्थान-स्थान मे प्रचलित थे । उस हेमन्त ऋतु में फिलेडेल्फिया में हुई अमरीकी सार्वदेशिक कांग्रेस के लिये वर्जीनिया से जो सात प्रतिनिधि चुने गये, उनमें वे भी थे ।

टामस जैफर्सन इतने बीमार थे कि उनको मनोनीत न किया जा सका । जार्ज मैसन को इसलिये शामिल नहीं किया गया, क्योकि उस समय की परम्परा के अनुसार उनको इसका अधिकारी नही माना जा सकता था । फिर भी वाशिंगटन का निर्वाचन—जो प्रकटतः बहुमत से हुआ—इस बात का द्योतक था कि अपने समकक्षी महानुभावों की दृष्टि मे वह अब उन महत्वपूर्ण व्यक्तियों मे से थे जो उपनिवेशवासियों के साथ थे, सम्राट् के साथ नही । यदि वह शाही

गवर्नर के साथ भोजन भी करते, तो भी उन पर यह सन्देह न होता था कि उनकी देशभक्ति में कोई कमी है। उनका उत्थान बिना शोर-गुल्ल के, लेकिन निश्चित रूप से हुआ। वर्जीनिया के सात प्रतिनिधियों में से एक पैट्रिक हैनरी भी थे। उनके बारे में समझा जाता था कि वह किसी बात को शानदार ढंग से कहना जानते है। वाशिगटन के विषय में यह विश्वास था कि वह सही बात को शिष्टता और सहज बुद्धि के साथ कह सकते है।

वाशिंगटन ने फिलेडेल्फिया में पैट्रिक हेनरी को हृदयस्पर्शी शब्दों में यह कहते हुए सुना—'मैं केवल वर्जीनिया का नागरिक नही, सारे अमेरिका का नागरिक हूँ।' उस समय यह एक विचित्र धारणा थी, जो वास्तविक होने की बजाये अधिकांश में आलंकारिक थी। इसी जगह सम्मेलन में उन्हे यह सूचना मिली कि ब्रिटेन की सेना के दस्तों ने बोस्टन पर कब्जा कर लिया है और वे उसकी किलेबदी कर रहे है। उन सबने इस कार्य को बर्बरतापूर्ण माना। स्थिति के अन्य तत्वो पर विचार-विमर्श हुआ, किन्तु एक मत होने में बड़ी कठिनाई पैदा हुई। सब लोगो में गुस्से की आग सुलग रही थी, किन्तु यह क्रोध ठीक-ठीक रूप क्या धारण करे—यह समझ में नहीं आ रहा था। जान एडम्स ने अपनी पत्नी को घर पर लिखा—'सम्मेलन के पचासों प्रतिनिधि आपस में अजनबी से है, जो न तो एक दूसरे की भाषा ही जानते है और न ही वे एक दूसरे के विचारों, दृष्टिकोणों एवं परिकल्पनाओं को समझते है। इसलिये वे एक दूसरे से ईर्ष्या रखते है। उनमे भय, संकोच और अस्थिरता है।' उस सम्मेलन मे वक्तृत्व-शक्ति के कौशल का खूब प्रदर्शन हुआ। शाब्दिक दांव-घात भी खूब हुये। प्रत्येक प्रतिनिधि अपनी भावनाओं और दूसरे प्रतिनिधियों के उत्साह और जोश से प्रभावित हो कर बोला। वाशिगटन दूसरों के मुकाबले मे मौन रहे, यद्यपि वह अमिलनसार नही थे। ऐसी परिस्थिति में जबकि हर एक जरूरत से ज्यादा बोलने की इच्छा रखता था, उनका मौन रहना मूल्यवान सिद्ध हुआ।

अनेक बातों को दृष्टि में रखते हुए यह नही कहा जा सकता

कि यह अवसर यों ही बेकार गया। कई एक शान्तिपूर्ण उपायों से की जाने वाली विरोधात्मक कार्यवाहियों के बारे में एक मत बना और काग्रेस अधिवेशन सन् १७७५ के बसन्त तक स्थगित हो गया।

वाशिंगटन को इस सम्मेलन के लिए दूसरी बार वर्जीनिया का प्रतिनिधि निर्वाचित किया गया। जब वह मई १७७५ में माऊंट वर्नन से दूसरी सार्वदेशिक कांग्रेस के अधिवेशन में शरीक होने के लिए दुबारा फिलेडैल्फिया पहुंचे, तो दैवयोग से वह सैनिक वर्दी पहने हुए थे। उस सम्मेलन में अकेले उन्हीं की सैनिक वर्दी थी। रास्ते में उन्होंने स्वयंसेवकों के अनेक दस्तो का निरीक्षण किया था और उनके फिलेडैल्फिया के साथियों ने भी उन जिलों में जिनमें से होकर उन्होंने सफर किया था, जन-आन्दोलन के इसी प्रकार के चिन्ह देखे थे। वास्तव में हर स्थान में लोगों में जोश बढ़ता जा रहा था। अप्रैल मास में, लैक्सिगटन और कनकार्ड में मैसाचूसैट्स की मिलिशिया और बोस्टन के नियमित सैनिकों में लम्बी भिड़न्त हुई थी, जिसमें ब्रिटेन के सैनिकों के साथ कड़ा व्यवहार हुआ था। वाशिंगटन के फिलेडैल्फिया पहुंचने के तुरन्त बाद, मई मास में, उपनिवेश-वासियों की एक टुकड़ी ने टिकोन्डेरोगा के किले पर कब्जा कर लिया। यह किला जार्ज झील के उत्तरी छोर पर था और कैनेडा को यहीं से मुख्य रास्ता जाता था। लगभग उन्ही दिनों में उनके अपने उपनिवेश, वर्जीनिया में, पैट्रिक हेनरी के हैनोवर काऊंटी में लोग खुले तौर पर गवर्नर के अधिकारों को चुनौती दे रहे थे।

इतनी घोर अशान्ति के क्या परिणाम होंगे——इसके बारे में कोई भविष्यवाणी नही कर सकता था। किन्तु उपनिवेशों ने परस्पर गठ-जोड़ कर लिया था। कांग्रेस के अधिवेशन मे शामिल होने वाले अपेक्षतया निर्भीक प्रतिनिधि इस बात के लिए तैयार थे कि सैनिक बल का उत्तर सैनिक बल से ही दिया जाय। उन्हे एक सेना चाहिए थी और सेना के लिए सेनानी चाहिए था। अतः सन् १७७६ में, १५ जून के दिन, यह प्रस्ताव पास हुआ कि 'एक सेना-

पति नियुक्त किया जाय, जो अमेरिका की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये भर्ती की गई समस्त महाद्वीप की सेना को निर्देश दे सके।' इससे एक दिन पूर्व, कांग्रेस के अधिवेशन में, मैसाचूसैट्स के प्रभावशाली व्यक्ति, जान एडम्स, ने कर्नल वाशिगटन का नाम इस पद के लिए पेश किया था, जिसका समर्थन उनके हमनाम सहकारी, सैमूअल ऐडम्ज, ने किया था। यह सैमूअल ऐडम्ज अपनी बात मनवाने की कला में होशियार थे।

इस अचानक घटना ने सम्भवतः वर्जीनिया के वाशिंगटन को हैरानी मे डाल दिया। अपनी अचानक प्रशंसा से वह निश्चय से इतने घबरा गये कि बैठक के कमरे से बाहर निकल गये। वह पन्द्रहवीं तारीख को भी अनुपस्थित रहे, जिस रोज कि उनका नाम मेरीलैण्ड के प्रतिनिधि ने औपचारिक रूप से पेश किया। इस प्रस्ताव के फल-स्वरूप जार्ज वाशिगटन सर्वसम्मति से सेना-पति चुने गये।

अध्याय—३

जनरल वाशिंगटन

हमें अपने कामों मे न तो उतावलापन दिखलाना चाहिए और न ही आत्मसंदेह।

ऐसी बहादुरी, जो सीमा को उल्लांघ जाए,

दोष में परिणत हो जाती है,

और सार्वजनिक सभाओं में भय प्रदर्शित करना विद्रोह के समान धोखा देता है। हम दोनों से बचें।

(एडीसन के नाटक केटो से—अंक २, दृश्य १)

सेना की अध्यक्षता तथा संकट : सन् १७७५ से १७७६ तक

जार्ज वाशिंगटन के बाद की पीढ़िया इस बात को स्वीकार करती है कि केवल वही एक ऐसे व्यक्ति थे, जिन्हे प्रधान सेना-पति

के पद के लिए सोचा और चुना जा सकता था। किन्तु प्रश्न यह उठता है कि फिलेडैल्फिया के प्रतिनिधियों ने उन्ही का चुनाव क्यों किया ? उत्तर हो सकता है कि अंशतः अनुभवों की वजह से। किन्तु उपनिवेशो में अनेक दूसरे लोग भी थे, जो सेना में उतने ही काल तक नौकरी करते रहे थे जितने काल तक वाशिंगटन ने की, और जिनका सेवा-कार्य उतना ही संतोषजनक था। एक-दो तो, विशेष कर चार्ल्स ली और होरेशो गेट्स, ऐसे लोग थे, जिनका सैनिक अनुभव उन से भी अधिक था। ये दोनों योद्धा, जो इस समय अमेरिका के पक्ष का समर्थन कर रहे थे, इससे पूर्व नियमित अंग्रेजी-सेना के अफसर रह चुके थे। इनके अलावा मैसाचूसैट्स का आर्टेमस वार्ड तो उन दिनो रण-क्षेत्र में ही लड़ रहा था और बोस्टन के गिर्द न्यू इंगलैण्ड की मिलिशिया का संचालन कर रहा था।

इन सब बातों के बावजूद, वाशिंगटन को एकमत से प्रधान-सेनापति चुना गया। सम्भव है कि उनकी अपेक्षा की जाती, यदि वह स्वयं प्रतिनिधि के नाते सम्मेलन में उपस्थित न हुए होते, लोग उन्हें जान न गए होते और उनमें उनका विश्वास पैदा न हुआ होता। परिस्थिति जैसी भी थी, उन्होने चर्चा में बहुत कम भाग लिया। किन्तु समिति की बैठकों में तथा खाने की मेजों पर अपनी सूझ-बूझ और सचाई की धाक जमा दी। सैमूअल कर्वेन, जो वाशिंगटन को १७७५ के मई मास मे फिलेडैल्फिया मिला था, यद्यपि वह बड़ा कट्टर राजभक्त था और उस समय के तुरन्त बाद इंगलैण्ड के लिए प्रस्थान भी कर गया था, उसने यह स्वीकार किया कि वर्जीनिया का यह कर्नल 'शिष्ट व्यक्ति है और अपनी बात-चीत और आदतों में मृदु और मधुर है।' कांग्रेस के सदस्यों ने कर्वेन की इस सम्मति की सम्पुष्टि की। उनमें से एक ने कहा—'यह मृदु स्वभाव और रूप में योद्धा के समान है।' साथ ही उसने यह भी जोड़ दिया कि वाशिंगटन 'शकल-सूरत में बहुत तरुण लगते है।' असल बात तो यह है कि उनकी तितालीस वर्ष की अवस्था

उम्र का वह हिस्सा थी जबकि शक्ति और 'ठोस जानकारी'—दोनों का मेल उन में हुआ था।

इसके अतिरिक्त वाशिंगटन सम्पन्न व्यक्ति थे, यद्यपि वह उतने धनाढ्य नहीं थे, जैसा कि उनके विषय में कहा जाता है (अथवा वह स्वयं मानते थे)। न्यूयार्क के प्रतिनिधियों को पूर्व ही निर्देश किया गया था कि 'उसी व्यक्ति को जनरल बनाया जाय, जिसके पास प्रचुर धन-सम्पत्ति हो, ताकि उसके कारण वह अपने उच्चपद की शोभा को चार चांद लगा सके। ऐसा न हो कि उसकी शोभा महज पद के कारण हो। इसके अलावा देश इस बात पर एतबार कर सके कि उसकी जायदाद, उसके रिश्तेदार तथा उससे सम्बन्ध रखने वाले लोग इस उच्चपद के कर्तव्यों को वफादारी से निभाने में कोई अड़चन पैदा न करें। वह इस ढंग का आदमी हो कि जनता के हित में अपने हाथों में आई सत्ता का परित्याग कर सके।'

हमें आशा नहीं कि उस समय कोई और व्यक्ति इस विवरण के अनुरूप उपलब्ध हो सकता। वाशिंगटन उच्च वर्ग के ऐसे व्यक्ति थे जिनका झुकाव उन्मूलनवाद (रैडिकल) विचार धारा की तरफ था। कुछ भी हो, वह फिलेडैल्फिया के सम्मेलन में उपस्थित कुछ प्रमुख नागरिकों के विपरीत उपनिवेशों की खातिर अपने आपको और अपनी जागीर को भी समर्पित करने को उद्यत थे। उनकी सैनिक वर्दी इस तथ्य को घोषित करती थी। उनका आचरण तथा उनकी प्रसिद्ध चमक-दमक के आरोप से उनकी रक्षा कर रही थी। उस समय उनके सम्बन्ध में कतिपय कहानियों के गढे जाने की प्रक्रिया का सूत्रपात भी हुआ। सन् १७७५ में एक किंवदन्ती फैली कि गत वर्ष कर्नल वाशिंगटन ने यह प्रस्ताव रखा था कि वह एक हजार वर्जीनिया–सैनिकों की रेजमैण्ट बनायेंगे और उन्हे बोस्टन की ओर ले जायेंगे। इस पर जो खर्चा आएगा, वह अपनी जेब से देंगे। यह किंवदन्ती सर्वथा निराधार प्रतीत होती है, यद्यपि उनकी जीवनी लिखने वालों ने इस घटना को सच समझ कर अक्सर दुहराया है। यह प्रकट करता है कि फिलेडैल्फिया के लोग इस बात के लिए

कितने उत्सुक थे कि वाशिंगटन की महानता के साक्ष्य पेश करके उन्हें एक अलौकिक पुरुष जाहिर किया जाय। कांग्रेस के पास सैम एडम्ज सरीखे आदमी तथा अन्य देशभक्त भी थे जो विद्रोही जनता को उत्तेजित कर सकते थे, किन्तु इस समय अनिवार्य रूप से ऐसे व्यक्ति की जरूरत थी जो उस विद्रोही समुदाय को अनुशासन-बद्ध करके उसका नेतृत्व कर सके। ऐसे महानुभाव की आवश्यकता थी जो देखने और कार्य के संचालन में सेनापति के सदृश लगें तथा जो हो तो अमेरिका-निवासी, परन्तु अपना कार्य का सम्पादन योरुपीय नमूने पर करने की योग्यता रखता हो।

इस सिलसिले में एक और भी महत्वपूर्ण विचारणीय बात थी। अब तक न्यू इंगलैण्ड मुठ-भेड़ का क्षेत्र था। अब यदि प्रस्तावित सार्वदेशिक सेना मे सब उपनिवेशों को पूर्णतया मिलाने की योजना बनती है, तो—जैसा कि जान और सैम्युअल-एडम्ज ने महसूस किया—इसकी कमान ऐसे योद्धा को सौंपी जानी चाहिए, जो न्यू इंगलैण्ड का न हो। मैसाचूसैट्स और वर्जीनिया दोनों मिलकर उपनिवेशों की शक्ति के प्रधान आधार थे। इसलिए वर्जीनिया-वासी होने के कारण जार्ज वाशिंगटन विशेष रूप से चुने जाने योग्य थे। आधुनिकतम अमेरिका के इतिहास में प्रयुक्त शब्दावली में वह 'प्रयोजन सिद्ध करने वाले' उम्मीदवार थे। उनके अधीन नियुक्त किये गए मेजर व जनरल, राजनैतिक तथा अन्य प्रासांगिक बातों को दृष्टि में रख कर नियुक्त किए गए—जैसे, मैसाचूसैट्स को खुश करने के लिए आर्टेमस वार्ड को नियुक्त किया गया; चार्ल्स ली को उसके सैनिक तर्क-वितर्कों के कारण, फिलिप स्कूयलर को (जो एक और प्रतिनिधि था तथा धनाढ्य होने के अतिरिक्त एक मजा हुआ सैनिक अफसर भी था) न्यूयार्क की तुष्टि के लिए लगाया गया और इस्राईल पुटनम को इसलिए नियुक्त किया कि वह कनैक्टीकट का मन-चाहता 'पुत्र' और जन-अधिनायक था। होरेशो गेट्स को, जो ब्रिटेन मे पैदा हुआ था और जिसने वर्जीनिया को अपनी मातृ-भूमि बना लिया था, एडजूटैण्ट जनरल मुकर्रिर किया गया। उनके

अधीन, उसी प्रकार विविध उद्देश्यों को सामने रख कर कई एक ब्रिगेडियर जनरल चुने गये।

सम्भवतः वाशिंगटन के बारे में शब्द 'उम्मीदवार' का प्रयोग गलत अर्थ देता है। उन्होंने अपने आपको कभी आगे नहीं धकेला। जब उन्होंने कांग्रेस को यह विश्वास दिलाते हुए कहा कि 'मैं अपने आपको इस कमान के योग्य नहीं समझता,' तो उन्होंने अपने दिल की बात कही। एक कहानी भी है कि वाशिंगटन ने आंखों में आंसू लाते हुये पैट्रिक हैनरी को गुप्त रूप में कहा कि 'जिस दिन से मुझे अमेरिका की सेनाओं की कमान सौंपी जायगी, उसी रोज से मेरा पतन होगा और मैं अपनी सुकीर्ति को नष्ट कर बैठूंगा।' चाहे यह कहानी सच्ची न भी हो, तो भी इसमें सन्देह नहीं कि उस समय भी वाशिंगटन को अपने अच्छे नाम का बहुत ही ध्यान था। यद्यपि उन्होंने अपने कई पत्रों में अपना विरोध प्रदर्शित करते हुए यह कहा कि वह आलोचना की परवाह नहीं करते, और यद्यपि उन्हें नुक्ता-चीनी प्रचुर मात्रा में सहनी पड़ी, तथापि उन्होंने अपने जीवन के अन्त तक कभी इस बात को स्वीकार नहीं किया कि आलोचना का कष्ट अनिवार्य रूप से प्रत्येक सार्वजनिक पदाधिकारी को भुगतना ही पड़ता है। उन्होंने सदा अपने क्रोध को उचित सीमा के अन्दर रखा। अपने समकालीन अधिकारियों के विपरीत उन्होंने अपनी सैनिक मान-मर्यादा की नियमावलि में से द्वन्द्व-युद्ध को निकाल दिया।

जनरल वाशिंगटन हर चीज का बहुत अच्छी तरह ख्याल रखते थे। यह इस लिए नहीं कि उनमें घमण्ड की मात्रा थी, बल्कि इस लिए कि उनमें आत्माभिमान था। वह दूसरे लोगों में अशिष्ट व्यवहार को घृणा से देखते थे और इस बात को सहन नहीं कर सकते थे कि दूसरे लोग उन्हें नीच प्रवृत्तियों वाला समझें। इससे पूर्व एक बार उन्होंने ब्रैडाक के अधीन स्वयं-सेवक भद्रपुरुष के रूप में बिना वेतन और औपचारिक पद-स्थिति के कार्य किया था। यह सिद्ध करने के लिए काफी है कि उनमें कितनी अधिक निस्स्वार्थ भावना थी। अब प्रधान सेनापति का पद ग्रहण करने पर

उन्होंने उस अपने विचार को अधिक शानदार पैमाने पर पुनः कार्यान्वित करना चाहा। अतः उन्होंने कांग्रेस पर अपनी यह इच्छा प्रगट की कि वह इस पद के लिए कोई वेतन नहीं चाहते, केवल अपना खर्च लेंगे। (कांग्रेस ने पूर्व ही यह निश्चय कर लिया था कि प्रधान सेना-पति को वेतन तथा खर्चे के लिए पांच सौ डालर प्रतिमास दिए जायें।)

यद्यपि वह अपने दायित्वों के बोझ से दब गए थे, तथापि मनुष्य होने के नाते वह उस समादर पर, जो उन्हें इन जिम्मेदारियों के कारण मिला, अत्यन्त प्रसन्न थे। उन्होंने अपने गत सैनिक-जीवन की निराशाओं को अपने मन से किसी प्रकार की कड़वाहट पैदा नहीं करने दी, बल्कि इन निराशाओं के कारण जो कोई भी संताप कभी उनके हृदय में पनपे थे, उन्होंने उनको एक ही वार में खत्म कर दिया। चिरकाल पहले तरुण वाशिंगटन ने सैली फेयरफेक्स को लिखा था कि मैं उत्सुकता-पूर्वक चाहूंगा कि एडीसन के नाटक कैटो मे मर्सिया के संग जूबा का अभिनय करूँ। मर्सिया कैटो की लड़की थी और जूबा नूमीडिया का छोटा राजकुमार, जो कैटो के समर्थकों में से एक था। नाटक-सम्बन्धी वह स्वप्न विस्मृत भूतकाल का था। सैली फेयरफेक्स सन् १७७३ में अपने पति के साथ सदा के लिए इंगलैण्ड को प्रस्थान कर गई थी। उसी नाटक को मई, १७७८ में वाशिंगटन के सदर-मुकाम, 'वैली फोर्ज' में खेला गया। यद्यपि वाशिंगटन को इस प्रकार की कल्पनाए करने की आदत नही थी, हो सकता है कि उन्हें यह विचार आया हो कि उनके अपने आकार में तरुण अर्ध विदेशी जूबा, पूर्णतया रोम के नागरिक और अभिस्वीकृति नेता, कैटो, के रूप में पुन' ढाला गया है।

जब वाशिंगटन ने बोस्टन के बाहर देश-भक्त सेना की कमान अपने हाथों मे ली, तो जुलाई, १७७५ का दिन उन्हें उस फासले की याद दिला रहा होगा जो उन्होंने अपने जीवन मे इस वक्त तक तय कर लिया था। यह वह दिन था जिस दिन कि इक्कीस वर्ष पूर्व अपनी हार के परिणाम-स्वरूप उन्होंने 'नेसैसिटी' दुर्ग फ्रांसीसियों

को समर्पित किया था। उस समय तरुण कर्नल वाशिंगटन अपने से बड़ी सेना के घेरे में फंस गया था, इस समय प्रौढ़ वाशिंगटन स्वयं बोस्टन का घेरा डाले हुए थे और उनके अधीन करीब-करीब पन्द्रह हज़ार मिलिसिया थी। बोस्टन के भीतर इससे आधी संख्या में ब्रिटिश सेना थी, जो दो सप्ताह पूर्व लड़ाई में एक सहस्र सैनिक खो चुकी थी। इन लोगों को ब्रीड्स हिल में विजय तो मिली थी, पर उन्हें यह जीत महंगी पड़ी। ब्रिटिश सेनापति, जनरल गेज, ने बीस वर्ष पूर्व ब्रैडाक की अभावी 'एडवान्स गार्ड' का नेतृत्व किया था। उस समय वाशिंगटन सेनापति का छोटा अंग-रक्षक था।

ये कुछ एक बातें थीं जो वाशिंगटन को सान्त्वना दे रही थी, किन्तु उस ससय इतनी अधिक समस्याएं थी कि उनके मुकाबले में ये सान्त्वनाएं शायद ही कोई हैसियत रखती हों। मर्था और वर्जीनिया की मनभाती जागीरों को छोड़ना उनके लिये हृदय-विदारक था। फिर कमान की समस्त चिंताए थी। न्यू इंगलैण्ड के कई अफसर एवं सैनिक वाशिंगटन को सन्देह की दृष्टि से देखते थे और जैसा कि उनके अविवेकपूर्ण पत्न-व्यवहार से प्रकट होता है, वह भी उन्हें शक की नजरों से देखते थे। उन्होने शिकायत की कि 'व्यवस्था, नियमितता तथा अनुशासन' का अभाव है। उनका मत था कि अमेरिकियों की अव्यवस्था और असत्य व्यवहार के दुष्परिणाम तम्बुओं, कम्बलों, वर्दियों, दवाइयों, आहार-सामग्री, इत्यादि की रसद पर पड़ रहे है। स्टाफ, तोपखाने की सैनिक टुकड़ी आदि नहीं के बराबर थे। कांग्रेस के प्रबन्ध किए बिना, वेतन का रुपया-पैसा सुरक्षित रखने के लिए उपयुक्त पेटी कहाँ से आ सकती थी? कांग्रेस ने निश्चय किया था कि सब राज्यों की सम्मिलित सेना बनाई जाए। क्या इस निश्चय के अनुसार सब राज्य अपने-अपने हिस्से की सेना देंगे? इस प्रश्न का उत्तर 'हां' की अपेक्षा 'न' में अधिक था और जितने वर्ष लड़ाई चलती रही, स्थिति बराबर ऐसी ही बनी रही।

प्रश्न यह था कि जो भी सेना उपलब्ध थी, उससे सक्रिय रूप मे क्या काम लिया जाय? न तो कांग्रेस और न ही वाशिंगटन उस

परिस्थिति में दूर तक चलने वाली योजनाएं बना सकते थे। इस समय भी फ़ोर्ट 'नैसेसिटी' के सदृश, शत्रु-सेनाएं औपचारिक-रूप से युद्ध की स्थिति में नहीं थीं। अमेरिका के लोग जनरल गेज की अंग्रेजी फौज को, जो बोस्टन में थी 'मन्त्रालयिक सेना' कह कर पुकारते थे। उनकी युक्ति यह थी कि अमेरिका के भिन्न-भिन्न उपनिवेश ब्रिटिश सम्राट् के राज-भक्त होने के कारण एवं उसकी स्वतन्त्र प्रजा के रूप में अपने अधिकारों के लिये संघर्ष कर रहे हैं। सन् १७७५ के अन्तिम मासों में यह अवस्था थी कि अमेरिका में अतिमार्गी लोग, जो पूर्ण स्वतन्त्रता चाहते थे, संख्या में बहुत कम थे। बहुसंख्यक अमरीकी आशा लगा कर बैठे थे कि ब्रिटेन के साथ किसी न किसी प्रकार का समझौता हो जायगा, यद्यपि इस समझौते के स्वरूप की कल्पना दुःसाध्य थी। इस बीच में, साहसपूर्ण प्रति-रोध आवश्यक था। परन्तु इसके लिये क्या हो सकता था? कांग्रेस ने कैनेडा के प्रान्तों को बात-चीत के लिए अस्थायी प्रस्ताव किये थे (किन्तु इनका कुछ परिणाम नही निकला था)। वाशिंगटन ने क्यूबैक लेने के लिए बैनीडिक्ट आरनल्ड के अधीन एक सैनिक अभि-यान भेजा, ताकि मामला वहीं ठण्डा हो जाए। उन्होने कई बार यह भी सुझाव दिया कि उसी साहस के साथ बोस्टन पर धावा बोल दिया जाये। परन्तु आरनल्ड का आक्रमण वीरता-पूर्ण होते हुए भी असफल रहा और इसके लिए वाशिंगटन के सदरे-मुकाम की युद्ध-समिति ने बोस्टन के हमले के प्रस्ताव को ठुकरा दिया।

यह कहा जाता है कि वाशिंगटन अपने अधीन अफसरों के मत को बहुत जल्दी स्वीकार कर लेते थे। यदि यह सत्य है, तो उनका अपने आप कोई कदम उठाने में सकोच करना समझ मे आ सकता है, कारण कि सैनिक मामलों में 'हम सबकी जानकारी सीमित और अल्प हुआ करती है।' चार्ल्स ली को भी इसके बावजूद कि वह प्रवाह-रूप में बातचीत कर सकता था, युद्ध सम्बन्धी रचनाओं का क्रियात्मक अनुभव नही था। जहाँ तक वाशिंगटन का सम्बन्ध है, उन्होंने आज तक सीमान्त क्षेत्रों की लड़ाइयों में छोटे अधिकारी

के रूप में भाग लिया था। मिली-जुली विशाल सेना का प्रबन्ध तो दूर की बात रही, उन्हें अश्वारोहियों की सेना के व्यूह-कौशल अथवा बहुत बड़े पैमाने पर तोपखाने के प्रयोग से सीधा कोई परिचय नहीं था। अतः उस समय तक जब तक उन्हें सैनिक मामलों में कम वाकफियत थी, उनकी हिम्मत नहीं पड़ती थी कि वह केवल अपनी निर्णायक बुद्धि पर भरोसा करें। इसके अतिरिक्त वह युद्ध-समिति की बैठकें बुलाने में वास्तव में उस कार्य-विधि की पालना कर रहे थे जो उस समय अन्य सब सेनाओं और सेनापतियों में प्रचलित थी। दूसरी बात यह थी कि उन्हें अपने से अधिक अनुभव रखने वालों के साथ यथासम्भव चतुरता-पूर्वक व्यवहार करना लाज़मी था। ये लोग थे जिन्हें इस बात पर रोष-सा था कि वाशिंगटन उनके ऊपर लादा गया है। आर्टीमस वार्ड के साथ विशेष रूप से यह बात थी। वह वाशिंगटन से न केवल पांच वर्ष बड़ा ही था, बल्कि उसने कर्नल की हैसियत मे फ्रांसीसियों के विरुद्ध लड़ाइयों में मिलिशिया मे सेवाएं भी की थी। वह (वार्ड) यह महसूस करता था कि वह बोस्टन में गेज का सफलतापूर्वक मुकाबला कर सकता है। इराइल पुटनम, जिसने बंकर हिल की लड़ाई में वह नाम पैदा किया था कि उसकी सफलता सम्बन्धी कहानियां हर एक की जबान पर थी, वाशिंगटन से चौदह साल आयु में बड़ा था और उसने अपना जीवन विलक्षण रूप से विविधता-पूर्वक और साहसिक कामों में बिताया था। इन कारणो से वाशिंगटन महोदय के लिए वांछनीय था कि सावधानी से उन लोगों के साथ व्यवहार करे। चूंकि उनके घर में गुलाम नौकर चाकर थे, इसलिए न्यू इंगलैण्ड वालों के लिए (जो दास-प्रथा के कट्टर विरोधी थे) वह दोहरी तरह से सन्देह के पात्र थे।

कई अन्य पहलुओं से भी यह उत्तम बात थी कि वाशिंगटन अपने अधीन सेनापतियों से मशविरा ले लिया करते थे। उन की इस बात के लिए आलोचना होती थी कि वह आवश्यकता से अधिक सतर्क रहते हैं, किन्तु वास्तव में वह अपनी तरुणावस्था के दिनों की तरह ही अत्यधिक उग्र-गति से काम करने वाले थे। वह

अकर्मण्यता से नफरत करते थे। उन्हें अपनी इच्छा के विरुद्ध ही सन् १७७५-१७७६ की शरद् ऋतु में युद्ध की प्रतीक्षा करनी पड़ी।

सन् १७७६ की बसन्त ऋतु में, इतने गड़बड़झाले के बीच, कम से कम एक विषय धीरे-धीरे पहले से अधिक स्पष्ट होता चला गया—वह था अमेरिका की स्वतन्त्रता का विषय। स्वतन्त्रता की इच्छा द्रुतगति से तीव्र होती जा रही थी। लोगों को ऐसे प्रमाण भी मिले, जिनसे यह प्रकट होता था कि जार्ज तृतीय तथा उसका मन्त्रिमण्डल (लार्ड नार्थ, लार्ड जार्ज जर्मन, सैण्डविच के अर्ल तथा अन्य) विद्रोह को कुचलने पर तुले हुए है। इन प्रमाणों ने जलती पर तेल का काम किया। "हथियार ही अन्त मे संघर्ष का फैसला किया करते है। प्रार्थना को मानना न मानना, बादशाह के अख्तियार में था और संयुक्त राष्ट्र अमेरिका ने चुनौती को स्वीकार कर लिया है।" यह घोषणा थी जो टाम पेन ने अपनी 'कामन सैन्स' नाम की पुस्तिका में की। इस कृति की भावनाओ को उपनिवेश-वासियों द्वारा, जिनमें जनरल वाशिंगटन भी शामिल थे, उत्साह-पूर्वक समर्थन मिला। पेन यदि कुछ वर्ष पूर्व इन विचारों को अमेरिका-जनता के सम्मुख रखते, तो उन्हें विद्रोह-पूर्ण और धर्म की निन्दा समझा जाता। सन् १७७६ के आरम्भिक मासों में यह सुनकर लोगों के दिल को ठेस पहुंची कि जार्ज तृतीय, श्रेष्ठतम बादशाह होना तो दूर की बात रही, ग्रेट ब्रिटन का केवल एक अत्याचारी 'शाही बनेला पशु' है। किन्तु यह सदमा बादशाह के प्रति वफादार लोगों को छोड़, जो इस विवरण से घबरा उठे थे, अन्य अमरीकियों को मधुर लगा, क्योंकि इससे वे सुखद परिणामों की आशा रखते थे। इन वफादार लोगों का उल्लेख निकोलस क्रैसवेल ने भी अपने पत्र में किया था। यह अभागा अंग्रेज युवक था जो उपनिवेशों में सन् १७७४ में आया था। उसके उल्लिखित शब्द—सग्निक एडनेर्फ—बादशाह के हितैषियों के लिए स्पष्ट संकेत थे। जिन लोगों का वर्णन क्रैसवेल ने क्रोधावेश में 'स्लैवर' अर्थात् 'विद्रोही' कह कर किया था, उन्होंने जान लिया कि जिन विश्वासों को वे ऊपरी ढंग

से मानते आए है, उन्हें पेन महोदय ने निश्चयपूर्वक उलटा दिया है।

पेन ने कहा—"सही अथवा तर्क-संगत बात पृथक्करण के पक्ष में है। कत्ल किए गए लोगों का खून, प्रकृति की रोती हुई आवाज पुकार-पुकार कर कह रही है, 'यह अलग होने का समय है।' यहां तक कि जिस अन्तर पर भगवान् ने इंगलैण्ड और अमेरिका को रखा है, वह इस बात का प्रबल और प्राकृतिक प्रमाण है कि वह दिव्य सत्ता कभी इन में से किसी देश का दूसरे पर अधिकार नहीं चाहती थी।"

घटनाओं के चक्र के कारण पेन की प्रभावशाली वाणी पहले से भी अधिक हृदय-ग्राही बन गई। अमरीकी सेनाओं को जो क्यूबैक की चढ़ाई में असफलता मिली थी और जिसके कारण उन्हें कैनेडा से हटना पड़ा था, उसकी कसर ब्रिटिश धावे की असफलता से पूरी हो गई। समुद्र के रास्ते से चार्ल्सटन के विरुद्ध जनरल हैनरी क्लिटन द्वारा यह चढ़ाई की गई थी। सबसे अधिक खुशी की बात यह हुई कि मार्च १७७६ में बोस्टन को अंग्रेजों के पंजे से छुड़ा लिया गया। इससे पूर्व तोप-गोलों के अभाव में वाशिंगटन कुछ कर नही सके थे। इस कमी की पूर्ति एक सुयोग्य और सक्रिय युवक ने की, जिसका नाम जनरल हैनरी नैक्स था, जो व्यवसाय से बोस्टन का पुस्तक-बिक्रेता था। वह सरदी के मौसम में थकावट से चकना-चूर करने वाली यात्रा करके तितालीस तोपों और सोलह शतघ्नि-काओं को ले आया। नौक्स उन्हें फोर्ट टिकनडेरोगा से, जहां यह कई मास पूर्व पकड़ी गई थीं, खैंच कर लाया था। वाशिंगटन के सैनिकों ने, अन्धेरे की आड़ में द्रुतगति से कार्य करते हुए, उन्हें डौरचैस्टर हाईट्स पर मिट्टी के पुश्ते के पीछे लगा दिया। इस स्थान से बोस्टन तथा बन्दरगाह के बहुत से भाग पर प्रभावशाली ढंग से गोला बारी की जा सकती थी।

जनरल विलियम हो ने (जो उस समय गेज के स्थान पर ब्रिटिश प्रधान सेना-पति नियुक्त हुआ था) पहले-पहल डौरचैस्टर

हाईट्स पर धावा बोलने का विचार किया था। किन्तु बाद में उस ने यह कदम उठाना उचित नहीं समझा। सम्भव है कि मूसलाधार वर्षा के कारण उसने यह निश्चय किया हो, क्योंकि वर्षा में बन्दूकों के बेकार होने का डर था। यह भी सम्भव है कि उसे बंकर हिल की घटना स्मरण हो आई हो, जहां का संहार का दृश्य उसने बिल्कुल पास से देखा था। अमरीकी सेना के साहसिक कार्य का यह परिणाम हुआ कि बोस्टन अंग्रेजों के लिए किसी प्रकार सुरक्षित अड्डा न रहा। इसलिए यथार्थतः न हारते हुए भी, हो अमरीकी सेना के चातुर्य से परास्त हो गया। इस प्रकार हार खाकर उसने अपनी सेना वहां से निकाल कर जहाजों में उतार दी। उसने अपने साथ एक हजार हताश राजभक्त भी लिए। जो भी सामान उससे विनष्ट हो सका, उसने उसका विध्वंस किया और कुछ दिन और बन्दरगाह में रुक कर, पूर्व दिशा की ओर नोवास्कोटिया स्थित हैलीफैक्स के लिए रवाना हो गया।

इस खबर के मिलते ही वाशिंगटन को विस्मय हुआ। कांग्रेस के अध्यक्ष, जान हैनकाक को उन्होंने लिखा—'श्रीमन्! मुझे यह सूचना देते हुए बड़ी प्रसन्नता होती है कि गत रविवार दिनांक १७ को, प्रातः ९ बजे ब्रिटेन की सरकारी सेना ने बोस्टन नगर खाली कर दिया था। इस समय संयुक्त राष्ट्र की सेनाएं इसे अपने अधिकार में किए हुए हैं। श्रीमन्! मैं इस सुखद घटना पर आप को तथा कांग्रेस को बधाई देता हूं। विशेष रूप से इसलिए भी कि यह सारा कार्य इस ढंग से सम्पादित हुआ कि बचे-खुचे बोस्टन-निवासियों की जानें भी बची और उनका माल-सामान खतरे में नहीं पड़ा।' कांग्रेस ने धन्यवाद का प्रस्ताव पास किया और उन्हें उपहार के रूप में सोने का पदक मिला। समस्त संयुक्त राज्य मे वाशिगटन की प्रशंसा के गीत गाए जाने लगे।

ग्रीष्म काल के बीच में सिवाए सर गाई कार्लटन की सेना के कोई भी नियमित ब्रिटिश सेना अमेरिका के तेरह उपनिवेशों में नहीं थी। उस समय कार्लटन कैनेडा से न्यूयार्क के उत्तरीय भाग

की ओर बढ़ रहा था। कांग्रेस खुश थी। उसे और खुशी होती, यदि उसे यह मालूम हो जाता कि फ्रांसीसी प्रगट रूप से तटस्थ रहते हुए भी, उपनिवेशों को गोला-बारूद की सहायता देकर अपने पुराने शत्रु, ब्रिटेन, को क्षति पहुंचाने की योजना बना रहे है। दूसरी तरफ बादशाह के प्रति वफादार लोग कुछ एक क्षेत्रों में, विशेष रूप से दक्षिण में, क्रियाशील थे। इससे प्रगट होता था कि अमरीकी काफी अनुपात में अब भी अनुदार दल के हैं। यदि कट्टर रूप से अनुदार न भी हों, तो वाशिंगटन के शब्दों में, 'वे लोग अभी तक समझौते के सुस्वादु आहार का उपभोग कर रहे थे।' इन परिस्थितियों मे यह अधिक उचित था कि सच्चे देश-भक्तों को प्रोत्साहित किया जाये और सशंकित लोगों पर दबाव डाला जाये।

मई १७७६ में वाशिंगटन ने निश्चय कर लिया कि उन्हें क्या करना है। कांग्रेस में बहुसंख्यक लोग उनसे सहमत थे। विनीत वाक्य-छल की आवश्यकता नहीं रही थी। 'सरकारी सेना' बादशाह की सेना थी। जार्ज तृतीय पर प्रमुख धूर्त होने का आरोप लगाया गया। भाड़े की जर्मन सेना को, जिसका उल्लेख गलती से प्रायः हेसियन समझ कर किया जाता रहा, वहां भेजने का दोष भी उसी पर लगा। करीब-करीब अन्य सब अपराधों के लिये, जिसकी कल्पना अमरीकी दिमाग ही कर सकते थे, बादशाह को दोषी ठह-राया गया। थामस जैफर्सन जैसे उपजाऊ मस्तिष्क वाले लोग कई और अपराधों का नाम ले सकते थे, जैसा कि उसने स्वतन्त्रता के घोषणा-पत्र की शानदार भूमिका से आगे तथा अन्य धाराओं में किया, जिसका प्रारूप उसने कुछ सहायता लेकर कांग्रेस के लिए बनाया था।

४ जुलाई, १७७६ को उस घोषणा-पत्र को अन्तिम रूप से स्वीकार किया गया। न्यूयार्क का प्रतिनिधि इस बैठक में शामिल नहीं था। इस वक्त के बाद से अमेरिका के नेताओं के लिए किसी हालत में भी कदम पीछे हटाना असम्भव था। उनका उद्देश्य पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त करना था। यदि उन्हें असफलता मिली, तो उनका

वर्जीनिया में लीजबर्ग में था। एक परिचित व्यक्ति से बात करने के बाद कैसवेल ने अपने पाक्षिक पत्र में लिखा:—

'छः सप्ताह पूर्व यह आदमी अमरीकियों की दुःखपूर्ण स्थिति पर आंसू बहा रहा था और उनके अतिशय प्रेम के पात्र, जनरल (वाशिंगटन) की दुर्दशा पर यह मानते हुए दयार्द्र हो रहा था कि उसकी सैनिक मामलों में निपुणता और अनुभव के अभाव के कारण ही अमेरिका-वासी विनाश के द्वार पर पहुंचे हैं। संक्षेप में (उसके मत में) सब कुछ लुट गया था, सब कुछ नष्ट हो चुका था। किन्तु अब पांसा पलट गया है और वाशिंगटन का नाम आकाश तक ऊंचा उठ चुका है। यह मनहूस हेसियन सैनिकों की वजह से है। उस धूर्त का बुरा हो जिस ने उन्हें यहां भेजने की बात पहले पहल सोची।'

प्रिस्टन की घटना के बाद वाशिंगटन शरद् में अपने मौरिस टाऊन के मुख्यालय में ही चुपचाप जमे रहे। हो ने डेलावेयर की चौकियों से अपनी सेनाओं को वापस बुला लिया और उन्हे न्यू ब्रुन्सविक में केन्द्रित कर दिया। दोनों पक्षों के लिए यह समय अपनी-अपनी शक्ति को जांचने का था। क्यों न हम भी इन्हें जाचने की चेष्टा करें और सबसे प्रथम अमेरिकी स्थिति को देखें।

समस्याएं और सम्भावनाएं

वाशिंगटन के बहुत से जीवनी-लेखकों ने कुछ-कुछ प्रतिबन्ध के साथ अथवा बिना किसी प्रतिबन्ध के, उनकी प्रधान-सेनापति के नाते प्रशसा की है। वस्तुतः उन्होंने न्यूयार्क के आस-पास के अभियानों में निर्णय-सम्बन्धी भयंकर भूलें कीं। युद्ध के बाद की स्थिति के दिनों में ब्रिटिश टिप्पणी यह थी कि "जनरल हो के अलावा दुनिया का कोई और जनरल होता, तो वह वाशिंगटन को अवश्य परास्त कर लेता, और यदि जनरल वाशिंगटन के अलावा कोई और जनरल होता, तो वह हो को हरा देता।" यह ठीक है कि १७७६ मे जो सेना वाशिंगटन के अधीन थी, उससे ब्रिटिश सेना को शिकस्त देने की कोई सम्भावना नहीं थी, किन्तु उनसे

भयंकर भूलें हुईं । ब्रुकलिन हाईट्स पर उन्होंने यह गलती की कि और कुमक भेज कर हार को पक्का कर लिया । यदि कोई उग्रगति शत्रु होता, तो उन्हे कुछ और सोचने का मौका ही न देता (बल्कि एक दम हमला कर देता) । उनकी बाद की गतिविधियां, यद्यपि आतंक प्रगट नही करती थी, किन्तु वे अनिश्चित और अकुशल थी। वाशिंगटन-दुर्ग का हाथों से निकल जाना अथवा इसके अन्दर की बहुत सी सेना तथा मूल्यवान गोला-बारूद और रसद का शत्रु के कब्जे में पहुंच जाना, किसी अंश तक उनके अपने दोष के कारण ही था ।

इसके अतिरिक्त वह अपनी भूलों को स्वीकार करने से हिचकिचाते थे । 'न्यायोचित' और 'मेरी राय में न्यायोचित' दोनों को विभाजित करने वाली रेखा सदा बहुत पतली हुआ करती है । यद्यपि वाशिंगटन ने वर्जीनिया के कर्नल होने के काल से अब तक काफी प्रौढ़ता प्राप्त कर ली थी, उनमे इस समय भी इन दोनों को गलती से एक चीज समझने की प्रवृत्ति थी । जब कोई उन्हें आलोचना का विषय बनाता या उनके ऐसा बनने की सम्भावना होती, तो उन्हे बहुत ही दुःख होता था । सन् १७७६ और १७७७ में जो उन्होंने पत्र लिखे, उनमें उन्होंने बार-बार इस बात पर जोर दिया कि उन्हें न्यायोचित आलोचना पर कभी आपत्ति नहीं हुई, किन्तु, चूंकि केवल वही और उनके नजदीकी सहयोगी ही उनकी, 'कठिनाइयों के चुनाव' से पूर्णतया परिचित थे, अतः कोई भी आलोचना कैसे न्यायोचित हो सकती थी ? अपनी प्रतीक 'प्रतिष्ठा' की तीव्र चिन्ता के कारण वह अब भी इस बात के लिए तैयार रहते थे कि आलोचना का भार दूसरों के सिर पर डाला जाय । इस प्रकार उन्होने फोर्ट वाशिंगटन के समर्पण का विवरण देते हुए अपने वफादार, जनरल नेथानील ग्रीन, के साथ अन्याय किया । एक बात और । कांग्रेस के कारण जो उन्हे कष्ट होते थे, उन पर अत्यधिक बल देने की प्रवृत्ति उनमें थी ।

सैनिक दृष्टि से वाशिंगटन के लिए अभी बहुत कुछ सीखना

बाकी था। स्वभाव के कारण भी उनमें खामियां थीं। किन्तु उनमें सीखने की योग्यता थी और सारा हिसाब-किताब करने पर (इस परिणाम पर हम पहुंचते है कि) उनका स्वभाव उन्हें सौपे गये कार्य के अत्यन्त अनुरूप था। उनकी आरम्भिक भूलो मे ही हम उनकी अन्तिम जीतों के बीज देख सकते है। क्योंकि वह योद्धा थे, इसलिए उनकी भूलें कायरता के कारण नही थी। यदि यह बात न होती, तो अन्त में जाकर परिणाम घातक निकलते। उन्होने वास्तव में भूले इसलिये कीं कि उन्हे युद्ध से प्रेम था। अमेरिका की न्यूनताओं के कारण उस समय युद्ध-सम्बन्धी जो आवश्यकता थी, उसे मानकर चलना उनके लिए कडुवा घूंट था। यह आवश्यकता थी बड़े पैमाने पर मुठभेड न होने देना। किन्तु उन्होंने धीरे-धीरे इस सच्चाई को अनुभव किया। उन्होने सितम्बर, १७७६ में कांग्रेस को लिखा कि 'हमारे पक्ष की ओर से युद्ध रक्षात्मक ही होना चाहिए।' इससे ज्ञात होता है कि उन्होंने अपने आपको यथार्थ परिस्थितियों के अनुरूप बना लिया। इसके बाद से उनका कार्य असुविधा-जनक, यहां तक कि गौरव-हीन भी रहा, किन्तु जो भी हो, उन पर यह भी स्पष्ट होता जा रहा था कि उन्हें जीवित रहना ही चाहिए और इसके साथ सेना को भी उस समय तक बनाए रखना चाहिए जब तक कि शत्रु संघर्ष से तग नहीं आ जाता। जो व्यक्ति वर्जीनिया में अपनी भूमि के दावों के सिलसिले में पन्द्रह साल दृढता-पूर्वक अड़ा रहा, उससे भला यह आशा कब हो सकती थी कि वह कार्य को वीच में छोड़ देगा, जब कि उससे वहुत बडा भू-भाग खतरे मे था। यही कारण था कि उन्होने ट्रैन्टन मे क्यों अचानक सव वाधाओं की अवज्ञा की। वस्तुतः वह इससे भी अधिक कड़ी चोट की लालसा रखते थे। और प्रिंस्टन आक्रमण के कारण उन्होने विनाश ही तो निकट ला दिया था! किन्तु जिस तरकीव से वह प्रिंस्टन में कार्नवालिस की सेना के पंजे से छूट कर निकले थे, उस से प्रकट होता है कि वाशिंगटन ने किस प्रकार गोरिल्ला जनरल की कार्य-प्रणाली को समझना आरम्भ कर दिया था। उन्होंने

'कैम्प-फायर' जलाई और तब उसे जलता हुआ छोड़ कर अन्धेरे में सेना के साथ चुपचाप खिसक गये।

हम पहले कह आये है कि वह कभी-कभी कांग्रेस के व्यवहार की शिकायत किया करते थे। किन्तु इसके भी कारण थे। कांग्रेस की कार्यविधियां प्राय: दीर्घ समय ले लेती थी, और न सिर्फ अपर्याप्त ही होती थी, बल्कि यहां तक कि मूर्खता-पूर्ण भी होती थी। कुछ एक प्रतिनिधि साधारण कोटि के लोग थे और जैसे-जैसे युद्ध आगे बढ़ा, गुण-सम्बन्धी स्तर और नीचे चला गया। कांग्रेस चाहती, तो बजाए भांति-भांति की अलग-अलग राज्यों की सेना तथा मिलिशिया के, जिन्हे मिला कर देश-भक्त सेना का निर्माण हुआ था, एक स्थायी सेना बना सकती थी और उसे बनानी भी चाहिए थी। किन्तु उसकी अपनी कठिनाइयां ऐसी थी, जिन्हे दूर करना बहुत मुश्किल था और वाशिंगटन को उसका अहसास नहीं हो सकता था। युद्ध बड़े खर्चे की चीज थी। संयुक्त राज्य-सिक्के का दर इतना नीचे गिर गया था कि न्यूयार्क के एक बादशाह के प्रति वफादार पत्र ने हँसी-मजाक से कुछ मात्रा में कागज की मुद्रा के लिए विज्ञापन निकाला। यह विज्ञापन एक अंग्रेज सज्जन की ओर से था, जो इसे दीवार ढकने के लिए प्रयोग में लाना चाहता था। जिस प्रकार वाशिंगटन के लिए यह जिम्मेदारियां नई थीं, उसी प्रकार कांग्रेस के लिए भी तो थी? इनके अलावा कांग्रेस की निजी व्यस्तताएं भी थी—उदाहरण के लिए विदेशों से पत्र-व्यवहार करना, इत्यादि। वाशिंगटन का इससे कोई सम्बन्ध नहीं था।

असल बात यह है कि कांग्रेस वाशिंगटन के साथ बहुत अच्छा व्यवहार करती थी—कम से कम उस व्यवहार से कहीं बढ़कर जितना कि उसके कुछ जीवनी-लेखकों ने मानने की अपेक्षा की है। वाशिंगटन के साथ कांग्रेस के सम्बन्ध ईमानदारी और शिष्टता पर आधारित थे और इसके बहुत से सदस्य उनके व्यक्तिगत रूप से मित्र थे। हाँ, उन मामलो मे जहाँ उनके और कांग्रेस के अधिकारों मे निश्चित रूप से भेद नही हो सकता था, वहाँ आपसी संघर्ष होना

अनिवार्य ही था। यदि वाशिंगटन कहीं अधिक अभिमानी प्रधान-सेनापति होते, तो सम्भवतः भीषण मत-भेद हो जाते। किन्तु सामान्यतया वह कांग्रेस का विश्वास और सम्मान करते थे और कांग्रेस भी– हमे इस पर बल देने की आवश्यकता है–उनका एतबार और इज्जत करती थी। यदि ऐसी बात न होती, तो हम, उस क्षण की घबराहट की गुजाइश छोडते हुए भी, कांग्रेस की दिसम्बर १७७६ की असाधारण चेष्टा का समाधान किस प्रकार कर सकते है ? कांग्रेस ने उस समय अनिश्चित काल के लिये, जो बाद में छः महीने तक रहा, जार्ज वाशिगटन को, जहाँ तक सेना की भर्ती और संधारण का प्रश्न है, एक-शास्तृक सत्ता प्रदान की।

वास्तव में उस समय सर्वसाधारण रूप से उनका वर्णन 'एक-शास्ता' के रूप में किया जाता था, जो विरोध-प्रदर्शक अर्थों में नहीं था। कई लोग उन्हे औलीवर क्रौमवेल के उदाहरण को मन में रखते हुए अथवा न रखते हुए भी 'श्रीपति-रक्षक' कहकर पुकारते थे।

अतः कांग्रेस और वाशिगटन की अपनी-अपनी समस्याएं थी। इसी प्रकार ब्रिटिन लोगों की भी निजी समस्याए थी। अपने देश में उनकी वफादारियां बटी हुई थी। और इस कारण नीतियों मे मत-भेद था। ससद् मे तथा अन्य स्थानों में जार्ज तृतीय तथा उसके 'टोरी' सलाहकारों के प्रति निश्चित विरोध-भावना थी। बादशाह की असदिग्ध धारणा थी कि उपनिवेश उसके साम्राज्य में पुनः शामिल किये जाये। यदि युक्तियुक्त बातचीत से यह सम्भव न हो, तो बलात् ही उन्हें मिलाया जाए, अर्थात् मखमल के दस्ताने में लोहे का हाथ हो। किन्तु जैसे-जैसे धीमी चाल से लड़ाई चलती रही, उन्हे ऐसा लगने लगा कि उसका बाहरी रूप बदलना चाहिये। अब ब्रिटिश लोगों ने जो चीज देनी चाही, वह था कवच से ढका हुआ मुक्का और उसके अन्दर कोमल हाथ। वे सैनिक शक्ति और समुद्री फौजों मे सर्वोच्च थे, किन्तु लगता था कि या तो वे इसे निश्चय-बुद्धि से प्रयोग में लाने के अयोग्य हैं और या अनिच्छुक। जनरल गेज और उसके उत्तराधिकारियों को जहाँ कोमल-हृदय हितै-

षियों के रूप मे चित्रित करना गलत है, वहाँ यह भी सही नही कि वे लोग (अथवा बिचारा, विषादयुक्त, अन्त करणानुयायी जार्ज द्वितीय) अति उद्धत राक्षस थे, जैसा कि अमरीकी देशभक्तों के प्रचार में उन्हें वर्णित किया जाता था। उनकी मूलभूत भूल यह थी कि वे अमेरिका उपनिवेश-वासियो की गुप्त रूप से प्रशसा करने की बजाय उन्हें घृणा से देखते थे। लार्ड सैण्डविच ने एक बार उन पर व्यंग्य कसते हुए घोषणा की थी कि अमेरिका-निवासी "अपक्व, अननुशासित और कायर' है। इस घोषणा का खूब प्रचार किया गया। गेज का,बकर हिल के स्थान पर आमने-सामने होकर आक्रमण करना यह प्रगट करता था कि वह भी सैण्डविच से सहमत है। हो सकता है कि बाद में लड़ाई की समाप्ति पर उसने अपना पहला मत बदल लिया हो। यद्यपि सर विलियम हो (जिसे लौग द्वीप की समाप्ति पर 'सर' की उपाधि मिली थी) पर इतना गहरा रंग नही चढा था, किन्तु १७७६ मे विविध सकार्यो के सचालन के समय उसके मन मे अमरीकियो के प्रति किसी हद तक घृणा की भावना जरूर थी।

परन्तु सिद्धान्तों को सामने रखते हुए उसकी हिचकिचाहटो का अर्थ किसी हद तक समझ मे आ सकता है। सम्भव है कि हम इन तथ्यो की उपेक्षा न करे कि गेज की पत्नी अमेरिका की रहने वाली थी, क्लिटन का पिता न्यूयार्क का गवर्नर रह चुका था और हो का बड़ा भाई (जो फ्रासीसियों के साथ लडता हुआ १७५८ में टिकिनडरोगा मे मारा गया था) उपनिवेशो मे वीर पुरुष माना जाता रहा था।

किन्तु हम अग्रेजो के प्रयासो मे घातक अनिश्चितता पाने के कारण उसकी उपेक्षा नही कर सकते। यह अनिश्चितता, सक्षेप में, इन दो भाइयो की स्थिति मे स्पष्ट पाई जाती है। ये दोनों भाई जहाँ राजविद्रोहियो के साथ युद्ध करने के लिए सब प्रकार के विनाशकारी अस्त्र-शस्त्रो के साथ न्यूयार्क मे आए थे, वहाँ उन्हे आते हुए सन्धि-आयुक्तों का दायित्व भी सौपा गया था। जार्ज तृतीय वे

उनको सरकारी तौर पर यह अधिकार दिया था कि वे 'झगड़े के निपटारे' के बारे में भी चर्चा करें। चुनांचे जब जनरल हो ने लौग द्वीप पर कब्जा कर लिया, तो उसने आगे के संकार्यों में इसलिए विलम्ब कर दिया, ताकि शत्रु के साथ सन्धि की बातचीत की जाय। वह और एडमिरल हो दुबारा १७७८ में सन्धि-आयुक्त के रूप में नियुक्त किए जाने थे, जबकि युद्ध के संचालन का भार भी उन्हीं पर था। किन्तु उनकी जीतें बहुत हल्की थी और सन्धि की शर्तें अत्यधिक सखत।

इस खराबी का किसी अंश तक यह भी कारण था कि सैनिक दृष्टि-कोण से उनमे से कोई प्रतिभावान नहीं था। उस समय ब्रिटेन के पास ब्लैक जैसा जल-सेनापति तो था, किन्तु नैलसन अभी पैदा होना था। मार्लबोरो तो था, किन्तु अभी इंगलैण्ड ने विलिगटन को जन्म देना था। लार्ड हो, ग्रेव्ज, रौडने भी नैलसन नही हो सकते थे। न ही गैज, न 'बिल्ली' हो, न क्लिंटन और न ही 'जंटलमैन जौली' बरगोयने कभी विलिगटन हो सकते थे। इसका यह अर्थ नही कि वे सर्वथा अयोग्य थे। हम लार्ड जार्ज जर्मेन को भी, जो उपनिवेशो का राज्य-मन्त्री था और लन्दन से युद्ध का संचालन कर रहा था, धूर्त और मूर्ख नही कह सकते है—जैसा कि कुछ एक टीका-टिप्पणी करने वालों ने उसके बारे में बलपूर्वक कहा है। ब्रिटेन के समस्त रण-क्षेत्र मे लड़ने वाले सेना-पति सीमित रूप से उत्तम योद्धा थे। वे साहसी ढंग से काम करने वाले और योरूपीय युद्ध-कला में कुशल थे। कार्नवालिस ने, जो उनमे सर्वश्रेष्ठ था, बाद में संसार के दूसरे भागों मे जाकर महान् सफलता प्राप्त की। इन योद्धाओं का दुर्भाग्य यह था कि वे महान योद्धा नही थे। उनमें ग्राह्यता का अभाव नही था; वस्तुतः वे सबके सब अपनी समस्याओं को स्पष्ट रूप से समझते थे। किसी प्राचीन परियों की कहानी के सदृश ही उन्हे लड़ाई को एक ही वार में समाप्त करने के लिए तीन अवसरों की प्रत्याभूति दी गई थी। पहला अवसर सुनहला था और अन्य दोनों उत्तरोत्तर अधिक मटमैले। यह पहला अवसर जून १७७५ में चार्ल्स टाऊन प्रायद्वीप

में गेज को मिला था। यदि वह ब्रीड्स हिल पर बुद्धिपूर्वक आक्रमण करता और दूसरा मार्ग पकड़ने की जगह अपने इस अवसर का लाभ उठाते हुए शत्रु की सेना का पीछा करता, तो वाशिंगटन के वहां पहुँचने से पूर्व ही वह अर्टेमस वार्ड की नई-नई भर्ती की गई सेना को नष्टभ्रष्ट कर देता। हो को लौंग द्वीप का और उसके बाद भी दूसरा अवसर प्राप्त हुआ। यदि वह ब्रुकलिन हाइट्स पर वाशिंगटन की प्रतिरक्षा-सेना के बीच में झपाटे से और एक कदम आगे घुस जाता अथवा बाद के अनुसरणों मे अधिक तेजी से बढ़ता, तो सम्भव था कि वह संयुक्त-राज्य की सेना का इस कदर विध्वंस करता कि फिर उसका दुबारा गठन ही असम्भव हो जाता। उसे एक और अन्तिम अवसर १७७७ में फिर मिला।

हर अवसर पर कठिनाइयाँ बढ़ती ही गईं। जाहिरा तौर पर ऐसा लगता था कि अग्रेज सब प्रकार से लाभ की स्थिति में हैं। किन्तु नजदीक से देखने पर उनके लाभ घटते हुए मालूम होते थे। (पहली बात यह कि) युद्ध बहुत महंगा पड़ रहा था और अपने देश इंगलैण्ड में लोकप्रिय नही था। नौ-सेना मे अपर्याप्त सैनिक थे और इसे दुनिया भर के दायित्व दे दिए गए थे, जिनका बोझ उठाना नौ-सेना के लिये सम्भव नहीं था। इसी प्रकार भू-सेना में भी सैनिकों की कमी थी और वह सारे भू-तल पर बिखरी हुई थी। यही कारण था कि इगलैण्ड को योरुप के राजाओं से भाड़े पर सेनाएं लेने की आवश्यकता पड़ा करती थी। फिर सेना-सञ्चार्य तीन हजार मील की दूरी पर इंगलैण्ड से संचालन करने पड़ते थे। इसके फलस्वरूप यातायात मे अत्यधिक देर लगती थी। साथ ही इसमे अस्थिरता और अनिश्चितता भी थी। इनके अलावा जल और थल के सैनिकों को एक दूसरे को सहयोग देने की शिक्षा नही मिली थी। जहा तक हो और उसके साथियों का सम्बन्ध है, उन्हे एक ऐसे विशाल भू-भाग पर गौरिल्ला-युद्ध जैसी लड़ाई लड़नी पड़ी, जहां पसीना हा टपकता रहता था और जिसकी जल-वायु अमेरिका के आदिवासियों को भी दिक करती थी। इस भू-भाग में

सड़कें बहुत कम थी और बस्तियो के चारों ओर घने जंगल ही जंगल थे। यदि हम स्मरण करे, तो हमें याद आ जायगा कि सन् १७५४ में वाशिंगटन ने एलघनी-वन के बीस मील के टुकड़े को पार करने में पन्द्रह दिन लगाये थे। उनकी नजरों में यह निर्दयी देश था, जैसा कि आज भी योरुप के यात्रियों को प्रतीत होती है।

वाशिंगटन के लिए अपनी 'कठिनाइयों का चुनाव' था। किन्तु १७७६ की शरद् आने पर उनके दायित्व, यद्यपि वे अब भी काफी समय और शक्ति खपाने वाले थे, कुछ एक सरल, आवश्यक कर्तव्यों में घट कर रह गये। अब उन्हे कष्टों को सहन कर, शत्रु से परे-परे रहना और सैनिकों मे नया जीवन फूकना इत्यादि कार्य करने थे। वाशिंगटन की तुलना में हो के लिए अतिशय विकल्प थे। जल-सेना की सहायता से वह अमेरिका के तट के किसी भी भाग पर अपनी फौजें उतार सकता था। यद्यपि ऐसा नही लगता था कि उस समय सामरिक महत्व की योजनाओं में रहस्यों को गुप्त रखा जाता हो, तो भी यह कोई परमावश्यक चीज नही थी, क्योंकि अमेरिका के सब मुख्य-मुख्य नगर उसकी दया पर निर्भर थे। इस समय न्यूपोर्ट हो के कब्जे में था और वह वही से न्यू इगलैण्ड की सुरक्षा को खतरे मे डाल सकता था। न्यूयार्क को हथिया लेने से जहां वह इस मे रहने वाले बादशाह के प्रति वफादार लोगो की रक्षा कर सकता था, वहाँ इसके कारण वह कैनेडा और ग्रेटलेक्स के मार्गो पर भी नियन्त्रण रख सकता था। यदि वह फिलेडैल्फिया को, जो अमेरिका का सबसे बड़ा नगर और कांग्रेस का अधिवेशन-स्थान था, अपने अधीन कर सकता, तो उसके लिए बीच के उपनिवेशों पर अपना प्रभुत्व जमाना मुश्किल नही था। यदि वह चार्लस्टन को कब्जे मे कर लेता, तो उसके लिए दक्षिण का द्वार खुल सकता था।

फिर क्या होता ? प्रथम तो यह सम्भव नही था कि वह एक ही समय में अमेरिका की बन्दरगाहो पर कब्जा जमा ले। पर यदि वह यह कर भी सकता, तो इससे क्या राजविद्रोह दब जाता ?

फिर भी असहनीय विस्तार वाले घने जगल, लम्बे सेना-प्रयाण, निष्फल जाने वाले अनुसरण तथा घास में बैठे और छिप कर हमला करने वाले शत्रुओं का खतरा इत्यादि चीजे भी शेष रह जाती। ये शत्रु भी ऐसे थे कि जो परम्परा से चले आए समर-नियमों का न तो पालन ही करते थे और न ही उन्हे मालूम था कि कोई ऐसे नियम भी हुआ करते हैं।

इन सब कठिनाइयों के अतिरिक्त असंख्य ऐसी बस्तियां भी थी, जिनमे से बहुतों को नक्शो मे चित्रित भी नही किया गया था। वाशिंगटन स्वयं देहात के रहने वाले थे। वह पैदा तो एक बड़े राज्य में हुए, किन्तु वहां एक भी नगर नहीं था। शायद यही कारण था कि उनके लिए अपने असली कार्य-भाग की कल्पना करना सरल था। हो सार्वोपनिवेशिक सेना को सताने या विनष्ट करने की अपेक्षा सेना-प्रयाण और नगरों की रक्षा को ज्यादा पसन्द करता था। उसके ऐसा करने के अपने कारण थे, जिनमें सुख-पूवक रहन-सहन अर्थात् आराम पहुचाने वाले मकान और आकर्षक पत्नियो का संग भी एक कारण था। इसके लिए कोई महत्वपूर्ण वजह नही थी। वह न तो भारी हानियां सहने के काबिल था और न ही क्षुद्र बातों के लिए सेना को जोखम में डालना चाहता था। अमेरिका वालो को यह लाभ था कि चाहे उनकी सेनाएं बिखरी हुई भी हों, तो भी वे दुबारा इकट्ठी हो सकती थीं और भर्ती के लिए यत्र-तत्र आदमी मिल सकते थे। किन्तु दूसरी ओर हो की सेना मूल्यवान वस्तुओ की तरह थी, जिन्हे व्यवस्थित और सुरक्षित रखना पड़ता था। ये युक्तियां थी, जिन्हें हो पेश किया करता था, किन्तु उसकी युक्तियां गलत थी। उसका आधरिक सर हैनरी क्लिटन (जिसने उसकी तरह 'सर' की उपाधि प्राप्त की थी), चाहे सिद्धान्त मे ही, उससे अधिक बुद्धिमान् साबित हुआ, क्योंकि उसने हो को यह सलाह दी थी कि वाशिंगटन पर धावा बोल दिया जाए। किन्तु व्यवहार में क्लिटन आक्रमणकारी योद्धा नही था। इसके अतिरिक्त वह और हो सहज स्वभाव से परस्पर

विरोधी थे। परिणामतः उनमें से प्रत्येक दूसरे की योजनाओं को असफल बनाना चाहता था। क्लिटन ने जुलाई १७७७ में यह स्वीकार किया कि 'किसी मनहूस भाग्य-चक्र के कारण मालूम नहीं क्यों, हम आपस में कभी मिलकर काम नही कर सकते।'

उनकी पारस्परिक जलन-कुढ़न ऐसा आभास देती थी कि मानों वे गृह-युद्ध मे कुछ-कुछ व्यस्त है---ऐसा गृह-युद्ध जिसके परिणाम स्वरूप दुःखपूर्ण और अरोचक फूट पड़ा करती है। वे यह निश्चय नही कर सके कि उन्हें (नीति के रूप में) नृशंस होना चाहिये और फलतः लोगों के दिलो मे अपने लिए घृणा पैदा करनी चाहिये अथवा उन्हें उदारता से सलूक करना चाहिये और लोगो को उनके परिश्रमों पर फब्ती उड़ाने का मौका देना चाहिये। इस खास विषय में उन लोगो ने धीरे-धीरे यह महसूस करना शुरू किया कि वे कभी भी पूर्ण रूप से सफलता नहीं प्राप्त कर सकते। सम्भवतः वाशिंगटन को ठिकाने लगाने के सिवाए उनका कोई दूसरा लक्ष्य दृष्टिगोचर नहीं होता था। अत इसमें आश्चर्य नही कि अक्सर यह अफवाह फैलाई जाती थी कि वाशिंगटन को बन्दी बना लिया गया है। यह अफवाह केवल मनोकामना की पूर्ति के लिए ही थी। सन् १७७६ मे वाशिंगटन की हत्या करने का षड़यन्त्र भी रचा गया था। ब्रिटिश दृष्टिकोण से यह अत्युत्तम सूझ थी। (चार्ल्स ली को जो सन् १७७६ में अमेरिका मे दूसरा अति सम्मानित सेनापति था, वस्तुत उसी वर्ष दिसम्बर के मास मे बन्दी बना लिया गया था, किन्तु इसका कोई स्पष्ट परिणाम नही निकला। दोनों पक्षो में से सिवाए वाशिंगटन के कोई ऐसा सेनापति नही था जिसे बहुत से लोक अनिवार्य समझते हों। जब बाद मे क्लिटन के अपहरण के सम्बन्ध में छापा मारने का प्रस्ताव हुआ तो (अमरीकी क्षेत्रों में) इस आधार पर इसकी नुक्ताचीनी हुई कि ऐसा करने पर कही उससे बढ़िया जनरल इंगलैण्ड से न भेज दिया जाय)।

यदि वाशिंगटन को कभी खराब स्वप्न आया हो---इस बारे मे यद्यपि उन्होंने कोई अभिलेख अपना नही छोड़ा---तो हम कल्पना

कर सकते है कि उन्हें यह स्वप्न आया होगा कि वह समुद्र में एक छोटे से पोत में है, जिसका बादबान कागज का बना हुआ है। (हमारा अभिप्राय: उनकी सेना से है जो भिन्न-भिन्न उपनिवेशों के सैनिकों का भयपूर्ण मेल सी थी और जिसे किसी शासन-पद्धति के अधीन भर्ती नहीं किया गया था, क्योंकि संयुक्त-राज्य अमेरिका का निर्माण बाद में सन् १७८१ में हुआ था जब कि प्रसधान की धाराएं अन्तिम रूप मे सम्पुष्ट हुईं)। तब वर्षा आई और बादबान गल कर नष्ट हो गया। यदि कभी हो को खराब स्वप्न आया हो—जिसकी कल्पना की जा सकती है कि आया होगा—वह भी सम्भवत: पूर्ववत् होगा, सिवाए इसके कि इसमे जहाज बड़े आकार का है और उसका बादबान दृढ़ कैनवास का बना हुआ है। तब एक तूफान आया, बादबान खुल गया और उड़ चला। हो के पास इतने आदमी नही थे, जो उसे दुबारा जहाज से बांध देते। संक्षेप में, वाशिंगटन की शोचनीय अवस्था इसलिए थी कि उन्हे बिना ठोस और पर्याप्त साधनों के सारे महाद्वीप की रक्षा करनी पड़ी, हो के भाग्य मे यह बदा था कि उस पर उस समय आक्रमण करे जब कि एक बार विद्रोह भड़क उठने से कोई भी प्राप्त साधन पर्याप्त नही हो सकते थे। ब्रिटिश सत्ता ने और बाद मे दूसरों ने यह संसार को दिखा दिया कि किसी भी बड़े देश मे जनता के विद्रोह को कुचलना उस समय कितना कठिन होता है जब उस देश के नागरिकों में आत्माभिमान की भावना जाग उठती है। बाद में नैपोलियन ने स्पेन के प्रायद्वीप में और फिर भारी क्षति उठाकर रूस मे उस तथ्य को मालूम किया। बोर की लोक-तन्त्रीय संस्थाएं ब्रिटेन के विरुद्ध तीन वर्षों तक जमकर लड़ती रही। जर्मन लोगो ने भी कब्जे में आये हुए योरूप के सम्बन्ध मे यही पाठ सीखा।

संकटमय स्थिति और षड़यन्त्र (१७७७ से १७७८ तक)

परन्तु इस बीच मे सन् १७७७ का वर्ष हो के लिये अच्छा-खासा आशा-पूर्ण था। बसन्त के आरम्भ में जब कि वाशिंगटन अपने शरद् के पड़ाव से सेना को निकाल कर आगे बढ़ा रहे थे, हो

विविध प्रकार की योजनाए बना रहा था। उसके मन में सर्व प्रथम यह विचार पैदा हुआ कि वाशिंगटन की साधारण चुनौती के जवाब मे उससे युद्ध छेड़ने की बजाए उसे एलबैनी पर उस ब्रिटिश सेना के साथ शामिल हो जाना चाहिए जो कैनेडा से दक्षिण की ओर सैनिक अभियान के लिये बुलाई जा रही है। हो ने इस योजना को, जिसमे रोड द्वीप की ओर से बोस्टन पर आक्रमण की तजवीज भी शामिल थी, ब्रिटेन के उपनिवेश मन्त्री 'जर्मेन' के पास भेज दिया। किन्तु बाद मे उसने अपना इरादा बदल लिया। उसने नई तजवीज यह पेश की कि फिलेडैल्फिया पर चढ़ाई की जाय और इसके साथ ही साथ अल्पसंख्यक फौज लेकर छोटे पैमाने पर न्यूयार्क के उत्तर की ओर आक्रमण किया जाए। जर्मेन ने मितव्ययता के आधार पर दूसरी योजना को अधिमान्यता दी, क्योंकि कोई कुमक भी दुष्प्राप्य थी और हो ने कहा था कि उसे अपनी पूर्व योजना कार्यान्वित करने के लिये पन्द्रह हजार और सैनिको की आवश्यकता होगी। जर्मेन के ऊपर वर्गोयने की बात-चीत का भी असर हुआ। वह शरद काल के लिये छुट्टी लेकर इगलैण्ड को लौटा था। स्वतन्त्र कमान को लक्ष्य मे रखते हुए उसने जर्मेन को यकीन दिलाया कि उसका प्रस्ताव अति कौशल्यपूर्ण है। वह प्रस्ताव यह था कि तीन सेनाएं उत्तर में मौटरीयल से आकर एल्बैनी के केन्द्रीय बिन्दु पर मिले और बर्गो-यने स्वय उसका नेतृत्व करे। जर्मेन ने इस योजना पर भी अपनी स्वीकृति की मोहर लगा दी।

यहाँ आकर ब्रिटिश-कमान-पद्धति की न्यूनताएं निश्चित रूप से सामने आई। किसी प्रेमानुशीली नाटककार के समान ही वर्गोयने की योजना में एक प्रकार की नाटकीय समिति तो थी, किन्तु इसके लेखक की साहित्यिक रचना के सदृश्य, कल्पना-भव्य होते हुए भी विस्तार में कमजोर थी। इस योजना में उन समस्याओं की ओर ध्यान नही दिया गया, जो तीन अलग-अलग आक्रमणो के समन्वय से अथवा अलबैनी और मौटरीयल के मध्य में जंगली और असम भूखण्ड में सेना की गति-विधि और रसद से सम्बन्ध रखती थीं।

इसमें यह मान लिया गया कि एलबैनी पर पहुंचना मात्र ही बहुत बड़ी विजय को प्राप्त करना है, अर्थात् उसके अनुसार न्यू इंगलैण्ड अलग हो जायगा और उपनिवेश इस प्रकार खण्ड-खण्ड हो जायेंगे— जैसे कोई रसदार टर्की का पक्षी कटता है। किन्तु क्या ऐसा अनिवार्य रूप से होना सम्भव था ? क्या ब्रिटिश सेनाएं अपने यातायात के मार्ग खुले रख सकती थी ? क्या उन सेनाओं से यह आशा की जा सकती थी कि वे अमरीकी दलों को आगे बढ़ने से यथासम्भव रोक सकेंगी ?

हो की संशोधित योजना, यदि इसका उद्देश्य वाशिंगटन की सेना का मुकाबला करना था, तो उपर्युक्त योजना से कहीं अधिक उत्तम थी। यदि कही भी और कोई भो राजविद्रोह का केन्द्र था, तो वह वाशिंगटन की सेना थी। बसन्त में तथा गर्मी के आरम्भ में कार्नवालिस ने बेगार टालने की तरह, वाशिंगटन से गुत्थम-गुत्था होने की चेप्टा की। किन्तु वाशिंगटन को इतनी अधिक कठिनाइयाँ सहनी पड़ी थी कि उन्होने चुनौती को मन्जूर नहीं किया और लड़ाई से पीछा छुड़ाया।

इस बीच मे हो ने फिर अपना इरादा बदल लिया। उसका नया विचार यह था कि वह समुद्र मार्ग से फिलेडैल्फिया पर कब्जा जमा ले। इस बड़े संकार्य के लिए उसने अपनी पन्द्रह हजार उत्तम सेना अलग रख ली। इसका यह अर्थ था कि न्यूयार्क नगर से उत्तर की ओर बढ़ने के लिए नियमित सैनिक नही दिये जा सकते थे। केवल कुछ वफादार दस्ते थे, जिन्हें सक्रिय रखने के लिए अस्पष्ट आदेश दिये गये। इस प्रकार तीन सेनाओं में से केवल दो ही सेनाएं एलबैनी पर इकट्ठी हुईं। वर्गोयने ने अमेरिका की उत्तरीय सेना को उसी जगह सीमित रखने को बजाए, स्वय उनके जाल मे फंसने का खतरा मोल लिया। परन्तु हो फिलेडैफया पर चढ़ाई करने की धुन में था और वह उस साहसपूर्ण कार्य की जटिलताओ में इतना व्यस्त था कि उसने क्लिंटन के विरोधो को भी अनसुना कर दिया। क्लिटन को न्यूयार्क छोड़ जाना था। हो ने अपने इरादो में जो

परिवर्तन किए थे उनका ज्ञान उस समय न तो बर्गोयने को और न ही जर्मेन को हुआ। उन्हें इनका पता इतनी देर बाद चला कि तब उन्हे बदला नहीं जा सकता था। तब भी जर्मेन ने उसकी अत्यधिक चिन्ता नही की। उसने इसी बात में सन्तोष माना कि हो को आदेश दे दिया जाय कि ज्यों ही वह फिलेडैल्फिया ले ले, त्यों ही सेना और सामान से बर्गोयने की सहायता करे।

इसमें आश्चर्य की बात नहीं कि ब्रिटिश लोगों की इन गति-विधियों से वाशिंगटन घबरा गये। इन गतिविधियों का अभिप्राय क्या है, यह उनकी समझ में नही आया। किन्तु शनैः-शनैः उन्हें यह स्पष्ट दिखने लगा कि शत्रु के दो मुख्य लक्ष्य है:—कैनेडा की ओर से हमला करना और मध्य के अथवा दक्षिण के उपनिवेशों पर समुद्र के मार्ग से धावा बोलना। वाशिंगटन आक्रमणकारी सेनाओं की सख्याओं का भी लगभग ठीक-ठीक अनुमान लगाने में सफल हुए। उनकी राय में बर्गोयने से, जिसके पास आठ हजार सैनिक थे, अमेरिका की उत्तरीय सेना लोहा ले सकती थी। क्लिटन की सेना सात हजार थी (जिसमे आधे ही नियमित सैनिक थे)। उनकी सम्मति में वह इस थोड़ी सी सेना के साथ कर ही क्या सकता था, सिवाए इसके कि अपने न्यूयार्क के पड़ाव से कोई छोटी-मोटी भिड़न्त आरम्भ कर दे। वह किसी अनभ्यस्त और अनूठी क्रियाशीलता का परिचय दे, तो वह दूसरी बात है। हो के आक्रमण को रोकने के लिए वह स्वतन्त्र थे। यह ठीक है कि हो की तुलना में उनकी सेना अल्प-संख्यक थी। किन्तु इसमे उन्हें निराश होने की कोई बात नही दीखती थी, क्योकि गर्मी की ऋतु के मध्य में उनके पास नौ हजार तो स्थानीय अमरीकी सेना थी और उसके अतिरिक्त अनन्त नागरिक सेना।

वाशिंगटन ने सन् १७७७ के फरवरी मास मे बौनिडिक्ट आर्नल्ड को लिखा, 'यदि शत्रु ने हमें इतना समय दिया कि हम युद्ध के लिए सेना इकट्ठी कर सके, तो मुझे आशा है कि हम अपनी पिछली सब भूलों को सही कर सकेंगे।' किन्तु जिस कदर सेना

वह चाहते थे, उसका एक अश भी उन्हें न मिल सका। यद्यपि कांग्रेस ने उन आदमियों को, जो संयुक्त-राज्य-सेना में तीन साल की अवधि के लिए अथवा लडाई के अन्त तक नौकरी करना चाहें, धन और भूमि भेंट के रूप में देने के प्रस्ताव किये थे, किन्तु भेंट-सम्बन्धी ये शर्तें इतनी आकर्षक नही थी, जितनी कि उस मिलिशिया के लिए थी, जिसे भिन्न-भिन्न राज्य व्यक्तिगत रूप से अपने क्षेत्रो में अपेक्षतया थोड़ी अवधि के लिए भर्ती किया करते थे। परिणामत: संयुक्त-राज्य-सेना संख्या मे निराशाजनक-रूप से कम रही, परन्तु इससे वाशिंगटन को पुराने युद्ध-कुशल सैनिकों की ठोस स्यष्टि प्राप्त थी। इन सेनाओं मे तथा मिलिशिया के सैनिकों में चमक-दमक मालूम नही पड़ती थी, अत: देखने वालों को बाहरी रंग-रूप से धोखा होता था। फ्रांस तथा स्पेन देशों से गुप्त सहायता मिलने, ब्रिटिश-माल की लूट-मार से प्राप्त सामान तथा संयुक्त-राज्य में बने हुए देसी हथियारों के उपलब्ध होने के कारण अमरीकी सैनिक वर्दियों और शस्त्रास्त्रो से गुजारे लायक सजे-सजाये अच्छे खासे लगने लगे थे।

शत्रु ने भी वाशिंगटन को तैयारी का पर्याप्त समय दिया। हो का समुद्री बेड़ा जुलाई के अन्तिम भाग से पहले न्यूयार्क से नहीं चला। इसके बाद भी स्थल पर उतरते-उतरते उसे एक महीना लग गया। हो चेसापीक अन्तरीप मे हैड-आफ-एल्क के तट पर उतरा। यह स्थान फिलेडैल्फिया से उस जगह से भी दूर था, जहां कि उसे उतरना चाहिए था। फिर भी, एक बार उलट कर उसने आत्मविश्वास के साथ हमला किया और क्रमश: जमकर लड़ता-लड़ता नगर की ओर बढ़ा। हो की प्राथमिक गतिविधियों से वाशिंगटन चकरा से गए। वह यह समझ नही सके कि उक्त जनरल जो कुछ काल पहले न्यू ब्रानस्विक में फिलेडैल्फिया से कुल साठ मील के अन्तर पर था, अब क्यो उसने इस नगर से सत्तर मील पर पड़ाव डालने के लिए चार सौ मील का समुद्री सफर तय किया है? उन्हे विश्वास हो गया कि हो का उद्देश्य चार्लस्टन पर

कब्जा करना है। पर बाद में उन्हें मालूम हुआ कि फिलेडैल्फिया ही उसका लक्ष्य था। हो की यात्रा ने इतना लम्बा समय ले लिया कि वाशिंगटन इस योग्य हो गए कि वह उसकी भावी गति-विधियों के बारे में जान सके तथा फिलेडैल्फिया और उसकी सेना के बीच अमरीकी सेना लाकर खड़ी कर दें।

अब तक भाग्य वाशिंगटन के साथ था। अगले कुछ सप्ताहों में पांसा उन के उलट हो गया और जैसा कि गत अभियानों में हुआ था, इसमे कुछ अश तक दोष उनका अपना था। उन्होंने महसूस किया कि जब तक वह स्थिरता से डटे नही रहेगे और जम कर नही लड़ेंगे, फिलेडैल्फिया जरूर उनके हाथों से निकल जायगा। यद्यपि इससे बिल्कुल हार तो नहीं होगी, परन्तु जैसा कि उन्होंने लिखा, 'इसका यह असर होगा कि अमेरिका के (स्वतन्त्रता-प्राप्ति के) प्रयत्न ठण्डे पड जाएगे।' अतः उनका यह कर्तव्य था कि वह हो का मुकाबला करे और इन अर्थों में, हम कह सकते है, कि उन की योजना बेकार नहीं गई। वाशिंगटन की सेना कम थी—पन्द्रह हजार की तुलना में ग्यारह हजार, किन्तु यह उनके ऊपर निर्भर था कि लड़ने के लिए कौन सा स्थान चुनें। उन्होंने युद्ध के लिए विलमिंगटन से कुछ मील दूरी पर एक स्थान चुना। वहां ब्रांडीवाइन नदी उसके मोर्चे के आगे से बहती थी। यह १० सितम्बर की घटना है। वाशिंगटन ने अपना दाहिना पार्श्व सुलीवान को (जिसकी लौंग द्वीप की मुठ-भेड़ में पकड़े जाने के बाद अदली-बदली हुई थी), बीच का भाग नेथानील ग्रीन को और बायां पार्श्व पेनसिलवेनिया की मिलिशिया को सौंपा। ब्रांडीवाइन नदी को भिन्न-भिन्न स्थानों मे पैदल पार किया जा सकता था, किन्तु अन्य कारणों से यह, विशेषतया अमेरिकी सेना की बाईं ओर, एक उपयोगी प्राकृतिक रुकावट थी।

हो की चढाई की योजना ब्रुकलिन की योजना के समान ही थी, अर्थात् दिखाया तो यह गया कि हमला बीच वाले भाग पर होगा, किन्तु वास्तव मे मुख्य हमला पार्श्व की ओर किया गया।

इस बार दायां पार्श्व चुना गया। यह उसकी स्थायी कार्य-विधि थी। वाशिगटन इस चाल को पहले भांप नहीं सके। न ही वह जासूसों की व्यवस्था कर सके, जो उन्हें समाचार गुप्त रूप से पहुं-चाते रहें। परिणाम यह हुआ कि जब लडाई ११ सितम्बर को छिड़ गई, तो उसमें बीच वाले भाग में तो छुट-पुट संघर्ष चले, जिन का कोई नतीजा न निकला। किन्तु दाएं भाग को कार्नवालिस की दस हज़ार सेना ने लम्बे वक्राकार में घेर लिया और सुलीवान पर अचानक धावा बोल दिया। सुलीवान इसके लिए बिल्कुल तैयार नही था। इसका परिणाम यह हुआ कि अमेरिकन सेना के दायें पार्श्व के पैर उखड़ गए। वाशिंगटन ने स्थिति सम्भालने के लिए पूरा जोर लगाया। उन्होंने ग्रीन के अधीन अपनी बची-खुची सेना का बहुत सा हिस्सा उस पार्श्व की ओर भेजा, ताकि वे लोग सुली-वान की पीछे हटती हुई फौज के पिछले भाग में दूसरी पक्ति कायम कर सकें। बड़ी दृढ़तापूर्वक और अड़कर लड़ती हुई ग्रीन की सेना सायंकाल तक शत्रु को रोके रही।

इस बीच में हो के दबाव के कारण, मध्य भाग विनष्ट हो गया, क्योंकि यहां से बहुत सी फौज पार्श्व की सहायतार्थ चली गई थी और अब यह पार्श्व सेना-विरहित हो चुका था। युद्ध की शकल सूरत ही बिगड़ गई। सन्ध्या के समय, जैसे ही बन्दूकों-तोपों की धाएं-धाएं बन्द हुई, थके-मांदे अमरीकी सैनिक अस्त-व्यस्त हालत में पीछे को हटे। वे अपने लगभग एक हजार साथी रण-क्षेत्र में हताहत छोड़ गये।

यह करारी हार थी—जरूरत से भी ज्यादा महंगी हार। किन्तु यह किसी तरह भी निर्णायक हार नही थी। कोई एक छिद्रान्वेषी अवलोकक सम्भवतः इस पर यह टिप्पणी कर सकता है कि अम-रीकी सैनिक इस लिए कैदी नही बनाए गए, क्योकि वे रणक्षेत्र से इतने तेज दौड़े कि पकडे ही नही जा सकते थे। इसके उत्तर में यह कहा जा सकता है कि वे वही तक भागे, जहां तक कि आवश्यक था, क्योंकि दूसरे ही रोज प्रात. के समय वे अपनी-अपनी पूर्व

टुकड़ियों में दुबारा जाकर शामिल हो गये। और जो सैनिक ग्रीन के साथ दृढ़ता-पूर्वक डटे रहे, उन्होंने अपने कर्त्तव्य का अत्युत्तम ढंग से पालन किया, क्योंकि उनके हाथों ब्रिटिश-सेना के पांच सौ से अधिक सैनिक हताहत हुए। दूसरे शब्दों में, यदि अमेरिकन सैनिक अभी तक इस योग्य नहीं हुए थे कि औपचारिक युद्ध में ब्रिटिश सेना के छक्के छुड़ा सकें, उन्होंने यह दिखा दिया कि वे नियमित सैनिकों की स्थिरता के साथ गोरिल्लाओं के फुर्तीलेपन को (चाहे यह पीछे हटने के लिये ही क्यो न हो) मिला सकते है। यह मेल चाहे आदर्श रूप से न भी हुआ हो, किन्तु उनके इस मेल में नाश को रोकने के लिए पर्याप्त साधन-सम्पन्नता पाई जाती थी।

बाद में जो कुछ हुआ, वह पुराने नमूने के अनुसार था। इसमें अधिक बात यह थी कि वाशिंगटन ने सदा की भांति इस नाजुक मौके पर, जबकि वह महसूस करते थे कि अमेरिका का भविष्य और उसकी अपनी ख्याति खतरे में है, युद्धकरण के अपने विशेष गुण को प्रगट किया। हो धीरे-धीरे फिलेडैल्फिया की ओर बढ़ा। कांग्रेस अपना स्थान छोड़ कर शीघ्रता से लेंकेस्टर गई। फिर उसने वहां से पैनसिलवेनिया के नगर यार्क में अपना अड्डा बनाया। वाशिंगटन ने एक और युद्ध लड़ने का प्रयत्न किया, किन्तु मूसला-धार वर्षा के कारण उन्हें अपना इरादा छोड़ना पड़ा। हो नगर में घुसा। वाशिंगटन ने उसे फिलेडैल्फिया से दस मील के अन्तर पर ललकारा। इस बार फिर दोनों फौजों मे जोर की टक्कर हुई। गड़बड़ी मची, जिस मे वाशिंगटन को अपने दुःसाहस का कुपरिणाम यह भुगतना पड़ा कि उनके एक हजार सैनिक काम आये। शत्रु की क्षति इससे आधी हुई। इसकी प्रतिक्रिया वाशिंगटन पर यह हुई कि फिर लड़ा जाय, किन्तु हो ने उससे लोहा लेना कबूल नहीं किया। दिसम्बर के आते ही कड़ाके की सरदी शुरू हुई। इस सरदी मे जहां ब्रिटिश सैनिकों को कुछ-कुछ बेचैनी हुई, वहां देशभक्त सैनिकों में सक्रिय असन्तोष की लहर फैली। हो और उसके सैनिक फिलेडैल्फिया में उष्णता का आनन्द उठा रहे थे, किन्तु वाशिंगटन

के आदमी वहां से बीस मील की दूरी पर स्कूइलकिल नदी के किनारे अपने फौर्ज घाटी के डेरों की चौकसी कर रहे थे।

यह सब कुछ होते हुए भी १७७७-१७७८ के शरद् मे देशभक्त सेना का आस्ति-दायित्व-लेखा देखने में बुरा नही था। विकलन-पार्श्व मे मुख्यतया हो का फिलेडैल्फिया को कब्जे में करना शामिल था। इसके साथ ही निश्चित रूप से ब्रांडीवाईन और जर्मन टाऊन की हारें थी। आकलन-पार्श्व में, वाशिंगटन की सेना अभी तक सेना के रूप में मौजूद थी, यद्यपि पहले से दुर्बल हो चुकी थी और शरद् ऋतु, कृपणतापूर्वक दी गई रसद और अवशिष्ट वेतन की कठिनाइयों के कारण असन्तुष्ट थी। वाशिंगटन की सेना जहाँ हर सरदी में 'नही' के बराबर रह जाती थी, वहाँ इसके बदले में ब्रिटिश सेना आराम से एक जगह पड़ी रहती थी। यार्क की सर्दी के कष्टों के कारण काग्रेस मे, उनकी सेना के समान, उपस्थित सदस्यों की संख्या बहुत कम रह जाती थी—यहाँ तक कि कभी-कभी तो बीस से भी कम लोग बैठकों में हाजिर होते थे। फिर भी यह कम से कम अब तक सांस ले रही थी—मानो पेड़ में फिर से रस प्रवाहित होने लगा था और इसलिये वह मरा नही। जहाँ तक हो का सम्बन्ध है, उसका अभियान इसलिए असफल रहा, क्योकि उसे विजय नही मिली थी। उसे आशा थी कि राजभक्त उसके झण्डे के नीचे इकट्ठे हो जायेंगे। किन्तु जहाँ पैनसिलवेनिया के लोग उसे खाद्य-वस्तुएं बेचने को उद्यत थे; क्योकि इस प्रकार उन्हें संयुक्त-राज्य की कागज की मुद्रा की बजाय सोना मिलता था, वहाँ वे सेना मे भर्ती होने को तैयार नहीं थे। परिणामत: इने-गिने लोग ही उसकी फौज में शामिल हुए। निराश होकर हो ने अपना त्यागपत्र दे दिया।

दक्षिणी सेनाओं की अपेक्षा 'उत्तरीय भाग' ने बर्गोयने पर अधिक विधेयात्मक ढंग से विजय प्राप्त की, जिसकी गूंज चारो ओर हुई। बर्गोयने के आक्रमण का आरम्भ अमेरिका वालों के लिए अशुभ लक्षणों वाला था, क्योकि उनका टिकनडेरोगा का किला जुलाई के शुरू में ही शत्रु के कब्जे में आ गया था। किन्तु उसके वाद बर्गोयने

की आगे बढ़ने की रफ्तार मध्यम हो गई और उसे अधिक यातनाएं सहनी पड़ी। इसके पश्चात् उसने जो गौण हमला किया, उसके आरम्भ मे तो उसे कामयाबी हुई, किन्तु अन्त में जा कर वह बिल्कुल असफल रहा। अगस्त के मध्य मे एक और महत्वपूर्ण घटना हुई। बर्गोयने की सेना का एक भाग जबकि वह रसद की तलाश मे था, दक्षिण वरमौट के बैनिगटन स्थान पर देशभक्त मिलिशिया द्वारा विनष्ट कर दिया गया। अतः दक्षिण मे अलबैनी की ओर बढ़ने के सिवाय अब उसके लिए कोई चारा नही रहा था, यद्यपि उसे यह मालूम हो गया था कि कोई अन्य सेना उसकी मदद के लिए न्यूयार्क से नही आ रही है। सराटोगा के दक्षिण में कुछ मीलों के अन्तर पर उत्तरीय सेना ने उसे आगे बढ़ने से रोक दिया। (इस सेना के पूर्व सेना-पति स्कूयलर थे और अब वह होरेशो गेट्स के अधीन थी)। सितम्बर मे और फिर दुबारा अक्तूबर के आरम्भ में उसने शत्रु से बच कर आगे बढने की चेष्टाएं की, किन्तु असफल रहा। भावी आपत्ति से चिंतित होकर आखिरकार क्लिटन उसकी सहायता को चल पड़ा। वह जितने सैनिक ला सकता था, उन्हें लेकर हडसन नदी के ऊपरी भाग द्वारा आगे बढ़ा। अक्तूबर के मध्य तक वह सारे प्रतिरोध को हटाता हुआ, ऐसोपस (किगस्टन) पहुँचा। बर्गोयने इस स्थान से केवल अस्सी मील की दूरी पर पड़ाव डाले हुए था। किन्तु क्लिटन उतना ही सावधान था, जितना कि बर्गोयने उतावला और अधीर। उसे जहाँ आने मे अत्यधिक देर लगी, वहाँ वह अपने साथ बहुत कम सैनिक ला सका, क्योंकि हो फिलेडैल्फिया मे बहुत ज्यादा उलझा हुआ था। अतः जब क्लिटन के आगे के दस्ते इसीपस पहुँचे, तो उससे एक दिन बाद बर्गोयने ने अपनी बची-खुची सेना के साथ, जिसकी संख्या सत्तावन सौ थी, आत्म-समर्पण कर दिया। यह ब्रिटिश सेनाओं के लिए सनसनी पैदा करने वाली पराजय थी। परिणामतः क्लिंटन आगे बढने की बजाए न्यूयार्क वापस लौट गया और उसने सारी सरदी चुपचाप वहाँ गुजारी। हो जागरूक था। वह फिलेडैल्फिया मे तब तक इतजार करता रहा, जब तक कि उसका

त्याग-पत्र स्वीकृत नहीं हुआ। तत्पश्चात् मई, १७७८ मे, उसने अपना पद क्लिंटन को सम्भाल दिया और स्वयं इगलैण्ड लौट गया। गेज जा चुका था। अब बर्गोयने और हो भी गए। वाशिगटन उनके पीछे अब तक जमा हुआ था।

इन घटनाओ से योरूप के लोगों ने शिक्षा ग्रहण न की हो–सो बात नही थी। लंदन मे लार्ड नार्थ ने एक और सन्धि-आयोग की व्यवस्था शुरू की, यद्यपि ब्रिटेन अभी तक इस बात के लिए तैयार नही था कि उपनिवेशों की स्वतन्त्रता को माना जाए। पैरिस में अत्यधिक क्रियाशीलता थी। अमेरिका के अभिकर्ताओ, सीलास डीन और बैंजामिन फ्रैंकलिन, के साथ मिल कर फ्रांसीसी सरकार कुछ समय से उपनिवेशो को सहायता दे रही थी। उनकी सहायता का एक अंश यह था कि विदेश (अमेरिका) मे ऐसे अफसर भेजे जाएं, जो वाशिंटगन के साथ मिल कर कार्य करे। इनके अलावा, उनके कई-सेना-अधिकारी अपनी इच्छा से भी आये। उनमें बहुसंख्यक ऐसे लोग थे, जिनके लाभ-प्रद होने में सन्देह होता था। कारण यह कि उनकी वजह से वाशिगटन की परेशानियों मे बढ़ोतरी हुई, क्योकि इन में से हर एक ऊंचा पद चाहता था। किन्तु उनमें से कुछ विशेष रूप से थेडियस कौसियस्को, उत्सुक तरुण मार्क्विस डी लेफायेट, बैरन डी काल्व और 'बैरन' बोनस्टडूबेन (जो बनावटी तौर पर कुलीन वर्ग का था, किन्तु था सच्चा सैनिक) अमेरिका की लक्ष्य-प्राप्ति में महान् सहायक सिद्ध हुए। जव फ्रासीसियों ने साराटोगा का समाचार सुना, तो उन्होने निश्चय कर लिया कि उन्हे अधिक सहायता देनी चाहिए। उनका यह निश्चय केवल भावना पर आधा-रित नही था, यद्यपि वे उपनिवेशों के साहस और प्रधान सेना-पति वाशिंगटन की दृढ़ता के प्रशसक थे। इस निश्चय के दो आधार थे। एक था ठोस अनुमान, जो उन्होने अमेरिका के जीतने के अव-सरो के बारे मे लगाया था। उनका दूसरा आधार यह था कि उन्हे आशा थी कि इससे ब्रिटिश-शक्ति को निर्बल बनाया जा सकेगा। यह वजह थी कि फ्रांस, जिसमें एक निरकुश राजतन्त्र था, एक संघर्ष

करती हुई प्रजातन्त्रीय-सत्ता को उत्सुकतापूर्वक सहायता दे रहा था। फ्रांस के समित्र स्पेन ने इस पर दु:ख प्रकट किया। एक पत्र में, जो फ्रैंकलिन ने फरवरी, १७७८ मे भेजा, उसने सूचित किया कि 'सर्वाधिक' ईसाई धर्मावलम्बी (फ्रांस के) बादशाह ने यह मान लिया है कि वह संयुक्त राज्य को अपनी लक्ष्य-प्राप्ति मे पूरी-पूरी सहायता देगा—(और) वह अमेरिका को स्वाधीनता, प्रभुता और पूर्ण एवं असीम स्वतन्त्रता की प्रत्याभूति देता है।' गर्मी के मध्य में फ्रांस सरकारी तौर पर इगलैण्ड के साथ युद्ध की स्थिति में हो गया। एक साल बाद स्पेन ने भी इसका अनुकरण किया, यद्यपि उसने इतना आगे बढने से इन्कार कर दिया कि सयुक्त-राज्य को एक पृथक् राज्य माना जाये।

अप्रैल के मास मे वाशिगटन ने इस सन्धि के बारे मे सुना। उन्होने काग्रेस को लिखा—'मेरा विश्वास है कि कोई भी पहले की घटना इतनी हार्दिक उल्लास के साथ नही सुनी गई।' इस समाचार से वाशिंगटन से अधिक किसी के मन का बोझ हल्का नहीं हुआ होगा। यह अजीब बात लगती है कि वे सप्ताह जिनमें यह संमित्रता सम्पन्न हो रही थी, वाशिगटन के समस्त जीवन मे सर्वाधिक खराब थे। फौर्ज की घाटी मे शहतीर से बनी झोंपड़ियो मे रहने के कारण उन्हें भौतिक रूप से तो कष्ट हो ही रहा था, इस के साथ बहुत सी मानसिक व्यथा भी जुड़ गई, क्योकि यह वह समय था जिसे 'कानवे कबल' काल कहा जाता है, जिसमें होरेशो गेट्स के पक्ष मे वाशिंगटन को प्रधान-सेनापति के पद से उखाडने का षड्यन्त्र रचा गया था।

शायद हम कभी भी यह नही जान सकेंगे कि इस मामले मे कहां तक सचाई थी। जैसा कि वाशिंगटन ने भांपा, सेना के कुछ असन्तुष्ट व्यक्तियों ने कुछ काग्रेस सदस्यों के साथ मिलकर उसे बदनाम करने का कार्य-क्रम बनाया। ऐसा मालूम होता है कि इस दल के सैनिक अभिनेता गेट्स, मिफलिन और थामस कौनवे (जो आयरलैण्ड का स्वयं-सेवक था और इससे पूर्व फ्रांस की सेवा-वृत्ति

में कर्नल था) थे। परिचित कहानी के अनुसार उनके षड़यन्त्र का भांडा वाशिंगटन के वफादार समर्थकों ने (जिनमें लिफायेट भी था, जो उनका उत्साही प्रशंसक और मित्र बन गया था) फोड़ डाला। बाद में वाशिंगटन ने गेट्स के सामने षड़यन्त्र के साक्ष्य रखे और षडयन्त्रकारियों को इतना लज्जित किया कि उन्होने अपनी काली परियोजना को त्याग दिया। किन्तु बर्नहार्ड नौलिनबर्ग और अन्य आधुनिक विद्वानों ने इस परम्परा-गत वर्णन के बारे मे सन्देह प्रगट किए है। उनका कहना है कि उस समय यह स्वाभाविक था कि गेट्स की प्रशसा होती, क्योकि उसने बर्गोयने को रण-क्षेत्र मे हराया था और यह भी स्वाभाविक था कि वाशिंगटन के बारे मे तुलनात्मक-रूप से कम उत्साह हो, क्योकि वह हो से पिट चुके थे। शायद गेट्स इस कदर प्रशसा के योग्य नही था और न ही वाशिंगटन को इतना दोषी ठहराया जाना उचित था। किन्तु लोक-सन्मान की यही रीति है, विशेष-रूप से जब युद्ध का समय हो। भाग्यशाली सेना-पति प्रायः पदोन्नति पाते है और अभागों का बिस्तरा गोल कर दिया जाता है।

वाशिंगटन को बुरा-भला कहना शायद कृतघ्नता समझा जाता हो, पर क्या कुछ एक साथियों द्वारा एक दूसरे को लिखे गए व्यक्तिगत पत्रों में उनकी खामियो की चर्चा करना सचमुच राजद्रोह था? कौनवे स्वार्थपूर्ण व्यक्ति था और सम्भवतः वह उस समय सद्भावी भी नही था, जब उसने गेट्स को यह लिख भेजा कि वह उसे वाशिंगटन पर तरजीह देता है। क्या इससे उसने किसी राक्षसी प्रवृत्ति का परिचय दिया था? ऐसा प्रगट होता है कि वाशिंगटन ऐसा ही समझते थे और उनके बहुत से जीवनी-लेखक भी इसमें सहमत हैं। इन लोगों ने उनकी जीवनी लिखते हुए न सिर्फ अपने आप को उनकी जगह रखा (जैसा कि हर जीवनी-लेखक को करना ही चाहिए), बल्कि वे उनकी जेब मे भी पड़ गये (अर्थात उसके प्रति उन लोगों ने अन्धश्रद्धा की अभिव्यक्ति की)। परिणामतः उन्होने इस प्रकार की धारणाओ को आधार-सामग्री के रूप

में स्वीकार किया कि गेट्स तथा अन्य लोगों ने विद्रोह किया, गेट्स न केवल अयोग्य था, बल्कि बागी भी था और कांग्रेस के लगभग सब सदस्य धूर्त और मूर्ख थे।

वाशिंगटन के साथ न्याय करते हुये हमें यह मान लेना चाहिए कि उनके मित्रों ने इस ढंग से चर्चा की जिससे कि यह बोध होता था कि वास्तव मे षड्यन्त्र रचा गया है। कर्नल अलैक्जैण्डर हैमिल्टन ने लिखा—'मुझे इसकी वास्तविकता मे रत्ती भर भी सन्देह नहीं है।' यह सत्य है कि कुछ काग्रेस के सदस्य विद्वेष-युक्त और अनुत्तरदायी थे। जान जे ने शिकायत की कि 'इस ससद् में उतने ही षड्यन्त्र रचे जाते है, जितने कि पोप के महल में।' (यह सत्य है कि) वाशिगटन के ऊंचे पद वाले अधिकारियो में चुगली खाने की बहुत आदत थी। किन्तु यह बात उन स्थानों में सदा पाई जाती है, जहा आदमी प्रतिष्ठा और उन्नति के लिए प्रतिद्वन्द्वी होते हैं। देखिये, क्लिटन, हो और बर्गोयने में कितना मन-मुटाव था। यदि वाशिंगटन प्रधान सेना-पति के उच्चतम पद पर आरूढ़ होने की बजाए अनेक मेजर-जनरलो मे से एक होते, तो क्या उन्हें ईर्ष्या-विद्वेष की यन्त्रणाए न सताती? यद्यपि उनका कबल के साथ प्रतिष्ठायुक्त व्यवहार था और निश्चयपूर्वक प्रभावशाली था, किन्तु यह भी सत्य है कि वह स्थित्यनुसार इस सूचना से अत्यन्त क्रोधावेश में आ गये थे। अनेक महीनो तक उन्हें गेट्स पर गुस्सा रहा। कांग्रेस ने समझदारी से काम लिया। उसने इस बात का निश्चित रूप से खयाल रखा कि वे दोनो एक दूसरे से काफी अलग-अलग रहे।

मन्साऊथ से यार्क टाउन तक : सन् १७७८-१७८१

षडयन्त्र था या नही, उस समय जो भी परेशानी थी वह तात्कालिक आवश्यक विचारणीय बातों के कारण शीघ्र दब गई। यह देखकर वाशिंगटन को अचम्भा हुआ कि जून १७७८ में क्लिटन ने अपने लाल-कोट वाले सैनिकों को फिलेडैल्फिया से निकाल दिया है—लड़ने के लिए नही, बल्कि न्यू जरसी के उत्तर-पूर्वीय दिशा में

आगे बढ़ने के लिए। क्लिटन पागल नही था। हो की योजना उसे फूटी आंखों नही भाई थी। कुछ कुमक इंगलैण्ड से उसे भेजे जाने का वायदा हुआ था। खबर थी कि फ्रांसीसियो का एक समुद्री-बेड़ा रास्ते मे है। अतः उसने इस बात को अधिक पसन्द किया कि उसकी सेना न्यूयार्क नगर में ही जमी रहे। इस प्रकार दो साल पूर्व बोस्टन के समान, फिलेडैल्फिया भी अमेरिका वालो के हवाले कर दिया गया। उस नगर का महज खाली होना ही सयुक्त-राज्य की नैतिक विजय थी। वाशिंगटन ने फौर्ज की घाटी से पड़ाव हटाने के बाद, क्लिटन का पीछा किया। उन्होने दृढ़ संकल्प किया कि वे क्लिटन को सबक सिखायेगे।

२८ जून को प्रातः के समय उन्हे ऐसा मौका हाथ लगा। उस समय क्लिटन की पीछे की रक्षा-सेना मन्माऊथ कोर्ट-हाउस से प्रस्थान कर रही थी। रविवार का दिन था, जो भट्टी के समान तप रहा था। वाशिंगटन ने अमेरिकी सेना के आगे चलने वाले रक्षा-दल को आज्ञा दी कि वह ब्रिटिश-सेना को लड़ाई के लिए ललकारे। यह कार्य उन्होने चार्ल्स ली को सौपा। यह वही जनरल था, जिसे दिसम्बर, १७७६ मे शत्रुओं ने पकड़ कर कैद कर लिया था और अभी-अभी बदले मे छुटा था। दोनों सेनाएं लगभग बरावर संख्या मे थी। वाशिंगटन को सैनिक दृष्टि से यह लाभ था कि उन्होने स्थान बदलती हुई शत्रु की सेना को मुकाबले के लिए तैयार किया था, किन्तु विचित्र-प्रकृति ली ने प्रगट रूप से इस योजना का विरोध किया।

ली आगे बढा, किन्तु बिना अधिक आत्म-विश्वास के. और जब क्लिटन शीघ्रतापूर्वक कुमक लेकर आया, तो वह पीछे को हटा—फूहड ढग से। वाशिंगटन यह देखकर भयभीत हुए। उन्हें खीझ भी आई। मौके पर पहुंच कर उन्होने ली की सेना की भगदड़ रोक दी और उसके मोर्चे को जहां-तहां मजबूत किया। किन्तु पूरे जोर-शोर से लड़ाई नही हुई और उस रात जबकि प्रत्येक पक्ष के लगभग तीन सौ पचास सैनिक हताहत हुए, क्लिटन के लाल-कोट

फौजी विधिवत् न्यूयार्क की ओर बढ़ते चले गए। वे सैंडीहुक पर पहुच कर जहाजों मे बैठे और इस प्रकार समुद्री-मार्ग से उन्होंने अपनी यात्रा पूरी की। वाशिगटन के हाथ से एक उत्तम अवसर जाता रहा। वाद में ली का (जिसे गम्भीर अवज्ञा का अपराधी पाया गया और अवशिष्ट युद्ध-काल के लिए सक्रिय कमान से हटा दिया गया) कोर्ट-मार्शल हुआ। परन्तु इससे शत्रुओं द्वारा पहुंचाये गये आघात की मरहम-पट्टी कैसे हो सकती थी ? इस मन्माऊथ की मुठभेड़ के वारे मे जो भी कुछ और कहा जाए, इससे इस बात का एक और प्रमाण मिल गया कि वाशिगटन मे अभ्याक्रामी प्रवृत्ति थी। इस घटना से केवल इतना ही प्रकट नहीं होता कि वह ट्रैन्टन या जर्मनटाउन के समान ही गोलियों की वारिश मे भी साहस प्रदर्शित कर सकते है, बल्कि यह भी जाहिर होता है कि उन्होने युद्ध-समिति की सलाह के विरुद्ध बहुत बड़े पैमाने पर युद्ध को लाने की कोशिश भी की थी। सम्भव है कि उनका प्रयोजन व्यावहारिक हो, क्योंकि उन्हे आशका थी कि न्यू जरसी की मिलिशिया अपनी-अपनी फसले काटने के लिए बीच में छोडकर चली जायगी (जैसा कि वाद मे उन्होंने अविलम्ब किया)। अथवा उन्होंने शायद यह महसूस किया हो कि अमेरिका के नैतिक स्तर को 'किसी सहारे की जरूरत है, (ताकि) हमें भी उभारे रखे।' (उन्होने इस वाक्याश को कुछ समय वाद प्रयुक्त किया)। उनके इस प्रकार के व्यवहार के जो भी कारण रहे हों, इसमे दिलचस्प वात यह है कि वह इस औपचारिक युद्ध में अपनी सेना को झोंकने के लिए उत्सुक थे।

भूतगत घटनाओं पर विचार करते हुए हम देखने है कि फ्रांसीसियों की सम्मिलता ने लड़ाई का पांसा पलट दिया। एक वार जब ब्रिटिश सेनाए अपने पुराने शत्रु और स्पेन से जूझ गई, तो उनके समुद्र के एकाधिकार को चुनौती मिली। इस प्रकार १७७८ मे वे अमेरिका के लिए आते हुए फ्रांसीसियों के समुद्री वेडे को, जो कामटे डी एस्टैंईग के संचालन मे था, रोक नही सके। संसार के शेष भागों

से उनकी सख्त मांग थी—भू-मध्य सागर मे, जहाँ कि जबराल्टर घेरे में घिरा हुआ था, वैस्ट इण्डीज मे और यहाँ तक कि हिन्द महासागर की तरफ भी। उन्हें फ्रांस-स्पेन के इकट्ठे आक्रमण की सम्भावना का भी मुकाबला करना था (यद्यपि इसने व्यावहारिक रूप धारण नही किया)। दिसम्बर, १७८० मे हालैण्ड भी ब्रिटेन के शत्रुओं से जा मिला और उसी वर्ष ही, रूस के नेतृत्व मे, योरूप के कई देशों ने सायुध तटस्थता-सघ वना कर ब्रिटेन के प्रति अपनी शत्रुता प्रदर्शित की।

बीती हुई घटनाओं पर पुन. विचार करते हुए हम देखते है कि फोर्ज की घाटी अमेरिका-वासियों के प्रयासों के लिए अधोबिन्दु सिद्ध हुई। उसके बाद से वाशिंगटन ने एक सैनिक नेता के रूप में, बिना किसी आपत्ति के, प्रथम स्थान पाया। हो से यह आशा थी कि वह वाशिंगटन को जर्मन टाउन और ब्रांडीवाइन के स्थानो पर तीसरी और अन्तिम बार हरायेगा, अथवा फोर्ज घाटी पर सरदी के मध्य मे अकस्मात् चढ़ाई करके सम्भवत: उसे परास्त करेगा। किन्तु जब उसने छुट-पुट सफलताओ को ही अपना साध्य बना लिया, तो उसके लिए कभी ऐसा समय नहीं आ सकता था कि वह वाशिंगटन को एक वार में खत्म कर दे अथवा उनकी हेतु-पूर्ति मे किसी प्रकार की बाधा डाले। अब यदि फ्रांसीसी अपनी प्रतिज्ञा पर कायम रहते है, तो संयुक्त-राज्य को विजय तथा स्वतन्त्रता की प्राप्ति मे सफलता मिलना कोई दूर की बात नही थी।

यदि फोर्ज घाटी की घटना के बाद सब बातें ठीक प्रकार से घटी होती, तो एक सुन्दरतर कहानी बनी होती। किन्तु हम जो इतनी आशावादिता से बोल रहे है, उसका कारण यह है कि हम घटनाओं को पीछे से देख रहे है। जब वाशिंगटन की सेना मन्माऊथ से प्रयाण किए जा रही थी और न्यूयार्क को गोलाकार मे घेरती हुई वाईट प्लेन्ज मे युद्ध की स्थिति मे खड़ी हो रही थी, तो भौगोलिक दृष्टि से वह वही थी, जहाँ कि दो साल पूर्व। सप्ताह, मास और साल बीतते जा रहे थे। क्षितिज की बातें अधिक सन्तोष नही

दे सकती थी, जबकि आगे का रास्ता ही खत्म होने का नाम नहीं लेता था। उसकी पत्नी, मर्था, प्रत्येक शरद् में कुछ काल उनके पास आकर रहती थी। किन्तु, माऊटवर्नन, जहाँ अब उसका चचेरा भाई, लुड वाशिंगटन, कार्यभार सम्भाले हुए था, अवश्य ही उन्हे अत्यधिक दूरी पर लगा होगा। माऊटवर्नन प्रायः उनके मन में बसता था—यहाँ तक कि असम्भव क्षणों मे भी हम उन्हे थोड़ी देर के लिए अपने सरकारी मामलों को एक तरफ रख कर कृषि-सम्बन्धी परीक्षणों के विषय में अथवा गृह-भवन के विस्तार के लिए निर्देश देते हुए पाते है। (जैसे, 'इस बसन्त में तुम्हारे यहाँ कितने मेमने हुए?' 'क्या तुम्हें आशा है कि रग-रोगन और तेल मिल जायेगा?' 'क्या तुम प्याजा के पत्थर के फर्श की मरम्मत कराने लगे हो?' 'क्या तुमने चरागाहों के लिए और भूमि को लेने के प्रयास किए है?' इत्यादि।) वह बार-बार अपनी चिट्ठियों मे 'अपने ही अगूरों की लताओ और अजीरों के पेड़ो' की छाया के नीचे आराम करने के स्वप्नो का उत्साहपूर्वक उल्लेख करते है, मानो बाइबल के ये वाक्यांश सक्षेप मे उनके जीवन मे सन्तोष की भावना लाने के लिए सब कुछ हो।

मकाबले में, उनके बिल्कुल इर्द-गिर्द शान्ति का नामो-निशान न था। फ्रासीसियो की समिलता के समाचार प्रोत्साहन देने वाले थे, किन्तु अमेरिका मे इनका पहला असर निराशा-जनक था। डी एस्टैग का समुद्री-बेडा जुलाई, १७७८ मे ठीक समय पर पहुँच गया। चूंकि न्यूयार्क नगर को लेना दुष्कर कार्य था, अतः वाशिंगटन ने यह इतजाम किया कि फ्रांसीसी उस अमरीकी फौज के साथ मिल जाएं, जिसका नेतृत्व सुलीवान कर रहा था। फिर यह मिश्रित सेना रोड-द्वीप स्थित ब्रिटिश सेना पर आक्रमण करे। डी-एस्टैग को ब्रिटिश बेड़े के साथ उलझना पड़ा। परिणामतः फ्रांसीसी बेड़ा वैस्ट इण्डीज की तरफ लौट गया। इधर सुलीवान समुद्री-सेना का सहारा न मिलने के कारण ब्रिटिश सेना पर विजय पाने मे असफल रहा। इस प्रकार समिलता का आरम्भ अच्छे शकुनो के साथ नही हुआ। स्पष्टतः सयुक्त-संग्राम मे सम्पूर्ण-रूप से नई समस्याएं उठती-उभरती

रही, जिन्हें सुलझाने के लिए वाशिंगटन को अपनी सारी प्रतिभा और होशियारी का प्रयोग करना पड़ा। फ्रांसीसी बेड़ा केवल उधार पर ही मिल सकता था, अतः यह कठिन था कि वहुत पहले तत्सम्बन्धी योजना बनाई जाए। इस प्रकार सैनिक महत्व के निर्णय न केवल कांग्रेस को ध्यान में रख कर करने पड़ते थे, बल्कि फ्रांस के दरबार तथा अमेरिका-स्थित फ्रांसीसी सेनापतियो के दृष्टिकोणों को भी ध्यान में रखना पड़ता था।

वास्तव में, वाशिंगटन को यह भय था कि फ्राँस के बीच में पड़ने से कहीं ऐसा न हो कि उसके अपने देशवासी अपने प्रयासो में भयंकर-रूप से शिथिल हो जायें। जहाँ तक शत्रुता (क्षति-पहुँचाने) का प्रश्न है, अमेरिका के लोगों की अपनी उदासीनता और कार्यो में अकुशलता इतनी ही खतरनाक थी, जितनी कि क्लिंटन की समस्त लाल-कोट सेना। हो सकता है कि वाशिंगटन को ही ऐसा प्रतीत होता हो, क्योंकि हमें यह भूलना नही चाहिए कि उन्हें अपना अधिकतर समय युद्ध करने में नही, बल्कि अनन्त प्रशासनिक संकटों के समाधान में गुजारना पड़ता था। उन्हें इतना ज्यादा पत्र-व्यवहार करना पड़ता था कि कभी-कभी उन्हे एक ही समय बहुत से सचिव रखने पड़ते थे और जो भी चिट्ठिया वे लिखते थे, उनका सम्वन्ध खुराक, शस्त्रास्त्र, बारूद, वस्त्र, कम्बलों, घोड़ो, वेतन (जो निरन्तर अवशिष्ट रहा करता था), अर्थनाओं, भर्ती-कार्यो, उन्नतियों (और उन्नतियों के लिए इन्कारों), दण्डों, उपहारों, मिलिशिया के अभ्यांशों इत्यादि से था। वह महसूस करते थे कि इस प्रकार के श्रम वहुत हद तक घटाए जा सकते है, यदि कांग्रेस, मित्र-राज्य तथा व्यक्तिगत रूप से अमेरिकावासी अपनी जिम्मेदारियों को पूरी तरह निभाएं। यह सम्भव है कि वह आवश्यकता से अधिक शिकायत करते थे और अपनी सेना की न्यूनताओं को वताने में कुछ हद तक अत्युक्ति से भी काम लिया करते थे। किन्तु उनका यह रवैया ठीक उस बुद्धिमान ग्राहक की तरह था, जो इसलिए अपनी आवश्यकता से वढ़-चढ़ कर मांगता है, क्योंकि वह जानता है कि इसकी माग को पूर्ण

रूप से पूरा नहीं किया जायगा। फिर भी, सच तो यह है कि वह अत्युचित नही कर रहे थे, जवकि उन्होंने १७८१ के अप्रैल मे घोषणा की कि 'हम अपनी सीमाओं के अन्त में पहुँच गए है।' उनके ख्याल में उस वर्ष फोर्ज घाटी की शरद् कुछ अवस्थाओं में १७७८-१७७९ तथा १७७९-१७८० की शरद जैसी सख्त नहीं थी, क्योंकि इनमे से प्रत्येक वर्ष संयुक्त-राज्य की सेना में छुटपुट विद्रोह हुए थे। नैथानील ग्रीन ने दक्षिण से लिखते हुए इसी प्रकार के अशुभ लक्षणों का सत्यापन किया। उसने लिखा—"जब तक इस सेना को आशाओं से अधिक पोषण और सहारा नहीं मिलता, यह देश (अर्थात्-दक्षिण-भाग) हाथो से ऐसा निकल जाएगा कि दुबारा जीत कर वापस लेना असम्भव हो जाएगा।"

यह समझ में आता है कि वाशिंगटन का रोष ब्रिटिश लोगों और उनके अमेरिका के अनुदार दल के 'टोरी' समर्थकों के खिलाफ (दिनों-दिन) क्यों वढता जा रहा था। वफादार कौन है? इस बारे मे क्लिंटन और वाशिगटन में से प्रत्येक का उत्तर एक दूसरे से विरुद्ध था। यह ठीक है कि उनमें से हर एक अपने उस उत्तर के औचित्य को अपने दृष्टिकोण से सिद्ध करने की कोशिश करता। एक की नजरों में 'टोरी' देश-भक्त थे, किन्तु दूसरे की राय में वे सम्भाव्यत: देश-विद्रोही थे। वाशिंगटन अपने सुविकसित गुप्तचर-विभाग को एक यथार्थ सहायक अंग के रूप में मानते थे, किन्तु तादृशी क्लिटन की क्रियाओं को वह अनुचित और निंद्य समझते थे। इससे ठीक उल्टा क्लिटन का दृष्टिकोण था। क्लिंटन को 'टोरो' लोगो के उत्साह-हीन रवैये से निराशा हुई, यद्यपि सिमकोज रैंगर्स तथा अन्य राजभक्त सस्थाओं ने उसकी मूल्यवान सेवाए कीं। दूसरी ओर 'टोरी' लोगों की इगलैण्ड के प्रति गुप्त सहानुभूति से वाशिंगटन का दिल खट्टा हो गया था। यहाँ-तहाँ देश-विद्रोही लुके-छिपे मौजूद थे। कोई यह निश्चयपूर्वक नही जानता था कि आया चार्ल्स ली अपने कारागार के दिनों में शत्रुओ द्वारा 'भ्रष्ट' कर दिया गया था या नहीं। क्या यह ठीक नही था कि उसे १६ वें लाईट ड्रैगून के तथा

हो के प्रहरियों द्वारा ले जाया गया था ? सोलहवी लाईट ड्रैगून उसकी पुरानी रैजमैण्ट हुआ करती थी, जबकि वह ब्रिटिश अफसर था। सन् १७७८ के जून मास मे पैट्रिक हैनरी वर्जीनियावासियों की मानसिक स्थिति से इतना उद्विग्न हो उठा था कि उसने अपने राज्य के एक कांग्रेस सदस्य को लिखा—"परमात्मा के लिए अपने देश की सभाओं को उस समय तक मत छोड़िये जब तक कि आप हमे 'ग्रेट ब्रिटेन' से सदा के लिए पृथक् होते हुए न देख लें। पुराने विस्तृत प्रभाव भी आज अपना रंग दिखा रहे है। मिश्र के मांस के बर्तन आज भी अपने स्वाद के कारण लोगों की जीभों को कलुषित कर रहे है।' उसके शब्द दो साल बाद किसी सिद्ध की वाणी के समान ही सच्चे साबित हुए, जबकि बैनीडिक्ट आरनाल्ड, जो अमेरिका की सेना में सर्वाधिक त्वरित गति से काम करने वाला अफसर माना जाता था, वैस्ट पौआइंट की रक्षा-पंक्ति के रहस्योद्घाटन करने पर उद्यत देखा गया। आरनाल्ड न सिर्फ बच कर भाग गया, बल्कि इससे भी खराब बात यह हुई कि उसे मुक्तहस्त इनाम मिला—वह अंग्रेजी सेना में ब्रिगेडियर-जनरल बना दिया गया। इस उच्च पद पर आकर उसने कनैक्टीकट और वर्जीनिया में विनाशकारी छापे मारे। इस षड़यन्त्र का पता उस समय चला जबकि मेजर एण्ड्रे, जो एक आकर्षक युवक और ब्रिटिश सेनाधिकारी था, पकड़ा गया। वह उस वक्त क्लिंटन के हुक्म के मातहत आरनाल्ड के पास आ-जा रहा था। वाशिंगटन ने तब उस कठोरता से, जिसकी गंध भी उनमें नही पाई जाती थी, उस गुप्तचर को फांसी के तख्ते पर चढ़वा दिया।

ये दिन ही कड़े थे। मन्माऊथ मे ग्रीष्म-काल के मध्य के बाद, लम्बे मध्यान्तर में, इस प्रकार के शब्द जैसे 'मान-हानि', 'व्यग्रता', तथा 'दुर्भाग्य' निस्सकोच रूप से वाशिंगटन की लेखनी से प्राय: निकला करते। यह बात न केवल अभियानों के सम्बन्ध में, बल्कि पडाव के दौरान मे भी सार्थक थी। अमेरिका की सेना ने भूमि पर कुछ छुट-पुट सफलताएं अवश्य प्राप्त की, परन्तु जान पाल जोन्स और अन्य कई लोग भी, जो नव नौसेना मे कैप्टन के पद पर थे,

जल पर अपनी भिन्न-भिन्न छोटी-मोटी लड़ाइयों मे बड़ी कामयाबियां हासिल करते रहे। किन्तु इन सबसे युद्ध की दशा में कोई अन्तर नहीं पड़ा। ब्रिटिश लोगों ने अपना मुख्य ध्यान दक्षिण के क्षेत्र पर केन्द्रित किया। उन्होने न्यूपोर्ट को १७८० के अन्त में खाली कर दिया, ताकि अपनी सेनाओं का अधिक लाभ के साथ दूसरे स्थानों में प्रयोग कर सके। उन्होने एक साल पूर्व जार्जिया में सवन्नाह को अपने कब्जे में कर लिया था और अब १७८० के शरत्काल मे क्लिटन ने समुद्री मार्ग से सेना लाकर चार्ल्सटन पर घेरा डाल दिया। उसके संकार्यो में अनेक विघ्न-बाधाएं थी, किन्तु फिर भी उसे यथेष्ट लक्ष्य की प्राप्ति हो रही थी। चार्ल्सटन अमेरिका वालों के कब्जे से निकल गया। उनके साथ पांच हजार से अधिक अमेरिका रक्षादल के सैनिक भी शत्रु के हाथ लगे। यह इस लड़ाई की सर्वाधिक मूल्यवान क्षति थी। क्लिंटन तो न्यूयार्क लौट गया, परन्तु वह अपने पीछे आठ हजार सैनिक कार्नवालिस के अधीन छोड़ गया, ताकि जार्जिया और दक्षिणी कैरोलीना को राजभक्तों की रक्षा के रूप में अपने कब्जे में रखा जासके। वाशिंगटन मजबूर हो कर हड्सन पर ही रहे, क्योंकि उन्हे क्लिंटन पर नजर रखनी थी। दक्षिणी रण-क्षेत्र के लिए जो कुछ उनके बस में था, उन्होने किया। जितने सैनिक वह बचा कर भेज सकते थे, उन्होंने वहां भेजे। कांग्रेस ने होरेशो गेट्स को कमान सम्भालने के लिए दक्षिण की ओर भेजा।

आखिरकार संघर्ष नाटकीय ढंग से त्वरित गति से आगे बढ़ा। इसके मुख्य-मुख्य अभिनेता, अनजाने में, हजारों मीलों की विस्तृत भूमि पर सैनिक हलचलों मे जुट गये ताकि मिल कर अन्तिम निर्णयात्मक लड़ाई लड़े। छोटे दर्जे के अभिनेताओं को, चाहे वे इस योग्य थे या नही, असम्बन्धित समझ कर एक तरफ हटा दिया गया। इनमें कई एक इन क्षेत्रों में प्रसिद्धि पा चुके थे, जैसे कि गेट्स। किन्तु उसने अगस्त १७८० में दक्षिण कैरोलीना के कैमडन स्थान पर कार्नवालिस से जबरदस्त शिकस्त खाई थी, जिसके फलस्वरूप वह तीन मास के अन्दर-अन्दर अधिक्रमित हो गया। सम्मानित

बैरन डी काल्ब, कैमडन के स्थान पर, घातक रूप से आहत हो गए, जिसके कारण इस लड़ाई मे सम्मिलित नही हो सके । चार्ल्स ली का पहले ही बहिष्कार हो चुका था। क्लिटन न्यूयार्क में बन्द हो जाने से और हिलजुल न सकने के कारण दांत पीस रहा था। अपना निदान करते हुए उसका मत था कि वह एक 'लज्जाशील कुतिया' की तरह रह गया है, वह इतिहास के सौभाग्यवान् सेनानायकों मे से नही है।

इस नाटक के शेष पात्रों में पांच प्रमुख थे और अन्य (ग्रीन, सट्यूबेन, आदि) उनके सहायक। इन पाचो के नाम थे कार्नवालिस, लिफायट, वाशिंगटन और दो बाद में हुए कोम्टे दी रोचम्बियू और एडमिरल डी ग्रास।

कार्नवालिस का १७८०-८१ का शरद् अभियान निर्णायक रहा। यह उसका दुर्भाग्य था, क्योकि यह एक योग्यतापूर्ण अभियान था। उसका हमला वेगपूर्ण था, उसके पास सब साधन थे और उसने अमेरिका की परिस्थितियों के अनुसार अपने सैनिक व्यूह-कौशल को ढाला था। वह और उसकी घुड़सवार सेना के नेता, बनैस्टर टार्लेटन ने गेट्स को कैमडन पर परास्त किया था। और (मार्च १७८१ में गिल्फोर्ड के कोर्ट हाउस के पास) ग्रीन पर जोर की चोट की थी। इसके बावजूद, कार्नवालिस मानो पानी पर लिख रहा था। जैसे ही वह शीघ्रता से उत्तर की ओर जाता, फिर दक्षिण में आता, बाद में फिर उत्तर की ओर लौटता, उसके पीछे प्रतिरोध नए सिरे से उठ खड़े होते। मई के मास में वह वर्जीनिया मे था, जहा टार्लेटन ने गवर्नर थामस जैफर्सन को तथा घबराए हुए राज्य-संविधान-सदस्यों को लगभग पकड़ ही लिया। कार्नवालिस साहसी था और प्रतिभावान भी। किन्तु दुर्भाग्य ने उसे आ घेरा। जब वह लैफाएट और स्ट्यूबन के नेतृत्व मे फुर्तीली अमरीकी सेना को खत्म करने में असफल रहा, तो उसने समुद्री तट पर पहुचकर क्लिटन से सम्पर्क जोड़ने का निश्चय किया। उसने समुद्री-तट पर यार्क टाऊन को चुना। गत अभियानों मे इसलिए हो सफल नही

हुआ करते थे। उनमें प्रायः निर्भत्सना तथा निषेधाज्ञाएं पाई जाती थी। जहा कही उनमें प्रशसात्मक बात भी होती, तो उनमें बर्फ जैसी ठण्डक अर्थात् उत्साहहीनता पाई जाती। वे आदेश प्रशंसा-युक्त नही होते थे, प्रत्युन प्रशंसा प्रदान करने वाले होते थे।

इस बात को अधिक विस्तार देना कोई अक्लमन्दी नहीं है। न ही इसमें समझदारी है कि हम १८ वीं शताब्दी के वर्जीनिया के भू-स्वामी से यह आशा रखें कि वह किसी बीसवीं सदी के जनता-सम्पर्क-विशेषज्ञ सरीखा व्यवहार करेगा। तथापि समकालीन साथियों को भी वह चुप-चाप रहने वाले मनुष्य लगे। यह सत्य है कि युद्ध उनके लिए सब कुछ था, किन्तु उन्होंने शाब्दिक रूप में इसकी प्रमुख घटनाओं के अनुकूल अपने आप को नहीं ढाला था। जब साराटांगा का समाचार उन्हें मिला, तो वह उस समय चार्ल्स विल-सन पील से अपना चित्र बनवा रहे थे। पत्र हाथ में लेते ही उनके मुह से निकला—'ओह ! बर्गोयने हार गया' और बस इतना कहने के बाद वह जैसे ही बैठे रहे। और जब कार्नवालिस ने घुटने टेके, तो कांग्रेस को सूचित करने के लिये बजाय अपने आप सन्देश-सामग्री बनाने के, उन्होने अपने एक अंगरक्षक अफसर को यह निर्देश दिया कि वह इस विषय में सन्देश बनाए। यह सूचना सक्षिप्त विवरण के दायरे मे न रह कर निराशाजनक रूप से नीरस रचना बनी।

किन्तु यह उस प्रकार की गम्भीर त्रुटियां नही है, जिन्हे हम ध्यानपूर्वक अवलोकन से जार्ज बी० मैक्लेलेन नाम के दूसरे अमरीकी जनरल मे पाते हैं। अमेरिका के गृह-युद्ध के दौरान मे इस जनरल को कुछ काल के लिए संयुक्त-राज्य को बचाने का श्रेय प्राप्त हुआ था। इन दोनों व्यक्तियों में यह विचित्र बात थी कि इनमें विनय-शीलता और आत्म-विश्वास पाए जाते थे। किन्तु मैक्लेलेन कोई प्रसिद्ध योद्धा नही था। शत्रु के सामने आने पर वह विनय का प्रद-र्शन करता और जब उसके प्रमुख अफसर या सहयोगी होते, तो इस हद तक आत्म-विश्वास दिलाता कि वह मिथ्याभिमान का रूप ले लेता। इसमें शक नहीं कि वह एक सुयोग्य व्यक्ति था, किन्तु वह

बारी-बारी कभी तो अधीर और कभी भगवान् पर भरोसा करने वाला बनता। दूसरी ओर वाशिंगटन एक ऐसे योद्धा थे, जो अपवाद रूप में कुछ मौकों को छोड़ कर, हर समय अपने मन में किसी विषय के बारे मे स्पष्ट धारणाएं रखते थे। एक योद्धा के रूप में यदि उन्होने कभी भूल भी की, तो जल्दबाजी की भूल की। वह अपने गहरे आत्म-ज्ञान द्वारा, जिसकी झांकी वह दूसरों को भी दिया करते थे, यह जानते थे कि वह इसलिए इस त्रुटि का शिकार होते है, क्योकि उन्हे इस बात पर क्रोध आता है कि कहीं लोग उन पर भीरु होने का आरोप न लगाएं। दूसरे लोग चाहे फेबियस के व्यूह-कौशल का प्रशंसात्मक रूप से अनुमोदन करते हों, किन्तु जहाँ तक उनका सम्बन्ध है, वे कभी 'विलम्बकारी' फेबियस ककटेटर को दिमाग मे नही लाए।

अतः यह बात ठीक है कि वाशिगटन में किसी पूर्ण योद्धा के गुण नही पाए जाते थे, किन्तु उनमें ऐसे व्यक्ति के गुण थे, जो असम्भव अपेक्षाओं को पूरा कर सकता है। कांग्रेस सर्व प्रथम ऐसा सेनापति चाहती थी, जो स्वतन्त्रता की लड़ाई की शान को बढाये। वाशिंगटन ने इस कार्य को इतने सुसस्कृत ढग से किया कि चैथम जैसे अमेरिका से सहानुभूति रखने वाले अंग्रेजों की बात दूर रही, हो जैसे विरोधी भी उनका लोहा मानते थे। चैथम ने फरवरी, १७७७ में हाउस आफ लार्ड्स में कहा था—'अमेरिका वासी कोई जगली और कानून भंग करने वाले डाकू नही हैं। वे ऐसे लोग नही हैं कि जिनके अपने पास हानि उठाने के लिए तो कुछ न हो, पर वे इसलिए सार्वजनिक उथल-पुथल में भाग लेते हों कि इससे वे अपने हाथ रंग सकेंगे। इस देश में कितने ही ऐसे नेता हैं जिन्हे इस लड़ाई के फलस्वरूप बड़ी-बड़ी हानियों की सम्भावनाएं हैं। मुझे बतलाया गया है कि जो सज्जन अमेरिका मे सेनाओं का संचालन कर रहे हैं, उनकी भू-सम्पति की वार्षिक आमदनी चार-पांच हजार पौण्ड है।' इससे अधिक महत्वपूर्ण छाप वाशिंगटन ने फ्रांसीसियों पर डाली। सम्भवतः उन्होने उन लोगों को प्रसन्न करने का भरसक प्रयत्न

किया था। यदि यह ठीक है, तो उन्होंने इसमें आश्चर्यपूर्ण ढंग से सफलता प्राप्त की। वह उन सबके लिए सचमुच बिना भय और धिक्कार के 'शिवालियर बयर्ड' थे। इसमें वे सब सहमत थे कि वाशिंगटन ऐसे सज्जन हैं कि जिनमे साधारण रूप से सन्तुलन और दयानतदारी पाई जाती है।

कांग्रेस दूसरी चीज यह चाहती थी कि उसका प्रधान-सेना-नायक ऐसा हो, जो योरूप की सेना के नमूने पर भर्ती कर सके और उसका निर्देशन भी उसी ढंग से कर सके, ताकि अमेरिका की सेनाएं व्यवसायी सैनिकों से लोहा ले सकें। उनका अभिप्राय सचमुच की अमरीकी सेना से था जो संयुक्त राज्य की शान के शायां हो। यह वाशिंगटन की भी प्रबलतम इच्छा थी कि अमरीकी सेना मे 'व्यवस्था, नियमितता और अनुशासन बद्धता' होनी चाहिए। यह सत्य है कि उन्होंने इन तत्वों के समावेश के लिए केवल पैदल सेना को ही मुख्य-रूप से अपने सामने रखा। घुड़सवार सेना और अन्य प्रकार की सेनाओं मे कुछ-कुछ उपेक्षा बर्ती गई। किन्तु उन्होंने अपने दिमाग में एक ऐसी सेना की तस्वीर बनाई थी जिसमे अनुभव प्राप्त योद्धा हों। यह उनकी नीति का एक आवश्यक अंग था और यही कारण था कि लड़ाई के दौरान मे वह इतने दुःखी रहा करते थे।

कांग्रेस तीसरी बात यह चाहती थी कि सेना-नायक इस प्रकार का हो, जिसकी सेना मे बहुसंख्यक अल्पकालीन मिलिशिया के लोग, अनियमित-रूप से भाग लेते हो। कांग्रेस के मत में डाकुओं को भी, चाहे चैथम ने अपने विचार इस बारे में कैसे भी व्यक्त किए हों— भर्ती करने की छूट थी। कांग्रेस को ऐसा आदमी चाहिए था जो इस प्रकार की अस्थाई सेना को वश में कर सके और उनके विशेष गुणों का लाभ उठा सके। हमारे विचार मे शायद यहाँ कांग्रेस ने वाशिंगटन से जो आशाएं बांधी थीं, उन्हें पूरा करना उनके लिए सम्भव नहीं था। वह स्वभाव से अमेरिका की तात्कालिक परिस्थि-तियों के लिहाज से कुछ-कुछ जरूरत से ज्यादा 'योरोपियन मनोवृत्ति' के थे। उनके मिलिशिया के अनुभव, वर्जीनिया-सीमान्त की घट-

नाओं के समय से लेकर अब तक के लगभग सतत रूप से कड़ुवे थे। ऐसा इत्तफाक हुआ कि बंकर अथवा ब्रीड्स हिल से काउपेन्ज की मुठभेड़ो में, जिनमें मिलिशिया ने नाम पाया था, वह मौजूद नहीं थे। इसलिए उन्हें यह स्वीकार करने में झिझक थी कि मिलिशिया में कभी उत्तम गुण मिल सकते हैं। इस मामले में उनको पर्याप्त संभ्रम थे। वह प्रासंगिक स्थितियों को छोड़ कर लाल-कोट वर्दी वाले (अंग्रेज) सैनिकों को परेशान करने में रुचि नही रखते थे, बल्कि उन्हें इस बात में दिलचस्पी थी कि येन-केन प्रकारेण उन्हे जमे हुए रणक्षेत्र में बुरी तरह हराया जाये। यहाँ भी वह इतना कुछ कर सके, जितनी कि कांग्रेस को किसी भुलक्कड़ से आशा हो सकती थी।

वाशिंगटन निश्चय ही ऐसे कठोर अनुशासक नहीं थे, जो अमेरिका पर, अन्धाधुन्ध तरीकों से विदेशी नमूने का सैनिक आचार-व्यवहार थोपना चाहते हों। वह इस बात को भली भांति जानते थे कि अमेरिका की परिस्थितियों के लिए विशेष ढंग के, बल्कि अरूढ़िवादी, सैनिक-समाधान चाहियें। किन्तु वह इस प्रक्रिया को अधिक दूर नहीं ले जाना चाहते थे। जनरल की कार्य-विधि में वे कार्नवालिस से बहुत मिलते-जुलते थे। कार्नवालिस एक नियमित-रूप से प्रशिक्षित सैनिक अफसर था, जिसे सुप्रशिक्षित सेना के साथ रणक्षेत्र में लड़ने का अभ्यास था। वाशिंगटन के सामने भी ऐसा ही लक्ष्य था।

सम्पत्तिवान भद्रपुरुष, दोष रहित प्रधान सेनापति, गोरिल्ला लड़ाई में शूरवीर योद्धा—इन सब गुणों का समावेश कांग्रेस वाशिंगटन में चाहती थी। इनके अलावा कांग्रेस यह भी चाहती थी कि ऐसा अनुपम व्यक्ति एक नागरिक के रूप में अपने आपको समझे। उसकी यह भी ख्वाहिश थी कि इस प्रकार का प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध सेनापति, जहाँ तेरह भिन्न-भिन्न और अर्ध स्वशासित राज्यों की नियमित सेना एवं मिलिशिया पर नियन्त्रण रखने के योग्य हो, वहाँ वह कांग्रेस की सर्वोच्च सत्ता के आगे हर्षपूर्वक नतमस्तक रहे।

आश्चर्य तो यह है कि नितान्त असम्भव अपेक्षाएं रखते हुए भी कांग्रेस जार्ज वाशिंगटन में लगभग वे सारी अभिवांछित बातें पा सकी। अतिरिक्त लाभ के रूप में उसे एक ऐसा आदमी मिल गया, जिसमें असाधारण दृढ़ता-स्थिरता थी। हमें इस बात की आशा नहीं कि बहुसंख्या मे लोग फिट्स पैट्रिक द्वारा संकलित वाशिंगटन के लेखों का विशाल संस्करण आद्योपान्त पढ़ सकें। उस संस्करण में केवल युद्ध के समय से सम्बन्धित १०००० पृष्ठ है और जो उनमें दस्तावेज दिए गए है वे इतने सूक्ष्म विवरणों से भरे पड़े हैं और इनमें इतनी अधिक पुनरावृत्तियाँ है कि उन्हे पढ़ने के लिए मन में तीव्र इच्छा जागृत नही होती। तो भी, इस महापुरुष के स्वभाव को समझने के लिए इन पुनरावृत्तियों का अनुशीलन करना आवश्यक है।

इस पुस्तक में हम वाशिंगटन को सीधी-सादी भाषा में, जिसमें न तो रस है और न शब्दाडम्बर, न अभिमान की बात है और न ही क्षमा-याचना की ध्वनि, अपनी बात को बलपूर्वक और बार-बार कहते हुए देखते है। उनकी बात या तो सर्वमान्य होती है और या वह इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि उसके माने जाने की बिल्कुल सम्भावना नहीं। यह बात विशेष रूप से यहाँ लागू होती है जबकि वह युद्ध का अन्त करने वाले साधनों के विषय मे, चाहे वे दूर भविष्य के ही क्यों न हों, लिखते है। विजय को अपना लक्ष्य मानते हुए उनकी दृष्टि उसी पर गढ़ी रहती है। ब्रिटिश सेनापतियों के समान इस प्रकार की निराशाजनक भूल वह कभी नही करते थे कि अपने प्रमुख लक्ष्य को छोड़कर गौड़ लाभ को अपने सामने रखें। वह विशेष रूप से बहुत बड़े पैमानों पर युद्ध-चातुर्य नहीं चाहते थे (और सम्भवतः उनका विश्वास था कि इसे अमल में लाना उनका नही, प्रत्युत कांग्रेस का कार्य है)। सन् १७७५-७६ के कैनेडा के आक्रमण के बाद उन्होने इस प्रकार की महत्वाकांक्षा-पूर्ण परियोजनाओं को कभी प्रोत्साहन नहीं दिया। इसकी बजाय उन्होने उन बातों पर सारा ध्यान केन्द्रित किया, जो नितान्त आवश्यक थीं, जैसे—एक बड़ी सेना, इसके संचारण के उत्तमोत्तम

उपाय, राज्यों की ओर से अधिक शीघ्रतापूर्वक और उदारता से सेनाओं और युद्ध-सामग्री का भेजा जाना, ऐसी नौ-सेना, जो कम से कम, कुछ स्थलो में ब्रिटिश नौ-सेना से बाजी ले जाय, आदि-आदि। यार्कटाऊन की विजय के रूप में उन्हें बहुत देर के बाद अपने दीर्घकालीन प्रयत्नों का इनाम मिला।

साउथ कैरोलीना के डैविड रैम्जे ने १७८९ में 'अमेरिका क्रान्ति का इतिहास' नाम की एक पुस्तक प्रकाशित की। उसने उस पुस्तक में लिखा—'ऐसा विदित होता था कि युद्ध के कारण न सिर्फ सुयोग्य लोगों की आवश्यकता महसूस हुई, बल्कि उसके कारण सुयोग्य व्यक्ति बने भी।' यह बात जार्ज वाशिगटन पर बिल्कुल ठीक बैठती है। लार्ड हो के सचिव एम्बरोसे सरले ने वाशिगटन पर व्यंग करते हुए उन्हें सन् १७७५ में 'मिलिशिया का तुच्छ कर्नल' कहा था। किन्तु क्या उसे ऐसा समझना ठीक था? वाशिगटन के आलोचक यह कहा करते थे कि वह अपनी (मानसिक और आध्यात्मिक) शक्तियो के लिहाज से इतना नही बढ़ा, जितना कि वह जनता के आदर और श्रद्धा के कारण ऊंचा उठा। परन्तु जब युद्ध का अन्त हुआ, तो उन्ही लोगों को यह मानना पड़ा कि वाशिंगटन को जो प्रतिष्ठा-पद मिला, उन्होंने उसे शोभा और विनीत-भाव से सम्भाले रखा।

हम वाशिगटन महोदय के व्यक्तिगत विकास की प्रक्रिया उन १० हजार सकुल पृष्ठो वाली पुस्तक से जान सकते है, जो फिट्स पैट्रिक महाशय द्वारा संकलित हुई। इन पृष्ठों में हम उनमे थोड़ी थोड़ी मात्रा में बढ़ते हुए भरोसे, सूझ-बूझ और चित-स्थिरता के चिन्ह पाते है। फ्रांसीसी अफसर जो संघर्ष की अन्तिम अवस्थाओं में उनके साथ शामिल हुए थे (जब कि वे पहले से काफी ज्यादा परिपक्व हो चुके थे), उनकी टिप्पणिया भी उनके बारे मे इस प्रकार के विचार उद्घोषित करती है। वे टिप्पणियां उन्हें इस प्रकार का व्यक्ति जाहिर करती है, जो प्राय. सब ही के आदर का पात्र है—यहां तक कि कुछ लोग उनके लिए पूज्य भाव भी रखते है, जिसे

देखकर चाहे लोगों के मन प्रफुल्लित न भी होते हों, पर वे सुख का अनुभव अवश्य करते हैं; जो खिलाने-पिलाने में उदार है, किन्तु स्वयं पियक्कड़ नही है; जो सुन्दर और अच्छे सिले हुए कपड़े पहनता है, पर जिसमे तड़क-भड़क और दिखावा नही है; जो गर्वीला है, पर जिसमे मिथ्याभिमान की गन्ध तक नहीं है, अर्थात् जो तथ्य और पद दोनों के लिहाज से 'परम श्रेष्ठ' कहलाने योग्य है।

अमेरिका में केवल वाशिंगटन ही ऐसे व्यक्ति नहीं थे, जिनकी योग्यता का निर्माण आपातिक स्थिति के कारण हुआ था। सम्भव है कि होरेशो गेट्स जैसे सुयोग्य आदमियों को बदनाम करके उनकी ख्याति को अनुचित रूप से बढ़ा-चढ़ा कर पेश किया गया हो। लोग कह सकते है कि यदि उनके आसन पर कोई दूसरा आदमी भी बिठा दिया जाता, तो उनके समान ही वह पर्याप्त रूप से परीक्षा में पूरा उतरता। उदाहरण के लिए यदि फिलिप्स स्कूलर को उनके स्थान पर नियुक्त किया जाता, तो सम्भव है कि वह अपने उच्च वंश के तौर-तरीकों और न्यूयार्क-सम्बन्धी प्रान्तीयता की भावनाओं से ऊपर उठ जाता, जिस प्रकार कि वाशिंगटन ने भी न्यू-इंगलैण्ड तथा अन्य उपनिवेशों के विरुद्ध अपनी प्रान्तीय पक्षपाती भावनाओं पर विजय पा ली थी। यदि नैथेनील ग्रीन, जो रोड-द्वीप का क्वैकर जनरल था और जो बहुत वफादारी से लड़ा था, सेनापति की हैसियत मे होता, तो सम्भवतः अपने देशवासियों को सन्तुष्ट कर सकता था। किन्तु यह विश्वास करना कठिन है कि बुद्धिमान, किन्तु रूखे, चिड़चिड़े और क्रोधी स्वभाव का चार्ल्स ली शत्रुओं के आक्रमणों को रोक सकता। पर शायद आर्टिमस वार्ड जिसे ली ने घृणा से 'गिर्जेघर की देखभाल करने वाला' कह कर मार्ग से हटा दिया था, नेतृत्व की योग्यता रखता था, किन्तु सन् १७७५ में एक ओर धकेल दिए जाने के कारण उसका वह गुण अभिव्यक्त नहीं हो सका था। यह भी समझ में आता है कि यदि बैनिडिक्ट आर्नल्ड अभिवांछित प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेता, तो बजाय देश-विद्रोही बनने के अपने दोष को भस्मी-भूत कर देता। ये केवल अटकलपच्चू

बाते हैं। वास्तव में ध्रुव सत्य यह है कि कांग्रेस (और संयुक्त-राज्य अमेरिका) इस बात के लिए अपनी युक्ति-संगत आशाओं से भी अधिक सौभाग्यशाली रही कि उसने कर्नल वाशिंगटन को अपना प्रधान सेना-पति चुना। 'सुलभ' व्यक्ति, अपने छोटे-मोटे दोषो के बावजूद 'अपरिहार्य' व्यक्ति सिद्ध हुआ।

अध्याय ४

राष्ट्रपति वाशिंगटन

भगवान करे कि कृषक वाशिंगटन, सिनसिनेटस की भांति, हल जोतने के कार्य से हटाया जा कर महान् राष्ट्र का शासन करे !

(सन् १७८८ में, डिलावेयर स्थित विलमिंगटन में ४ जुलाई को सम्पन्न समारोह में, 'टोस्ट' (स्वास्थ्य-कामना) पेश करते हुए की गई प्रार्थना।)

'अपने भीतर निवर्त्तमान होना'

जनरल वाशिंगटन की तीव्र इच्छा थी कि वह कृषि के काम पर वापिस लौट जाएं। वह भौतिक एवं अध्यात्मिक रूप से सैनिक जीवन से थक चुके थे। उनका स्वास्थ्य ठीक नही था—उनके दांतों मे सख्त तकलीफ थी। इसके बावजूद उन्हें नौ वर्षों तक भारी उत्तरदायित्वों का इकट्ठा बोझा ढोना पड़ा था। वास्तव मे, जैसा कि उन्हे शीघ्र पता चल गया, वे सन् १७८३ के बाद निजी जीवन बसर करने वाले ऐसे नागरिक बने, जिन्हे फिर कभी सच्चा एकान्त-वास नसीब नही हो सका। अत. यह स्वाभाविक ही था कि वह शान्त जीवन का छोटा सा और उत्सुकतापूर्ण स्वप्न ले, वह कविता-मय ग्रामीण जीवन को अपने मस्तिष्क में ले आएं।

किन्तु इस ग्रामीण जीवन की छोटी सी कविता को परिस्थि-

तियों ने शीघ्र ही दबोच लिया। हां, इतना जरूर है कि हम उनकी इस कल्पना को उन पत्रों मे अब भी देख सकते है, जो उन्होंने सन् १७७४ के आरम्भिक महीनों में लिखे थे। वर्जीनिया के इस स्वाभिमानी बागान-स्वामी ने उन पत्रों में माऊन्टवर्नन का उल्लेख करते हुए विचित्र विनम्रता का परिचय दिया था। तब उन्होंने इसे 'झोंपड़ी' और अपना 'देहाती घर' कह कर पुकारा था। इससे पूर्व कभी उन्होंने इन शब्दो में अपने विस्तृत भू-भाग का वर्णन नहीं किया। इस समय उन्होने स्वयं को वैयक्तिक जीवन बसर करने वाला ऐसा अमरीकी नागरिक महसूस किया जो पोटोमिक नदी के किनारे पर अपना डेरा डाले हुए है और सैनिक कैम्प के भीड़-भड़ाके और राज-दरबार के षडयन्त्रों से मुक्त होकर अपनी अंगूरों की बैलों और अंजीरों के पेड़ों की छाया तले रह रहा है।' उन्होने स्वयं को एक ऐसा नागरिक महसूस किया जो 'अपनी अन्तिम घड़ी में पहुंचने तक जीवन की धारा के साथ-साथ धीरे-धीरे बहता चला जाएगा।' उनका कहना था--'मैं न केवल समस्त सार्वजनिक सेवा से निवृत्त हो चुका हूं, बल्कि मैं अपने भीतर निवर्त्तमान हो रहा हूँ।'

सम्भवत वह अर्द्धचेतना से सिनसिनेटस का भाग अदा कर रहे थे। उन दिनों बहुत से आदमी उस देशभक्त से उनकी तुलना किया करते थे और बात को इस ढग से पेश करते थे कि जिससे यह प्रकट हो कि वह एक महत्वपूर्ण जागीरदार होने की अपेक्षा एक सरल व साधारण कृषक है। किन्तु उन्हे इस प्रकार के 'स्वप्न' लेने का अवसर अल्पकाल के लिए ही प्राप्त हो सका। यह देख कर कि उन्हें सेवा-निवृत्ति के तुरन्त बाद पर्याप्त अवकाश मिल जाएगा, उन्होने कई पुस्तकों को खरीदने के लिए आदेश दे दिए। (इनमें कुछ पुस्तकें यात्रा की कहानियां थीं, जिनसे उनके दूसरे स्वप्न अर्थात् फ्रांस में जाने का सकेत मिलता है, जहाँ उन्हें लिफायट और अन्य लोगों द्वारा स्नेहपूर्ण स्वागत की आशा थी। परन्तु वह स्वप्न भी मिथ्या सिद्ध हुआ।) उन्होंने बिना कोई विशेष कारण बताए टरो गिरजा के अधिकार-क्षेत्र की प्रबन्ध-कारिणी सभा से त्यागपत्र दे

दिया। सम्भवतः उन्हे यह सदस्यता भी एक अन्य लघु 'सार्वजनिक सेवावृत्ति' लगी, जिससे छुटकारा पाना, उन्हें आवश्यक जान पड़ा। यह उल्लेखनीय है कि उन्होने वर्जीनिया के राजनैतिक क्षेत्र में प्रविष्ट होने की लेशमात्र कोशिश नही की, यद्यपि वह कहने मात्र से राज्य सविधान सभा में स्थान पा सकते थे। वे चाहते तो राज्यपाल का पद भी प्राप्त कर सकते थे। अपवादरूप मे उन्होंने केवल एक उच्च पद पर रहना स्वीकार किया और वह भी बिना किसी वेतन के। यह पद सिनसिनेटी सभा के प्रमुख प्रधान का था। यह सेना के पूर्वाधिकारियों की संस्मरण-संस्था थी, किन्तु वे न तो उस सस्था के संस्थापकों मे से थे और न ही कभी उन्होंने यह चाहा था कि इसमें प्रमुख स्थान ग्रहण करे। उनकी तो केवल एक आकांक्षा थी कि जीवन के आगामी वर्षो में वह केवल अपने ही मामलों के प्रबन्ध में समय गुजारेगे। कुछ मामले अपने आप में इतने विविधतापूर्ण और शक्ति और समय लेने वाले थे कि वाशिंगटन को यह विचार छोड़ना पड़ा कि उन्हें कभी फुर्सत भी मिल सकती है अथवा वह कभी एकान्त जीवन भी व्यतीत कर सकते है। शीघ्र ही वह उन तीन कामों में उलझ गए, जिनके लिए उनके हृदय में पहले से ही अत्यन्त उत्साह था। पहले काम का सम्बन्ध उनके माऊट वर्नन वाले घर से था, जिस पर उन्हे उचित रूप से गर्व था। दूसरा कार्य कृषि से सम्बन्धित था। तीसरा काम पश्चिम की भूमियों के विकास के बारे में था। ये तीनों कार्य सकेन्द्रित-वृत्तों के समान घेरने वाले थे और इनके कारण उनकी युद्धोत्तर शान्ति की सक्षिप्त कल्पना अपना अस्तित्व खो बैठी थी।

सन् १७५७ में जब कि वाशिंगटन ने अपनी भू-सम्पत्ति के सुधार का बीड़ा उठाया था, उन दिनों माऊट वर्नन सही रूप में झोपड़ी ही थी। किन्तु सन् १७८३ में आकर इस भवन ने, अमेरिका के माप-दड के अनुसार एक सुन्दर प्रासाद का, एक विशाल सम्पदा का रूप धारण कर लिया था। जो पर्यटक आज-कल उसे देखने के लिए जाते है, वे इसे निर्मल और प्रशान्त-रूप से पूर्ण पाते हैं। किन्तु

जब कई वर्षों के निर्वसन के बाद वाशिंगटन की दृष्टि माऊंट वर्नन पर पड़ी, तो उन्हे यह अधूरे चित्र के समान लगा। अलंकार रूप मे चाहे वह अगूर की बेलो और अंजीर के पेड़ों की बात कहते हों, यह निश्चित बात थी कि जब तक वह उन्हे बो न दे और उन्हें पाल-पोस कर बडा न कर दे, तब तक वह उनके नीचे नहीं बैठ सकते थे। अतः अपने लौटने के बाद प्रथम मास में ही वह अपने भवन की चिमिनयों की दशा सुधारने, भवन के बीच के खुले स्थानों के फर्श लगाने और अपने नए कमरे, 'भोज के हाल' के निर्माण के विषय में चिट्ठी-पत्री में व्यस्त हो गए। तब से उन्होने माऊंट वर्नन की जिस कदर देख-रेख की, उसके विवरणात्मक साक्ष्य के रूप मे उनके पत्र व डायरी के सकुल पृष्ट उपलब्ध है। उन्होंने इस कार्य के लिए अनुबद्ध-श्रमिकों को 'खरीदा'। ये लोग उन्हीं दिनो बढ़ई और राज के तौर पर काम करने के लिए जर्मनी से आए थे। उन्होने अपने मकान के भीतर दीवारों पर कागज चिपकाए, किताबे रखने की अलमारियाँ बनवाईं और खिड़कियों मे वेनिस के अंधक लगवाए। अपने घर से बाहर उन्होंने एक विशाल वनस्पति-काच-घर बनवाया, सड़कें बिछवाईं, रास्ते व लान बनवाए और झाड़ियो के जगल लगवाए। उन्होंने अपने बर्फ-घर का नए ढंग से निर्माण किया; एक हिरन-पार्क बनवाया, जिसके चारों ओर बाढ़ लगवाई और उसमें हिरन रखे; एक फलों का बगीचा बनवाया।

उस भवन और उन मैदानो के आगे माऊट वर्नन के पांच 'फार्म' अथवा बागान थे। (इनमे से कोई शब्द भी प्रयोग में लाया जा सकता है—वाशिंगटन इन दोनो शब्दों का प्रयोग करते थे, क्योंकि उन्होने रुई तो नही बोई, परन्तु उसके स्थान मे गेहूँ की पैदावार की, जिसे 'फार्म' की फसल कहा जाता है)। दूसरी ओर उनके श्रमिक 'बागान' के दास कहलाते थे। वे कुल मिला कर कोई दो सौ थे (जिसमे बच्चे और बूढ़े दोनों ही शामिल थे)। चूकि वाशिगटन युद्ध से लौटने पर 'ख ली हाथ' थे और उनके पास नकद रुपया--पैसा न था, अतः यह अत्यन्त आवश्यक था कि वह अपने

मामलों की ठीक व्यवस्था कर लें। कुछ इस प्रकार के प्रस्ताव आए कि उन्हें अमेरिका का प्रथम नागरिक होने के नाते काग्रेस से विशेष भत्ता स्वीकार करना चाहिए, किन्तु आत्माभिमान के कारण उन्हें इन्कार करना पड़ा। व्यवहार-कुशलता का यह तकाजा था कि वह अपने पूरे दिल से खेती के काम में जुट जाएं। उनके सम्मान की भी यही माग थी। इस मामले में वह तथा थामस जैफर्सन समान भाषा का प्रयोग करते थे—वह भाषा जिसमे बीजों, खाद तथा खेती के औजारों सम्बन्धी यथार्थ शब्दावलि आ जाती है। इन शब्दों के प्रयोग से भला यह बात कब छिपी रह सकती थी कि उन लोगों के हृदयों मे खेती-व्यवसाय के लिए सामान्य-रूप से अनुपम अनुराग उमड़ रहा है। वाशिंगटन खेती द्वारा आजीविकोपार्जन को 'सर्वाधिक आनन्द' की वस्तु कहा करते थे। इसमें शक नही कि इस व्यवसाय में कठोर परिश्रम करना पड़ता था, इसमें निराशाएं भी मिलती थीं, फिर भी वाशिंगटन को असदिग्ध रूप से यह पेशा बहुत प्यारा था। उन्होने अग्रेज कृषि-विज्ञ आर्थर-यंग से भी इस बारे में परामर्श लिए। उन्होंने यग महोदय के द्वारा दिए गए विशेष विवरणो के अनुसार अन्न-भण्डार बनाया और बाहर से एक अग्रेज कृषक मँगवाया, जो उनके बाग-बगीचों और खेती के कार्य की देख-रेख कर सके। उन्होने नई किस्म के पशु पाले, विचित्र फसलों तथा सस्यावर्त्तन की पद्धतियों से परीक्षण किए और भूमि-अपक्षरण को रोकने के लिए भारी प्रयास किए।

किन्तु वाशिंगटन को केवल माऊंट वर्नन का ही ध्यान नही था। उनकी पश्चिम की भू-सम्पत्ति बेकार सी थी—उसमें अत्यन्त अल्प परिमाण मे फसल होती थी और उसका कोई लाभ नही हो रहा था। कुछ एक भागो को अनधिवासी घेर कर बैठे हुए थे। कही-कही अनधिकार रूप से कृषकों ने कब्जा कर रखा था और वे उन्हे उन भू-खण्डों का स्वामी मानने से इन्कारी थे। अतः सन् १७८४ की शरद् ऋतु में वह एक बार फिर एलघनीज के उस पार यह देखने के लिए चल पड़े कि वहां क्या परिस्थिति है। उन्हो

ने अपना पुराना मार्ग पकड़ा। उसके साथ उनकी बहुत सी स्मृतियां बंधी थी, परन्तु वर्जीनिया की उपहार-स्वरूपप्राप्त भूमि को अनधिवासियों द्वारा घिरी देखकर उन्हें सन्तोष कहां मिल सकता था। अतः उन्होने आगे यात्रा करने तथा अपने ओहियो तथा ग्रेट कनावा के दावों का निरीक्षण करने का ख्याल छोड़ दिया। यद्यपि आगे जाकर इस यात्रा के महत्वपूर्ण परिणाम निकले, किन्तु उनकी तात्कालिक जीवनचर्या को देखते हुए इस यात्रा का अर्थ था उनके माऊंट वर्नन के प्रति निरन्तर कर्तव्यों मे बाधा का पड़ना। वाशिगटन को सन् १७८५ की ग्रीष्म ऋतु से पहले निजी सचिव नहीं मिला, जिसका परिणाम उनका एक शिकायत का पत्र था जो उन्होने अपने एक मित्र को लिखा:—

'मै तुम्हें सच्चाई से यकीन दिला सकता हूं कि जितना मुझे आज-कल लेखनी-बद्ध करना पड़ रहा है मुझे लड़ाई के दिनो में किसी समय भी उससे आधा लिखना नही पड़ा। विदेशो से (अक्सर निरर्थक) पत्र आते रहते है। मुझ से डिक, टाम और हैरी के बारे में, जो आजकल वही होंगे और किसी समय संयुक्त-राज्य की नौकरी कर रहे होंगे, पूछताछ होती रहती है। अपने-अपने राज्यों से बाहर जाने वाले लोग मेरे से चिट्ठियां तथा नौकरी के प्रमाण-पत्र लेने आते है। अक्सर लोग मेरे पास परिचय-पत्र प्रतिलिपियों के लिये प्रार्थना-पत्र, सहस्रों पुरानी बातो के उल्लेख लेने के लिये जिन के कारण मुझे असुविधा में नहीं डाला जाना चाहिए, पहुच जाते है। परिणामतः मुझे मुगल महान् से भी अधिक व्यस्तता रहती है, क्योंकि इन पत्रों का कुछ न कुछ उत्तर देना ही पड़ता है। इन व्यस्तताओं के कारण मैं सामान्य व्यायाम से भी वंचित रहता हूं। यदि इनसे मुझे राहत न मिली, तो मेरे स्वास्थ्य पर हानिकर प्रभाव पड़ने की सम्भावना है। मै काम के इस बोझे को अभी महसूस करने लगा हूं और कई बार इसके कारण सिर-पीड़ा भी होने लगती है।'

लोग उनसे उधार मांगते थे; मित्र व पड़ोसी सदा मशविरा

लेने आते थे। उनकी अपनी अन्तरात्मा उन्हें विवश करती थी कि वह अपने सगे-सम्बधियों के कार्यों पर भी निगरानी रखे, क्योंकि ये कार्य सदा सफलतापूर्वक अथवा समझदारी से सम्पादित नहीं होते थे।

सिनसिनाटी सभा के कारण वाशिंगटन के सिर पर एक और बोझ आ पड़ा। ज्यों ही इस सभा का श्रीगणेश हुआ, त्यों ही अनेक राज्यों में इसके विरोध में आवाजे उठने लगी। यह प्रधान के लिए एक क्लेशपूर्ण बात थी। जहां तक सभा के सदस्यों का सम्बन्ध है, वे इसे अवकाश-प्राप्त अनुभवी सैनिकों की सख्या समझते थे और इसमें किसी की हानि नही देखते थे। इन लोगों ने इसका सिन-सिनाटस पर नामकरण करके इसके शान्तिपूर्ण उद्देश्यों पर जानबूझ कर बल दिया था। किन्तु इसके विरोधी ऐसा नही मानते थे। सर्वोत्तम रूप में उनके लिए यह एक हास्यजनक, असभ्य लोगों का क्लब था (क्योंकि इसकी सदस्यता केवल अफसरों तक सीमित थी और उत्तराधिकार के रूप मे प्राप्त होती थी)। निकृष्ट रूप में, उनके लिए यह बागी रईसों की आन्तरिक परिषद् थी। वाशिंगटन ने भरसक प्रयत्न किया कि विरोधियों की आपत्तियों का उत्तर दिया जाए, किन्तु इस सभा के कारण उन्हे निरन्तर आकुलता होती ही रही।

यह ठीक है कि वाशिंगटन लोगों में मिल-बैठ कर बहुत खुश होते थे, किन्तु उनकी संगति की भूख माऊंट वर्नन में ही शान्त होती थी। वह स्वयं और उनका घर—दोनों ही हर प्रकार के अतिथियों—पुराने परिचितों से लेकर कौतूहलपूर्ण विदेशियों तक—के मेल-मुलाकात का स्थान बन गया था। वे अतिथि उनके अतिथि-भवन को एक सप्ताह से दूसरे सप्ताह शरद् व ग्रीष्म मे, भरे रखते। वे मनों के हिसाब से खाद्य-वस्तुएं खाते और गैलनों के हिसाब से शराब उड़ाते। एक बार सन् १७८५ की एक रात में वाशिंगटन, उनका परिवार और अनेक अतिथि गहरी नीद में थे, जबकि फ्रांसीसी मूर्तिकार, हौडन, के आने से उनकी जाग खुल गई। हौडन

वाशिंगटन का चित्र बनाने के लिए आया था। उसके लिए और उसके तीन साथियों के लिए किसी न किसी तरह ठहरने का स्थान मिल गया। जिन दिनों वे उनके अतिथि थे, उन्ही दिनो में वाशिंगटन अपने एक कमरे की छत का एक भाग तख्ते जमा कर बनवा रहे थे। उनके मकान पर उन्हीं दिनों वाशिंगटन के भतीजे और हमनाम, जार्ज आगस्टीन, (जो लुण्ड वाशिंगटन के स्थान पर जागीर का प्रबन्धक नियुक्त हुआ था) और मार्था वाशिंगटन की भतीजी, फ्रांसिस बैसिट में विवाह सम्पन्न हो रहा था। माऊंट वर्नन के इस घिरे हुए स्वामी ने १७८५ के जून मास में जाकर कही अपनी डायरी में लिखा—'श्रीमती वाशिंगटन के साथ भोजन किया। मेरा विश्वास है कि सार्वजनिक जीवन से निवृत्त होने के बाद यह पहला अवसर इस प्रकार का आया है।' किन्तु इस प्रकार का पृथकत्व उनके लिए दुर्लभ ही रहा।

किन्तु समग्र रूप में वाशिंगटन उन वर्षो मे शायद उतने ही खुश रहे, जितने कि वह जीवन मे कभी हो सके। चिट्ठी-पत्री कष्ट का कारण भले ही रही हो, परन्तु उन्हे संसार के कोने-कोने से जो उपहार-भेंट के रूप मे प्राप्त होते थे, उन से उन्हें अवश्य सन्तोष मिलता होगा। स्पेन के बादशाह ने उन्हें गधा उपहार-स्वरूप भेजा। मजाक मे वाशिंगटन ने इस पशु का नाम रखा—'शाही उपहार'। अश्वशाला में भी वह उसके मन्दगति से किए कामों पर हँसी-मजाक उड़ाया करते थे। एक अंग्रेज प्रशंसक ने उन्हे संगमरमर की अंगीठी भेंट की। एक फ्रांसीसी ने उन्हें शिकारी कुत्तों का समुदाय भेजा। एक युरोपियन भद्र-पुरुष ने वाशिंगटन से उनका बड़ा चित्र मागा, ताकि वह उसे सैनिक वीरों के कक्ष के अन्तर्गत शामिल कर सके। उन्होंने भी एक बार इसी तरह का सग्रह करने की असफल कोशिश की थी। उसे याद करते हुए (यदि उन्हें याद था तो) वाशिंगटन महसूस करते होगे कि वर्जीनिया की मिलिशिया का कर्नल अन्त मे अपने कृत्यों का उचित फल पा रहा है।

उनकी हानि-पूर्ति अन्य विधियों से भी हुई। धीरे-धीरे उन्होंने

दैनिक कामो को इस ढंग से व्यवस्थित किया कि अपने अतिथियों की उपेक्षा किए बिना वह अपने कामों को पूरा कर सके। व्यायाम करने के लिए वह प्रतिदिन घुड़सवारी करते हुए अपने 'फार्मों' पर चक्कर लगाया करते। सर्दी के महीनों में लोमड़ी के शिकार का आनन्द उठाते। उन्हें इस बात की बहुत खुशी थी कि माऊंट वर्नन उस शोभा और सौन्दर्य को प्राप्त कर रहा है जिसकी उन्होने योजना बनाई थी। अनुरूप विवाह के कारण भी उनका जोवन सुख-चैन से कट रहा था (यद्यपि अतिथि-गण कभी-कभी जनरल वाशिंगटन के व्यवहार में कठोरता और तीखापन पाते थे, परन्तु मार्था के मधुर स्वभाव की वे सभी प्रशसा कर लिया करते थे)। इनके अलावा छोटे बच्चों के कारण उन्हें नया उत्साह प्राप्त होता रहता था। ये छोटे बच्चे जैकी कस्टिस की सन्तान थे और इनमें से दो को वाशिंगटन ने उस समय गोदी मे लिया था जब इनकी माता ने पुनर्विवाह किया।

इस सब से बढकर उन्हे जिस तीसरी चीज के प्रति अत्यन्त अनुराग था, वह थी देश के यातायात को सुगम-सुलभ करने की बात। सन् १७८२ में उन्होने शान्ति-स्थिति से लाभ उठाते हुए न्यूयार्क के उत्तरीय भाग की यात्रा की और वहां भूमि का एक टुकड़ा खरीदा। वह अब भी वर्जीनिया और उत्तर कैरोलीना के मध्य मे स्थित डिस्मल स्वैम्प में दिलचस्पी रखते थे और इनके अलावा घर के अधिक पास और भी उत्साहपूर्ण लाभ की सम्भावनाएं थी। वास्तव में सन् १७८४ की उनकी पश्चिमी यात्रा का एक यह भी उद्देश्य था कि इन सम्भावनाओं की जाच की जाय। वह इस दृढ विश्वास के साथ वापिस लौटे कि वर्जीनिया और पश्चिमी भाग को जल द्वारा एक दूसरे से मिलाया जा सकता है और मिलाया जाना चाहिए। पोटोमैक नदी के ऊपर का भाग बहुत दूर तक नौगम्य था और एक अल्प पत्तन-द्वार उसे ओहियो-नदी के संस्थान के मुख्य भाग से अलग करता था। इसमे आवश्यक सुधार हो जाने पर (इनमे मुख्य सुधार पोटोमैक प्रपात के गिर्द

नहर का बनना था), जो जबरदस्त और नित्य-प्रति बढ़ने वाला यातायात उनके घर के आगे से होकर नए राजपथ पर चलेगा, उसका चित्र उनकी आंखों के आगे घूम गया। उनके विचार में इस प्रकार का सम्बन्ध हो जाने का यह असर हो सकता था (जिस का उल्लेख उन्होंने अपनी डायरी में एक लम्बी लिखावट में किया है, जो किसी प्रविवरण का प्रथम प्रारूप मालूम होता है) कि वाणिज्य बढ़ेगा, देश का पिछड़ा हुआ भाग आबाद होगा (जिसके कारण एलघनी के पार की जमीनों के स्वामी बहुत फायदे में रहेंगे) और अन्त में, किन्तु महत्व में किसी से भी न्यून नहीं, आन्तरिक भागों के लोग संयुक्त-राज्य के साथ बंध जाएंगे। यदि ऐसा न हुआ तो सम्भव है कि वे लोग, जो पहले से ही अधीर हो रहे थे, स्पेन और ब्रिटेन की चालों में फँस जाये। कारण यह कि ओहियो घाटी की तरफ के मिसिसिपी और ग्रेट लेक्स के बाह्य मार्ग इन दोनों देशों के नियन्त्रण में थे।

वाशिंगटन ने इस योजना पर जितना अधिक सोचा, उतनी ही यह उन्हें अधिक पसन्द आई। इस बात को महसूस किए बिना कि उनकी हिम्मत उन्हें कहाँ पहुँचाती है, वाशिंगटन ने योजनाओं को क्रियान्वित करने के लिए कदम उठाने आरम्भ कर दिए। अमेरिका के मध्य के राज्यों में इन योजनाओं पर यत्र-तत्र चर्चाएं हो रही थीं। जेम्ज नदी के मार्ग की बात-चीत भी चल रही थी। क्योंकि पौटोमेक नदी के अधिकार वर्जीनिया और मेरीलैण्ड के सांझे थे, इसलिए भय था कि कहीं स्थानीय ईर्ष्या-डाह के कारण गतिरोध न हो जाए। किन्तु शीघ्रतापूर्वक काम करते हुए और अपने नाम की प्रतिष्ठा से लाभ उठाते हुए वाशिंगटन ने सन् १७८४-१७८५ की शरद में दोनों राज्यों की संविधान सभाओं की स्वीकृति प्राप्त कर ली। वर्जीनिया के आयुक्त होने के नाते वह मेरीलैण्ड के प्रतिनिधियों से मिले। इसके परिणाम स्वरूप पोटोमैक नदी कम्पनी की शुरूआत हुई। न मानते हुए भी वाशिंगटन को इसका प्रधान चुना गया। यह कम्पनी दोनों राज्यों की संरक्षता में बनाई गई और इन दोनों

ने ही इसकी सहायता करने का जिम्मा लिया। बाद में जेम्ज नदी कम्पनी का भी निर्माण हुआ।

पोटोमैक आयुक्तों ने सन् १७८५ के वसन्त में माऊंट वर्नन में आकर अपने सम्मिलित इकरार-नामे को पुष्ट किया। इस सुझाव का भी साधारणतया स्वागत हुआ कि मेरीलैण्ड और वर्जीनिया के प्रतिनिधि भविष्य में प्रतिवर्ष एक बार मिला करें। शनै शनैः इस विचार में विस्तार हुआ। जनवरी १७८६ में वर्जीनिया की संविधान-सभा ने संघ के राज्यों को लिखा कि वे अपने-अपने आयुक्तों से सलाह-मशविरा लें और व्यापार और वाणिज्य के सम्बन्ध मे सामान्य दिलचस्पी के मामलों का सिंहावलोकन करें। इस तजवीज का असर यह हुआ कि एनापोलिस मे सितम्बर १७८६ में, एक सम्मेलन हुआ, जिसमें पांच राज्यों ने (जिनमे वर्जीनिया भी था) अपने-अपने प्रतिनिधि भेजे। इनमें से एक वर्जीनिया के प्रतिनिधि जेम्ज मैडीसन ने अपने प्रतिवेदन में सिफारिश की कि एक और सम्मेलन सन् १७८७ के मई मास में फिलेडैल्फिया मे बुलाया जाये। इसमें, जैसा कि सर्व-विदित है, नया संविधान बना। इस नए संविधान में संयुक्त-राज्य के लिये राष्ट्रपति की तजवीज हुई। तदनुसार जार्ज वाशिंगटन को इस पद पर आसीन किया गया।

नए संविधान की ओर

वाशिंगटन के कुछेक अतिशय-प्रशंसा करने वाले जीवनी-लेखकों ने उनके जीवन-कार्यों को इस ढंग से पेश किया है कि मानो वे यथार्थ रूप में अपने जीवन-काल के सम्पूर्ण अमेरिकन इतिहास के पर्यायी हों। उन्होंने हर घटना में उन्हें केन्द्रीय स्थान दिया है। उनकी जीवन-कहानी को पीछे ले जाते हुए उन्होंने परिस्थितियों की सीधी कारणात्मक श्रृंखला देखी। यह श्रृंखला सन् १७५३ मे वाशिंगटन के लेबाफ के संदेश से आरम्भ होकर पोटोमैक कम्पनी की राजनीतिज्ञ-सदृश योजना तक और फिर सन् १७८९ में उनके राष्ट्र-पति के गौरवास्पद पद पर आरूढ होने तक चली गई। इन लोगों ने घोषित किया कि देखिये, वाशिंगटन अपने राष्ट्र के पिता है,

उन्होने अलौकिक पूर्व-ज्ञान से तथा संघ के सच्चे अर्थों को पूर्ण रूपेण समझते हुए अपने बाल्यकाल से पुनीत वृद्धावस्था तक घटनाओं को ठीक मार्ग पर सचालित किया।

यह तर्क सर्वथा गलत नहीं है। गौर करने पर हम विचित्र रूप से परिस्थिति अनुक्रम पाते है। वाशिंगटन मे यह खूबी अवश्य पाई जाती है कि जहाँ-कहीं इतिहास का निर्माण हो रहा होता है, वह उसी स्थान में और उसी क्षण वहाँ मौजूद होते है। किन्तु क्रान्ति-युद्ध से पूर्व की घटनाओं मे संयोग का तत्व ही दृष्टिगोचर होता है। उन दिनों उन्होने यद्यपि किसी हद तक विशिष्टता प्राप्त कर ली थी, किन्तु (अपने समकालोन लोगों की नजरों में ही सही) उन्होंने वास्तविक महानता प्राप्त नही की थी। यह महानता उन्हें युद्ध में मिली। सेवा-निवृत्ति के बाद वह राष्ट्रीय जीवन का एक अवयव थे। जो भी कार्य वह करते, उसका प्रभाव सारे राष्ट्र पर पडता और यदि वह किसी काम को नही भी करते थे, तो भी निषेधात्मक रूप से उसका एक राष्ट्रीय महत्त्व था। वाशिंगटन इस बात से भली-भाति परिचित थे, और यदि वह न भी होते तो उनका सिनसिनाटी का प्रधान होने का अनुभव ही उनके हृदय पर यह पाठ भली-भाति अकित करने की सामर्थ्य रखता था।

सन् १७८३ और १७८९ के बीच के वर्षो में वाशिंगटन में जो विकास हुआ, उसके बारे में सोचते हुए यह प्रश्न उठता है कि क्या यह अतिरिक्त महत्ता उनके अपने गुणो के कारण थी या उनके ऊपर इसे लादा गया था? अर्थात् क्या यह ऐसी चोज थी जिससे वह अपने आपको बचा नहीं पाये थे? क्या उन्होने संघ के पुनर्निर्माण के लिए स्वयं नेतृत्व किया था अथवा उन्हे इसके लिये अवेतनिक रूप मे नियुक्त किया गया था? इन दोनो मे से कौन सी बात ठीक है। सम्भव है कि सच्चाई इन दोनों के बोच मे हो। इस समस्या के पोछे एक और समस्या है जो आज तक के इतिहासकारों मे घोर विवाद का विषय है। वह प्रश्न यह है: 'राज्य-संघ के दिनों में अमेरिका की वास्तविक अवस्था क्या थी? क्या यह 'नाजुक-

घड़ी' थी या अमेरिका सचमुच समृद्ध था ? क्या वास्तव में संयुक्त-राज्य के लिए नए शासनतन्त्र की आवश्यकता थी ? और (अपने वीर पुरुष की ओर लौटते हुए) क्या वाशिंगटन की यह सचमुच धारणा थी कि संघ खतरे में है ? यदि ऐसा उनका विचार था, तो क्या उन्होने स्वयं अपना ऐसा मत बनाया था या दूसरों ने उनमें ये विचार भरे थे ?

शायद इन सरीखे प्रश्नों के निश्चित और अन्तिम उत्तर देना सम्भव नही है। किन्तु ऐसे प्रश्न उठाना उचित ही है। इससे हम जार्ज वाशिंगटन के परम्परा-गत और अति सरल चित्र से अपने मनों को विमुक्त कर सकते है, चाहे हमारे निष्कर्ष सामान्य व्याख्याओं से अभिन्न ही क्यों न हों।

स्वभाव-वश तथा प्रधान सेनापति का अनुभव रखने के नाते वाशिगटन एक दृढ़ राष्ट्रीय-शासन के हक में थे। उनके विचार में कम से कम ऐसा शासन होना ही चाहिए था जो आपात-क्षणों में युद्ध-कालीन कांग्रेस से, जिसके अधीन रह कर उन्होने कार्य किया था, अधिक प्रभावी हो। यह बात उनके उस परिपत्र से स्पष्ट होती है जिसे उन्होंने जून १७८३ में तैयार किये गये लम्बे ज्ञापन के रूप मे राज्यों को भेजा। इस ज्ञापन का निचोड़ उनके उस वाक्यांश मे मिलता है, जिसका प्रयोग उन्होने फिलेडैल्फिया मे भोजन के मौके पर 'टोस्ट' पेश करते हुए किया। यह उस दिन से एक दिन पहले की बात है, जबकि उन्होने कमीशन से छुट्टी ली थी। इस मौके पर उन्होने कहा था—'कांग्रेस को साधारण उद्देश्यों के लिए सक्षम सत्ता मिले।' अनुमान है कि उन्होने तद्विषयक कार्य आरम्भ कर दिया था (यद्यपि उनकी अत्यधिक विनम्रता के कारण इसका सकेत ही यत्र-तत्र उनके पत्रों मे मिलता है) और अपने उदाहरण तथा प्रवचनों से वह इस नवीन राष्ट्र का मार्ग निर्देशित कर रहे थे। इस प्रकार अपने एक पत्र में, जो उन्होने जान जे (प्रसघानाधीन विदेश मन्त्री) की ओर लिखा, वाशिंगटन अपने देशवासियों की उपेक्षा-वृत्ति पर खेद प्रकट करते है। उन्हे इस बात का खेद था

कि वे उनकी 'भावनाओं और विचारों' की उपेक्षा करते हैं, यद्यपि वह उन्हें अन्तिम वसीयतनामे के रूप मे इन्हे गम्भीरता-पूर्वक समय समय पर देते रहे।' उन्होंने इस गहराई से अमेरिका के साथ अपना समीकरण कर लिया था। उनकी एवं अमेरिका की कीर्ति सघन रूप से आपस में जुड़ी हुई थी और यह बात देख कर उनके दिल को चोट लगती थी कि अमेरिका विदेशियों के सामने आपसी फूट का तमाशा दिखाए। ब्रिटिश प्रतिक्रियाएं उन पर विशेष रूप से प्रभाव डालती थी। वह अपने शत्रु, अंग्रेजों से, जिन्हें उन्होंने युद्ध में परास्त किया था, इसलिए स्वाभाविक रूप से खीझे हुए थे, क्योंकि सन्धि की शर्तों के अनुसार वे भिन्न-भिन्न पश्चिमी चौकियाँ खाली करने से इन्कारी थे। उन्हे यह बात भी चुभ रही थी कि कई एक अमेरिका के राज्य संन्धि-पत्र का पालन नही कर रहे थे, जिससे कि अंग्रेजों को उस समय शर्तें न मानने का बहाना मिल रहा था।

किन्तु जे को लिखा गया पत्र सन् १७८६ की गर्मियों में भेजा गया। इससे वाशिंगटन के विगत दो वर्षों के दृष्टिकोण की सही तौर पर जानकारी नही मिलती। उस समय वह किसी उलझन में नही पड़ना चाहते थे। भले ही उनकी तुलना कैटो से अथवा सिनसिनेटस से की गई हो, उन्होने अपना कर्त्तव्य निभा दिया था और अपने विचार व्यक्त कर दिए थे। इस समय वे एक दर्शक के तौर पर थे और उन्होने यह निश्चय कर लिया था कि वह अपने जीवन के शेष साल अपनी निजी सम्पत्ति के सम्मेलन में लगाएंगे। यद्यपि उनके अपने सीधे उत्तराधिकारी नहीं थे, किन्तु वर्जीनिया के अन्य शासकों की तरह उनमें सम्पत्ति-संचय का उत्साह मन्द नही पड़ा था। यह सत्य है कि उनमें अमरीका की वास्तविक अथवा सम्भाव्य राष्ट्रीयता के प्रति अन्य वहुत से लोगों की अपेक्षा अधिक तीव्र भावना थी। किन्तु यह ध्यान देने योग्य बात है कि पोटोमैक-योजना के प्रति उनमें (अमरीकन होने के नाते नही, अपितु) वर्जीनिया वासी होने के नाते गर्व की भावना भरी थी। इस योजना की सिफारिश मूलत. एक दूसरे वर्जीनियावासी, जैफर्सन, ने की थी और

जब वाशिंगटन ने उसकी बाग डोर अपने हाथों में ली, तो शुरू-शुरू में उन्होने उस पर राष्ट्रीय भावना से नही, बल्कि प्रादेशिक भावना से प्रेरित होकर विचार किया था। उत्तर में रहने वाले परिचितों को लिखते हुए उन्होंने ब्रिटेन का कड़ा विरोध करने की तुरन्त आवश्यकता पर जोर दिया जबकि अपने क्षेत्र के लोगों को लिखते हुए उन्होने बताया कि उन्हे समान रूप से न्यूयार्क के लोगों की प्रतिद्वन्द्विता की चिन्ता है कि कही वे हडसन नदी द्वारा अपने राज्य के अन्दर तक का मार्ग न बना लें।

हमारे कहने का तात्पर्य यह कदापि नही कि वाशिंगटन अपने व्यवहार मे ईमानदार नही थे, किन्तु हमारा आशय यह है कि सन् १७८४-१७८५ में उनकी विचारने की प्रणाली संयुक्त-राज्य अमेरिका के नागरिक होने के नाते नही थी। उन्हे अपने (वर्जीनिया) राज्य पर गर्व था, किन्तु उनका इस प्रकार गर्वित होना सम्पूर्ण अमेरिका के हितों के विरुद्ध नही था। परन्तु कुछ काल के लिए ये हित भी उनकी नजरो से ओझल हो गए थे। उस समय उनकी कल्पना पर इनका प्रभुत्व नही था। उनके मित्र, जो कांग्रेस के सदस्य थे, चिट्ठी-पत्री द्वारा उनके सम्पर्क मे रहा करते थे, उनका फूला हुआ डाक का थैला सयुक्त-राज्य के बहुत से भागों—मैसाचूसैट्स से जार्जिया तक—के हालात के बारे में समाचार लाया करता था। किन्तु कांग्रेस के अधिवेशन दूर-दूर लगते थे, क्योकि उसके स्थान बदलते रहते थे। काग्रेस अन्नापोलिस से ट्रैटंन गई। वहां से उसे न्यूयार्क ले जाया गया।

वाशिंगटन अपनी घरेलू व्यस्तताओं मे फसे हुए थे। उनकी यह इच्छा थी कि वह सेवा-निवृत्त जीवन के आचार-व्यवहार को बनाए रखे। पत्र-लेखक उन्हे जो भी लिखते, उसका वास्तविक अभिप्राय क्या है—इस बारे मे वह निश्चय से जान नहीं पाते थे। इसके अलावा वह आपसी फूट से तग आ चुके थे। इस कारण जो भी सम्मतियां वाशिंगटन प्रगट करते थे, वे भविष्यवक्ता की तरह अस्पष्ट रहती थीं। जान जे, हेनरी ली और जेम्स मेडीसन सरीखे

आदमी थे जिन्होंने नई ढंग की सरकार बनाने के लिए अपने आपको (यद्यपि सतर्कतापूर्वक) वचनबद्ध कर लिया था। ये लोग थे जिन्होंने इस विषय में नेतृत्व किया। वे इस काम में वाशिंगटन की मदद चाहते थे। उनकी कलम या दिमाग की नहीं, बल्कि उनके यशस्वी नाम की। अमरीकियों के लिए वाशिंगटन विजय और ईमानदारी के प्रतीक थे, किन्तु इस समय वह, जहाँ तक नई राष्ट्रीय सरकार बनाने का प्रश्न था, अग्रणी लोगों में नही थे।

अतः जे ने उन्हें मार्च १७८६ में लिखा—'क्या आप एक तटस्थ दर्शक की तरह' अमेरिका को विघटित होते हुए देख सकेंगे ?' आगे सुझाव देते हुए उसने लिखा— 'आज यह राए बनती जा रही है कि प्रसघान की धाराओं के पुनरीक्षण के लिए साधारण सम्मेलन बुलाया जाना उचित रहेगा।' एक मास बाद इसका उत्तर देते हुए वाशिंगटन ने सहमति प्रगट की कि देश का 'ढांचा' 'डगमगा' रहा है, किन्तु उन्होंने सतर्कतापूर्ण सामान्यताओं तक अपने आपको सीमित रखा।

हमारा यह आशय नहीं कि वाशिंगटन पर यह आरोप लगाया जाए कि वह मूर्ख अथवा अनुत्तरदायी थे। हम केवल इस बात पर बल दे रहे है कि उनके पास कोई तैयार-शुदा समाधान नहीं था। अमेरिका को खेतिहरों और व्यापारियों का समुदाय समझने की दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि उस समय यह देश समृद्ध था। कांग्रेस भी बिलकुल अनुपयुक्त (अथवा अवैध) नही थी, बल्कि उस देश की वैध सरकार थी।

प्रश्न यह था कि यदि कांग्रेस अपना सुधार स्वय करने को तैयार नहीं भी थी, तो क्या उस पर किसी अस्थायी सम्मेलन द्वारा वैध रूप से सुधार लादे जा सकते थे ? लोग इस बारे में क्या करेंगे ? राज्य इस बारे में क्या विचार प्रगट करेंगे ? दूसरी तरफ प्रसंघान की धाराएं ऐसी थी जो व्यवहार मे सुदृढ राष्ट्रीय सरकार के निर्माण मे सहायक सिद्ध नहीं हो सकती थी। राज्य भयंकर-रूप से कांग्रेस से उदासीन थे और एक दूसरे के प्रति वैर-विरोध रखते

थे। अतः यह जरूरी मालूम होता था कि कुछ न कुछ किया ही जाय।

जो लोग सक्रिय रूप से वाद-विवाद में उलझे हुए थे, उनसे कुछ पीछे रह कर चलते हुए, जैसा कि उन्होने सन् १७७५ से पूर्व किया था, वाशिंगटन धीरे-धीरे अपने विचारों को व्यवस्थित करने लगे। इस प्रकार १ अगस्त, १७८६ के दिन उन्होने तीन पत्र लिखे। दो पत्र उन्होने फ्रांस भेजे—एक शिवेलियर डीला लुजरने को और दूसरा अमरीकी मन्त्री, थामस जैफर्सन को। तीसरा पत्र उन्होने न्यूयार्क मे जे को लिखा। पहले दोनों में जहाँ प्रसन्नता ध्वनित होती थी, वहाँ तीसरा पत्र संकट की आशंकाओं से भरा हुआ था। यह अन्तर क्यों ? उसका बड़ा कारण यह था कि वाशिंगटन यह नही चाहते थे कि अमेरिका को विदेशों में अपयश मिले, यहाँ तक कि उन्होने अपने परम मित्र लिफायट के सामने भी अमेरिका का आशाजनक चित्र पेश किया। एक दूसरा छोटा सा कारण यह भी हो सकता है कि वह स्वयं अभी तक अपना कोई एकमत नही बना पाए थे और इसलिए अलग-अलग पत्र-लेखकों के साथ उनमें अलग-अलग प्रतिक्रिया होती थी। इसलिए उन्होंने निराशावादी जे को लिखते हुए स्पष्टता-पूर्वक स्वीकार किया कि 'मैं एक तटस्थ दर्शक की भांति अपने आपको महसूस नही करता—मै आपके विचारों से कि हमारा देश द्रुतगति से सकट की ओर बढ रहा है, बिल्कुल सहमत हूँ।'

वाशिंगटन की नजरो मे यह सकट मैसाचूसेट्स के राज-विद्रोह के रूप में सन् १७८६ की शरद् में प्रकट हुआ। यह उस पिछड़े हुए प्रदेश के असन्तुष्ट लोगों की निरर्थक और असफल बगावत थी। किन्तु यह विद्रोह और जिस ढंग से इसको दबाया गया—दोनों ही वाशिंगटन को बहुत गहरी अव्यवस्था के सूचक प्रतीत हुए। उनके इस विषय मे लिखे गए पत्रों में आलंकारिक भाषा का अभाव है। गुस्से और घबराहट में वह चिल्ला उठे—'क्या आपके लोग पागल हो चले है ?' इस सबका कारण क्या है ? कब और कैसे इसका अन्त होगा ?—यह गड़बड। भगवान बचाए ! किसी 'टोरी'

अथवा ब्रिटेन के सिवाए कौन ऐसी घटनाओं की भविष्य-वाणी कर सकता था ?—दयालु भगवान् ! आदमी भी क्या चीज है ? उसके व्यवहार मे इतनी अधिक असंगति और इतना अधिक छल-कपट पाया जाता है !—ऐसा लगता है कि हम शीघ्र ही अराजकता और गड़बड़ी की ओर लुढक रहे है।'

अब प्रश्न यह था कि वह क्या करें ? महीनों वह चिंताग्रस्त और झझक में रहे। उन्हीं दिनो अन्य अमरीकियों ने, जो अधिक सक्रिय थे, मई १७८७ मे फिलेडैल्फिया सम्मेलन की आधार-भित्ति स्थापित की। वाशिंगटन के दिमाग में यह प्रश्न बार-बार उठता था कि क्या उन्हे वर्जीनिया का प्रतिनिधि बन कर सम्मेलन में शामिल होना चाहिए ? उन्हें अनुरोध-पूर्वक कहा गया कि वह इस विषय में घोषणा करें। काग्रेस ने जब १७८७ के आरम्भ मे इस सम्मेलन को आशीर्वाद दिया, तो उनकी एक आकुलता जाती रही। किन्तु अनेक सशयों के कारण वाशिंगटन का बुरा हाल था। वह आयु मे पचपन वर्ष के हो चुके थे और वातरोग के कारण अपनी आयु से अधिक उम्र के लगने लगे थे। उनके पास नकद रुपये की कमी थी। उन्होने पहले से ही सिनसिनाटी की त्रिवर्षीय बैठक मे उपस्थित होने से इंकार कर दिया था। यह बैठक भी फिलेडैल्फिया मे ही होनी निश्चित थी और उसका समय भी वही था। अब वह कैसे कहे कि उनके वहाँ न उपस्थित होने का कोई ठोस कारण नही था, बल्कि एक बहाना-मात्र था ? सबसे बड़ी बात यह थी कि वाशिगटन ऐसे सम्मेलन मे शामिल होने से झिझकते थे जो सितम्बर १७८६ मे सम्पन्न एन्नापोलिस सम्मेलन की तरह अशक्त सिद्ध हो। उन के विचार में यदि उत्तर के राज्यों के प्रतिनिधि एन्नापोलिस सम्मेलन की तरह यहाँ भी अलग अलग रहे, तो फिलेडैल्फिया के प्रतिनिधि कुछ कर नही पाएगे। बात इससे भी ज्यादा बिगड सकती है। हो सकता है कि वे सम्मेलन के उद्देश्य को ही क्षति पहुँचाएँ। इससे न केवल उन के देश को नुकसान पहुँचेगा, बल्कि उन की कीर्ति भी सकट में पड़ जायगी।

अतः वाशिंगटन किसी षड़यन्त्र या दिखावे में हिस्सा लेना नहीं चाहते थे।

वाशिंगटन का सबसे प्रथम जीवन-लेखक, डागलस साउथहाल फ्रीमैन का यह विचार है कि इस समय का उन का व्यवहार अप्रिय-रूप से स्वार्थ-पूर्ण था। यदि उनका ख्याल था कि अमरीका पर सकट के बादल उमड़े हुए हैं, तो फ्रीमैन आश्चर्य करता है कि इसे बचाने के लिए वह जल्दी से क्यो आगे नही बढे ? हमारे विचार मे यह निर्णय अनुचित-रूप से कडा है। वाशिंगटन के बारे मे जो हम अधिकाधिक कह सकते है वह यह कि वह भी तो आखिरकार एक मानव ही थे। वह कोई ऐसे देशभक्त नही थे जो सरकार की नौकरी मे बधे हुए आदर्श और स्थायी अफसर हो ? इस समय उनके प्रयोजन भले ही वीरोचित न हो, किन्तु वे प्रयोजन हमारी समझ में आ सकते है। फिर भी उनके इस व्यवहार पर आश्चर्य होता है। क्या अतिशय विनम्रता कभी अपने से विरोधी गुण-अत्यधिक अभिमान-का रूप भी धारण कर सकती है ? क्या उनके मामले मे ऐसा ही हुआ ?.

सम्भवत यही बात हो। आवश्यक तथ्य यह है कि वाशिंगटन ने अन्त मे यह फैसला कर लिया कि वह फिलेडल्फिया जाएँगे। वह वहाँ मई के आरम्भ मे पहुच गए। उन्हे अन्य प्रतिनिधियों की सर्वसम्मत इच्छा से सम्मेलन का प्रधान चुना गया। वह थकाने वाली युक्तियो और वाक्चातुर्य के प्रदर्शनो के बीच मे सितम्बर के मध्य मे सम्मेलन की समाप्ति तक प्रधान के आसन पर विराजमान रहे। उस से पहले अगस्त मे एक लम्बे अर्से के लिए बैठक स्थगित हुई थी। वाशिंगटन इस अवकाश का लाभ उठाते हुए वैलीफोर्ज तथा ट्रैटन नगर देखने चले गए थे। यह वही स्थान था जहाँ एक बार उन्होने गत लडाई के दिनों मे अपना कैम्प लगाया था। यही पर उन्होंने हंसियन सेना पर अचानक धावा बोला था। निस्सन्देह इस बीच की अवधि के कारण उन में ताजगी आ गई थी। यह भी निश्चय के साथ कहा जा सकता है

कि अतीत की झलक ने अवश्य उनके हृदय को स्पर्श किया होगा। किन्तु यदि ऐसा हुआ भी, तो इस का उल्लेख उन्होंने अपनी डायरी में नहीं किया। हाँ, अन्य बातों का उल्लेख उस में अवश्य मिलता है।

फिलेडैल्फिया की सख्त गर्मी में चलते हुए सम्मेलन में जो कार्य उन्हें करने को मिला, वह उन के बिल्कुल उपयुक्त था। जब कभी किसी बात के ऊपर मत लिए जाने होते, तो वह अपनी कुर्सी से नीचे उतर आते और अन्य प्रतिनिधियों के साथ मतदान करके अपनी अभिरुचि को प्रगट करते। और समयों में वह अपनी तटस्थता कायम रखते। वाद-विवाद की जटिलताओं में भाग न लेते हुए वह प्रतिनिधियों के भाषणों को सुनते और आराम से भिन्न विषयों पर अपना मत बनाते। वह उन के बीच में बैठ कर अपना पक्ष निर्धारित करते, यद्यपि उन का मत हूबहू प्रतिनिधियों जैसा नही होता था। उनका कार्य निर्णायक का था, न कि वकील का। उन उपस्थित प्रतिनिधियों में केवल एक व्यक्ति और था जो उनके समान ही उपयुक्ततापूर्वक प्रधान की कुर्सी को सुशोभित कर सकता था और वह थे बेंजामिन फ्रैंकलिन। किन्तु फ्रैंकलिन की आयु इस समय अस्सी से ऊपर पहुँच चुकी थी। और यद्यपि वह मरणासन्न तो नही थे, किन्तु बीमार और निर्बल अवश्य थे।

कभी कभी वाशिंगटन हारते हुए पक्ष की ओर अपना मत देते। यह पक्ष प्रायः उन लोगों का होता था, जिन्हे बाद में जा कर संघानीय (फ़ैड्रिल) पक्ष के लोग कहा गया—अर्थात् वह पक्ष जो इस हक में था कि राष्ट्रीय सरकार दृढ होनी चाहिए और उसकी कार्यकारिणी शाखा कार्य-साधक हो। आहिस्ता-आहिस्ता संघानीय पथ के लोग बाजी ले गए। इन मे वाशिंगटन भी थे। एक भी ऐसा नही था जो धीरे धीरे बनने वाले उस दस्तावेज से सोलह आने सन्तुष्ट हो। कइयों का तो दिल इतना खट्टा हो गया कि वे या तो छोड़ कर चले गए और या उन्हो ने तैयार-शुदा मसौदे पर अपने हस्ताक्षर नहीं किए। कुछ एक को यह अफसोस था कि इस संविधान के द्वारा

राज्य-सरकारों के अधिकार संघानीय शासन को मुक्तहस्त होकर सौंप दिए गए हैं। वे प्रतिनिधि जो वर्जीनिया और मैसाचूसेट्स जैसे बड़े राज्यों से आए थे, उन पर यह डर छा गया कि उन्होंने न केवल सघानीय शासन को ही, किन्तु डिलावेयर और न्यूजर्सी जैसे छोटे छोटे राज्यों को भी अपने विशेषाधिकार सौप दिए है। और (मजे की व त यह कि) छोटे राज्यों के प्रतिनिधि इस बात पर अड गए कि उन्हे प्रसघानीय धाराओं के अनुसार जो बराबर का प्रतिनिधित्व मिला था वह अब भी मिलना ही चाहिए। कई मौक़ों पर सम्मेलन में गतिरोध पैदा होते होते बचा, किन्तु धीरे धीरे कार्यवाही आगे चलती रही। वाशिंगटन अपने बहुसख्यक प्रतिनिधियो से सहमत थे कि सम्मेलन के समझौते किसी कारीगर के कौशल के समान है। राजनीति, कार्य की ऐसी शैली है, जो सम्भव बातों पर ही आधारित है। उस समय जो नया सविधान बना, परिस्थितियों को देखते हुए वह सर्वोत्तम था।

अन्य लोग चाहे कुछ भी सोचते हों, कम से कम वाशिंगटन का यही ख्याल था। उन्होंने सविधान के अन्तर्गत इस प्रकार की शर्तो का अनुमोदन किया था, जैसे—कार्यपालक अग (राष्ट्रपति के रूप में), कांग्रेस (दो सदन-एक सेनेट और दूसरा सदन, लोक-प्रतिनिधियो की सभा) और एक निर्णायक-पद्धति, जिसके सर्वोपरि स्थान पर सघानीय उच्चतम न्यायालय का होना। इन मे से प्रत्येक शाखा एक दूसरे से अलग थी। उन के अनुभवो की रोशनी मे इस प्रकार का प्रवन्ध उन्हे तर्क-संगत लगता था। राष्ट्रपति वर्जीनिया के राज्यपाल की तरह ही होगा (सिवाए इसके कि अव कि उसे लन्दन से हिदायतें और अभिषेध प्राप्त नही होगे)। सेनेट, राज्यपाल की परिषद् की तरह होगी, (प्रत्येक राज्य मे दो के हिसाव से छब्बीस मानसिक रूप से प्रौढ़ सदस्य होगे)। प्रतिनिधियों का सदन वर्जीनिया की साधारण सविधान सभा के समान होगा। वस्तुत इस प्रतिनिधि-सदन मे वर्जीनिया की आवाज प्रभावशाली होगी, क्योकि यह सर्वाधिक आवादी वाला राज्य होने

के कारण इसके सदस्य अन्य राज्यों की अपेक्षा संख्या में अधिक होंगे — उदाहरण के लिए दस। इसके मुकाबले में रोड-द्वीप का एक ही प्रतिनिधि होगा।

नए संविधान में जहां हर राज्य को कुछ सीमा तक अपने शासन-सम्बन्धी कामों में स्वतन्त्रता होगी, वहा (वाशिंगटन प्रसन्न थे कि) इसके कारण संघानीय शासन अधिक शक्तिशाली बनेगा। व्यवहार में इसे वे सब शक्तियां प्राप्त होंगी जो अब तक कांग्रेस के पास सिद्धान्त रूप में थी। इनके अतिरिक्त इसे नई शक्तियां भी मिलेंगी। संविधान के अनुसार संघानीय शासन इस योग्य होगा कि विदेशियों के खिलाफ संयुक्त मोर्चा बना सके, लगान और कर वसूल कर सके, और साधारण रूप में कानून पर चलने वाले किसी भी अमरीकन के लिए सुविधाएं पैदा कर सके — चाहे वह अमरीकन बाग-बगीचों का स्वामी हो, उद्योगपति हो अथवा व्यापारी हो।

सितम्बर मास में सम्मेलन भंग होने पर वह अपनी गाडी में सवार हो कर माऊंट वर्नन वाले घर को इस विश्वास के साथ लौटे कि उन्होंने अपने कर्त्तव्य को ठीक ठीक निभा दिया है। उनका गृह-भवन इस समय लगभग पूर्ण हो चुका था। अन्तिम कार्य के रूप में, एक लोहे की बनी शान्तिसूचक फाख्ता माऊंटवर्नन के गुम्बद पर वायु-दिशा-दर्शक के तौर पर लगाई जा रही थी। किन्तु नया संविधान अभी तक अपूर्ण ही था, क्योंकि अभी इसे राज्य-सम्मेलनों द्वारा सम्पुष्ट होना था और अमल मे लाया जाना था। वाशिंगटन का जीवन एक नए दौर में आया। उन्हें इस समय भी लगभग उतना ही क्लेश और अनिश्चितता थी, जितनी कि उन्हें फिलेडैल्फिया चलने से पूर्व मासों में थी। नए संविधान का समर्थन करने के लिए वह वचनबद्ध थे। इस हेतु जो उनसे बन पडा, उन्होंने किया। वर्जीनिया राज्य में उनके अपने प्रभाव ने संविधान सम्पुष्ट कराने मे मदद दी। किन्तु जब एक के बाद दूसरे राज्य से विरोध आते गए, तो वह विकल हो उठे। फिलेडे-ल्फिया के प्रतिनिधियों पर यह आरोप लगाया गया (और इसमें

कुछ सचाई भी थी) कि वे राज्यों द्वारा दी गई हिदायतों की समा से आगे बढ़ गए है। वे गुप्त रीति से इकट्ठे हुए और उन्होंने तब तक अपने निर्णयो की घोषणा नही की जब तक कि बैठक भग न हुई। अतः ये प्रतिनिधि षड़यन्त्रकारी, रईस लोग थे। वे अत्यन्त शीघ्रता मे थे, इसलिये एक और सम्मेलन होना चाहिए, जिसमे पहले सम्मेलन की तजवीजों का पुनः निरीक्षण हो। इस प्रकार की युक्तियां थी जो सविधान-निर्माताओं का विरोध करते हुए दी गईं। रैडीकल सिद्धान्त रखने वाले रोड-द्वीप ने फिलेडैल्फिया के लिए कोई प्रतिनिधि नही भेजा। अन्य कई राज्यों में संविधान की सम्पुष्टि सन्देहजनक प्रतीत हो रही थी। इन सस्थानक-पिताओं (अथवा नैया को मझधार में डालने वाले पिताओ) की आलोचना करने वाले केवल ऋणी और कागज की मुद्रा रखने वाले लोग ही नही थे। अच्छी स्थिति के असन्तुष्ट लोग भी विरोध करने वालों मे से थे। इनमें न्यूयार्क के राज्यपाल, क्लिंटन, मैसाचूसैट्स के राज्यपाल, जान हैनकाक तथा वाशिंगटन के अपने राज्य के पैट्रिक हैनरी, रिचर्ड हैनरी ली, एडमण्ड रैण्डोल्फ, यहां तक कि उनके पुराने मित्र और पड़ोसी, जार्ज मैसन, के नाम उल्लेखनीय हैं।

संविधान के अभिस्वीकरण के लिए यह आवश्यक था कि तेरह में से नौ राज्य इसका अनुमोदन करें। जनवरी, १७८८ तक पांच राज्यों ने इसे सम्पुष्ट किया। फरवरी मे मैसाचूसैट्स बहुमतो के अत्यल्प अन्तर से अनुमोदकों मे शामिल हो गया। उस पर सघान-वादियो की इस सूचना का प्रभाव पड़ा कि उसके राज्यपाल हैनकाक, को सम्भवतः नई सरकार का उप-राष्ट्रपति बनाया जायगा और यदि वर्जीनिया सविधान का अनुमोदन नही करता और इस प्रकार वाशिगटन मैदान से हट जाते है तो उसके राष्ट्रपति बनने की भी सम्भावनाए है। हैनकाक को इस प्रकार अपने पक्ष मे कर लिया गया। केवल इतना ही नही, उसने एक मूल्यवान सूत्र प्रस्तुत किया, जिसका अनुसरण शेष राज्यो ने भी किया। वह सूत्र यह था कि मैसाच्यूसैट्स इस शर्त पर सविधान को स्वीकार करता है कि जो भी कोई आप-

त्तियाँ इस दस्तावेज के विरुद्ध उठाई जाएं, उनके आधार पर बाद में संशोधन मान लिए जायें। ये संशोधन एक प्रकार से अधिकारों के विधेयक के रूप मे होगे। ये उसी तरह के होंगे जिस प्रकार के विधेयक भिन्न-भिन्न राज्यों के संविधानो में शामिल किए जा चुके है।

कुछ समय बाद दो और राज्य सम्मिलित हो गए। इस प्रकार कुल जोड़ आठ का था और वर्जीनिया, जो सबसे अधिक छान-बीन करने वाला राज्य था, जून मास के अन्त में घोर संघर्ष के बाद शामिल हुआ। एक और भी अच्छी बात हुई। वर्जीनिया मे यह सुनने में आया कि न्यूहेम्पशायर ने पहले से ही सविधान को स्वीकार कर लिया है। इस प्रकार दस राज्य सविधान के पक्ष मे हो गए— अर्थात् आवश्यक न्यूनतम संख्या से एक अधिक। अलैक्जैण्डर हैमिल्टन और उसके दूसरे उत्साही संविधानीय शासन के विचारों के लोगों ने इस सुखद समाचार का प्रयोग न्यूयार्क मे किया, ताकि इस राज्य मे विरोध के दांत तोड दिए जाए। इस प्रकार फिलेडैल्फिया के प्रतिनिधियों के विसर्जन होने के एक वर्ष बाद, जिस संविधान को उन लोगो ने तैयार किया था, वह तेरह में से ग्यारह राज्यों द्वारा आरक्षण सहित अथवा बिना आरक्षण के, संमोदित हो गया। केवल उत्तर कैरोलीना तथा रोड द्वीप पृथक् रहे। उनकी जिद्द यद्यपि दुर्भाग्यपूर्ण थी, किन्तु घातक नही थी।

आगे कौन सा कदम उठाया जाना चाहिए था? सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए यह आवश्यक था कि वर्तमान कांग्रेस की इतिश्री हो और नई कांग्रेस चुनी जाय। भविष्य में कहाँ सरकार की स्थापना हो? इस पर काफी झगडा हुआ। अन्त मे यह अस्थाई रूप से निश्चय हुआ कि कुछ काल के लिए इसे न्यूयार्क रखा जाए। जहाँ तक वाशिंगटन का सम्बन्ध है, यह एक प्रकार से निश्चित ही था कि वह राष्ट्रपति चुने जाएगे। जिन दिनों सयुक्त राज्य के अनुमोदन पर वाद-विवाद चल रहे थे, उन्ही दिनो मे उनका नाम सघानीय विचारो के लोगों द्वारा खुल कर लिया जाता रहा था। किसी ने सुझाव दिया था कि

संघानीय विचारो के लोगों को 'वाशिंगटन-विचारवादी' कहा जाना चाहिए और इसके विरुद्ध मत रखने वालों को मैस.चूसैट्स के विद्राही, डेनियल शेस के नाम पर 'शेस-विचारव.दी' कहन. चाहिए। सविधान की शर्तें छपने के बाद वाशिंगटन ही स्पष्ट रूप से र.ष्ट्रपति पद के उपयुक्त उम्मीदवार लगते थे। वह ही एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्हे सब राज्यों के लोग जानते-पहचानते थे, जिनका उन जगहों मे आदर-मान था और जिन पर उन्हे विश्वास-भरोसा था। वयोवृद्ध फ्रैंकलिन को छोड़ कर अकेले वही व्यक्ति थे जो बडे-बड़े सरकारी पदो पर आरूढ़ होने के योग्य आवश्यक जादू यश और प्रतिष्ठा (इस गुण के लिए पर्याप्त शब्द नही) रखने थे। समाचार पत्रो मे यही विचार ध्वनित होते थे और उनके मित्र भी अनुरोध पूर्वक यही कुछ कहा करते थे। लिफायट ने सन् १७८८ के जनवरी मास मे उन्हे लिखा—

"अमेरिका के नाम पर, मनुष्य-मात्र के लिए और आपकी अपनी ख्याति के लिए, मेरे प्यारे जनरल, मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ, कि आप आरंभिक वर्षो के लिए ही राष्ट्रपति के पद को ठुकराएँ नही। केवल एक आप ही हैं जो इस देश की राजनीति के यन्त्र को जमा सकते है।"

वाशिंगटन के अपने भाव मिले-जुले थे। वह जहाँ प्रसन्न थे, वहाँ व्यग्र और भयभीत भी। प्रस्तावित प्रतिष्ठा अतिमात्रा मे थी। किन्तु जब तक वह वास्तविक-रूप धारण न कर ले, वह उसकी चर्चा कैसे कर सकते थे? पहले से ही कोई निकाला गया निष्कर्ष वास्तविक निर्वाचन से बिल्कुल भिन्न वस्तु है। किन्तु यदि उन्हे राष्ट्रपति का पद पेश किया गया, तो उन्हे अवश्य उसे स्वीकार करना चाहिए। यदि उन्होने इसे स्वीकार कर लिया, तो वह दया-रहित प्रसिद्धि में जीवन के चार बोझल वर्ष कैसे गुजार सकेंगे? इसमें जरा भी शक नही कि कोई दूसरा आदमी ऐसा नही था जो इस कार्य-भार को उठाने के लिए उनसे अधिक योग्य हो। उनका यह कहना था कि 'यह मेरे लिए बिल्कुल अपरिचित क्षेत्र है, जो चारो

ओर से बादलों और अन्धकार से घिरा हुआ है।' परन्तु १७८८ की शरद् में जब अपने पत्र में उन्होंने इस प्रकार के उद्गार प्रगट किए, तो उनके जानने वालों को यह विश्वास हो गया कि वही राष्ट्रपति का पद ग्रहण करने वाले है। सारी सर्दियों में वे उन्हें अपने कर्त्तव्य की याद दिलाते रहे, परन्तु वह बिना कोई उत्साह दिखाए अपनी आने वाली आजमाइश के बारे में सोचते रहे। १७८९ के अप्रैल मास में जिन दिनों वह माऊंट वर्नन में उस समाचार की प्रतीक्षा कर रहे थे, जो निश्चित रूप से उन्हें मिलने वाला था, उन्होंने अपने पुराने मित्र हैनरी नौक्स को विश्वस्त रूप से लिखा—

"शासन के राष्ट्रपति पद पर आरूढ होते समय मेरे मन को वैसी ही भावनाएं आन्दोलित करेंगी, जैसी कि उस अपराधी को करती है जो फांसी के तख्ते पर लटकने के लिए जा रहा हो। मेरा लगभग सारा जीवन सार्वजनिक चिन्ताओं में व्यतीत हुआ है। अब अपनी उम्र के अन्तिम वर्षों में अपने शांतिपूर्ण घर को छोड़ कर बिना राजनैतिक निपुणता, योग्यताओं और झुकाव के, जो इस पद के लिए आवश्यक है, मैं संकटों के सागर में उतर पडूं-इसके लिए मेरा जी नहीं मानता। मैं यह समझता हूँ कि इस समुद्र यात्रा मे मेरा साथ देनेवाले मेरे देशवासी होगे' और मेरी सुख्याति होगी, किन्तु बदले में उन्हें क्या मिलेगा—यह केवल भगवान् ही कह सकता है।"

प्रथम शासनः १७८९–१७९३

दो सप्ताह बाद डर की नही किन्तु प्रतीक्षा की अवधि समाप्त हो गई। कांग्रेस ने उन्हे सूचित किया कि निर्वाचन क्षेत्र मे वे सर्व-सम्मति से कामयाब हो गए है और मैसाचूसैट्स के जान एडम्ज को इतनी पर्याप्त सख्या मे मत मिले है कि वह उप-राष्ट्रपति का पद ग्रहण कर सकता है। वाशिंगटन न्यूयार्क के लिए तत्काल चल पड़े। सडक कीचड़ से लथ-पथ, दलदल वाली थी और उन्हे यात्रा में आठ दिन लगे। सारे रास्ते उनका जोर-शोर से स्वागत हुआ। पुष्पों की वर्षा की गई, झंडियां फहराई गईं, विजय-द्वार खड़े किए गए, अभिनन्दन-पत्र पढ़े गए, मिलिशिया ने मार्ग में साथ चल कर रक्षा की, समा-

चार-पत्रों में 'हमारे पूज्य नेता और शासक' के प्रति प्रशंसात्मक लेख निकले।

दर्शकों के लिए उनकी आकृति भव्य थी, किन्तु अन्दर ही अन्दर उन पर डर का भूत सवार था। उपरोक्त प्रचुर प्रमाणो के होते हुए उनकी लोकप्रियता मे किसी को कब सन्देह हो सकता था ? किन्तु प्रत्येक नए प्रदर्शन से उनकी चिन्ता और भी गहन हो जाती थी। उनके देशवासी उनकी प्रशंसा करते हुए जब उन्हे मानवातीत गुणों वाला कहते थे, तो उनसे मानवातीत कामों की भी अपेक्षा रखते थे। यदि वह किसी ऐसे कार्य के करने मे असफल रहे, जिसे वह स्वय भली-भाति निश्चित न कर सकते हों, तो उनकी कितनी भयानक असफलता समझी जाएगी ? ख्याल कीजिए, वहां तेरह असंवादी राज्य थे—जिनमे से दो अभी तक उस संघ में शामिल ही नही हुए थे। सविधान की दशा यह थी कि अभी तक वह जोखिम अवस्था में था। जो भी राज्य थे, वे सब अपनी 'प्रिय-प्रभुता' को बचाए रखने के पक्ष में थे। इनका विस्तार अन्ध-महासागर तट पर पन्द्रह सौ मील तक था, जनसख्या चालीस लाख से कम नही थी। (पूरी संख्या को उस समय कोई नही जानता था)। इस जनसंख्या मे हर पांच व्यक्तियों के पीछे एक नीग्रो दास था। यह ऐसा राष्ट्र था जिस के लिए राष्ट्रीयता सर्वथा नवीन वस्तु थी और जो इस समय संघानीय गणतन्त्रवाद का प्रयोग कर रहा था। सिर पर ऋण का बोझा था और बाहर से शत्रुओं का हर समय खटका लगा रहता था। प्रश्न यह था कि यदि किसी समय देश पर विपत्ति का पहाड़ टूट पडे, तो इसका क्या होगा ?

किन्तु वाशिंगटन की बड़ी-बडी खूबियों में से एक खूबी यह थी कि वह कभी धैर्य नही छोडते थे। कुछ आदमियो मे चिन्ता के कारण इच्छा शक्ति को लकवा मार जाता है या उनकी कार्य-शक्ति अचानक दिशाहीन हो जाती है। किन्तु वाशिंगटन चिन्ता के कारण जहां अधिक मात्रा मे सावधान हो जाते थे, वहा वह अपने हाथ में लिए हुए कामों मे अतिरिक्त हठ से जुट जाते थे।

दिया कि उनके लिए कोई राजसी अभिधान हो। इस पर लोगों ने उनकी खिल्ली उड़ाई। सैनेट ने यह सुझाव दिया कि उन्हें 'महाराज, संयुक्त-राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति एवं उसकी स्वतन्त्रता के रक्षक' कह कर पुकारा जाए। किन्तु सदन 'संयुक्त-राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति' जैसा सरल अभिधान चाहता था। (कहते है कि वाशिंगटन 'शक्ति पुज, संयुक्त-राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति' अभिधान को अधिक पसन्द करते थे)। उन्होने समझदारी से काम लिया, जबकि उन्होंने उस वाद-विवाद को उस समय तक प्राकृतिक रूप से ठण्डा होने दिया, जब तक कि आम प्रयोग के कारण 'राष्ट्रपति महोदय' का सरल अभिधान प्रचलित नहीं हुआ।

वाशिंगटन ने सामान्य बुद्धि के आधार पर ही अपनी आतिथ्य तथा मुलाकात-सम्बन्धी नीति अपनाई। माऊंटवर्नन वाले घर को उन्होने खुला छोड़ा हुआ था; कोई मुलाकाती किसी समय भी आ-जा सकता था। न्यूयार्क में यह सम्भव नहीं था। अतः पूर्व परामर्श करके उन्होंने साप्ताहिक मुलाकातों की पद्धति चलाई। इस दिन औपचारिक रूप से मुलाकातें हो सकती थीं और बाद में (देर से साझ के समय जब मुलाकातें समाप्त होती) रात्रि का भोज हुआ करता था। वह व्यक्तिगत निमन्त्रण स्वीकार नही किया करते थे, यद्यपि नाटक देखने की उत्सुकता के कारण वह कई बार अपने कार्य के वोझ को हल्का करने के लिए अतिथियों के साथ नाट्यशाला जाया करते थे। दुबारा परामर्श पा कर, उन्होंने निश्चय किया कि अमेरिका के भिन्न-भिन्न भागों मे यात्रा की जाय। तत्पश्चात् उन्होने देश-पर्यटन में संतुलन रखने का प्रयत्न किया; यदि वह सन् १७८९ में न्यू इंगलैंड में घूमे-फिरे, तो दो वर्ष बाद उन्होने दक्षिण के राज्यों मे पर्यटन किया।

शायद यह सब (उनके कामों का) कुछ कुछ कठोर स्वरूप था। यही बात निश्चय से उनके कांग्रेस के साथ सम्बन्धो के बारे में लागू होती थी। दोनों का एक दूसरे से अत्युत्तम व्यवहार था। किन्तु अत्युत्तम व्यवहार (सदा) सरल व्यवहार नही हुआ करता। उनके ससद्

मे दिए गए भाषणों के औपचारिक उत्तर मिलते, फिर उन उत्तरों के प्रत्युत्तर मिलते। इसका एक परिणाम, जिसके बारे मे 'सस्थापक-पिताओं' ने पहले कभी नही सोचा था, यह निकला कि राष्ट्रपति और सैनेट एक दूसरे से दूर होते चले गए। शायद यह अवश्यभावी भी था, क्योकि नई सरकार के सब विभाग अपने-अपने विशेपाधिकारो तथा कदम-कदम पर बनने वाले पूर्वोदाहरणो के विषय में अत्यधिक सचेत थे। किन्तु किंचित् उदासीनता और सभ्रान्ति अवश्य पैदा हो गई। सैनेट वाशिंगटन की आन्तरिक परिषद् बनने की बजाय, उनसे दूरी पर रहने लगी। वह केवल एक बार ही विदेश-नीति पर विचार-विनिमय के लिए सनेट मे आए। यह ऐसा क्षेत्र था जिसमें कार्य-पालक विभाग और सैनेट, दोनों की साझी जिम्मेदारी समझी जाती थी। इस मौके पर शोकपूर्ण असफलता मिली। यदि मैकले का विश्वास करें, तो उसके शब्दो में, वाशिंगटन उस अवसर पर दुर्विनीत और अधीर थे और जब सैनेट ने उनकी इच्छाओ को तत्काल स्वीकार करने से इन्कार कर दिया, तो वह खीझ कर सैनेट से उठ कर चले गए।

किन्तु मैकले भी इस बात को स्वीकार करता है कि जब वाशिंगटन स्थगन के पश्चात् दोबारा लौटे, तो उस समय वह प्रसन्न मुद्रा में थे। उन्होने न केवल अपने पिछले व्यवहार को ही नही दुहराया, बल्कि अपनी इच्छाओं को मनवाने में जिद्द भी नही की, अन्यथा आपसी तनाव विध्वंसकारी होता। कुछ भी हो, उन्हे सलाह-मशवरे की कमी नही थी। शुरू-शुरू के सालो मे जेम्स मैडीसन के साथ उनके घनिष्ठतम सम्बन्ध थे। मैडीसन उन्हे मिलने आता, उनके लिए कागजात तैयार करता और सांवैधानिक राय देता। जब सन् १७९२ मे वाशिंगटन ने अपनी प्रथम अवधि की समाप्ति पर राष्ट्रपति पद से निवृत्त होने की बात सोची, तो मैडीसन ने विदाई के समय के भाषण का प्राथमिक प्रारूप तैयार किया। चार साल पीछे इसी भाषण ने एक शोहरत पैदा कर दी। अलेक्जैण्डर हैमिलटन पर भी वह बहुत आश्रित रहते थे। उससे कम जान

जे और उपराष्ट्रपति एडम्ज पर। धीरे-धीरे वह कार्यपालक विभाग के अध्यक्षों पर अधिकाधिक निर्भर रहने लगे। यह प्रक्रिया बिना किसी योजना के थी, क्योंकि किसी ने कभी ख्याल नहीं किया था कि राष्ट्रपति को प्रधान-मन्त्री के उत्तरदायित्व निभाने होंगे। फिर भी वस्तु-स्थिति यह थी कि वाशिंगटन के प्रथम शासन-काल के अन्त में (प्रधान मन्त्री की तरह ही) उनका एक 'मन्त्री-मण्डल' सा बन गया। लोगों में इस शब्द का प्रयोग भी होने लगा और इस विचार ने बीज-रूप में अपना अस्तित्व जमाया।

उस समय तक, बिना किसी पूर्व योजना के, वाशिंगटन को एक प्रकार की दल-पद्धति का भी सामना करना पड़ा। वास्तव में वह स्वयं घोर विरोधों का केन्द्र बन गए। उदाहरण के रूप मे, परिणाम यह हुआ कि वह और मैडीसन पूर्ण रूप से एक दूसरे से भिन्न मार्ग पर चले गए। मैडीसन ने एक भविष्यदृष्टा के तौर पर यह महसूस किया था कि किसी भी राष्ट्र में 'दल और दलीय झगड़ों की भावना' का होना आवश्यक है और इन भिन्न-भिन्न बद्धहित दलों का समाधान करना, अपरिहार्य रूप से, कांग्रेस तथा राष्ट्रपति का काम होगा। वाशिंगटन ने भी राष्ट्रपति बनने से पहले इस बात को पहचाना था कि सामान्य प्रान्तीय स्पर्धाओं के अतिरिक्त, देश नए संविधान के विषय में गम्भीर रूप से बटा हुआ है। उन्हें यह भी ख्याल था कि यह सम्भव है कि संघानीय पक्ष के विरोधी लोग चुनाव-क्षेत्र में उनके विरुद्ध अपने मत दें।

वाशिंगटन और उनके साथ अनेक लोग यह देखकर निराश हुए कि संविधान के पारित होने के बाद, वाद विवाद का अन्त होने की बजाय इसके गुणावगुणों पर और भी अधिक चर्चा होने लगी है। साधारण-रूप से वे लोग जिन्होने १७८७-१७८८ में संविधान का सक्रिय रूप से समर्थन किया था, उन्होंने श्रेणी-बद्ध होकर उन लोगों का विरोध करना शुरू किया जिन्हें इस बारे में शंकाएं थीं। उन्होंने अपने आपको संघवादी और दूसरे पक्ष को असंघवादी के नाम से पुकारा जाना पसन्द किया और अपने बाल-राष्ट्र के अभीष्ट-

स्वरूप पर जोर-शोर से लड़ना-झगड़ना जारी रखा। उन में साफ-साफ विभाजन नही था। मैडीसन और रैंडौल्फ जैसे कुछ आदमियों ने अपने विचार बदल लिए थे। एक ही परिवार मे मत-भेद पाए जाते थे। मैसाचूसैट्स निवासी फिशर एमेश का, जो प्रतिनिधि-संसद में संघवाद का अत्यन्त ओजस्वी समर्थक था, अपना ही सगा भाई नैथानील घोरतम शत्रु था। इस नैथानील ने कुछ साल पीछे अपने भाई फिशर की अर्थी में इसीलिए शामिल होने से इन्कार कर दिया, क्योंकि उसका विचार था कि इसे संघवाद के प्रचार का साधन बनाया जा रहा है। मोटे तौर पर संघवाद के पोषक (जो नैथानील ऐमेस के विचार मे 'दम्भी-टोला' था) धनी और समृद्ध लोग थे, जैसे वकील, व्यापारी आदि, और बहुत अशों में वे देश के पूर्वीय भागो के थे। उनके विरोधी (जिन्हें उस समय की शब्दावली में 'एक-छत्र राज्यवादी' के विरोधी पक्ष के रूप में 'अराजक-भीड़-राज्य-वादी' कहा जाता था, भिन्न-भिन्न कारणों से विरोधी-पक्ष के थे। कुछ लोग अब भी एक सुदृढ राष्ट्रीय सरकार को नहीं चाहते थे, अथवा वे इस सिद्धान्त के भी खिलाफ थे कि कोई प्रशासकीय अधिकारी हो। टामपेन की तरह ही उनका भी विचार था कि 'प्रशासन निर्दोषता के लोप का चिन्ह है।' अन्य लोग विशेप रूप से पश्चिमी और दक्षिण भागों के वासी, इसलिए विरोध करते थे, क्योंकि उनकी राय में संघवादी स्वार्थी व्यापारियों का गुट था।

आगे जाकर जो संघर्ष चला, वह वाशिंगटन के लिए, कम से कम इन चार कारणों से घोर अरुचिकर और विक्षोभोत्पादक था। प्रथम, वाशिंगटन को इस बात से बहुत दु:ख होता था कि संयुक्त-राज्य अमेरिका की स्थिरता को संकट-ग्रस्त करने के प्रयास किए जाएं। दूसरे, उनके अपने ही कार्य-पालक विभाग के अन्दर इसी प्रकार का संघर्ष जारी था। तीसरे, यह सघर्ष विदेशी-नीति के क्षेत्र में भी अपने पांव फैला रहा था। चौथी बात यह कि उस संघर्ष की वजह से उनकी अपनी सुकीर्ति को धक्का पहुंच रहा था।

जब सन् ११८९ में वह राष्ट्रपति के पद पर आरूढ़ हुए, तो उनका ख्याल था कि सरकार के प्रमुख संचालक के रूप मे उनकी सेवाओं की अपेक्षा रहेगी। यह इस लिये नहीं कि उनमें मिथ्या-भिमान की भावना थी, बल्कि इसलिये कि बहुत से अमरीकियों ने उन्हे ऐसा विचार दिया था। यदि हम जहाज-सम्बन्धी अलकार का प्रयोग करें, तो यह कहना अधिक उत्तम मालूम होगा कि उनकी जरूरत 'सेतु' पर थी। जैसा कि उन्होंने महसूस किया, अमेरिका की प्रमुख आवश्यकता थी एक दूसरे का विश्वास। संयुक्त-राज्य अमेरिका का सरकारी मोटो उपयुक्त रूप से यह हो सकता था— 'जैसा-जैसा वह आगे बढ़ता है, वैसे ही अभिवृद्धि को प्राप्त करता जाता है।' वाशिंगटन के विदाई-भाषण के शब्दो में 'प्रशासन के सही रूप को प्रस्थापित करने के लिए समय और अभ्यास इतने ही आवश्यक है जितने कि अन्य मानवीय सस्थाओं में।' उनका मत यह था कि एक बार राज्य-सघ को सही आधार पर स्थापित कर दिया जाय, तो अन्य सभी बातें इसके पीछे-पीछे चलेगी। राष्ट्र के पास छोटे पैमाने पर जल और स्थल सेना हो और शान्ति रखने के लिए उपयुक्त नागरिक-सेना का संगठन हो; लगान और कर वसूल कर लिए जाये; कानून का पालन हो और देशाभिमान को बढ़ावा दिया जाय। इतना हो जाने के बाद सब कार्य अपने-अपने ढग से चलेंगे। उनकी यह धारणा थी कि अमेरिका और राज्य-सघ सम्भाव्यत ठोस और महान् हैं। यह कोई ऐसा सिद्धान्त नही था कि जिसे उन्होने कविता के रूप मे अभिव्यक्त किया हो अथवा अधिक गहनता के साथ उसका विश्लेषण किया हो। न ही वह अपना धीरज कायम रखने के लिए इन सुन्दर शब्दों का प्रयोग कर रहे थे। यह उनके विश्वास का अंग था। यह ऐसी चीज थी कि जिसे वह हृदय से महसूस करते थे।

इस प्रकार के विचार रखते हुए वाशिंगटन ने जहां तक विधान का सम्बन्ध था—प्रमुख अधिकारक की तरह अपना कार्य सम्पादित किया, न कि प्रमुख कार्य-पालक के रूप में। हैमिल्टन के लिए

'संविधान इस प्रकार का ढांचा था, जो कभी विचल नहीं रह सकता और यदि उसे आगे न ले जाया गया तो वह पीछे की ओर चलेगा।' डैमास्थीनीज के मूल कथन को उद्घृत करते हुए हैमिल्टन कहा करता था कि राजनीतिज्ञ का कर्तव्य है कि वह 'मामलों का अग्रगामी बने और 'घटनाओं को स्वयं अस्तित्व मे लाए।' अत: उसकी नजरों में विश्वास ऐसी चीज थी जिसे साधा और पुष्ट किया जाता है—वस्तुत: जिस का निर्माण किया जाता है। हैमिल्टन का 'राजनीतिज्ञ' से अभिप्राय स्वयं से था।

हैमिल्टन अमेरिका के इतिहास के चित्ताकर्षक व्यक्तियों में से था। वाशिंगटन हमारे लिए पहेली है, क्योंकि वह इतने श्रेष्ठ प्रतीत होते है कि विश्वास ही नही होता। उस से विपरीत हैमिल्टन का व्यक्तित्व रहस्यमय है—आश्चर्यजनक रूप से विविध और असंगत। वह कभी आत्मसमर्पण करता हुआ और कभी स्वार्थ में अन्धा बना हुआ दीखता है, कभी जरूरत से ज्यादा सावधानी बर्तने वाला और कभी अव्यवस्थित रूप से कार्य करने वाला, कभी समझ से काम लेने वाला और कभी अन्धा-धुन्ध काम करने वाला, कभी गुर्रानेवाला और कभी शुद्ध, पवित्र व्यवहार वाला, कभी क्रियात्मक और कभी स्वप्न लेने वाला। ऐसा व्यक्ति कभी भी किसी राष्ट्रपति के लिए इने-गिने आदमियों में से होता होगा। ऐसे समय में जबकि सरकार के ढांचे के विस्तार अभी तय नहीं हुए थे, यह अत्यन्त आत्मविश्वासी और असाधारण रूप से योग्य युवक कार्य-पालक विभाग पर अपना सिक्का जमाने की फिक्र में था। इस बात का खतरा था कि वह कही प्रधानमन्त्री के प्रकार की सत्ता न हथिया ले और वाशिंगटन केवल सीमित सत्तायुक्त सवैधानिक सम्राट् के सदृश न रह जाएं।

इन महत्त्वाकाक्षाओ के अतिरिक्त हैमिल्टन कुछ और कारणों से भी अपनी इस प्रकार की स्थिति को निश्चित करना चाहता था। तत्कालीन ब्रिटेन में (जिसकी परिस्थितियो का उसने निकट हो कर अध्ययन किया था और जिसके संविधान को वह प्रतिष्ठा की

दृष्टि से देखता था) विलियम पिट प्रधान-मन्त्री होने के साथ साथ राज्य-कोष महामात्र भी था। पिट उम्र में हैमिल्टन से भी छोटा था। चूँकि अमेरिका की वित्त-सम्बन्धी व्यवस्था का किसी न किसी हालत में नियमन आवश्यक था, अतः यह लाजमी था कि वाशिंगटन के प्रथम प्रशासन में हैमिल्टन की योजनाएं प्रमुख-रूप से आगे आएँ। इसके अलावा हैमिल्टन की नियुक्ति मे इस प्रकार की भाषा भी थी जिससे यह संकेत मिलता था कि कार्य-पालक अध्यक्षों के सामान्य कर्तव्यों के अतिरिक्त उसका विशेष कार्य यह होगा कि वह राष्ट्रपति और कांग्रेस का अन्तःस्थ बने। अन्त मे, उसकी विशेष स्थिति इसलिए भी बन गई, क्योंकि एक अन्य कार्यपालक-अध्यक्ष, थामस जैफर्सन, ने अपना दायित्व तब संभाला जबकि हैमिल्टन को इस पद पर आरूढ़ हुए छः मास हो चुके थे। इन छः महत्वपूर्ण मासों मे सब प्रमुख मामलों पर, जिन मे विदेश-नीति भी थी, हैमिल्टन की नितान्त रूप में सलाह मागी जाती रही थी। हैमिल्टन ने इस प्रकार की सलाह देने में कभी गफलत नही की।

इसके परिणाम लगभग विध्वंसकारी निकले, क्योकि जैफर्सन और हैमिल्टन शीघ्र ही आपस में उलझ पड़े। यह सम्भव है कि हैमिल्टन जैफर्सन मत-भेदो पर लोग इसलिए अधिक बल देते हों, क्योंकि इन से अमेरिका की कहानी के बुनियादी मत-भेद प्रगट होते है। तथ्य यह है कि उनके सैद्धान्तिक मत-भेद इतने गहरे नहीं थे, जितने मत-भेद कि इतिहास की अनेक अन्य घटनाओं मे से पैदा हुए। फिर भी इससे इन्कार नही किया जा सकता कि उन के पारस्परिक झगड़ो में तीखापन था। न ही कोई उस शोर-गुल्ल से इन्कार कर सकता है जो अमेरिका के राजनैतिक विरोधी-दलों के कारण उठा करता था, जिनके नमूने के रूप मे यह दोनो महाशय थे। थामस जैफर्सन यद्यपि हैमिल्टन के समान महान्, सम्भवतः उससे अधिक महान् था, किन्तु उस जितना कलह-प्रिय नही था। हैमिल्टन के विपरीत वह व्यक्तिगत रूप से विवाद में नहीं उलझता था। न ही उसमें हैमिल्टन के समान चोटी पर

पहुंचने की लालसा थी। वह ऊंचे खतरनाक पदों से आकर्षित नहीं होता था। हैमिल्टन ने (अपने सैनिक जीवन में) लडाई में फौज का नेतृत्व किया था (और यार्क टाऊन मे किले की मजबूत दीवार पर गोलाबारी की थी) और अब फिर उसकी जोखम में पड़ने की अभिलाषा थी। (प्रसगवश, मौका लगने पर, वह अपने और राज्य-सचिव के पद के अलावा युद्ध-सचिव के रूप मे भी नौकरी करने के प्रलोभन का प्रतिरोध नही कर सका)। जैफर्सन कभी सैनिक नही रहा था और न ही कभी उसने सैनिक गुणो से सम्पन्न होने का दावा ही किया।

फिर भी ये दोनों व्यक्ति क्रोधावेश में बार-बार एक दूसरे के साथ टक्कर लेते थे। सविधान मे अधिकार-सम्बन्धी विधेयक शामिल किए जाने पर जैफर्सन इससे काफी सन्तुष्ट था, किन्तु जहां तक हैमिल्टन की नीतियों का सम्बन्ध है, जैफर्सन, मैडीसन तथा अन्य कई लोग इनसे खुश नही थे। उनकी नजरो मे ये नीतिया अति-सघवादी और दुष्टता-पूर्वक बनाई गई थी। वाशिगटन इन पर अपनी स्वीकृति की मोहर लगा चुके थे। इनमें से बहुत सी अमल मे भी आ चुकी थीं। आज वही नीतियाँ अमेरिका की बपौती बन चुकी है और वे इतनी सामान्य लगती है कि कल्पना मे नही आता कि उनके कारण उस समय इतना विरोध क्यों हुआ।

इसका मुख्य कारण हमे यह लगता है कि हैमिल्टन की तजवीजे संघ के अनुदार तथा वाणिज्य तत्वों को बहुत भाती थीं, किन्तु इसके विपरीत उन्मूलनवादी (रैडीकल तत्व) तथा कृषक-समुदाय इनका विरोध करते थे। इन परिस्थितियों में किसी समझौते पर पहुँचना कठिन था। परिणामत. एक न एक बद्धहित-समुदाय का असंतुष्ट रहना अवश्यम्भावी था।

सर्वप्रथम समस्या जिसे हैमिल्टन ने सन् १७९० में सुलझाने का प्रयास किया, वह अमेरिका के ऋणो से सम्बन्धित थी। ये ऋण, जिनकी राशि लगभग आठ करोड़ डालर थी, क्रान्तिकारी युद्ध के दौरान में अमेरिका पर चढ़े थे। इनमे से अढ़ाई करोड़ की राशि

भिन्न-भिन्न राज्यों की तरफ से कर्जे के रूप में दी गई थी। हैमिल्टन ने तजवीज किया कि उन्हें पूर्णतया चुकाया जाए, यद्यपि उनके द्वारा प्रतिनिहित पत्र प्रतिभूतियों के मूल्य बहुत गिर चुके थे। उसने तजवीज किया कि अंकित मूल्य पर राष्ट्रीय ऋण का निधीयन किया जाए और राज्यों के ऋणों को लगभग सम-मूल्य पर ही राष्ट्रीय ऋण के रूप में चुकाया जाए। हैमिल्टन वाद-विवाद मे जीत गया। उसने अपनी युक्तियों के दो आधार बनाए---राष्ट्र की प्रतिष्ठा और राष्ट्र की सीख। ये दोनों दलीले वाशिंगटन को ठोस लगीं। निधीयन तथा अभिधारणा के विरुद्ध जो तर्क दिए गए, वे भिन्न-भिन्न प्रकार के थे। किन्तु इन सब मे जिस युक्ति पर सर्वाधिक गर्मी पैदा हुई, वह यह थी कि हैमिल्टन अपनी योजना के द्वारा सट्टेबाजों को धनाढ्य बनाना चाहता है। कारण, कि सामान्यतः पत्र-प्रतिभूति-धारी मूलरूप में इनके स्वामी नही थे, जिन्होने कि उन्हें देशभक्ति की भावना से प्रेरित होकर खरीदा हो और जरूरत पड़ जाने के कारण उपहार पर बेच दिया हो, किन्तु वे कपटी, पूर्वीय लोग थे। उनकी प्रतिभूतियों की पूर्ण-रूप मे चुकाने का अभिप्राय यह था कि उन्हे संघानीय शासन की ओर से साहाय्य दिया जाय। हैमिल्टन स्वयं इस प्रक्रिया से भली भांति परिचित था, किन्तु उसने इसके ध्वनितार्थों को एक दूसरी रोशनी में देखा। उसने यह सही भविष्यवाणी की कि जो उपाय उसने दिग्दर्शित किए है, उनसे संघ 'दृढ-बन्धन में 'जुड़' जाएगा, क्योंकि इससे प्रत्येक वह समुदाय जिसने इसके हित मे अपना धन जोखिम मे झोंका है, इससे बंध जाएगा।

जैसे-जैसे हैमिल्टन की योजनाएं खुले रूप मे आती गईं, जैफर्सन का क्रोध बढ़ता चला गया। कारण यह कि उसे एक समझौते के आधार पर निधीयन और अभिधारणा का समर्थन करने के लिए तथा कांग्रेस पर अपना असर डालने के लिए प्रेरित किया गया था। इन मामलों का वित्तीय व्यवस्था से कोई सम्बन्ध नही था। उसने अब यह महसूस किया कि हैमिल्टन ने उसकी आखों मे धूल झोकी

है। इस समझौते के अनुसार उत्तर के कांग्रेस-सदस्यों ने, जो हैमिल्टन के मित्र थे, राष्ट्र की राजधानी की संस्थापना के झझट वाले मामले पर दक्षिण वालो के साथ मतदान किया। इन मतो के कारण दक्षिण वालों की जीत हुई और फिलेडैल्फिया की बजाय पोटोमैक नदी के क्षेत्र में राजधानी बनाने का निश्चय हुआ। यह भी निश्चय हुआ कि सन् १८०० तक जब तक कि 'संघानीय प्रशासन की नई राजधानी' कांग्रेस की बैठकों के लिए तैयार नही हो जाती, कांग्रेस के अधिवेशन फिलेडैल्फिया में चलते रहेगे। यह सत्य है कि यह दक्षिण वालो के लिए एक रिआयत थी, और इसके अलावा वाशिगटन के लिए चुपचाप रूप से प्रसन्नता का स्रोत---क्योकि इनका घर इस स्थान से कुछ ही मीलों पर नदी के तट पर था। किन्तु ऐसा लगा कि हैमिल्टन की उन कोशिशों के विरुद्ध जो वह संविधान को संघानीय रूप-रेखा देने में कर रहा था, यह सफलता एक प्रकार से थोथी थी।

सन् १७६१ के आरम्भ में वित्त-सचिव और राज्य सचिव की राष्ट्रपति के सामने ही जोरदार टक्कर हो गई। हैमिल्टन प्रशासन के संरक्षण में राष्ट्रीय बैंक की स्थापना चाहता था। उसने अपने अत्युत्तम लेखों में से एक में इस बारे में प्रतिनिधि-सदन को प्रतिवेदित किया था। इस कदम का इतने जोर-शोर से विरोध हुआ कि वाशिगटन ने विवश होकर अपने कार्य-पालक अध्यक्षों से इस विषय में लिखित सम्मति मांगी। सम्मति इस बारे में नही थी कि राष्ट्रीय बैंक होना चाहिए अथवा नहीं, बल्कि इस बारे मे कि ऐसा बैंक स्थापित करना सावैधानिक होगा या नही। हैमिल्टन ने स्वाभाविक रूप से पहले की तरह तर्क-पूर्ण ढंग से उत्तर देते हुए इसे सांवैधानिक बताया। जैफर्सन ने उसी प्रकार योग्यता से यह सिद्ध करने की कोशिश की कि संविधान को इतनी दूर तक खीचा नही जा सकता। वाशिगटन के लिए यह समस्या थी कि इस परिस्थिति मे वह क्या करे? यह दोनों सम्मतियां एक दूसरे से सर्वथा विपरीत थी। इनमें से कोई एक भी पूर्णतया धार्य नही थी। चूकि कांग्रेस ने विधेयक

को पारित कर दिया था, अब उन्हें निर्णय करना था कि वह उस पर हस्ताक्षर करें, या उसका अभिषेध करें। चूंकि यह जैफर्सन के दिमाग को नही बल्कि हैमिल्टन के दिमाग की उपज थी, अतः उन्होंने उस पर हस्ताक्षर कर दिए। थोड़े ही समय पीछे उन्होंने मद्य-कर विधेयक की अनुमति दी। इसकी भी हैमिल्टन ने सिफारिश की थी। इसका उद्देश्य यह था कि आयात-शुल्क से पृथक्-रूप से प्राप्त आय मे वृद्धि की जा सके। यह कर उस मद्य पर लगाया जाना था जिसका उत्पादन करके पश्चिम के अनेक कृषक प्रमुख-रूप से अपनी आजीविका कमाते थे। इस प्रकार मत-विरोध का एक और मौका पैदा हो गया।

निधीयन, अभिधारणा, एक राष्ट्रीय बैंक, मद्य-कर—इन सबका अमल में आना मैडीसन और जैफर्सन की नजरों में यह सिद्ध करता था कि हैमिल्टन के हाथों में सत्ता है और यदि वह इसी प्रकार अपनी योजनाओं में सफल होता चला गया, तो एक दिन वह अमेरिका को दूषित कर देगा। फिर अमेरिका के, जिसमें जागरूक खेती-व्यवसायी रहते थे, एक शान्त देश बनने के अवसर समाप्त हो जाएगे। उसकी बजाए 'एक-छत्र-शासन' वाले लोग अपनी स्थिति सुदृढ़ बना लेंगे और अमेरिका को योरूप की नकल-मात्र में परिवर्तित कर देंगे। कांग्रेस में सरकारी नौकरी का जमघटा होगा, और यदि वह विष आगे फैला, तो अमेरिका वशगत राजवंशीय शासन को पुनः अपनाएगा। अत उनकी दृष्टि मे यदि कोई इसका निदान था, तो एक यह था कि हैमिल्टन का विरोध किया जाए। जैफर्सन इस विरोध का नेतृत्व अपने हाथों में नही लेना चाहता था। वाशिंगटन की तरह ही उसकी तीव्र इच्छा थी कि वह अपनी जन्मभूमि वर्जीनिया मे लौट कर एक साधारण नागरिक की तरह रहे। किन्तु घटनाओं का अपना चक्र था। धीरे धीरे जेफर्सन, मैडीसन और कुछ उनके साथी उन अमरीकियों के मुखरू (प्रतिनिधि-वक्ता) बने, जो अपने आप को संघानीय-शासन की विचार-धारा के विरुद्ध समझते थे। जब उनका शिथिल और कुछ-कुछ आकस्मिक सहमिलन

अधिक चेतनायुक्त हुआ, तो इसका नया नाम पड़ा। इसके सदस्य अपने आपको डैमोक्रैटिक-रिपब्लिकन अथवा सक्षेप में, रिपब्लिकन कहने लगे।

विचारो में इस बढ़ती हुई दरार का एक चिन्ह उस समय दृष्टिगोचर हुआ, जबकि अक्तूबर १७९१ में 'नेशनल गजट' नाम के 'रिपब्लिकन' पत्र का श्रीगणेश हुआ। यद्यपि 'फैड्रलस्ट' पक्ष पर हमले करने वाला यह प्रथम पत्र नहीं था, फिर भी यह एक ऐसा पत्र था जो राष्ट्रीय स्तर पर फैड्रलिस्ट पत्र 'गजट आफ दी यूनाइटिड स्टेट्स' को प्रभावशाली---वस्तुत: विनाशकारी---ढंग से चुनौती देने की सामर्थ्य रखता था। इस पिछले पत्र का जन्म सन् १७८९ मे नई सरकार बनने पर हुआ। उसके सम्पादक का नाम जान फैनो था और हैमिल्टन को इससे निश्चित-रूप मे समर्थन मिलता रहता था। फैनो का प्रतिद्वन्दी सम्पादक कवि फिलिप फ्रैनो था, जो मैडीसन का कालेज के दिनों का मित्र था और उत्साही रिपब्लिकन विचारों का था। वह फ्रैनो से अधिक साहसी पत्रकार था और अंशकालिक अनुवादक के रूप में राज्य-विभाग में भी काम करता था। चूंकि सन् १७९२ मे फैनो विवाद में अधिक तर्क-संगत दिख रहा था हैमिल्टन ने (फैनो के स्थान में भिन्न-भिन्न उपनामों से लिखते हुए) कवि पर यह आरोप लगाया कि वह जैफर्सन की हाजिरी बजाने वाला है। फ्रैनो ने ईंट का जवाब पत्थर से दिया।

सम्भवत: बाद की पीढियो को यह स्थिति अजीब सी लगे। स्पष्टत: वाशिंगटन के मन्त्रिमण्डल के दो सर्वाधिक महत्वपूर्ण सदस्य कड़ुवाहट-पूर्ण ढंग से और बुनियादी बातो के आधार पर आपस में लड़-झगड़ रहे थे। यद्यपि यह गुप्त रीति से लड़ रहे थे, परन्तु इसका ज्ञान सबको था। उनकी देखा-देखी अन्य कार्य-पालक अध्यक्षो का भी इनमे से किसी न किसी का पक्ष लेने की ओर रोहझान रहता था। नौक्स हैमिल्टन के साथ और रेण्डाल्फ अपने वर्जीनिया के साथी जैफर्सन के साथ थे। हैमिल्टन अब भी सक्रिय-

रूप से (यद्यपि चुपचाप) विदेशी मामलों से सम्बन्ध रखे हुए था। हैमिल्टन ने महा-प्रेषपति का संघटन सम्भाल लिया, हालांकि इसे अधिक उपयुक्तता के साथ राज्य-विभाग को सौपा जाना चाहिए था। और नई संघानीय टकसाल, जिसे वित्त-विभाग के आधीन रखा जाना अधिक तर्क-संगत था, इसे जैफर्सन के आधीन कर दिया गया। क्या यह सब गड़बड़ और विद्वेष के कारण था?

उस समय वाशिंगटन के काल मे ऐसा नही माना जाता था। 'मंत्री-मण्डल' में अभी तक संसक्ति का अभाव था, 'दलों' में उनका श्रेणी-बन्धन भी नहीं था। केवल कार्य-पालक-अध्यक्षों के कार्य-क्रम ही मोटे और अनिश्चित-रूप में राष्ट्रपति के कार्य-क्रम समझे जाते थे, न कि किसी सर्व-सम्मत प्रशासन के। हैमिल्टन और जैफर्सन दोनों राष्ट्रपति का आदर करते थे और उनके तथा अपने संघ-सम्बन्धी भिन्न-भिन्न विचारों के प्रति वफादार थे। उनकी उपस्थिति मे वे प्रायः झगड़ा नही करते थे। उनकी शिकायतें एक-दूसरे के विरुद्ध हुआ करती थीं—वाशिंगटन के विरुद्ध नहीं, और यह कहना चाहिए कि उनमे से प्रत्येक एक दूसरे पर एतबार न करते हुए भी अपने प्रतिद्वन्दी की इज्जत करता था। यद्यपि आपसी लड़ाई-झगड़े थे, परन्तु निराशा-जनक संकट की स्थिति पैदा नहीं हुई थी। (यह ठीक है कि) वाशिंगटन को कुछ-कुछ दूर हटकर रहना पडता था और विधान के सक्रिय प्रकल्पन तथा प्रवर्तन में उनका हाथ नहीं था, किन्तु वह मूर्ख अथवा निर्बल नही थे। उनकी प्रथम पदावधि मे कोई उन पर यह भयंकर आरोप नही लगा सकता था कि वह हैमिल्टन के हाथों खेल रहे है। क्रान्तिकारी युद्ध में उन्होने हैमिल्टन को चार साल तक अच्छी तरह जाना-पहचाना था। उन दिनों वह वाशिंगटन का परिसहाय था। उन्होंने बाद में १७८६ में फिलेडैल्फिया सम्मेलन मे हैमिल्टन के राज्य-सम्बन्धी अनुदार विचार भी सुने थे। उन्हें इस बात के भी यथेष्ट अवसर मिले थे कि वह फ़ेनो तथा अन्य लोगो के उन विचारों का अध्ययन कर सकें जो उन्होंने हैमिल्टन की 'पद्धति' के बारे में व्यक्त किए थे। निस्सन्देह उनके

मन पर इस युवक की बौद्धिक योग्यता की गहरी छाप पड़ी थी। सम्भवत वह अपने परिसहाय की युद्धकालीन बात-चीत से यह जानते थे कि हैमिल्टन बहुत पहले से ही अर्थात् सन् १७७६ मे भी वित्त व्यवस्था एवम् व्यापार-सम्बन्धी समस्याओं मे दिलचस्पी लिया करता था। इसमे भी शक नहीं कि वह हैमिल्टन के स्वभाव की खामियों को भी पहचानते थे। इस प्रकार की जानकारी उन्हें अवश्य बहुत पहले १७८६ में प्राप्त हुई होगी जबकि हैमिल्टन यह समझ कर कि मेरी बेइज्जती हुई है रुष्ट होकर वाशिंगटन के मुख्यालय से उठकर चला गया था।

जो भी हो, राष्ट्रपति के लिए सन् १७९२ आकुलता का वर्ष था। गर्मियो के आने तक वह अपने कार्य-भार से पूर्ण निवृत्त होना चाहते थे—ऐसा कार्यभार जिसमें उन्हे कोई आनन्द नही मिल रहा था। उन्हे दो गम्भीर रोग आ चिपके थे—सन् १७८९ में जांघ पर एक गांठ (अर्वुद) सी हुई और फिर १७९० में निमोनिया का दौर चला। इसके अलावा उनके पत्रों मे कई ऐसे उल्लेख मिलते है जिन से यह पता चलता है कि इन्हीं दिनो में उनकी स्मरण-शक्ति भी क्षीण होती जा रही थी। वह बूढ़े हो चले थे और उनके हृदय में माऊट वर्नन के लिए उसी प्रकार का अनुराग बढ़ता जा रहा था, जिस प्रकार कि जैफर्सन का मौटीसैलो के लिए। जिन दिनो कांग्रेस के अधिवेशन नही हुआ करते थे, वह माऊट वर्नन चले जाते थे और वहां ठहरने का प्रबन्ध करते थे। जब माऊंट वर्नन से दूर चले जाते, तो अपनी चिट्ठियो मे अपने अधिदर्शकों को लम्बी-लम्बी और सूक्ष्म-रूप से विशेष हिदायते लिख कर भेजते।

क्या उनके लिए निवृत्ति पाना व्यवहार्य था? इण्डियनों के साथ सीमान्त पर निरन्तर संघर्ष होते हुए भी संघ समृद्ध था। किन्तु फैड्रलिस्ट—रिपब्लिकन वाद-विवाद बढता जा रहा था। उसकी तीव्रता मे किसी प्रकार की कमी नहीं आई थी। अपनी गुप्त वात-चीत में मैडीसन ने वाशिंगटन से अनुरोध किया कि

उन्हें राष्ट्रपति के पद को छोड़ना नहीं चाहिए, क्योंकि उसके विचार मे और लोग, यहां तक कि उनका अपना घनिष्ट मित्र, जैफर्सन भी, एकता की रक्षा नही कर सकेगा। उप-राष्ट्र-पति, जान एडम्ज जहां फैड्रलिस्ट था वहां वह अशिष्ट और न्यू-इंगलैण्ड-वासी भी था। इन कारणों से वह भी संशयित था। यद्यपि जान जे के बहुत कम विरोधी थे, किन्तु वह भी अधिकांश में फैड्रलिस्ट ही था। प्रमुख फैड्रलिस्ट होने के कारण हैमिल्टन का प्रश्न ही नहीं उठता था। यद्यपि मैडीसन ने बातचीत में अपना जिक्र नही किया, पर चूंकि वह स्वय रिपब्लिकन था, इसलिए उसे यह आशा नही थी कि इस पद के लिए उसे पसन्द किया जाएगा। केवल वाशिंगटन ही ऐसे व्यक्ति थे, जो (हर पहलू से) इस पद के लिए उपयुक्त थे।

यह विचार (कि वह दुबारा राष्ट्रपति का आसन ग्रहण करें) उनके लिए अरुचिकर था। हम नही कह सकते कि किस मौके पर उन्होने अपने आपको अन्तिम रूप में भाग्य के भरोसे छोड दिया। सम्भवतः अब तक वह यह धारणा लिए बैठे थे कि कोई न कोई और उम्मीदवार मिल सकेगा, बशर्ते कि वह हैमिल्टन और जैफर्सन के बीच की खाई को दूर कर सकें। कुछ भी हो, उन्होंने इस बात का प्रयास किया कि स्थिति को स्पष्ट किया जाए। जैफर्सन ने हैमिल्टन के विरुद्ध इक्कीस आरोपों की एक सूची पेश की। हैमिल्टन और उसके साथियों को 'कागजों के व्यापारियों का भ्रष्ट दल' और सामान्य-रूप से फैड्रलिस्ट प्रवृत्तियों वाले कहा गया। जैफर्सन के कथनानुसार इन लोगों का अन्तिम उद्देश्य परिवर्तन के लिए मार्ग तैयार करना और सरकार के वर्तमान रिपब्लिकन स्वरूप को ब्रिटिश संविधान के नमूने पर बदलना था। वाशिंगटन ने इन आरोपों की प्रतिलिपि बनाई और उसे बिना जैफर्सन का जिक्र किए हैमिल्टन के पास भेज दिया। ऐसा करके वह यह बताना चाहते थे कि प्रेषित सामग्री उन आलोचनाओं का संक्षेप है जो उन्हें भिन्न-भिन्न स्रोतों से प्राप्त हुई है। यथोचित समय पर हैमिल्टन ने इसका उत्तर क्रोध से, किन्तु वाक्-पटुता

और परिस्थित्यनुसार दिया, जिसमें उसने सब आरोपों को मिथ्या बतलाया।

दोनों मे मेल-जोल पैदा करने की कोशिशे जारी रही। उन्होंने चतुरता-पूर्ण भाषा मे दोनो व्यक्तियों से अनुरोध किया कि उन्हें सामान्य हितो को दृष्टि मे रखते हुए अपने मत-भेदो को भुला देना चाहिए। उनके उत्तर निराशाजनक थे। उनसे यह जाहिर होता था कि उनके स्वभावों मे क्रूरता भरी हुई है। जैफर्सन ने अपने आरोपों को दुहराया और साथ ही साथ नए आरोप लगाए। हैमिल्टन ने सारा दोष जैफर्सन के मत्थे मढ़ा। उसने रिपब्लिकनों के विरुद्ध अपना आन्दोलन बंद करने से इन्कार कर दिया। वाशिंगटन इस से अधिक और कर ही क्या सकते थे, सिवाए इसके कि उन्हे प्रेरणा करते कि वे एक दूसरे के प्रति सहिष्णुता के भाव रखें और जैफर्सन को मनाते कि उसे राज्य-सचिव के पद से निवृत्ति पाने की बात नही सोचनी चाहिए। इन दोनो में से किसी की भी सेवाएं वह खोना नही चाहते थे, क्योकि वे दोनों दुर्लभ योग्यता के व्यक्ति थे, जिनकी सलाह उनके लिए अनिवार्य थी। हो सकता है कि उन्होने यह भी महसूस किया हो कि यदि उन्होंने उन्हें अपने पर छोड़ दिया, तो वे पहले की तरह सक्रिय तो होंगे ही, किन्तु पहले से अधिक तेज और सावधान हो जायेंगे। और शायद यह वाशिंगटन को सूझा भी कि इन पदों पर आसीन वे किसी हद तक एक दूसरे को सतुलन में रखते है। ऐसे 'मन्त्री-मण्डल' मे जिसमें जैफर्सन नही होगा, हैमिल्टन को अपनी नीतियों का विस्तार करने मे प्रोत्साहन मिलेगा। इससे इस युक्ति को अधिक बल मिलेगा कि राज-तन्त्र बनने की तैयारियां हो रही है। वाशिंगटन इस युक्ति को गम्भीरता से नही लेते थे। एक वार जब सन् १७८३ मे सेना-अधिकारियों के एक समुदाय ने उन्हे यह संकेत किया कि वह उनकी सहायता से सयुक्त-राज्य के बादशाह बन सकते है, तो उनके दिल में कुछ-कुछ चोट पहुची और सम्भवतः वह चकरा भी गए। हमारे पास कोई ऐसी चीज नही है, जिससे यह प्रगट हो कि वह

अपने लिए अथवा किसी और अमेरिका-वासी के लिए इस प्रकार की योजना को चित्य समझते थे। ऐसा जान पड़ता है कि जैफर्सन के विपरीत वह इस बात मे कोई हानि नहीं देखते थे कि सविधान के अधीन सिद्धान्त-रूप से राष्ट्रपति अनेक बार पुनः निर्वाचित हो। किन्तु यदि राज-तन्त्र के सदेह हो, तो वह उन्हे दूर करने के लिए उद्यत है। जहां तक हैमिल्टन को हटा कर 'मन्त्री-मण्डल' के निर्माण का प्रश्न था, उनकी राय यह थी कि इससे रिपब्लिकनों को हैमिल्टन की पद्धति का अन्त करने का प्रोत्साहन मिलेगा। वाशिगटन का विचार था कि इस पद्धति ने अपनी यथार्थता को सिद्ध कर दिया है। इसके अतिरिक्त, यदि हैमिल्टन को वर्गीय और व्यावसायिक पक्षपात रखने वाला माना भी जाए, तो वही बात जैफसन में लागू होती थी, क्योंकि उसने अपने इस इरादे की घोषणा की थी कि वह हर हालत मे दक्षिण का समर्थन करेगा।

सक्षेप मे, वाशिगटन इस परिणाम पर पहुँचे कि उन्हें अपने कार्यालय-अध्यक्ष बनाए रहने चाहिएं और उन्हे (कर्तव्य-भावना को सामने रखते हुए) राष्ट्र-पति बना ही रखना चाहिए। (यह बिल्कुल स्पष्ट था कि निर्वाचन-कर्ता इन्ही को ही १७९२ में चुनेंगे—यह और बात है कि वह उनसे प्रार्थना करें कि उन्हे न चुना जाय)। यदि उनकी यह अभिलाषा थी कि दोनों विरोधी गुट झगड़-बाजी को बंद करे, तो सम्भवत इससे उन्हे व्यंग्यात्मक संतोष मिला होगा कि वे दोनो ही उनकी आवश्यकता महसूस करते है। जैफर्सन और हैमिल्टन दोनों ने ही (उनके साथ रैडाल्फ, मैडीसन तथा अन्य लोगों ने भी जो उनके निकट थे) उनसे प्रार्थना की कि उन्हे राष्ट्र के प्रति अपना कर्तव्य निभाना चाहिए। इस प्रकार एक वार फिर उन्हें और उनके साथ जान एडम्ज को चार-वर्ष के लिए राष्ट्रपति के अकेले वैभव-युक्त आसन पर बिठा दिया गया।

द्वितीय-प्रशासनः १७९३-१७९७

नहीं कह सकते कि वाशिगटन ने इस बात का अनुमान लगाया या नही—उन्हें अपने दूसरे प्रशासन-काल में जितनी अधिक आलो-

चना का शिकार होना पड़ा, उतने वह सारे जीवन में कभी नहीं हुए। राष्ट्रपति की हैसियत में जहाँ उन्हे सम्पूर्ण देश में दलबन्दी के कारण चित्त में व्यग्रता बनी रही, वहाँ उन्हे शासन के अन्दर की दलबन्दी ने विशेष रूप से अशान्त बनाए रखा। अब जबकि विदेशी-नीति-सम्बन्धी गम्भीर प्रश्नों के कारण देश में मत-विभिन्नता पैदा हो गई थी, तो यह झगड़े अधिक जोर-शोर से होने लगे।

वाशिंगटन के सन् १७८९ के प्रथम उद्घाटन के थोड़े ही अरसे बाद फ्रांस में क्रांति का आरम्भ हुआ। सन् १७९२ की शरद् में जबकि वाशिंगटन हैमिल्टन और जैफर्सन में आपसी समझौते कराने का प्रयत्न कर रहे थे, फ्रांस ने अपने आप को गणतन्त्र-राज्य घोषित कर दिया। समवेदनापूर्ण अमरीकियों की नजरों में यह संयुक्त-राज्य अमेरिका के उदाहरण का अनुसरण था, यद्यपि इसके द्वारा अफसोसनाक ज्यादतियां हुईं। फ्रांस की 'मानवाधिकारों' की घोषणा जैफर्सन की स्वतन्त्रता-सम्बन्धी घोषणा की वंशक्रमागत थी। इस प्रकार इस समय संसार में केवल अमेरिका ही प्रजातान्त्रिक गणतन्त्र नही था, फ्रांस भी उसके पद-चिह्नों पर चल रहा था। किन्तु मार्च सन् १७९३ में, वाशिंगटन के दूसरे उद्घाटन के कुछ ही समय पश्चात्, फ्रांसीसियो ने अपने पहले बादशाह, लुई १४ को फांसी के तख्ते पर चढ़ा दिया और ब्रिटेन को भी उन देशों की सूची में शामिल कर लिया जिनके साथ फ्रांस की युद्ध की स्थिति थी।

यह समय वस्तुत नवीन राष्ट्र अमेरिका के लिए संकट का था। उसके लिए तटस्थता को बनाए रखना कभी भी सरल नहीं रहा है। वास्तव में उसके सम्पूर्ण इतिहास में योरूप की बड़ी २ लड़ाइयो में तटस्थता असंभव सिद्ध हुई है। सन् १७९३ में स्थिति असाधारण रूप से तनाव-पूर्ण और नाजुक थी। इधर फ्रांस अमेरिका का भूतपूर्व संमित्र था। यार्क टाऊन मे प्राप्त विजय के कारण जो कृतज्ञता की भावना अमेरीका के लोगों पैदा हुई थी, उसने उनमे यह भावना भरी कि नई दुनिया (अमेरिका) को गणतन्त्र की रक्षा के लिए पुरानी दुनिया का साथ देना ही चाहिए। ऐसी

ही प्रेरणा उन्हें उन निश्चित दायित्वों के कारण मिली, जो फ्रांस के साथ समित्रता की शर्तों की वजह से संयुक्त-राज्य पर आ कर पड़े थे। अब जबकि उसका संमित्र, समानता-प्रेमी फ्रांस, अत्याचारी ब्रिटेन के साथ, जो अमेरिका का भूतपूर्व शत्रु था, उलझ गया, तो यह कैसे हो सकता था कि वह (अमेरिका) अपनी अधिमानता प्रगट न करे ?

दूसरी ओर ब्रिटेन के साथ अमेरिका के अधिक घनिष्ट सम्बन्ध थे। स्वतन्त्रता का युद्ध छिड़ने तक, अमेरिका के उपनिवेश, ब्रिटेन के समान ही फ्रांस को अपना शत्रु मानते आए थे। स्वतन्त्रता प्राप्ति का अर्थ यह नहीं था कि ब्रिटेन के साथ सम्पूर्ण सम्बन्ध ही टूट जाए। अनेक अमरीकियों के लिए (जिनमें हैमिल्टन प्रमुख था) जार्ज तृतीय और विलियम पिट का देश, अपने सब दोषों के रहते हुए भी, एक निकट सम्बन्धी की तरह था। अमेरिका का बहुत सा समुद्र-पार व्यापार ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत देशों से था। यदि इस व्यापार का सिलसिला बीच में टूट जाए, तो हैमिल्टन की राजस्व-पद्धति चकनाचूर हो जाती थी। दूसरी बात यह कि अमेरिका का गणतन्त्रवाद योरूप के गणतन्त्रवाद से बिल्कुल भिन्न तरीकों पर प्रस्थापित हुआ था। योरूप में इसे लाने के लिए खून की नदियां बहीं थी और तब जाकर क्रांन्ति आई थी। अमेरिका में 'टोरी' विचार-धारा रखने वाले लोगों को केवल तारकोल से पोत दिया गया था और उन पर पंख चिपका दिए गए थे। फ्रांस के रईस और कुलीन लोग, उस देश के बादशाह के समान, फांसी के तख्ते पर लटकाए गए थे। वाशिंगटन का प्रिय मित्र, लेफायट, जो कुछ काल तक फ्रांस के नेताओं में से एक था, सन् १७९२ में अपमानित होने पर आस्ट्रेलिया के एक कारागार में डाल दिया गया। यह बन्दी-गृह एक संदिग्ध रूप से पावन स्थान था, जहां वह चार साल तक पड़ा सड़ता रहा। इस कैद के कारण वह अपने बहुत से साथियों से अधिक भाग्यवान् निकला, क्योंकि वह फांसी पर चढ़ने से बच

गया। वाशिंगटन की दृष्टि में—जिसमें कि उनके आपस में लड़ने-झगड़ने वाले सलाहकार भी एकमत थे—अमेरिका के लिए स्पष्ट मार्ग यह था कि वह तटस्थ बना रहे। अतः उन्होंने इस नीति की तुरंत सरकारी रूप से घोषणा कर दी। पर उन्होने फ्रांस के विचारों का आदर करते हुए (और जैफर्सन के विचारों का भी, जिसने इस बात का अनुरोध भी किया था) उन्होंने अपने दस्तावेज में 'तटस्थता' शब्द का प्रयोग नहीं किया। इसके अलावा उन्होंने, फ्रांसीसी सरकार के मन्त्री, नागरिक जैनेट, के स्वागत की तैयारिया करके एक प्रकार से फ्रांस की नई सरकार का अनुमोदन किया। अत फ्रांस की नई सरकार के बारे में इतनी बात असंदिग्ध और निश्चित थी। बाद में कुछ समय तक अमेरिका में क्रोधपूर्ण उपद्रव की स्थिति रही, क्योकि अमेरिका भले ही सरकारी रूप मे तटस्थ हो, किन्तु व्यक्तिगत रूप से अमेरिका-वासी तटस्थ नहीं थे। उन्होने फ्रांस में क्रांति फूटते ही इसका पक्ष लेना आरम्भ कर दिया था। अब वह उत्साह से एवं आश्चर्यजनक मात्रा में उल्लसित हो उठे थे। फ्रांस के पक्ष के लोगों ने टाम पैन की पुस्तक 'मनुष्य के अधिकार' को बाइबल के समान माना ; धनी लोगों के शासन की तीव्र निन्दा की और स्वतंत्रता के लिए हर्ष के नारे लगाए। उन्हों अपने अपने प्रजातान्त्रिक क्लब बनाए और जब जेनैट अमेरिकन मंच पर आया, तो उसका हृदय से स्वागत किया। 'अंग्रेजों के पक्ष के लोगों' ने इस सब को भय और घृणा से देखा और उन्होंने अपने विरोधियों को विनाशकारी, उन्मत्त व्यक्ति कह कर उनकी निन्दा की।

डेढ़ शताब्दी के अन्तर पर भी इन घटनाओं के ठीक स्वरूप को देखना अथवा वाशिंगटन ने उन में कितना भाग लिया—उसे ठीक २ आंकना कठिन लगता है। कट्टर पंथियों को छोड़ कर वह सब फैड्रलिस्टों के लिए एक वीर-पुरुष और राष्ट्र के प्रतीक थे। उनके नाम की प्रतिष्ठा सब वाद-विवादों में दूसरों पर प्रभाव डालने के लिए अन्तिम हथियार थी। मर्यादा में रहने वालों को

छोड़ कर वह सब गणतन्त्रवादियों के लिए एक कांति-हीन योद्धा थे। उनकी दृष्टि में वह फैडूलिस्ट लोगों की योजनाओं तथा कुमन्त्रणाओं का जाने-अनजाने में मूर्त्त-रूप थे। सन् १७९३ में, अपने लम्बे जीवन-कार्य में प्रथम बार, वाशिंगटन खुली और निरन्तर आलोचना के शिकार बने। सन् १९८९ में अमरीकियों ने ('गौड सेव आवर ग्रेशस किंग' की तान पर) यह गाया था— 'गाड सेव ग्रेट वाशिंगटन' (परमात्मा महान् वाशिंगटन की रक्षा करे)। सन् १७९३ में गणतन्त्रवाद के पोषक पत्रों में वे एक दूसरे को स्मरण करा रहे थे कि वाशिंगटन कोई देवता नहीं हैं, बल्कि गलतियां करने वाले एक मानव है, जिन्होंने अपने को 'दरबार के खुशामदी अनुचरों' तथा 'कुम्भी जैसे छोटे शासकों' से घेर रखा है। दो वर्ष बाद फिलेडेल्फिया के एक पत्रकार ने वाशिंगटन को ऐसा व्यक्ति बताया 'जो राजनैतिक रूप से सठिया गया है' और जो 'अत्युद्धत और निष्ठुर शासक है।' उसी पत्रकार ने १७९६ के अन्त में लिखा कि 'यदि कभी कोई राष्ट्र किसी व्यक्ति द्वारा भ्रष्ट हुआ है, तो निस्सन्देह अमेरिका राष्ट्र वाशिंगटन द्वारा हुआ है।'

किन्तु समकालीन टिप्पणियां अधिक परिमाण में अपने लहजे मे वाशिंगटन के प्रति अधिक आदरपूर्ण थीं। तो भी ये उदाहरण उस युग के भावों के माप-दण्ड है। गणतन्त्र-वादियों ने महसूस किया कि प्रमुख राष्ट्रपति एक दलीय सरदार बनता जा रहा है और निस्स्वार्थ देशभक्ति के चोले में फ़ैडूलिस्ट अंग्रेजों के हाथों मे खेल रहे हैं। वह यह मानते थे कि फ्रांस का व्यवहार न सिर्फ एक पहेली है, वल्कि निन्दनीय भी है। उदाहरण के लिए जैनेट ने अपने व्यवहार में इस क़दर गंवारूपन प्रदर्शित किया कि जैफर्सन को इस बात मे वाशिंगटन का समर्थन करना पड़ा कि फ्रांस से उसे वापस बुलाने की मांग की जाए। किन्तु, कुछ भी हो, वे ब्रिटेन की अपेक्षा फ्रास को अधिक चाहते थे, क्योंकि उन्हे अतीत की अपेक्षा भविष्य का अधिक ख्याल था। वे देख रहे थे कि अमेरिका अपने सच्चे मित्र के प्रति तो उदासीन है और जो उसका वास्तविक शत्रु है उसके प्रति

उसमें आदर की भावना है। उन्होंने जब सन् १७९४ में यह सुना कि वाशिंगटन, एक प्रसिद्ध फेड्रलिस्ट और अंग्रेजो के प्रशसंक, जान जे को लन्दन इसलिए भेज रहे है, ताकि शेष बचे-खुचे चन्द भेद-भावों के सम्बन्ध में समझौते की बात चलाई जाय, तो उन्हे बहुत क्रोध आया। उनके सबसे बढ़ कर सन्देह मार्च, १७९५ मे, सम्पुष्ट हुए जब उस समझौते के विवरण अमेरिका मे पहुँचे, जिन पर कि जे ने हस्ताक्षर किए थे।

लोगों को ऐसा लगा कि जे ने अमेरिका के अधिकारों को दृढ़ता पूर्वक मनवाने की बजाय अंग्रेजों के आगे विनीततापूर्वक मस्तक झुका दिया है। यह सच है कि इस समझौते के अनुसार ब्रिटेन सरकार ने वचन दिया कि वह अमेरिका के पश्चिम मे स्थित अपनी फौजी छावनियों को, जहाँ से वे लोग इण्डियनो को अमेरीकियो के विरुद्ध भड़काया करते थे, खाली कर देगी। किन्तु गिनती में केवल यही एक महत्वपूर्ण रियायत थी, जो उन्हे मिली। इस विषय में भी लोगों का यह कहना था कि आखिर इस समझौते के द्वारा ब्रिटिश सरकार केवल अपने उस वायदे को पूरा कर रही है, जो उसने दस वर्ष पूर्व किया था। इसे छोडकर शेष जितनी रियायतें थीं, वे अमेरिका की ओर से ब्रिटेन को दी गई थी। मजेदार बात यह कि कई महत्वपूर्ण मामले भविष्य में बातचीत के लिए छोड़ दिए गए थे। अतः रिपब्लि-केन विपक्षियों का यह आरोप था कि अमेरिका में ब्रिटेन के प्रशंसक अपने देश के जन्मसिद्ध अधिकारों को बेच रहे है और जे देश-विद्रोही है (उन्होने उसका कागज का बुत बना कर उसे दियासलाई दिखाई थी); फैड्रलिस्ट गुण्डे हैं; 'वाशिगटन राजनैतिक क्षेत्र मे बगुला-भक्त' है; वह राष्ट्र का वास्तविक पिता नही, 'सौतेला पिता' है। जे द्वारा किये गये समझौते पर इस प्रकार का लडाई-झगड़ा सैनेट द्वारा दस्ता-वेज के सम्पुष्ट होने और वाशिंगटन के हस्ताक्षर होने के बहुत काल बाद तक, सन् १७९५ के वर्ष मे और १७९६ मे, अनेक मासों तक चलता रहा। किन्तु यह हल्ला-गुल्ला सब बेकार गया, क्योकि समझौता अमल मे आ गया और इस प्रकार समर्थन के कारण जे का सिर ऊंचा हुआ।

दूसरी तरफ वाशिंगटन ने अपने फ्रांस के वर्जीनिया-वासी गणतन्त्रवादी दूत, जेम्ज मनरो, का तिरस्कार करते हुए इसलिए उसे वापिस बुला लिया, क्योंकि वह फ्रांसीसियों को यकीन नहीं दिला सका था कि जे द्वारा किया गया समझौता समूचे अमेरिका की मरजी से हुआ था, न कि केवल फैड्रलिस्ट दल की इच्छा से।

ये विदेश-नीति के सम्बन्ध में विचार थे, जिन्हें गणतन्त्रवादी वाशिंगटन के द्वितीय शासन-काल में व्यक्त किया करते थे। देश में उन्होने फैड्रलिस्ट की विद्वेषपूर्ण नीतियों का एक और साक्ष्य ढूंढ़ निकाला। यह हैमिल्टन का उच्छुल्क-कर (मद्य-कर) सम्बन्धी कानून था, जिसे जैफर्सन ने 'घृणित-रूप से अहितकर' कहा। इसके विरुद्ध रोष की आग इस कदर भड़की कि सन् १७९२ में वाशिगटन ने कड़े शब्दों में इसकी घोषणा करके इसे सबल बनाने का प्रयास किया। दो वर्ष बाद हैमिल्टन की इस सूचना से प्रेरणा पाकर कि पश्चिम पैनसिलवेनिया के 'मद्य-कर विद्रोही' संघ की सुरक्षा को खतरे में डाल रहे है, उन्होंने एक बहुत बड़ी मिलिशिया बुलाई और सम्मिलन-स्थान पर उनका निरीक्षण करके उन्हें गड़बड़ी वाले स्थान पर भेज दिया। वहाँ किसी प्रकार की लड़ाई नही हुई, क्योंकि गणतन्त्रवादियो के कथनानुसार-वहाँ वास्तव में कोई विद्रोह था ही नही, केवल हैमिल्टन द्वारा अपना मनोरथ सिद्ध करने के लिए एक अवास्तविक वस्तु की कल्पना की गई थी। डेढ सौ पैनसिलवेनियन पकड़ लिए गए, जिनमें से दो को मौत की सजा मिली। वाशिंगटन ने बाद मे उन्हे माफ कर दिया। किन्तु ऐसा लगता है कि हैमिल्टन ने उन्हें अपने विचारों का बना लिया। मैडीसन की राय मे यह तमाशा इसलिए किया गया था कि प्रजातान्त्रिक सभाओं को विद्रोह के घृणित कार्य से सम्बद्ध किया जाए और कांग्रेस में गणतन्त्रवादियों का सम्बन्ध इन सभाओं के साथ जोड़ दिया जाये, ताकि राष्ट्रपति दूसरे (फैड्रिल) दल के प्रमुख नेता नजर आएं। जैफर्सन ने एक वर्ष पहले राष्ट्रपति से कहा था कि हैमिल्टन का यह इरादा है कि उन्हें 'राष्ट्र की प्रमुखता से नीचे उतार कर एक दल का प्रमुख

बनाया जाय ।' वाशिंगटन जब इस सीमा तक चले गए कि उन्होंने नवम्बर, १७९४ में अपने कांग्रेस को दिए गए वार्षिक भाषण में विद्रोह का आरोप 'कुछेक स्वयं-निर्मित सभाओं' पर लगाया, तो मैडीसन के विचार मे 'उन्होंने सम्भवतः अपने राजनैतिक जीवन में सब से बड़ी भूल की ।'

उस समय की घटनाओ के विषय में गणतन्त्रवादी क्या विचार रखते थे, उसका हमने जिक्र किया है । इस बारे में हमे यह देखना है कि वाशिंगटन का अपना दृष्टिकोण क्या था ? (यह निश्चित है कि) वह न तो अंग्रेजों के पक्षपाती थे और न फ्रांसीसियो के। उनकी नजरों में यह इस प्रकार से स्वतन्त्रता की लड़ाई का विस्तार ही था, किन्तु इसे बिना युद्ध के लड़ा जाना चाहिए था । अमेरिका के दायित्व को प्रमुख खतरा बाहर से था, क्योंकि अभी तक अमेरिका में, लज्जास्पद मात्रा में, प्रभावशाली आत्म-शक्ति की कमी थी । अमेरिका अभी न तो पूर्णतया स्वतन्त्र था और न ही परिपक्व था। किसी भावना प्रधान नाटक की किशोर-नायिका की तरह, अमेरिका विपुल सम्पत्ति का अधिकारी था । इसके नकली अभिभावक इस बात के लिए कोशिश कर रहे थे कि उस किशोरी को निजी सम्पत्ति से वंचित कर दिया जाए—या तो विवाह के लिए विवश करके और या जरूरत पड़ने पर उसे मौत के घाट उतार कर।

इन स्वत नियुक्त अभिभावकों मे से फ्रांस अधिक खतरनाक था । ब्रिटेन का रवैया रूखा और तिरस्कारपूर्ण था । साथ ही वह अपनी ही शैली में तटस्थता-सम्बन्धी अधिकारों को ठुकराया करता था । किन्तु अमेरिका मे उस समय इतनी शक्ति नही थी कि वह ब्रिटेन को चुनौती दे सके । उसका उद्देश्य था व्यापारिक सम्बन्धों का सरक्षण और सुधार, अंग्रेजी सेना को पश्चिमी किलों से निकलवाना, निकट के वायदो से बचना और सामान्य-रूप मे समय को किसी न किसी तरह विताना । यद्यपि वाशिंगटन जे के कार्य से निराश थे, फिर भी वह इस बात को जानते थे कि अमेरिका इतना निर्बल है कि उसके लिए कोई चमत्कार दिखाना सम्भव नही ।

जहां तक फ्रान्स का सम्बन्ध है, खतरा अधिक सूक्ष्म था और इसलिए उसका मुकाबला करना अधिक कठिन था। वाशिंगटन ने 'तटस्थता' पर बल दिया, फ्रांसीसी 'मैत्री-पूर्ण तटस्थता' पर जोर देते थे। उन्होंने वर्तमान समित्रता के समझौते का आश्रय लेना इसलिए पसन्द नहीं किया, क्योंकि वे संयुक्त-राज्य के साथ पूर्व सम्बन्धों की अस्पष्टताओं से लाभ उठाने की आशा रखते थे। उन्हें रसद मिलती थी। इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि वे अमेरिका को लुटेरे-पोतों का और सम्भवतः कैरिब्बीन तथा पृष्ठदेश में साम्राजीय साहसिक कार्यों का अड्डा बना सकते थे। ये दोनों सम्भावनाएँ सक्रिय-रूप से जैनेट के ध्यान में थी और, अपने उत्तराधिकारियों की ही तरह, उसने यह मान लिया था कि वह भलीभांति समर्थन पाने के लिए अमेरिका की क्रान्तिकारी भावनाओं पर भरोसा रख सकता है। उसे आशा थी कि यदि वाशिंगटन और फैड्रिल विचारों के लोग कभी रास्ते में रोड़े बनें भी, तो फ्रान्स उनसे आगे जाकर अमेरिका-वासियों तक अपनी बात पहुंचाने की चेष्टा करेगा। वस्तुतः सन् १७९६ आने पर अमेरिका में ठहरे हुए फ्रान्सीसी कारिन्दों ने चुनावों में गणतन्त्रवादियों की जीत के लिए ऐड़ी से चोटी तक का जोर भी लगाया।

दलों के षडयन्त्रों के कारण वाशिंगटन की समस्याएं जटिल बन गईं। हैमिल्टन जान-बूझ कर, बिना सोचे-समझे, ब्रिटेन के कूटनीतिज्ञ प्रतिनिधि को अपने भेद बता दिया करता। दूसरी ओर गणतन्त्रवादी (यद्यपि इस में जैफर्सन इतना दोषी नहीं था) फ्रान्स को अपने सम्पूर्ण समित्र के रूप मे मानते थे। यद्यपि जैफर्सन ने सन् १७९३ के अन्त में और हैमिल्टन ने सन् १७९५ मे अपने-अपने पद से इस्तीफा दे दिया, फिर भी उनकी नीतियों का राष्ट्रीय मामलों , भाव पड़ता रहा। हैमिल्टन विशेष रूप से सरकारी मामलों में प्रभावी रहा। यह मानना पड़ेगा कि यह अंशतः वाशिंगटन के निमन्त्रण के कारण था। उसने ऐसा इन्तजाम किया था कि न्यूयार्क मे विधि-व्यवसाय को करते हुए भी वह मन्त्रीमन्डल

का एक अदृश्य सदस्य सा बना रहे। जैफर्सन का उत्तराधिकारी राज्य-सचिव, एडमण्ड रैंडाल्फ, विचित्र परिस्थितियों में सन् १७९५ में पद-च्युत कर दिया गया। गलत या सही, वाशिंगटन का यह विचार था कि वह जे के समझौते के विरुद्ध फ्रान्स के मन्त्री से साज-बाज करने का अपराधी है।

किन्तु इन षडयन्त्रों, खुशामदों और स्पष्ट दुर्वचनों के बावजूद, वाशिंगटन अपनी नीति पर अड़े रहे। हम इस परिणाम पर पहुचते हैं कि बाद के इतिहास की रोशनी में—वह रोशनी जो उन्हे उस समय प्राप्त नही थी—वह सही थे। और अति-गणतन्त्रवादी जो, यदि उनका बस चलता, अमेरिका को फ्रान्स के दायरे में घसीट ले जाते, वे गलत थे, चाहे उनके आशय उचित ही क्यों न हों। वाशिंगटन समझदार और साहसी थे। यदि कभी वह आपे से बाहर भी हो जाते 'थे', तो भी वह अपनी पकड़ को नही खोते थे। यह भी नही कह सकते कि उनकी कूट-नीति परिणामों के लिहाज से सर्वथा निषेधात्मक थी। जे के द्वारा किए गये समझौते के अल्प लाभों के बदले में इससे भी बढ़िया लाभ स्पेन के साथ १७९५ में समझौता करने में मिले, जिसे थामस पिकने ने सम्पादित कराया था। इस समझौते के अनुसार मिसीसिपी नदी में (जिसका निकास स्पेन के इलाके में होता था) स्वतन्त्रता-पूर्वक पोत चलाने के अमरीकी दावे को स्वीकार कर लिया गया। साथ ही उसके इस दावे को भी मान लिया गया कि उसकी पश्चिमी सीमा मिसीसिपी नदी है। उसी साल ओहियो क्षेत्र मे जनरल एथनी वेन की निर्णायिक जीत के बाद इण्डियनों के साथ एक समझौता हुआ जिसके फलस्वरूप उत्तर-पश्चिम सीमा अधिक सुरक्षित हो गई। वाशिंगटन ने अपने विदाई-भाषण में इस बात को दोहराया—'मेरे राष्ट्रपति-काल मे मेरा प्रधान लक्ष्य यह रहा है कि मैं कोशिश करूँ कि हमारे देश को इतना समय मिल जाये कि उसकी स्थिति निश्चित हो जाये, उसकी आधुनिक सस्थाएं परिपक्वावस्था में आ जायें और वह इस कदर निर्विघ्नता-पूर्वक प्रगति करे कि उसे उस हद तक

शक्ति और स्थायित्व प्राप्त हो जो उसे अपनी सम्पदा को भली-भांति वश में रखने के लिए आवश्यक है।'

इस प्रकार की परिस्थितियां उपलब्ध होने पर देश प्रगति किए बिना नहीं रह सकता था। वाशिंगटन ने उन्नति और समृद्धि के प्रमाण अपने चारों ओर अपनी आंखों से देखे। उनके दूसरे प्रशासन-काल के अन्त तक तीन नए राज्य—वर्मोन्ट, कैंटकी और टैनेसी—संघ में शामिल हो गए और शेष की भी उनके पद-चिन्हों पर चलने की आशा बंध गई। शुल्क-द्वार वाली सड़कें बन रही थी। पेनसलेवेनिया में कोयले के निक्षेप मिले। यद्यपि पोटोमिक कम्पनी की प्रगति की रफ्तार धीमी थी, फिर भी वह अभी तक जिन्दा थी। इसी प्रकार अल्प-सुधार योजनाए भी चालू थी। संघानीय राजधानी (जिसमें कि वाशिंगटन गहरी दिलचस्पी ले रहे थे) की नींव महत्ता और क्षुद्रता के मिश्रित वातावरण में रखी जा रही थी—ऐसा वातावरण कि जिसने बाद में सदा के लिए अपनी छाप छोड़ी।

इन महत्त्व-पूर्ण कामों की पूर्ति के लिए वाशिंगटन को बहुत सा श्रेय मिलना चाहिए-यद्यपि उन्होंने कभी इसकी अभ्यर्थना नहीं की, क्योंकि अपनी विदेश-नीति में जो उन्होंने एकरूपता दिखाई, यदि उस में कोई न्यूनता रह जाती, तो उनके महान् कामों में से एक-भी सम्पादित न हो सका होता। जे के समझौते के पारित होते ही फ्रांसीसी विरोध अधिकाधिक तीव्र होता चला गया, यहां तक कि अमेरिका और फ्रास के बीच जो तनाव पैदा हुआ वह लगभग असह्य हो गया। जान क्विन्सी एडम्ज़ ने, जो उपराष्ट्रपति का सुपुत्र था, हालैण्ड से (जहां वह अमेरिका का राजदूत था) सन् १७९५ के अन्त में लिखा—"यदि अब भी हमारी तटस्थता को सुरक्षित रखा जा सकता है, तो यह केवल राष्ट्रपति के कारण ही सम्भव हो सकेगा। उनके महान् चरित्र व सुख्याति, जिनके साथ उनकी दृढता और राजनैतिक निर्भीकता भी शामिल है, का वज़न ही इस वेगपूर्ण जल के प्रवाह को रोक सकते थे, जो अब भी

तीव्र कोप के साथ गड़बड़ी मचा रहा है और जिसकी गूंज अन्ध-महासागर के पार भी सुनाई दे रही है।"

यदि हम यह स्वीकार कर लें कि वाशिंगटन ने इन संकटपूर्ण सालों में यह दिखा दिया कि उनमें नेतृत्व के अद्भुत गुण थे, तो क्या यह सही है कि एक प्रमुख कार्यपालक की बजाय उन्होंने यह सब कुछ एक राजनैतिक दल फैड्रिल दल—के नेता के रूप में किया ? हमने देखा है कि अपने बहुत से समकालीन लोगों की तरह, वह दलों की उत्पत्ति अवांछनीय समझते थे। उनका मत था कि राष्ट्रपति को राजनैतिक स्पर्धाओं से ऊपर उठना चाहिए और सर्वाधिक महत्त्व की बात यह है कि वह सयुक्त राज्य में विधि और व्यवस्था स्थापित करना चाहते थे। गणतन्त्रवादियों के विरोध की तीव्रता उनके लिए विस्मय और कड़वाहट की चीज़ थी, यद्यपि, जब तक उनके आक्रमण हैमिल्टन तक सीमित रहे, उन्होने अपना संतुलन नही खोया। किन्तु दूसरे प्रशासन-काल में जबकि राजनैतिक वाद-विवाद बढ़े और उन पर भी नुक्ताचीनियों की बौछार पड़ने लगी, तो वाशिंगटन के विचार धीरे-धीरे कठोरता पकडने लगे। 'मेरे विचार में' जैफर्सन ने कहा, 'वह इन बातो को किसी भी आदमी से, जिसे मैं आजतक मिला हूं, अधिक महसूस करते है।' १७९३ मे मन्त्रिमण्डल की एक बैठक मे वाशिंगटन फूट पड़े कि फ्रैनो 'धूर्त' है, जिसका मुंह बन्द करना चाहिए। बाद में उसी वर्ष फ्रैनो के समाचार-पत्र का प्रकाशन तो बन्द कर दिया गया, किन्तु शेष गणतन्त्रवादी पत्रों ने अपने हमले जारी रखे। आलोचनाओं को सदा बुरा मानने के कारण तथा इस बात में तर्क-सगत रूप से विश्वास रखते हुए कि गणतन्त्रवादी अनुत्तरदायी और दुराशय-पूर्ण है, वाशिंगटन अन्ततोगत्वा फैड्रिलवादियो से इस बात मे सहमत हो गए कि उनकी विरोधी कोई दूसरी पार्टी नही, 'बल्कि दलबन्दी वाले लोग' है; वे 'विपक्षी' नहीं, जिनके हाथों मे एक दिन न्याय-संगत रूप से हकूमत की बागडोर आ सकती है, बल्कि वे इस प्रकार के विरोधी लोग है जिनके विचारों मे राज-

विद्रोह, षडयन्त्र और फ्रांस के लिए दीवानापन समाया हुआ है।' यही कारण था कि वह सर्वरूपेण गणतन्त्रात्मक सभाओं की निन्दा किया करते थे, यद्यपि इन मे से बहुत से अहानिकर राजनैतिक क्लब भी थे। इसी वजह से उन्होने अपने १७९८ में लिखे एक पत्र में यह क्रोधपूर्ण टिप्पणी की--"एक स्पष्ट घोषित प्रजातन्त्रवादी के सिद्धान्तों को बदलना ऐसा ही असंभव है जैसाकि एक काले हब्शी को बार-बार रगड़ कर सफेद बनाना।" यह भी लिखा कि इस प्रकार का आदमी 'अपने देश की हकूमत को उलटाने में कोई कसर उठा न रखेगा।' (यही कारण था कि) उन्होने अपना अन्तिम मंत्रिमंडल केवल फैड्रिलवादी लोगों को लेकर बनाया।

अब इससे आगे केवल एक ही कदम था—वह कदम जो उन्होंने संभवत अनजाने मे उठा ही लिया—अर्थात् वह इस बात को स्वीकार करे कि वह स्वय फैड्रिलवादी हैं। सन् १७९९ में, जो उनकी आयु का अन्तिम वर्ष था और जबकि उन्हें अपना पद त्यागे दो वर्ष हो चुके थे, उन्हें सानुरोध यह प्रार्थना की गई कि वह १८०० मे राष्ट्रपति के निर्वाचन के लिए खड़े हों। अनुरोध का आधार यह था कि सयुक्तराज्य अमेरिका गम्भीर संकट की स्थिति में है। उन्होने इस प्रार्थना को मानने से इन्कार कर दिया। उन का कहना यह था कि 'आजकल व्यक्ति की बजाय सिद्धान्त ही विवाद का विषय है और भविष्य में भी रहेगा।' आगे उन्होंने कहा--'यदि मै निर्वाचन के लिए खड़ा भी हो जाऊ, तो मुझे फैड्रिल-विरोधी पक्षों से एक वोट भी नही मिलेगा, और इसलिए मैं किसी और भलो-भांति समर्थित फैड्रिलवादी से अधिक दृढस्थिति में नही हूगा।' वह इस बात को मानने को तैयार नही थे कि गणतन्त्रवादी यथार्थ लोगों का ही दल है। किन्तु उन के पत्र समग्र-रूप से पढ़ने पर (जिसमें उन्होने 'किसी अन्य फैड्रिलिस्ट' का उल्लेख किया है) पता चलता है कि उन्होने अमेरिका की राजनीति के बदलते आधार को समझना आरम्भ कर दिया था।

'यदि इस समय वह अपने (राष्ट्र-पति के) पद पर आरूढ़ होते,

तो शायद वह अपने आप को फैड्रिलवादी कहलाने को तैयार न होते। उस समय वह इस बात का प्रतिपादन करते कि राष्ट्रपति को अपने आपको अलग रहने की कोशिश करनी चाहिए। निश्चय ही इससे उन पर कोई गम्भीर दोष नही लगता, किन्तु इस प्रश्न पर उन्होंने इस प्रकार की उच्चकोटि की तथा भविष्य-दृष्टा के उपयुक्त अक्षुब्धता प्राप्त नहीं की थी, जैसी कि उनके जीवनी-लेखकों ने उनमें देखी और उद्घोषित की। उस दशाब्दी को सर्वथा वाशिंगटन अथवा फैड्रिलवादियों की आँखों से देख कर ही हम इस बात में सहमत हो सकते है कि उन्होने राजनैतिक समीकार को न्यायोचित ढंग से संविन्यस्त किया।

अन्तिम कार्य निवृत्ति—

ये कई एक परिकल्पी बातें हैं। चाहे किसी अन्य बात में हमें संदेह ही क्यों न हो, इस बात में जरा भी शक की गुंजाइश नही है कि राष्ट्रपति-पद को छोड़ते हुए वाशिंगटन को अपार हर्ष हुआ। अनेक लोग उनसे आशा रखते थे कि वह तीसरी अवधि के लिए भी अपनी स्वीकृति दे देंगे। यह किसी से छिपा नही था कि यदि वह खड़े होते, तो सहज मे पुनः निर्वाचित हो सकते थे। किंचित् विद्वेषपूर्ण टिप्पणिया होते हुए भी, वह सर्वाधिक प्रशंसित अमेरिकन थे। किन्तु उन्होंने काफी, बल्कि काफी से भी ज्यादा, समय तक इस प्रतिष्ठित-पद को शोभा प्रदान की थी। उनके उत्तराधिकारी जान एडम्ज को, यद्यपि राष्ट्रपति का प्रतिष्ठित-पद मिलने से काफी खुशी हुई, किन्तु इस सम्बन्ध में उसे रत्ती भर भ्रम नही था कि किन विकट परिस्थितियो से उसे जूझना होगा। एडम्ज ने मार्च सन् १७९७ के उद्घाटन का वर्णन करते हुए अपनी धर्म-पत्नी को लिखा—'वस्तुतः यह एक गम्भीर दृश्य था, जिसने जनरल महोदय की उपस्थिति के कारण व्यक्तिगत रूप से मुझ पर अपना असर छोड़ा। उस समय जनरल महोदय का मुख-मण्डल प्रशान्त और दिन के प्रकाश के समान निर्मल और स्वच्छ था। ऐसा प्रतीत होना था कि जैसे वह मुझ पर विजय पाने का मजा ले रहे हों। मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मैं उन्हे यह

कहते हुए सुन रहा हूं—"अरे ! मै बाहर हूं और तुम अन्दर हो। देखें, हम में से कौन सबसे अधिक खुश रहेगा।" प्रतिनिधियों के सदन में इतनी अधिक भीड़ थी कि भवन के अन्दर सब जगह लोगों से खचाखच भरी हुई थी। मेरा विश्वास है कि इस भारी भीड़ में एक वाशिंगटन थे जिनकी आंखें जरा भी नहीं भीगी थीं।"

अन्य बड़े अवसरों पर वाशिंगटन का हृदय द्रवित हो उठता था—उदाहरण के लिए उस मौके पर जबकि उन्होने १७८३ में फ्रान्सिस टेवर्न में अपने अधिकारियों से विदाई ली थी। उस तरह के आंसू इस समय नहीं थे। उन्होंने अपनी डायरी में उपर्युक्त उद्घाटन के बारे में बस इतना ही लिखा—"आज भी कल की तरह ही दिन था। तापमान ४१ अंश था।"

इसका यह आशय नही कि अपना पद छोड़ते हुए उनके मन में उदासीनता की भावना थी, किन्तु असल बात यह थी कि उस समय कोई चीज और कोई आदमी उन्हें यह विश्वास नहीं दिला सकता था कि वह अमेरिका के लिए अपरिहार्य थे। उन्होने उन्हीं दिनों में अपना पैसठवां जन्म-दिवस मनाया। (या यों कहना चाहिए कि एक 'शोभा-युक्त मनोरंजन' द्वारा उनके लिए जन्म-दिवस-समारोह मनाया गया) जिसमें बारह सौ फिलेडैल्फिया-निवासी उन की सराहना के लिए अत्यधिक भीड़ में इकट्ठे हुए। उस समय उन्हें इस बात की आशा नहीं थी कि वह अधिक सालों तक अपना जन्म-दिवस मना सकेंगे। अतः जो थोड़े-बहुत वर्ष उनके जीवन के शेष थे, उन्हे वह माऊंटवर्नन पर ही रहकर व्यतीत करने की इच्छा रखते थे। उनका प्रौढ-जीवन बड़ा शानदार रहा। किन्तु बुढ़ापे एवं सार्वजनिक सेवा की मांग ने उनकी शक्तियों को बहुत हद तक क्षीण कर दिया था। उनके बहुत से पुराने मित्र परलोक सिधार गए थे। फेयरफैक्स परिवार में से केवल एक ही व्यक्ति वर्जीनिया वापस लौटा था। बैलवोयर खण्डहर बन चुका था और सैली फेयरफैक्स इंगलैण्ड से लौटी ही नहीं थी। लिफायट अपनी कैद से दुबारा छूट चुका था। वाशिंगटन ने अपनी सहज उदारता से

उसकी पत्नी की रुपये-पैसे से मदद की थी, पर वह महासागर की चौड़ाई जितने अन्तर पर था। अब महज उनकी माऊटवर्नन वाली जागीर ही शेष थी और मर्था की हर्षोत्पादक संगति तथा उनके कुछ तरुण सगे-सम्बन्धी बाकी थे।

यदि उनकी जीवनी को इतना ही सुन्दर और सुरुचिपूर्ण बनाया जा सकता जैसा कि कोई उत्तम नाटक हुआ करता है, तो हम वाशिंगटन पर (नाटक की तरह) धीरे से पर्दा गिरा सकते और उन्हे बुढ़ापे का शान्त व सुख-पूर्ण जीवन बिताते हुए छोड़ देते। किन्तु उनका जीवन इस प्रकार के ढांचे में नहीं ढला था। पर्दा नित्य वार-बार झटके के साथ ऊपर उठता ही रहा और हर बार ऐसा संगीत छिड़ता कि लोरियों से सुलाए गए उन्हे अचानक जगा देता। यही दशा फिर उनकी १७६८ मे हुई। एक प्रकार से यह उनका अपना ही दोष था। यदि वह देखने में बूढ़े लगते, तो उन्हें निजी जीवन बसर करने के लिए छोड़ दिया जाता। जब-जब वह अपने फार्म की देख-रेख कर रहे होते, महमान निवाजी मे लगे होते अथवा चिट्ठी-पत्रियों को निपटा रहे होते, तो वह पहले की तरह ही शक्तिशाली एवं ओजपूर्ण प्रतीत होते थे। वास्तव में, अब उनके पत्र अधिक उत्तेजना-दायक प्रतीत होते थे, संभवत. इसलिए कि अब वह अपने मन की बात अधिक खुल कर कह सकते थे। पहले ऐसी बात नहीं थी, क्योकि उस समय उन्हे अधिकाधिक सतर्कता घेरे हुए थी। जो भी हो, उन्हें सन् १७९८ मे पुन. सैनिक जीवन में दाखिल होने का आदेश दे दिया गया। फ्रांस का व्यवहार इतना हिंसक और उत्तेजनापूर्ण हो चुका था कि वह वस्तुतः अमेरिका के साथ युद्ध की स्थिति मे था। यह नौ-सैनिक युद्ध था। अमेरिका के पास कोई फौज नही थी, सिवाए उन स्थायी सैनिकों के जिन्हे सूक्ष्म-सेना-यष्टि के रूप मे वाशिंगटन ने कायम रखने की कोशिश की थी। अब उन पर सेना की भर्ती का काम डाल दिया गया और उन्हें कहा गया कि वह प्रधान-सेनापति का पद संभालें। इस दायित्व के विचार से ही उनका हृदय कराह उठा। जब हैमिल्टन ने भविष्यवाणी की थी

कि निकट भविष्य में उनका किसी दूसरे कार्य के लिए आह्वान होगा, तो वाशिंगटन ने उत्तर दिया था कि 'मैं अपने वर्तमान शान्ति-पूर्ण निवास-स्थान से अलग होते हुए उतनी ही हिचकिचाहट महसूस करूंगा जितनी कि अपने पुरखाओं की कब्रों की ओर जाते हुए।' जब राष्ट्रपति ऐडम्ज ने उन से पूर्व सलाह लिए बिना उन्हें प्रधान-सेनापति मनोनीत किया, तो उन्हें बहुत बुरा लगा। वह इस बात से चिंतित थे कि पहले की तरह ही उनके विरोधी उनके इस प्रकार से अधिकारपद पर लौटने पर या तो इसे उनकी महत्त्वाकांक्षा कहेंगे और या उनके विदाई भाषण को दृष्टि में रखते हुए उन्हें पाखंडी समझेंगे। जो भी हो, वह इस कर्त्तव्य से अपना मुंह नहीं मोड़ सकते थे। अपने कामों में त्वरित, बुद्धिमान् तथा अंतःकरणानुयायी वाशिंगटन ने प्रधान-सेनापति के रूप में अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया। पहले की तरह सर्व-व्यापी अलैक्जैण्डर हैमिल्टन, बिना विलम्ब के, उनके अधीन कार्य करने को उद्यत हो गया। उसने पीछे से चुपचाप हर प्रकार की व्यवस्था करनी आरम्भ कर दी और अपनी नियुक्ति इस प्रकार के पद पर करवाई कि जिस से वह वाशिंगटन का उपसमादेशाधिकारी बन सके।

यह घोर संकट का समय था, विशेष रूप से बिचारे जान एडम्ज के लिए। उसकी जगह वाशिंगटन होते, तो उनकी भी शायद उसी प्रकार निन्दा होती। किन्तु हम यह निश्चय-पूर्वक कह सकते हैं कि यदि वाशिंगटन एडम्ज की जगह होते, तो प्रशासन के संचालन में एडम्ज द्वारा की गई कुछ एक भूलों को न करते। यदि हम दोनों के राष्ट्र-पतित्व की सविस्तार तुलना करें तो इस बात का भली-भांति पता चल सकेगा कि वाशिंगटन में कहीं अधिक दृढ़ता और गम्भीरता थी।

किन्तु सन् १७९८ अथवा १७९९ में कोई लड़ाई नहीं हुई। परिणामतः वाशिंगटन का जीवन पहले की तरह सामान्यरूप से चलता रहा। इस प्रकार मास बीतते गए। उनकी डायरी की साधारण लिखावट चलती रही—गर्मी के दिन, ठण्डे दिन, वर्षा, बर्फ।

फिर सर्वेक्षण, घुड़सवारी, अतिथियों का आना, रात्रि-भोज, उनकी भतीजी बैंटो ल्यूइस की लडकी का उत्पन्न होना, इत्यादि। इसके बाद १३ दिसम्बर को डायरी की लिखावट समाप्त हो जाती है, केवल एक नोट में इतना दर्ज है कि तापमान कुछ कुछ तुषार के ताप तक नीचे उतर गया है। तब वस्तुत. पर्दा एक दम नीचे गिर पड़ता है।

वाशिंगटन को अभिशीत हो चुका है; उनका गला कष्ट दे रहा है। डाक्टर उनके शरीर में से रक्त निकालते है। फिर दुबारा खून निकालते हैं, पर सब व्यर्थ। १४ दिसम्बर की रात्रि के दस बजे वह आखिरी सांस लेते हैं और बिना किसी स्मरणयोग्य-अन्तिम कथन के (सिवाए उनके जो पार्सा वीम्ज ने उनके मरने के पीछे आविष्कृत किए)–उनकी जीवन-यात्रा समाप्त हो जाती है। दुख की बात यह कि उन्हें तत्कालीन बर्बरता-पूर्ण चिकित्सा के प्रति अपने जीवन को बलिवेदी पर चढ़ाना पड़ा, यद्यपि चिकित्सा करने वालों के हृदय मे उनके प्रति सद्भावना मौजूद थी।

यदि इनकी देखरेख इतनी प्राचीनतम चिकित्सा-पद्धति के अनुसार न होती, तो सभव था कि वह कुछ वर्ष और जिन्दा रह सकते। इस अर्से में वह संघानीय शासन को संघानीय राजधानी (जिसका नाम बाद मे वाशिंगटन के नाम पर रखा गया) मे स्थानान्तरित होते देखते, जिस से उन्हें प्रसन्नता होती; अथवा वह १८०१ में गणतन्त्रवादियो की जीत के बाद थामस जैफर्सन को राष्ट्रपति-पद पर आसीन होते देखते, जिनसे उन्हे अप्रसन्नता होती। समाचार पत्रों मे वह 'लुइसियाना परचेज' तथा द्वन्द्व-युद्ध मे हैमिल्टन की मृत्यु के बारे मे पढ़ते। इन खबरो से उन्हे खुशी भी होती और गमी भी। पर क्या उन्हे किसी और चीज की कामना होती? उनकी शताब्दी अपने अन्त पर थी और साथ ही उन्होने भी दुनिया से विदाई ले ली थी। उनकी मृत्यु के अवसर पर बृहद्, भ्रात-त्रस्त और समृद्ध अमेरिका के कोने कोने में अनेक सुवक्ताओं और लेखकों ने (जिन मे फ़ैनो भी था) उनकी प्रशंसा मे अपनी

बारे में विस्मय से जिक्र किया करते थे जो वह अपने फार्मों का दौरा करने के लिए पहना करते थे। वे यह भी बतलाते थे कि रात्रि के भोजन के समय वह अपनी पोशाक बदला करते थे। वह स्वयं विद्वान् नही थे, पर दूसरो की विद्वत्तापूर्ण बातों से अधीर नही हो उठते थे। चाहे वह कभी-कभी बात-चीत करते हुए अथवा चिट्ठी-पत्री लिखते हुए अप्रशस्त भाषा का व्यवहार कर भी लेते हों, किन्तु निकृष्ट लोक-तन्त्रवादी के मुहावरों का कभी उन्होने प्रयोग नहीं किया। परम्परा से प्राप्त दुर्लभ प्रतिवेदनो से निर्णय करने पर हम इस नतीजे पर पहुँचते है कि यदि कभी उन्होंने कसम खाई भी, तो खुशी के साथ नहा। (प्रसंगवश, यह कहानी कि उन्होने मानमाऊथ मे ली पर जबान-दराजी की, निराधार है)।

वाशिगटन मित्रों में प्रसन्न रहते और उन्हें प्रसन्न रखते थे, यद्यपि वे उनके साथ खुलते नही थे। जहां तक हम जानते हैं, उन्होने अपने समस्त जीवन में अपनी उम्र के किसी भी व्यक्ति को अपना लंगोटिया यार नही बनाया। वाशिगटन लिफायट से कोई बात छिपाते नही थे। इस फ्रान्सीसी की ओर लिखे गए पत्रों में अनूठी प्रफुल्लता पाई जाती है। उनका कैरोलीना के युवा स्टाफ-अफसर, जान लौरेन्स, के साथ विशेष स्नेह था। यह अफसर क्रान्तिकारी युद्ध में मारा गया था। किन्तु इन दोनों के साथ उनके सम्बन्ध पितृ-तुल्य थे या कम से कम चाचा के समान अवश्य थे।

हमारे युग के मुकाबले में वाशिगटन का जमाना मौन-चुप्पी का था। किन्तु यदि आप उनकी तुलना अपने समकालीन प्रमुख व्यक्तियों से करें, तो उनके तौर-तरीकों में भिन्नता स्पष्ट रूप से नजर आती है। यदि वाशिगटन 'आवेश-पूर्ण, छोटी-छोटी बातो को महसूस करने वाले, पार्थिव' है, तो पैट्रिक हैनरी अथवा आरोन बर सरीखे व्यक्तियो का तो क्या कहना, फ्रेंकलिन, जैफर्सन, मेडीसन और हैमिल्टन को हल्ला-गुल्ला करने वाला कहना चाहिए। विदेशी अवलोककों के निर्णयो को सुनिये। एक डैनमार्क निवसी जो १७८४ में माऊटवर्नन गया था, वाशिगटन के 'गुणो को परखना चाहता

था।' किन्तु सारे समय में वह इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि 'जनरल (वाशिंगटन) इतने उदासीन, सतर्क और अत्यनुवर्ती है कि उन से जानकारी प्राप्त करना दुःसाध्य था।' एक और योरुप-निवासी चार वर्ष पीछे उनसे मिला। उनके बारे में उसका यह कहना था 'शिष्ट-व्यवहार पाते हुए भी मुझे ऐसा लगा कि उनके अन्दर छिपी हुई निषेधक उदासीनता है जो मेरे मन को अच्छी नही लगी।' वास्तव में इसका कारण कई अशो मे उनकी लज्जाशीलता थी। अपने निकट परिचितों से वह शीघ्र घुल-मिल जाते थे। किन्तु हम इस धारणा को कभी स्वीकार नही कर सकते कि वह अपने जीवन के किसी भी काल में दूसरों को महज खुश करने वाले रहे हों। यह शायद हम उनके प्रति अन्याय करेंगे यदि हम नमूने के तौर पर इस बात का उल्लेख करें कि अपने जीवन के अन्तिम वर्षो में उन्होने 'अन्य देशीय' तथा 'राज-द्रोह' सम्बन्धी कठोर विधेयको की स्वीकृति दी जिससे यह नतीजा निकाला जा सकता है कि वह अपनी कठोर, रूढ़िवादी विचार-धारा में अलैक्जैण्डर हैमिल्टन को भी मात करते थे। अपनी बहुत पहले की जिन्दगी में, जब कि वह वर्जीनिया के सैनिक विभाग से छुट्टी पाने ही वाले थे, उनकी रैजमैण्ट के अधिकारी (जिनमें कुछ अवस्था मे उनसे बड़े थे) उन से दूर रहते हुए भी अपने युवा कर्नल की प्रशंसा किया करते थे। उनके मन में वाशिंगटन के लिए सच्चा सम्मान था, दिखावे का नही।

सक्षेप मे, वाशिंगटन को महज मानव का रूप देने की चेष्टा करना उनके व्यक्तित्व को झुठलाना है। इसमे यह भी खतरा है कि कही हम उनके व्यक्तित्व की सारभूत सच्चाई को ही न खो बैठें। इस बात से कोई इन्कार नही कर सकता कि उनके मानवीय गुणो के कारण ही संगमरमर डालने की वह प्रक्रिया हुई जिसने उन्हें एक स्मारक का रूप दिया। वस्तुत. इन गुणो के कारण ही यह प्रक्रिया सम्भव हो सकी। अतः यह कहना होगा कि वास्तविक व्यक्ति मे तथा उसके विषय में जो कहानियां रची गईं उनमे समान महत्त्वपूर्ण तत्व मिलते हैं।

इसे अभिव्यक्त करने की संक्षेपतम विधि यह है कि हम दोनों (अर्थात् व्यक्ति और कथाओं) को शास्त्रीय नाम दे, अथवा यह कहें कि दोनों ही अधिक विशिष्ट रूप से रोमन आकार-प्रकार के है। वाशिंगटन-साहित्य में बार-बार यह पढ़कर हम उकता जाते है कि वर्जीनिया के यह खेत-बगीचों के मालिक दूसरे सिनसिनेटस थे। किन्तु इस पुरानी उक्ति में अब भी बहुत वजन है। वास्तव में हम जितनी अधिक इसकी जांच करते है, हमें इन दोनों की आपसी समानता उतनी ही ज्यादा नजर आती है। अठारहवीं शताब्दी का अंग्रेज भद्र-पुरुष, चाहे वह अपने घर इंगलैण्ड में था, अथवा किसी वर्जीनिया जैसे उपनिवेश में था, वह दोहरी नागरिकता का अधिकारी होता था। वह अंग्रेज तो था ही, पर उसे समान रूप से रोमन नागरिकता के अधिकार प्राप्त थे। अपनी आकृति में भी वह रोमन ही लगता था। अठारहवीं शताब्दी के चित्र, जिनमें मुखाकृतिया बिना दाढी के हैं और जिनमें दृढता एवं पुरुषत्व झलकता है, अक्सर रोमन अर्द्धप्रतिमाओं से आश्चर्यजनक रूप से मिलते-जुलते है, और विलोमतः उस समय के पत्थर के स्मृति-अभिलेखो मे पुरानी दुनिया की झलक मिलती है। उदाहरण के लिए वेस्टमिंस्टर ऐबे के कुछ एक स्मारकों पर ध्यान दीजिए। रोब्रिलैक द्वारा निर्मित जैनरल वेड (१७४८) के स्मारक पर ये शब्द पाये जाते हैं—'सुकीर्ति की देवी जनरल के विजयोपहारों को काल के हाथों विनष्ट होने से बचा रही है।' उसी मूर्त्तिकार द्वारा निर्मित एडमिरल सर पीटर वैरन (१७५२) के स्मारक पर यह वाक्य खुदा हुआ मिलता है—'हरक्यूलीज इस एडमिरल की अर्द्ध-प्रतिमा को पादपीठ पर स्थापित करता है, जबकि नौ-परिवहन प्रशंसा और सन्तोप के साथ उसकी ओर देख रहा है।' एक तीसरा स्मारक एडमिरल वैडमन का है, जिसे सकीमेकरस ने १७५७ मे बनाया था। उस पर ये शब्द मिलते है—'एडमिरल चोगा पहने हुए मध्य मे बैठे है और उनके हाथ में ताल पेड़ की शाखा है। उनको दाहिनी ओर कलकत्ता

नगर अपने घुटने टेक कर उनके आगे अपनी याचिका पेश कर रहा है।' वाशिंगटन के समय के शिष्ट युवक, जाने-अनजाने अपने अलकार तथा जीवन-मूल्यों की नियमावलि रोम से लिया करते थे। सब लोग इस प्रकार के न भी हों, किन्तु ऐसे लोग तादाद मे काफी थे कि जिनके रोमन वातावरण से हम वाशिंगटन और उनकी प्रकाशयुक्त झांकी ले सकते है।

यह महज दैवयोग नही है कि वाशिंगटन एडीसन के नाटक, केटो, से बार-बार उद्धरण देते थे। उनके बड़े भाई लारेन्स ने बेल्वायर में, फेयरफेक्स की अतिथि-पुस्तक में कोई उदात्त भावना लिखने की इच्छा करते हुए यह लिखा था—'वर्टस ओमनिया पैरिकुला विन्सिट'—अर्थात् 'साहस सब सकटों पर विजय पा लेता है।' केटो उस शताब्दी के मन-भाते नाटकों में से था। ऐसा लगता है कि यह नाटक कनैक्टीकट के तरुण अधिनायक, नाथन हेल, के मन मे होगा, क्योकि जब अग्रेजो ने १७७६ मे उसे जासूस समझ कर मरवा डाला, तो उसके अन्तिम शब्द थे—'मुझे इस बात का खेद है कि मुझे अपने देश पर बलि चढाने के लिए केवल एक ही जन्म मिला है।' उसकी इस उक्ति मे एडीसन के निम्न शब्द गूजते दिखाई देते है—

'यह बात कितनी शोचनीय है कि अपने देश के त्राण के लिए हम केवल एक बार ही अपने प्राणो की आहुति दे सकते है।'

'साहस' रोमन लोगों की नजरों मे प्रसिद्ध गुण था (और व्यवहार मे वर्जीनिया वासियो के लिये भी) गम्भीरता, अनुशासन तथा प्राधिकार के लिए सम्मान, स्पष्ट अभिव्यक्ति, निस्पृहता तथा यश-प्राप्ति रोमन लोगो के लिये अन्य अर्हित गुण थे।

जिस प्रकार के गुण कही होते हैं, वहा ऐसा ही वातावरण हुआ करता है। रोम की संस्कृति सैनिक थी। उसके सीमान्त क्षेत्रो में सदैव अशान्ति रहा करती थी, इस कारण कानून बनाना और व्यवस्था करना उसके लिए अनिवार्य था। रोमन सभ्यता कुछ-कुछ कठोरता और स्थूलता लिए हुए थी; इसकी जड़ें वास्तविकता में

थीं, न कि आनन्ददायक काव्यात्मक कल्पनाओं में। इसमें धार्मिक भावनाएं परिमित सीमा तक विद्यमान थीं, इस सीमा को उल्लाघना बुरा माना जाता था। रोमन-समाज मे दास-प्रथा का बोल-बाला था और इसमें (राजधानी और प्रादेशिक केन्द्रो को छोड़ कर) फार्म सम्बन्धी जागीरें पड़ोस की इकाई थीं। यह ऐसा समाज था जो परिवार के संलाग-बल पर अवलम्बित था। प्रेम, सम्मान, वफादारी इत्यादि गुण परिवार से बाहर की ओर फैलते थे। परिवार इस प्रकार राज्य का एक छोटा सा रूप था। यह ऐसा समाज था कि जिसमें ठोस और सही ढंग से सोचने वाले नागरिक पनपते थे—जो नागरीय एवं उपार्जनशील थे; जो संकीर्ण, किन्तु नेक तबीयत के थे; और जो अपने से आगे भी देखते थे, किन्तु जिन में बेकार की कल्पनाएं करने की आदत नही थी। इस प्रकार के भाव है जो उनके ग्रेवीटैस (गम्भीरता), पाएटस (अनुशासन एवं प्राधिकार का सम्मान), सिम्पलीसिटस (स्पष्टता) जैसे शब्दों से प्रगट होते है।

यहां 'रोम' के स्थान पर हम वर्जीनिया पढ़ लें, तो क्या इस में कोई हर्ज होगा ? और क्या वाशिगटन के पुरानी शैली के जीवनी-लेखक अथवा उपकी पीढी के प्रशंसक अधिक गलती पर थे, जब उन्होंने यह घोषणा की कि वह पुराने सांचे में ढले हुए है और ऐसे लगता है कि मानो सिनसिनेटस ने दुबारा जन्म ले लिया हो ? वाशिगटन न केवल एक सैनिक ही थे, अपितु वह बहुत बड़े 'भू-स्वामी और राजनीतिज्ञ' भी थे—किन्तु उनका यह चित्र मोटे रूप मे एक रोमन का है। सिनसिनेटस रोम के अनेक वीर पुरुषो में से था, जिसमे ये तीनो बाते पाई जाती थी। इसी प्रकार वाशिगटन के बारे मे विस्तार भी किसी रोमन के अनुरूप थे। वाशिगटन की पारिवारिक स्थिति मे भी हमें रोमन विचारधारा के अंकुर मिलते है—जैसे, उनका माऊंटवर्नन से अटूट अनुराग, उनकी अपनी माता के प्रति (यद्यपि उत्साहहीन) कर्तव्य-निष्ठा, उनका बिना शिकायत के वाशिगटन परिवार की असख्य संतति—भाई-बहिनो, भतीजों,

भतीजियों, सौतेले बच्चों तथा अन्य सगे-सम्बन्धियों के हितार्थ निरन्तर अवधान। इससे उनकी उदारता टपकती है, (शब्द 'जैन-रोसिटी'--उदारता-लातीनी भाषा का है और हमे अपने मौलिक रूप 'जीनस' की ओर ले जाता है--जिसका अर्थ है, एक गोत्र के लोग) । किन्तु उनका न केवल स्वभाव ही उत्तम था, अपितु उनमें अपने कर्तव्य के प्रति निश्चित निष्ठा की भावना थी।

'कर्तव्य' शब्द में भी वाशिंगटन की पृष्ठभूमि को समझने के लिए रोम तालिका है। 'कर्तव्य' शब्द से हमारा तात्पर्य दायित्वों का समूह है। इस प्रसंग में 'दायित्वों' शब्द का प्रयोग ठीक है, न कि आधुनिकतम 'विवशताए' शब्द का; क्योंकि 'दायित्व' की निजी अपेक्षाए नहीं है, वरन् सामाजिक अपेक्षाएं हैं। वाशिंगटन चाहे विशेष रूप से मिलनसार न भी हों, किन्तु थे तो वह सामाजिक प्राणी ही--अर्थात् वह संयोजन करने वाले न सही, पर समाज के एक सदस्य तो थे। अतः इस आदर्श से जिस प्रकार के व्यक्तित्व का उद्भव होता है, वह परिपक्व अवस्था में पहुंच कर ठोस निस्पृही होता है। यह होते हुए भी वह पूर्ण, सन्तुलित और साथ ही साथ शान्तचित्त भी होता है। रोमन शब्द 'इन्टैगरीटस' का यह उपर्युक्त आशय है। ऐसा व्यक्ति संशयों से पीड़ित हो सकता है, किन्तु यह सशय उसे पंगु नही बना सकते। उसका शिष्ट व्यवहार जटिलतम समस्याओं को सुलझा देता है। उसका साहस स्वत. उसके कार्यों का संचालन करता है। मृत्यु उसे आतंकित नही करती।

'एक विचारवान मनुष्य का यह कर्तव्य है कि वह अपने मृत्यु के प्रति न तो बाह्यवर्ती, न अधीर और न ही घृणा-युक्त रहे, बल्कि उसे यह चाहिए कि वह इसे प्रकृति के अनेक संकार्यो में से एक ऐसा सकार्य समझे कि जिसकी अनुभूति उसे अवश्य करनी पड़ती है।'

यह मार्क्स आरिलियस के शब्द हैं। वाशिंगटन भी, जबकि उन्होंने अपना वसीयतनामा लिखवाया, अमरीकी जनता के नाम विदाई-भाषण प्रकाशित कर सकते थे और माऊंटवर्नन की महराबदार छत

की मरम्मत करके अपनी मरणोपरान्त समाधि के लिए उसे तैयार कर सकते थे।

'ग्लोरिया' शब्द महत्त्वाकांक्षा का अर्थ देता है। महत्त्वाकांक्षा को जानपद-आवेग के रूप मे समझा जाता है। यह कोई वैयक्तिक पीड़ा की वस्तु नही। निश्चय से यह बात वाशिंगटन पर चरितार्थ हुई जब उन्होने अपनी युवावस्था की अपनी ओर ध्यान खीचने और अधिमान-पद को प्राप्त करने की लालसा पर काबू पा लिया। इसके अतिरिक्त वाशिंगटन महोदय की यह कामना कि उन्हें एक अच्छा आदमी समझा जाए और उनकी ख्याति निष्कलंक रहे, यह भी एक प्रकार से शास्त्रीय कामना थी। यह कामना उस जनवादी, 'अन्य-निर्दिष्ट' चिन्ता से तनिक भी मेल नहीं खाती, जिसके परिणामस्वरूप आजकल के प्रसिद्ध व्यक्ति जनता की राय में अच्छा बने रहने की आकुलता प्रदर्शित करते है। ये लोग इस जनमत को, जो निर्वाचन क्षेत्रों में, पुस्तकों की सर्वाधिक विक्रियों आदि में प्रगट होता है, देव-वाणी तुल्य समझते है। यह सच है कि जब वाशिंगटन सैनिक थे, तो वह किसी योजना को निश्चित करने के लिए अपने अफसरों की सलाह ले लिया करते थे। राष्ट्रपति के रूप में उन्होंने यह कोशिश की कि देश की मानसिक अवस्था से सम्पर्क बनाए रखे, किन्तु नाजुक मौकों पर, विशेषरूप से जिन दिनो जे के समझौते-पत्र के ऊपर हो-हल्ला मचा था, उन्होंने बिना किसी झिझक के विशाल-हृदय रोमन की तरह व्यवहार किया। उन्होने बिना किसी घृणा के 'जनता' का उल्लेख किया।

यह मन में सोचना बेकार सा है कि वाशिंगटन वर्जीनिया, के रहने वाले केवल प्राचीन संसार के तौर-तरीकों और अनुभवों के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करते थे, अथवा उनके सब समकालीन व्यक्ति, उन्हीं की तरह, विशेष रूप से अपने अपने मिजाजों मे 'शास्त्रीय' थे। असल बात यह है कि उन का युग हमारे युग से अत्यधिक भिन्न था और इस लिए उन्हें ज्यादा अच्छी तरह

समझने के लिए, हमें उन्हें आधुनिक युग का आदमी न मान कर, शास्त्रीय ढाचे को अपने सामने रखना चाहिए। यह बात भी हमें ध्यान मे रखनी चाहिए कि उन दिनों बागान-मालिकों के वर्जीनिया की सभ्यता और सस्कृति भी ब्रिटेन से इतना मेल नही खाती थी, जितना कि वह 'रोमन' से।

यहां हमने रोम का एक आदर्श चित्र खेचा है। अधिक ठीक बात यह है कि यह उस समाज की प्रतिमूर्ति है जिसके मूल्य कठोरता-पूर्वक क्रियात्मक थे और यह छाप है जो वाशिंगटन का चरित्र हमारे मनो पर अकित करता है। हमारी पीढ़ी मे इस प्रकार के उदात्त चरित्र का अभाव है। इतिहास की शब्दावली में अधिक से अधिक तुलना-योग्य वस्तु समीप की विशेषताएं रखती है, कविता मे यह अद्भुत रूप से सन्निकट हो जाती है। इतिहास पर दृष्टि डालने से हमे कम से कम इस बात को समझने में मदद मिलती है कि वाशिंगटन जैसे व्यक्ति क्यों इस बात मे विश्वास रखते थे कि वे गणतन्त्रीय नमूने पर एक महान् राष्ट्र का निर्माण कर सकते है। यद्यपि ये लोग आरम्भ मे जार्ज तृतीय की वफादार प्रजा थे, किन्तु उनके वातावरण की परिस्थितियां एवं उनके चिंतन के तौर-तरीके स्वभावतया, यद्यपि अदृश्य रूप में, उन्हें राजो-महाराजों से तथा योरुप से दूर हटा ले गए और उन्हे एक नई राजनैतिक व्यवस्था को अपनाने की प्रेरणा दी। यह व्यवस्था असल में उन की तात्कालिक स्थिति के ठीक अनुरूप थी। शास्त्रीय अतीत के अनुभव जहां तरुण संसार को—और अमेरिका उन दिनो तरुणावस्था में अपने आप को महसूस करता था—सकेत दे रहे थे कि इस प्रकार की गण-तंत्रीय पद्धति कार्य-रूप मे आ सकती है, वहां चेतावनी भी दे रहे थे कि हो सकता है कि इसमें उनके सारे प्रयास विफल हो। अतः उनकी यह क्राति सरक्षण के द्वारा हुई थी। उन्होने नई चीज बनायी नही बल्कि खोज निकाली।

यद्यपि रोम इस शिशु-राष्ट्र के लिए 'पाठ-वस्तु' के रूप में था, वह उसके लिए फोटोग्राफी के 'ब्ल्यूप्रिन्ट' की तरह नही था। उस

समय अनेक ऐसी चीजों की जरूरत थी जो देश की राज-तांत्रिक पद्धति को गण-तांत्रिक पद्धति में बदल सके और उपनिवेशो के भूतपूर्व शिथिल समूह को एक दृढ़ संघ के अन्तर्गत ला सकें, जैसा कि १७९० के दशाब्द में हुआ। स्वतन्त्रता के लिए न केवल संघर्ष करना पड़ा, बल्कि उसे ठोस और वास्तविक रूप देना पड़ा। यह कहा जा सकता था कि भावनात्मक-रूप से एक राष्ट्र होने से पहले ही अमेरिका वैधानिक रूप से राष्ट्र बन चुका था। शब्द 'अमरीकीकरण' जिसका आज 'शेष संसार पर अमरीकी प्रभाव' के अर्थों में प्रयोग होता है, आरम्भ में वाशिंगटन के समय में आविष्कृत हुआ। उस समय इस का प्रयोग अमरीकियों के रक्षात्मक संघर्ष के लिए होता था, ताकि उन्हे योरुपीय लोगों से पृथक् समझा जा सके।

इसलिए इसमें आश्चर्य की बात नहीं कि आज वाशिंगटन की प्रतिष्ठा जितनी उनके सुकार्यों के लिए होती है, उतनी ही उनके उदात्त व्यक्तित्व के लिए भी होती है। इसमें भी हमें आश्चर्य नहीं होता कि इन गुणों और कार्यों के कारण उनके जीवन-काल मे ही उनके सम्बन्ध में स्मारक-योग्य कहानियों की रचना हुई। १७७५में सेना-पति पद को ग्रहण करने के कुछ ही मास पीछे जनरल वाशिंगटन का अनुपम दर्जा बन गया और जैसे जैसे युद्ध का समय बढ़ता चला गया, वैसे ही वैसे उन का दर्जा बढ़ता ही चला गया और मजबूत होता गया। यह केवल इस कारण नहीं था कि वह एक उत्तम सैनिक अथवा एक सुयोग्य शासक थे। यह उल्लेखनीय है कि वह सीधे तौर पर, अपने सैनिकों के लिए प्रेरणादायक नहीं बन पाए। उन का साहस दूसरों के लिए शिक्षा का काम करता था, किन्तु उन में नेतृत्व के संक्रमणशील व वैद्युत गुणों की कमी थी जो कुछेक सैनिक विभूतियों में पाए जाते हैं। उनकी प्रतिदिन की हिदायतों पर इस प्रकार का उत्साह नहीं उभरता था कि जिस प्रकार सैनिक बिगुलों की ध्वनि पर अहा! हा! कह उठते हैं, यद्यपि उन आदेशों में अक्सर चिन्तन-सामग्री हुआ करती थी। उन्होंने ९ जुलाई १७७६ वाले दिन जो सामान्य आदेश 'अनेक ब्रिगेडो' को दिए, उनमें

यह कहा गया था कि वे स्वतन्त्रता-घोषणा-पत्र ऊंची आवाज में पढ़े। इन आदेशों के अन्त में सब अफसरो और भर्ती किये गए लोगो को स्मरण कराया गया कि अब 'वे ऐसे राज्य के सेवक है जो उनकी श्रेष्ठता के लिए इनाम देने एवम् एक स्वतन्त्र देश में सर्वोच्च प्रतिष्ठा-पद प्रदान करने के लिए पर्याप्त रूप से सशक्त है।' क्या यह तो नही था कि इन आदेशो को देते समय वाशिंगटन महोदय को अपनी वे निराशाएं याद आ रही थी जो उन्हे वर्जीनिया मे सेना-विभाग में नौकरी करते हुए मिली थी। सम्भव है कि ऐसा ही हो।

क्या उनके शब्द कुछ कुछ नीरस थे? शायद ऐसा ही था। वास्तव मे उन शब्दो का महत्त्व इस बात मे था कि वे जैफर्सन की सुन्दर, ओजस्वी प्रस्तावना को ठोस-रूप मे सहारा देते थे। वह किसी को भी यह महसूस नही होने देते थे कि उनमे ओछापन है। उनका शिष्टतापूर्ण आत्मसयम, उनकी जगत्सिद्ध सत्य-परायणता तथा उनका सम्पूर्ण रिकार्ड यह सब घोषणा करते थे कि वह इस प्रकार के व्यक्ति नही है। वह न सिर्फ देखने मे, बल्कि अपने व्यवहार मे भी एक शास्त्रीय वीर-पुरुष थे। उनके ऊपर ही अमेरिका की भावी पीढ़ियों का भाग्य अवलम्बित था। वह भूत और भविष्यत् का सयोजन करते हुए भी वर्तमान काल की तथ्यता और वास्तविकता को मजबूती से पकड़े हुए थे। वह अमेरिका के प्रतीक थे। किन्तु इतना वास्तविक, ठोस तथा स्पष्ट प्रतीक आज तक दुनिया के दृष्टिपथ पर नही आया। जैफर्सन ने जीवन-स्वतन्त्रता तथा आनन्द-प्राप्ति के बारे मे बहुत कुछ लिखा और कहा; वाशिंगटन ने वेतन और उन्नति को देश-भक्ति के एक मूल-तथ्य के रूप मे माना। वाशिंगटन की शाब्दिकता-मात्र ने स्वतन्त्रता की परियोजना मे वास्तविकता ला दी। उन्होने उस असहाय दिवा-स्वप्न के वातावरण को छिन्न-भिन्न कर दिया जो उन दिनो अमेरिका पर छाया हुआ था। जिन बातो को कल्पना-विहारी अनिश्चित समझते थे, उन्ही बातो को सच मानते हुए वह अपने पथ पर

आगे बढ़े। वे बातें ये थीं---कि एक तो राष्ट्र का उद्धार होगा और दूसरे, यह सुख-समृद्धि को प्राप्त करेगा। और हमें इस बात में विरोधाभास लगता है कि जिस व्यक्ति के पांव भूमि पर इतनी दृढ़ता से टिके हुए थे, उसी को ही धीरे-धीरे अपने ही देशवासियों ने आकाश में 'उड़ाना' शुरू किया। पैनसलेवेनिया पत्र के अनुसार (वर्ष १७७७):---

'यदि उनके चरित्र में कोई धब्बे भी हैं, तो वे सूर्य के धब्बों के समान हैं जिन्हें दूरवीक्षण यन्त्र की विशालन-शक्ति के द्वारा ही देखा जा सकता है। यदि वह उन दिनों जीवित होते जब लोग मूर्तियों की पूजा किया करते थे, तो निस्सन्देह उन्हें एक देवता मान कर पूजा जाता।'

आलोचनाएं

कुछ अमरीकी सोचते थे कि उनकी पूजा की जा रही है।

'मुझे यह देखकर ठेस पहुंची है कि सदन के कुछ सदस्य मूर्ति-पूजा करने लगे है---ऐसी मूर्ति की पूजा जिसे उन्होंने अपने हाथों से घड़ा है। मैं यहां अन्धी श्रद्धा का उल्लेख कर रहा हूं जो जनरल वाशिंगटन के प्रति कभी-कभी प्रदर्शित की जाती है। यद्यपि मैं उन के श्रेष्ठ गुणों के लिए उनका आदर करता हूं, किन्तु इस सदन में मैं अपने आप को उनसे उच्चतर महसूस करता हूं।'

इसके लिखने वाले थे जान एडम्ज। यह उन्होंने उस समय लिखा था जब १७७७ में वे संयुक्त-राज्य कांग्रेस के सदस्य थे।

हमें इस स्थिति को अधिक निकट होकर जांचने की जरूरत है, क्योंकि हम वाशिंगटन के विषय में इससे बहुत कुछ जान सकते हैं। सर्वप्रथम, कौन-कौन लोग उनके स्पष्ट आलोचक थे? युद्ध के दिनों में, जैसा कि हम आशा रख सकते है, मुख्य रूप में उन लोगों ने उनका विरोध किया जो उनके अधीन सैनिक अफसर थे तथा जो उन अफसरों के मित्र कांग्रेस के सदस्य थे। तब और बाद मे, अधिक अनुपात मे वे लोग थे, जिन्हें बुद्धि-जीवी अथवा हाजिर-जवाब कहा जा सकता था। यह कहना कि वे उन्हें घृणा अथवा

तिरस्कार की दृष्टि से देखते थे—यह उनके बारे में अत्यधिक कड़ी राय है। कुछ-कुछ लोग विरोधी मत अपने तक ही रखते थे, किन्तु जौसफ रीड, एडमण्ड रैंडाल्फ, अलैक्जैण्डर हैमिल्टन, आरान बर (जो एक बार मन्त्री या परिसहाय थे), टिमोथी पिकरिंग (उनके एडजूटैंट जनरल), बैंजामिन रश—इन सरीखे लोगों तथा अन्यों ने अलग-अलग अवस्थाओं में वाशिंगटन की खामियों पर टिप्पणियां की। उनके विचार किस धारा में बहते थे, इसे जेम्स पार्टन ने आरोन बर के बारे में लिखते हुए भली-भांति संक्षेप में दिया है—

'आरोन बर वाशिंगटन को एक अत्यन्त ईमानदार और सद्-भावनायुक्त देहाती सज्जन समझते थे। किन्तु वह उन्हे कोई बड़ा सैनिक नही मानते थे। उनके विचार में वाशिंगटन (देवता होना तो दूर की बात रही) अर्ध-देवता से भी वास्तविक रूप में बहुत दूर थे। बर कायर मनुष्य से दूसरे दर्जे पर नीरस आदमी से नफरत करते थे और वे जनरल वाशिंगटन को एक नीरस आदमी समझते थे। हैमिल्टन तथा अन्य क्रांति के समय के तरुण सैनिक और विद्वान भी स्पष्टरूप से यही राय रखते थे, किन्तु हैमिल्टन का यह विचार था कि जनरल वाशिंगटन की लोक-प्रियता अपने लक्ष्य मे विजय-प्राप्ति के लिए आवश्यक है। यही कारण है कि वाशिंगटन के बारे में उसके जो भी विचार थे, उन्हें वह अपने तक ही रखता था।'

वास्तव में बात यह है कि एक श्रेणी के रूप में उन्हे इस बात की खीझ थी कि बौद्धिक-रूप से इतने कम स्तर का व्यक्ति इतनी ज्यादा शोहरत हासिल कर ले। जब १७८७ मे वाशिंगटन महोदय ने सरकारी पद सम्भाला, तो कुछ लोगों ने (बाध्य होकर निजी पत्रों मे) यह शिकायत की कि अब अपने ऊपर अमेरिका के प्रति बागी होने का आरोप लिए बिना उनका विरोध करना असम्भव हो गया है। अन्य लोग, जिनमें हैमिल्टन भी था, अपना मनोरथ सिद्ध करने के लिए उनकी लोक-प्रियता पर भरोसा करते थे। इस तरह के लोग उनके स्मारक की आड लेते थे। (सन् १७८५ में) जान एडम्ज ने तर्क करते हुए लिखा—

'वाशिंगटन जैसे महानुभाव की पूजा करने की बजाय, मनुष्यों को उस राष्ट्र की सराहना करनी चाहिए जिसने इस प्रकार के व्यक्ति को सुशिक्षित किया—मै वाशिंगटन सरीखे मानव पर गर्व करता हू, क्योकि मै जानता हू कि वे अमरीकी उच्च-चरित्र के एक उदाहरण है। पाम्ने के दिनों मे वाशिंगटन सीजर होते। उनके अफसर और दल के लोग उन्हे ऐसा बनने की उत्तेजना देते। चार्ल्स के समय में, वह क्रामवैल होते। फिलिप द्वितीय के वक्तो में वह औरेंज के राजकुमार होते और हालैण्ड के काऊंट बनने की अभिलाषा करते। किन्तु अमेरिका में उनकी सिवाए कार्य-निवृत्त होने के और कोई आकांक्षा न होती।'

इस प्रकार (इन लोगों के विचारों के अनुसार) वाशिंगटन की पूजा अनुचित, मूर्खता-पूर्ण और खतरनाक थी। उनका विचार था कि यदि अमरीकी चीजों को उचित अनुपातिक दृष्टि से नही देखते, तो वे राज-तन्त्र की स्थापना के लिए अपने मत देंगे और परिणाम-स्वरूप होने वाली उसकी बुराइयों को भुगतेगे। वाशिंगटन के अत्यधिक आलोचक यह स्वीकार करते थे कि खतरा पूर्वोदाहरण में है, क्योंकि चापलूसी समय पाकर आदत की शकल-सूरत अख्तियार कर लेती है। वे इस बात को मानते थे कि वाशिंगटन स्वय घमण्डी नहीं है और न ही, उनके विचार से, वह कभी हो भी सकते थे। तो भी, जैसे जैसे उन की यश-कीर्ति बढती जाती थी, उन पर जैसे कांच लगता जा रहा था। वह साधारण मनुष्यों से दूर हटते जा रहे थे। राष्ट्रपति होने पर तो अत्यधिक 'प्रौटोकोल' उन्हे घेरे हुए था।

हम इस आधार पर इन में से कई एक बातो पर अविश्वास कर सकते है कि ये ईर्ष्या और दलीय भावना की उपज थी, किन्तु सर्व-प्रकार से ऐसा नही कह सकते। हम समझते है कि ऐडम्ज सही था जब उसने, चाहे अशोभनीय ढग से, यह कहा कि वाशिंगटन का आत्म-त्याग उनकी निस्स्वार्थता को इतना प्रगट नही करता, जितना कि वह इस बात का प्रमाण है कि अमरीका-

निवासी शासन की स्वतन्त्र गणतन्त्र-शैली का आनन्द उठाने के लिए दृढ-सकल्प थे (यद्यपि वाशिंगटन ने इस प्रकार की श्रेय-प्राप्ति का दावा नही किया)। वह इस बात मे भी सही था, यद्यपि इस बात मे भी उसने पुन अशिष्ट का सा ही व्यवहार किया, जब उसने वाशिगटन के प्रधान-सेनापति बनने पर खर्चे के सिवाए किसी प्रकार का वेतन न लेने के लिए उनकी आलोचना की। यह स्पष्ट है कि इस प्रकार के इन्कार से एक सार्वजनिक (सरकारी) कर्मचारी के रूप मे उन्हो ने अपने आप को कुछ न कुछ ऊचा ही उठाया। वाशिंगटन ने केवल सर्वोच्च विचारो से प्रभावित हो कर ही इस प्रकार सोचा था। वह सयुक्त-राज्य की काग्रेस को अपना अन्तिम स्वामी समझते थे और उसके निर्देशों के पालन में सतर्क थे। यह होते हुए भी उन्होने स्वय को, अपने आधीन नियुक्त किए गए सेनापतियों से, विभिन्न रखा। उनकी भाति ही वे लोग भी काग्रेस द्वारा नियुक्त किए गए थे और उन्ही की भांति ही वह भी काग्रेस द्वारा अपने पद से पदच्युत किये जा सकते थे (सिवाय आपत्कालीन विशेष परिस्थितियों मे जबकि कांग्रेस ने उन्हें विशेषाधिकार प्रदान किए थे)। किन्तु जो बात उनके मतानुसार परोपकार-भावना के अन्तर्गत थी, लोग उसी को सम्भवत दूसरी प्रकार से समझ सकते थे। कम से कम गेट्स, कौनवे, तथा अन्य सेनापतियों मे जो कुछ कुछ रोष उभरा था और जिसके फलस्वरूप उन्होने तथाकथित षडयन्त्र रचा था, वह इस कारण हुआ कि उन लोगों को यह विश्वास हो गया था कि वाशिंगटन यह समझते है कि उन्हे कोई अपदस्थ नही कर सकता।

उनकी अपनी दृष्टि में तथा अत्यधिक अमरीकियो के विचार में यह विशुद्ध देश-भक्ति का मामला था। उन्होने अपनी प्रतिष्ठा अमेरिका की प्रतिष्ठा मे विलीन कर दी थी, किन्तु, क्या कोई भयंकर भूल करने पर उन्हें वस्तुत पदच्युत किया जा सकता था ? यह एक प्रकार की समस्या थी जिसमे एडम्ज और संयुक्त-राज्य की कांग्रेस के सदस्य उलझे हुए थे। यह बात नही थी कि वे उन्हें

अपदस्थ करने का सचमुच इरादा ही रखते थे। किन्तु, उन लोगों ने यह अवश्य देखा होगा कि युद्ध के दिनो मे किसी समय भी उन्होंने इस बात का संकेतमात्र नहीं किया कि वे अपने पद से त्यागपत्र देना चाहते हैं। वे शायद आश्चर्य करते होंगे कि कानवे केबल के समय उन्हें यह बात क्यों नहीं सूझी कि वे इस प्रकार का कदम उठाएं, ताकि वे सदन का विश्वास प्राप्त कर सकें? या उन्हें अपना त्यागपत्र देने का विचार उस समय क्यों नहीं आया जब यार्कटाऊन की विजय के बाद युद्ध सक्रिय रूप से बंद हो चुका था?

इन प्रश्नों का उत्तर यह है कि उन में कर्त्तव्य-परायणता इस हद तक थी कि वे इस प्रकार का विचार ही नहीं कर सकते थे। वे अपने इस विश्वास में न्याय-संगत थे कि एक बार उनका नियन्त्रण हट गया, तो अमरीकी प्रतिरोध समाप्त हो जाएगा। किन्तु, जितने अधिक काल तक वह प्रमुख स्थान में रहे, वह उसमें उतना ही अधिकाधिक उलझते गए—यहां तक कि उस में से स्वय को निकालना उनके लिए दुसाध्य हो गया; साथ ही साथ वह उतने ही अधिक सयुक्त-राज्य के प्रतीक बनते गए। मोटे तौर पर, व्यक्तिगत रूप से जनरल वाशिंगटन तो विलुप्त हो गए और उनके स्थान में एक असाधारण पुरुष दृष्टिगोचर हुए जो कि अमरीकी संत जार्ज थे। वह इस सारी प्रक्रिया के शिकार बने, किन्तु हमारे विचार में कुछ हद तक उनका इस में अपना भी हाथ था। यह केवल इसलिए नहीं कि उन्हो ने इतनी भव्य सफलता प्राप्त की थी, न केवल इसलिए कि अपने व्यवहार में वे इतने शान्त और राजनीतिज्ञ-तुल्य थे, न केवल इसलिए कि उनका दृष्टिकोण निस्वार्थपूर्ण और राष्ट्रीय था, बल्कि इसलिए भी कि उन्होंने जानबूझकर और स्थिरतापूर्वक अपने वैयक्तिक अस्तित्व को देश के हित के लिए समर्पित कर दिया था। वह स्वय जिस प्रकार के इन्सान थे उन से यह आशा नहीं की जा सकती थी कि वह इससे इतर कुछ और कर सकते है। किन्तु उन के चीखने-चिल्लाने और बोझल दायित्व का विरोध करने के बावजूद परिणाम एक समान रूप से अपरिहार्य

थे। उन के एक बार अमेरिका के संक्षिप्त प्रतिनिधि-रूप बन जाने पर वह स्वाभाविकतया सार्वजनिक जीवन में नितान्त काम करने वाले उम्मीदवार की भांति उलझ गये। अतः प्रधान-सेनापति के आसन पर आरूढ़ वाशिंगटन महोदय को सिवाय मृत्यु, रुग्णता अथवा अपमान के कोई अन्य वस्तु राष्ट्र-पति होने से नहीं रोक सकती थी।

और जब वह एक बार राष्ट्रपति के पद पर आसीन हुए, तो मानव वाशिंगटन पहले से अधिक स्थिरता-पूर्वक वाशिंगटन स्मारक मे विलीन हो गए। इस मौके पर भी इनके आलोचकों की टिप्पणिया सर्वथा-रूप में अन्याय-संगत नहीं थीं। लोगों का एक देवता-तुल्य व्यक्ति को अपने मध्य पाना ही खीझ पैदा करने वाली चीज थी, और जब यह देवता-तुल्य मानव फैड्रलिस्ट-दल के एक अंग बन गए, तो उनके क्रोध का पारावार न रहा। गणतन्त्र-वादियो के दृष्टिकोण के अनुसार वह व्यक्ति जो पहले अनाक्रमणीय था, वह अब ऐसी नीति का संपोषक बना, जो उनके लिए असह्य थी। यह ठीक है कि जब वाशिंगटन अपने पद पर आरूढ़ थे, तो उन्होने कभी इस बात को स्वीकार नहीं किया कि वे भी फैड्रलिस्ट है, किन्तु उन्होने इतनी बात मान कर कि फैड्रलिस्ट विचारधारा के सिवाए कोई और ग्रह्य विचार-धारा नही है, उन्होने फैड्रलिस्ट विचार-धारा को एक वहुत बड़ी प्रतिष्ठा प्रदान की। वाशिंगटन की मृत्यु के बाद गणतन्त्र-वादियों ने उन प्रयासों को देखा जिनके द्वारा फैड्रलिस्ट-दल के लोग वाशिंगटन-लोक-कल्याण 'समितिया' बना कर वीर-पुरुष वाशिंगटन-सम्बन्धी गाथाओं से लाभ उठा रहे है। यह समितियां वास्तव मे राजनैतिक क्लव थे, जिन्हें संत-चरित्र के प्रचारक के रूप में जाहिर किया गया था। (इन समितियों की पुस्तिकाओं में वाशिंगटन का विदाई-भाषण आवश्यक रूप मे होता था।) अमेरिका के लोग, उन पर हमला करने से विशेष-रूप से झिझकते थे। गणतन्त्रावादियों के कांग्रेस-सदन के भाषण धैर्य-हीन स्वत्व-त्यागों तथा आरम्भिक समादर से भरे रहते थे, किन्तु वे जो आक्रमण करते

थे वे सर्वस्त्र-रूप में चिताकुलता अथवा रोष के परिणाम-स्वरूप नही होते थे। वे चाहते तो यह थे कि वाशिंगटन की तारीफ करे, किन्तु उन्हे इसके सम्भाव्य परिणामो की भी चिन्ता रहा करती थी। अपने फैड्रलिस्ट अनुयाइयो के कारण वाशिंगटन को हम कठोर, कम पहुँचने योग्य, और स्पष्टता से किए विरोध पर नाराज होते हुए देखते है। क्या यह वेदनापूर्ण वाक्य नही था कि पैनसिलवेनिया के सन् १७९४ के मद्य-विद्रोह मे जिसमें कि राष्ट्रपति (वाशिगटन) के आदेश से लोग पकडे गए थे, उनमें से आधे लोग उस क्षेत्र के रहने वाले थे जिसका नाम उनके सम्मानार्थ वाशिगटन रखा गया?

डैविड-मीड, वाशिंगटन के परिसहाय रिचर्ड मीड के भाई थे। उन्होंने प्रधान-सेनापति के बारे मे एक बार कहा था—'वे उदासीन व नीरस स्वभाव के है। अपनी प्रकृति एव आदत के कारण वह गणतन्त्र देश के सेनापति बनने की अपेक्षा पूर्व देशो में सम्राट् बनने के अधिक योग्य है।' उन दिनों जब कि गणतन्त्रवादियो और फैड्र-लिस्टों के मध्य वाद-विवाद चल रहा था, इस प्रकार का कथन और भी अधिक उपयुक्त रूप से लागू होता था। अलैक्जैण्डर हैमिल्टन के प्रस्तावित टकसाल-स्थापना-विधेयक में एक तजवीज थी कि वाशिंगटन का सिर सयुक्त-राज्य अमेरिका के सिक्को पर अकित किया जाए। ऐसा हमारे पास कोई साक्ष्य नही है कि जिससे यह सिद्ध हो कि वाशिंगटन महोदय ने इस विचार को जोरदार तरीके से अनुमोदित किया। वास्तव मे ऐसी सम्भावना ही नहीं हो सकती थी। किन्तु गणतन्त्र वादियों की नजरों मे, जो इस प्रस्ताव को गिराने में सफल हुए, यह उस अशुभ प्रवृत्ति का नमूना था जो वीर-पूजा के रूप मे उस समय मौजूद थी।

मनो-वेदना

किन्तु वाशिगटन के आलोचकों में उदारता की कमी थी। उन्होंने इस बात को महसूस नहीं किया अथवा इस बात की गुंजाइश नहीं छोड़ी कि इस प्रवृति को पूर्व ही जानना-समझना चाहिए था और उसे सर्वथा रूप मे प्रोत्साहित करना चाहिए था। वस्तुतः उस

समय अमेरिका को एक महात्मा जार्ज की आवश्यकता थी। राष्ट्रीय एकता का प्रत्येक प्रतीक मूल्यवान था और यह कहना गलत है कि वाशिंगटन फैड्रलिस्ट लोगो के हाथो मे महज एक कठ-पुतली थे। उन्होने सच्चाई से उन सब आकाक्षाओं को पूरा किया जो समान रूप से सब अमरीकियो के हृदयो में थी। वह यदि निर्बल मूर्ख अथवा अपने व्यवहार से दूसरो को उकताने-थकाने वाले भी होते, यद्यपि इनमे से कोई दुर्गुण उनमे नही था, तो भी उनकी लोक-प्रियता एक ऐसी चीज थी जिसका बहुत ज्यादा महत्व था। 'रैडीकल' सिद्धातो के उग्रवादी अमरीकी जब उनकी लोकप्रियता के बारे में शिकायत प्रदर्शित करते थे, तो वे किसी बुराई की शिकायत नही कर रहे होते थे, बल्कि इस बात पर भय प्रदर्शित कर रहे होते थे कि कहीं उनकी अच्छाई अपनी सीमा को ही न उल्लांघ जाये। वे लोग सच्ची अमरीकी शैली मे, अन्याय-संगत रूप से, अनुत्तरदायी प्रकार से, क्रूरता-पूर्वक पर स्वस्थ-रूप से उनको देवोचित आस्था का पात्र व्यक्ति मानते थे।

अधिक गहराई मे जाकर हमें लगता है कि वाशिंगटन के समकालीन लोगो ने उनकी उस मनोवेदना की ओर ध्यान नही दिया, जो (सम्भवत विशेष रूप से या योरोपीय लोगो की दृष्टि मे) उनके कार्यों में तथा सामान्यतया अमेरिका के इतिहास मे प्रत्यक्ष रूप से प्रतिबिम्बित होती है। उदाहरण के लिए वाशिंगटन की निजी स्थिति के सतृष्ण पहलुओ पर विचार कीजिए। उनको इस बात से बड़ा सन्तोष मिलता था, कि वह अपना कर्तव्य निभा रहे है और उनके इन कामो के लिए जनता इतने व्यापक रूप से सराहना कर रही है। किन्तु कुछ लोगों के विपरीत उनके हृदय मे सार्वजनिक जीवन के लिए चाह नही थी। उनकी जो शास्त्रीय संहिता थी, उसमे आनन्द भोगने पर जोर नही था। दूसरे लोगो को इस योग्य बनाने के लिए कि वे अपनी वैयक्तिक प्रवृत्ति के अनुसार आनन्द भोगे, उनका अपना वैयक्तिक जीवन एक खोखले ढाचे मे बदला हुआ उन्हे नजर आया। राष्ट्र के पिता स्वय संतान-हीन थे। यह

चाहे उनकी अपूर्व ऐतिहासिक कहानी में ठीक ही क्यों न बैठती हो, यह बात उन जैसे वास्तविक मनुष्य के लिए आजीवन निराशा का विषय रही होगी कि उन्होंने अपने पीछे अपना कोई सीधा उत्तराधिकारी नहीं छोड़ा। उनका एक सौतेला बेटा भी अपनी छोटी उम्र में मौत का ग्रास बना। उन्होंने माऊंट वर्नन के सुधारने में चिरकाल तक प्रयत्न किए, किन्तु अपनी पिछली आयु के बहुत बड़े भाग तक वह अपने इस घर से दूर ही रहे। अप्रैल १७९५ मे, जब उन्हें राष्ट्रपति-पद से अवकाश मिला, तो अपने गृह-भवन की मरम्मत के लिए उन्होंने कई आवश्यक बातें पायीं। ये मरम्मते इस कदर ज्यादा थीं कि उन्होने अपने एक साथी को थके-थके, पर व्यंगपूर्ण ढंग से एक पत्र में लिखा:—

'इस समय बढई, राज, रंग-रोगन करने वालों से मैं घिरा हुआ हू। मुझे इस बात की चिन्ता हो रही है कि इन से जल्दी से जल्दी अपना पिंड छुड़ाऊ, क्योंकि न तो मेरे पास कोई ऐसा कमरा है, जिसमें मैं अपने किसी मित्र को रख सकता हूं और न ही मैं हथौड़ों के सगीत सुने बिना अथवा रोगन की खुशबू ग्रहण किये बिना अपने किसी कमरे में बैठ सकता हूं।'

और उन्हे जो वहां रहकर अल्पकालीन शान्ति प्राप्त हुई, अन्त में जाकर लड़ाई की आशंकाओं के कारण वह भी भग हो गई।

निस्सन्देह हर मानवीय योजना में मनोवेदना का तत्व मौजूद रहता है। अन्त में जाकर, जैसा कि मार्क्स आरिलियस दुबारा साक्षी देता है, केवल एक मृत्यु का महत्व रह जाता है।

'उदाहरण के लिए वैस्पेशियन के समय को लीजिए। इसमें भी वही पुराना दृश्य सामने आता है—विवाह, बालक का उत्पन्न होना, रोग व मौत, लड़ाई और आनन्दोत्सव, वाणिज्य व कृषि, खुशामद व जिद्द। एक व्यक्ति भगवान् से प्रार्थना कर रहा है कि कृपया यह—यह ले लीजिए। दूसरा अपने भाग्य पर सिर धुन रहा है। फिर कुछ और भी लोग हैं जो राज्यों और प्रतिष्ठा के पदों के पीछे लोलुपता से अन्धे हो रहे है।

यह सब अपना जीवन व्यतीत कर चुके और अपना-अपना स्थान छोड़ कर दूसरे लोक को सिधारे। इस प्रकार ट्राजन के राज्य की ओर जाइए, वहां भी वही चित्र है और वहां भी जीवन इसी प्रकार व्यतीत हो जाता है और मृत्यु आ दबाती है।'

किन्तु जहां तक वाशिंगटन के जीवन-कार्यों का सम्बन्ध है, उन में विशेष-रूप से मनो-वेदना नजर आती है, क्योंकि उसके सार्वजनिक और वैयक्तिक पहलुओं में असमानता पाई जाती है। जो कोई भी राज्यिक कार्य उन्होने अपने हाथों में लिए उनमें उन्हें भरसक सफलता मिली। किन्तु जो कुछ उन्होंने स्वयं के लिए किया वह विचित्र रूप से क्षणिक रहा। वर्जीनिया की वैस्टमोर लैण्ड काउन्टी में, जिस स्थान में कि उनका जन्म हुआ, वह १७७९ में आग की भेंट हो गई। यद्यपि माउन्ट वर्नन एक ऐसी जागीर थी, जिससे उन्हें बहुत प्यार था, किन्तु उससे उन्हें कभी लाभ नहीं हुआ। न ही क्रान्ति अथवा किसी बाद की घटना से बाढ़ग्रस्त खेती और खेत-बगीचों के मालिकों की दुर्दशा को दूर ही किया। इसका कारण यह था कि वहां की भूमि ऊसर थी और वहां का जलवायु अति-ऊष्ण था। यही कारण था कि वाशिंगटन की देख-रेख तथा इस बारे मे उनकी योजनाएं इन त्रुटियों को दूर न कर सकीं। सूखा, फसलों को लगने वाले कीड़े, रोग इत्यादि मानव शत्रुओ से भी बढ़ कर निर्दयी थे। वे एक स्थान में लिखते है:—

'लोकस्ट पेड़ों के पत्ते पिछले वर्ष की तरह अब भी मुरझाने शुरू हो गए हे और बहुत से मर चुके है। काली गोंद के पेड़, जिन्हे मैंने उखाड़कर चौड़े रास्तों व घूमने-फिरने की चक्रदार वीथियों में लगाया था और जिन में से पत्ते भी निकल आए थे और जो आरम्भ में बहुत अच्छे लग रहे थे, वे सब के सब मर गए है। यही दशा चिनारों व शहतूत के पेड़ों की हुई। क्रैब की किस्म के सेबों के पेड़ भी, जिन्हें (उखाड़ कर) झाडियों मे बोया गया था और ताड़ के पेड़ भी मर चुके है। ससाफरास भी बहुत हद तक मर चुके है। चीड़ के पेड़ तो सारे के सारे

समाप्त हो चुके है। कई देवदार और हैमलोक के पेड़ भी बिल्कुल मर चुके है।'

जुलाई, १७८५ के जनवरी के उद्धरणों से पता चलता है कि उस वष अपवाद से बहुत बुरी तरह गर्मी पड़ी; किन्तु यह कोई एकलित उदाहरण नही था। दूसरी ऋतुओं मे 'हौली' बाड उग भी नहो सकी। यही दशा हनीलोकस्ट बाड़ की रही, जिसे अंगूर की बेलों के इर्द-गिर्द लगाया गया था। उन्होने कुछ सुनहरी रग के तीतर पक्षी आयात किए थे, वे भी कमजोर होकर मर-खप गए। उन्होंने एक हिरन-पार्क बनाया था। इसके हिरन लगातार निकल भागते रहे। उन्होंने साथ उगे हुए छोटे-छोटे पौधों को भी काट खाया और फिर कुछ साल बाद ऐसी स्थिति हो गई कि उस पार्क को भी समाप्त करना पडा। इस प्रकार यह सघर्ष निरन्तर चलता रहा और उन्हें निरुत्साहित करता रहा, मानो जिस भगवान् को वे कभी-कभी याद कर लिया करते थे, वह नही चाहता था कि जार्ज वाशिंगटन उस स्थान में स्थायी-रूप से अपनी रिहायश रखें। यदि उन्हे एक सुयोग्य उत्तराधिकारी भी मिल जाता या कोई निष्ठावान (तथा महगा) प्रबन्धक होता, तो भी माऊटवर्नन अन्ततोगत्वा आस-पास वाली उखाड भूमि अथवा कृत्रिम समाधि से अधिक अच्छी हालत मे न हो सकता।

सयुक्त-राज्य अमेरिका में पश्चिमी भू-भागों का समावेश होता जा रहा था। वहां भी वाशिंगटन महोदय कोई जादू न कर सके। उनके वहा विस्तृत-भू-भाग थे. किन्तु अपने मरने से कई वर्ष पूर्व उन्हे यह निश्चय हो गया था कि ये पश्चिमी-भू-भाग आमदनी की अपेक्षा अधिक कष्टदायक है। क्या आप जानते है कि पोटोमैक कम्पनी का क्या हुआ, जिसने इस नदी को नागम्य करके एलघनी के पश्चिम की ओर यातायात की योजना बनाई थी? वाशिंगटन ने इस परियोजना पर अपनी पूरी ताकत लगा दी थी और इसलिए वह इस पर बहुत आशाए बाधे हुए थे। वर्जीनिया की सविधान-सभा को भी विश्वास था कि इसके परिणाम ऐसे अच्छे होगे जो

वाशिंगटन महोदय की कीर्ति के 'स्थायी स्मारक के रूप में' नजर आएंगे।' शोक कि उनकी मृत्यु से पूर्व ही यह कम्पनी दुरावस्था मे हो गई। तीस साल पश्चात् इसका दिवाला निकल गया। यद्यपि चैसापीक तथा ओहियो कैनाल के प्रवर्त्तकों ने पुरानी पोटोमैक कम्पनी को अपने मे शामिल कर लिया और यह योजना बनाई कि वाशिंगटन डी० सी० को पिट्स वर्ग के साथ मिला दिया जाए, तथापि वे १८५० तक एलघनीज की तराई से कम्बरलैण्ड से आगे नही बढ़ सके। जार्ज वाशिंटन बहुत पहले १७५३ में इसी स्थान मे सर्वप्रथम गए थे (जब इसे विल्जब्रीक कह कर पुकारा जाता था) उस समय वह गवर्नर डिनविड्डी के आदेशानुसार अपना प्रथमतम दायित्व निभाने के हेतु वहां गये थे। इस सम्बन्ध मे 'खोदा पहाड़ और निकली चुहिया' वाली बात सार्थक हुई।

यही बात उनके और साहसिक कार्यों के बारे मे कही जा सकती है। उनकी असफलताओं का कारण यह नही था कि उन्होने योजनाए ठीक प्रकार नही बनाईं; अपितु उनमे सफलता पाना वाशिंगटन के भाग्य मे वदा नही था। उदाहरणार्थ, वाशिंगटन इस बात मे दिलचस्पी रखते थे कि कोलम्बिया के जिले मे एक राष्ट्रीय विश्व-विद्यालय की स्थापना की जाए। वे सच्चे दिल से इसे चाहते थे और उनकी योजना सराहनीय थी। उनका यह उद्देश्य था कि संयुक्त-राज्य अमेरिका के कोने २ से युवकों को एकत्रित किया जाए। उन्होने अपनी वसीयत में से इस विश्व-विद्यालय के लिए पोटोमैक कम्पनी के ५० भाग निर्धारित कर दिए, किन्तु कई एक कारणो से उनके वसीयतनामे की यह अनुधारा अमल मे नही आ सकी। जहां तक उनके फैडरलिस्ट दल के साथ सम्बन्धों की बात थी—जिन सम्बन्धों को उन्हो ने अन्तिम रूप मे अभिस्वीकार कर लिया था—उसी दल को उनकी मृत्यु के थोड़े समय बाद करारी हार मिली और फिर कभी उसे राष्ट्रपति-पद नही मिल सका। वस्तुत यह दल एक राजनैतिक शक्ति के रूप मे रह ही नही सका, बल्कि विघटित हो गया। इस विघटन के परिणाम-स्वरूप कुछ वर्षों तक

उनकी अपनी कीर्ति को भी धक्का लगा। जब नई शताब्दी का आरम्भ हुआ, तो पहली दशाब्दी में ही वाशिंगटन स्मारक धराशायी होता हुआ प्रतीत हुआ। उनके समकालीन लोग सम्भवतः यह सब कुछ आंकने की स्थिति में नहीं थे, (जैसे कि वह इस काबिल नहीं थे कि उनकी अभिकल्पित विशाल सम्पति की सीमाओं को जांच सकें)। इन से भी अधिक एक और मनो-वेदना है जो समय-गमन के साथ ज्यादा स्पष्ट होती चली गई। यह मनो-वेदना संयुक्त-राज्य अमेरिका मे वीर-अधिनायक के रूप में, विशेषत. राष्ट्रपति के तौर पर दायित्व निभाते हुए विद्यमान रहती है। उदाहरणार्थ, यदि उनका व्यक्तित्व अपेक्षतया कम 'शास्त्रीय' होता, अथवा उनके स्थान में कोई और व्यक्ति अमेरिका का राष्ट्रपति होता, तो यह नहीं कहा जा सकता कि ढाँचा इससे भिन्न अथवा इस प्रकार का होता। जहां तक आवश्यक तत्त्वों का सम्बन्ध है, दर असल यह वाशिगटन ही थे, जिन्होंने अनजाने में इस ढांचे को जमाया था। जब उनका द्वितीय प्रशासन समाप्त होने को आया, तो राष्ट्रपति के पद को एक निश्चित स्वरूप मिला। यद्यपि उस समय भी इस में अस्पष्टता और परस्पर-विरोध की बातें थीं, किन्तु इसमे स्थायित्व था। राष्ट्रपति का यह स्वरूप सम्राट् और प्रधान-मन्त्री अथवा दल प्रमुख और पिता के बीच का था। राष्ट्रपति सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति के रूप में होते हुए भी जनता का प्रतिनिधि था। एक ओर तो यह डैल्फी के अनन्त-कालिक भविष्यवक्ता के समान था, जिसकी वाणी सदा के लिए स्थायी रूप से रहने वाली हुआ करती है और दूसरी तरफ वह एक भूलें करने वाला इन्सान था, जिसे दुर्वचनों का तुरन्त और प्रलोभी निशाना बनाया जा सकता है। (हम फिलिप फ़ैनो जैसे को कवि वाशिगटन के साथ दोनो प्रकार का व्यवहार करते हुए पाते है)।

इस प्रकार का शिष्टाचार रखते हुए सम्भवतः वाशिंगटन ने अपनी कठिनाइयों को बढ़ा लिया। (यदि उनका यह प्रस्ताव कि वह अवैतनिक रूप से सेवा करेंगे, कांग्रेस मान लेती, तो उनकी

विपदाएं बढ़ जातीं)। शायद उस समय जबकि उनके राष्ट्र-पिता पद की अवधि समाप्त होने वाली थी, वह अमेरिका के भविष्य का सम्पूर्ण प्रतिनिधित्व करने में असफल रहे थे, यद्यपि वह इसके अतीत और वर्तमान के सुन्दर प्रतीक थे। अभी उन्नीसवीं शताब्दी में अन्य प्रकार के वीर-पुरुष आने थे। उनमें से एण्ड्रयो जैक्सन सन् १७९६ में एक अपरिपक्व कांग्रेस सदस्य था। उसका छोटा सा ग्यारह सदस्यीय, मुट्ठी में आ सकने वाला, अल्पसंख्यक दल था, जिसने कार्य-निवृत्त होने वाले राष्ट्रपति को दी जाने वाली काग्रेस सदस्यों द्वारा विदाई-श्रद्धांजलि का विरोध किया था। 'जैक्सोनियन' युग में, जिसमें साधारण मानव को महत्व दिया जाता रहा, वाशिंगटन मे पायें जाने वाले गुणों से भिन्न गुणों को अधिमानता दी गई।

इतना श्रेष्ठ और गुण-सम्पन्न होने पर भी वाशिंगटन से कार्य-चतुरता सम्बन्धी भूलों का हो जाना और किसी न किसी को नाराज कर देना स्वाभाविक था। मनुष्य हर एक को खुश नही कर सकता। इससे विपरीत उनसे यह अपेक्षा की जाती थी कि वह ऐसा कर सकेंगे। यदि उनका व्यवहार गणतान्त्रिक जनरल के समान अधिक और तथाकथित पूर्वी सम्राट् के तौर पर कम होता, तो भी लोग उनका अनादर करते। वस्तुतः उस दशा में परिणाम संयुक्त-राज्य अमेरिका के लिए विनाशकारी होता।

आज राष्ट्र-पति की कार्य-सम्बन्धी धारणा, संक्षेप में, विचित्र व अशिष्ट-उत्कृष्ट प्रकार की है। एक तरफ यह गम्भीरता का तकाजा करती है और दूसरी तरफ दुर्वचन जैसे व्यवहार को निमन्त्रित करती है। राष्ट्रपति करीब-करीब उन आदिम बादशाहों मे से है जिनका उल्लेख फ्रेजर ने अपनी पुस्तक 'गोल्डन बो' में किया है। यह बादशाह ऐसे थे जो आन और शान से तब तक हकूमत करते रहते थे जब तक उनको धार्मिक प्रथा के अनुसार जान से मार नही दिया जाता था--(सिवाए अमेरिका के शासकों के जिन्हें अन्तिम रूप से खत्म होने से पहले थोड़ा-थोड़ा करके दारुण कष्टों

को सहना पडता है) । किसी की पूजा करने तथा दूसरों को कलंकित करने की भावनाए आपस मे परस्पर पूरक होती है । वाशिगटन के लिए अनुपम रूप से कष्ट-दायक परिस्थिति पैदा हो गई थी, क्योकि जब उन्होने राष्ट्रपति का आसन ग्रहण किया, तो उनकी स्थिति किसी अन्य अमेरीकी राजनीतिज्ञ से बढ कर एक सार्वजनिक वीर-पुरुष की थी । अमेरिका के राष्ट्रपति से यह अपेक्षा की जाती है—इसमें वाशिगटन अपवाद नही थे—कि वह अपने शासन की अवधि मे चमत्कार-पूर्ण समझ-बूझ और दूर-दर्शिता प्रदर्शित करेगा । उससे यह भी अपेक्षा की जाती है कि वह एक साधारण मनुष्य की तरह होगा । उसे विचित्र-रूप से क्षति पहुचाए जाने योग्य बना कर छोड़ दिया जाता है । उससे हर प्रकार की अपेक्षाए की जाती हैं । उसे कोई ठोस चीज दी नही जाती, सिवाए उधार पर—न उसे उपाधियां मिलती है, न मकान और न ही साज-सज्जा । वह अपने राष्ट्र के लिए करीब-करीब जीती-जागती कुर्बानी है । जान एडम्ज की वाशिगटन पर अविनीत टिप्पणिया यहां महत्त्वपूर्ण है । वह प्रतिपादित करता है कि यह वाशिगटन की अहकारी भावना थी कि जिसके कारण उन्होने अवैतनिक-रूप से सेवा करने का इरादा किया और यह उनके लिए वैसे ही गलत बात है कि वह आठ साल तक प्रधान सेना-पति का पद सम्भाले रखने के बाद कार्य-निवृत्ति की माग करे । (उसने यह उस समय लिखा जब अभी वाशिगटन राष्ट्रपति नही बने थे) ।

एडम्ज लिखता है:—

'अधिक समझदारी और पवित्र भावना के समयों में कभी वाशिगटन ऐसा न करते, क्योकि यह भी एक महत्त्वाकांक्षा है । वह अब भी सन्तुष्ट होगे, अगर उन्हे वर्जीनिया का गवर्नर, काग्रेस का अध्यक्ष, सैनेट का अथवा प्रतिनिधि-सदन का सदस्य बना दिया जाय ।'

स्पष्ट रूप में, एडम्ज के विचार में वाशिगटन के लिए उपयुक्त मार्ग यह था कि वे अपने पद पर आसीन रहते हुए अपना

काम चलाते जाते, उस दैवी-घोड़े के समान जिसे काम पर जोत दिया गया हो। इस प्रकार की सद्भावना के लिए बदले में कोई चीज नही और यदि है तो अधिकतर मरने के बाद ही प्राप्त हो सकती है।

हम अक्सर यह सोचा करते है कि अमरीकी दृष्टिकोण व्यवसायी और भौतिक है। इसमें शक नही कि अंशतः ऐसा ही है (और वास्तव में वाशिंगटन की मनोवृत्ति भी ऐसी थी)। किन्तु जब हम इस दृष्टिकोण का मुकाबला गहरे, दूर-दर्शी और सांसारिक ब्रिटेन-वासियों से करते है जिनसे कि अमेरिका वालों के दृष्टिकोण का उद्भव हुआ, तो हमें यह विस्मयकारी रूप से पतला, बिखरा हुआ और रोमान्स-पूर्ण लगता है। होरेशो नैलसन जो रीयर एडमिरल थे, एक दिन अबाकीर खाड़ी की लड़ाई से कुछ पहले जब रात का खाना खा कर उठे, तो उन्होने अपना मुंह पोंछा और भविष्यवाणी की, "मैं कल इसी समय से पूर्व या तो लार्ड की उपाधि प्राप्त कर लूगा या वैस्टमिन्स्टर ऐबे मे पहुँचा दिया जाऊंगा।' उसका अनुमान बिल्कुल सही था, क्योंकि इसके आधार मे ब्रिटेन देश के समाज की वास्तविकताएं थी। नैलसन ने लड़ाई जीत ली। उस विजयी को उपयुक्त रीति से 'नील के बैरन नैलसन' की उपाधि मिली। इतना ही नही, ब्रिटिश पार्लियामैण्ट ने उसे २००० पौण्ड वार्षिक पैन्शन के रूप में दिए और ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने उसे १०००० पौण्ड का बोनस दिया। नेपल्स के बादशाह ने उसे ड्यूक की पदवी दी, जिसकी वार्षिक आय तीन हजार पौण्ड थी और बाद में उसका विवाह भोग-विलास की शौकीन लेडी हैमिल्टन से हुआ। यह सत्य है कि जब वह ट्रेफालगर पर मारा गया, तो उसे वेस्टमिनस्टर में दफनाया नही गया, बल्कि उसकी बजाय उसी भव्यता के साथ सैन्ट पोल के मुख्य गिर्जाघर मे दफना दिया गया।

वाशिंगटन के भाग्य का मुकाबला नैल्सन से कीजिए। उसके विपरीत वाशिंगटन अकेले मे और अपने सैनिक संघर्षो में कष्ट भोगते है। उनसे यह अपेक्षा की जाती है कि वह असम्भव अनुपातो

में सतर्कता, अखडपन और विनीतता को मिलाएंगे। प्रमुख कार्य-पालक होने के नाते भी उन्ही कारणों से वह अकेले है और दुख पा रहे हैं। उनके पथ-प्रदर्शन के लिए कोई पूर्वोदाहरग नही है (यद्यपि अपने उत्तरदायित्वो की अत्यन्त कठोरता के कारण वह उच्चासीन हैं, जैसा कि प्राय अमरीकी नेता हुआ करते है)। वह एक प्रकार से भव्यता-पूर्ण अनाथ बच्चे है जिन्हें एक अनाथ और शिशु समान राष्ट्र का प्रमुख बना दिया गया है। वह इस कटिन परीक्षा से जिन्दा बच निकले है क्योकि उन्होने इसका सान्मुख्य अधिकतम शान्तिमय प्रतिष्ठा और न्यूनतम सिद्धान्तवाद और अन्तर्दृष्टि से किया। अपनी सेवाओं का इनाम नैलसन को पर्याप्त और वास्तविक रूप में मिला, वाशिगटन को जो इनाम मिला, वह महज आलकारिक था। उन्हे अपने वक्ष पर लगाने के लिए चमकते हुए तारे भी नहीं दिए गए, क्योकि उनके देश-वासियों की नजरों मे सिनसिनेटी के चिन्ह को भी लगाना अविवेक-पूर्ण बात थी। वाशिगटन को सम्बोधित करते हुए किसी उपाधि का प्रयोग भी नही किया जाता था। नैलसन के लिए जहां 'वाईकाऊंट' 'ड्यूक आफ ब्रान्टे' का प्रयोग होता था, वहाँ वाशिगटन के लिए सादा सम्बोधन था—राष्ट्रपति महोदय। नैलसन की गाड़ी पर गौरवांक चित्रित किए गए, किन्तु बाद के राष्ट्रपतियों के लिए यह चीज भी हास्यास्पद मानी गई। राष्ट्रपति का सिर सिक्कों पर तब तक नहीं अंकित हो सकता था, जब तक वह आराम और सुरक्षित रूप से मर न जाएं। निस्सन्देह जैसा कि वाशिगटन समझते थे, यह तरुण गणतन्त्र राज्य के लिए विवेकपूर्ण निश्चय थे, क्योंकि ऐसा न होने पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकते थे। निस्सन्देह किसी कार्य-पालक पद के लिए सर्वोत्कृष्ट बात यह थी कि उसे यथासम्भव अनाकर्षक बनाया जाय, क्योकि मानव स्वभाव प्रलोभनों मे फंसने वाला और महत्वाकांक्षी होता है। किन्तु यह कितना अल्पव्ययी और अरुचिकर लगता है। कितना कृपणतापूर्ण। कांग्रेस ने उनकी अश्वारोही मूर्ति को, जिसे प्रस्ताव के रूप में सन् १७८३ में पारित किया गया था, कहीं १८६० में जाकर स्था-

पित और अनावृत किया। वाशिंगटन महोदय के विशाल, दैत्याकार स्मारक को, बहुत वाद विवाद और झगडों के वाद १८८५ मे पूरा करके समर्पित किया गया—अर्थात् जिस महानुभाव की स्मृति को यह ताजा करता है उसके मरने के ८७ साल पीछे।*

माऊंट वर्नन की क्या दुरवस्था हुई? इसकी भूमि सूर्य की तेज धूप से मरुस्थल सी वन गई। वर्षा उस प्रासाद के इर्द-गिर्द खेतो को खा-खाकर उनमें नालियां वनाती चली गई। गर्म हवाओं के कारण सजावट के पेड़ और पौधे सूखते और मरते रहे। बेकार की घास और पत्तियां वहां ढेरों मे उगती रही।† माऊंट वर्नन उत्तराधिकार मे भतीजे को मिला, फिर भतीजे के भतीजे को। वे योग्य आदमी थे, किन्तु कौड़ी-कौडी के मोहताज। अन्त में उन्हें कांग्रेस ने नही वचाया, बल्कि उनकी जान बची, तो माऊंट वर्नन की महिला-समिति की निजी कोशिशों द्वारा तथा उन लोगों की वजह से जिन्होने सुन्दर-भाषण देकर उनके लिए रुपया-पैसा एकत्रित किया। क्या यह विकृत नाटक एमर्सन की 'हमात्रेय' कविता की इन पक्तियों की याद नही दिलाता ?

---

* वाशिंगटन की माता सन् १७८६ मे मरी। उनकी कब्र जो फ्रैड्रिक्सवर्ग मे थी, सन् १८३३ तक विना किसी नाम-चिन्ह के रही। तव ५० फुट के स्तूप की योजना वनी, जिसे सन् १८६४ मे जाकर कही पूरा किया गया।

† हमे यहा यह जोडना चाहिए कि इसकी दशा जैफर्सन के माऊंटीसैलो से कही अधिक अच्छी थी, जवकि सन् १८३६ मे अर्थात् जव उसके मरने के १३ वर्ष उपरान्त एक मुलाकाती वहा पहुचा। वह लिखता है—'मैंने अपने चारो तरफ उजाड ही उजाड देखा। छज्जा टूटी-फूटी हालत मे था; कुटीर जीर्ण-शीर्ण थी; 'लानों' मे हल चलाए गए थे और इटली से आए हुए कलश मिट्टी मे पडे थे। इन के वीच मे जानवर घूम-फिर रहे थे। वह स्थान उस महापुरुष और उसके परिवार की सम्पत्ति की वरवादी का सही प्रतिनिधित्व कर रहा था—वहुत कठिनाई से मैं उस समय अपने आसू रोक सका और मेरे मुंह से अकस्मात् निकला—'मानवीय महत्ता क्या है ?' (मार्गेरिट वी० स्मिथ द्वारा लिखित—'वाशिंगटन सोसायटी के प्रथम ४० वर्ष'—न्यूयार्क, १६०६, पृष्ठ ३८२–३८३)।

'यह भूमि है,
जो बनों से ढकी है,
इसकी प्राचीन घाटी है,
उभरे हुए टीले है और यहां बाढ़ें आती है,
किन्तु इनके उत्तराधिकारी कहां गए ?
बाढ़ की झाग की तरह उड़ गए है।
न वहां वकील रहे और न कानून,
और वहां का राज्य,
उस स्थान से विलुप्त हो गया।'

विजय

क्या सचमुच ऐसा हुआ ? नहीं, नहीं, ऐसा नहीं हुआ। वाशिंगटन के बारे में हम यह नहीं कह सकते। राज्य अब भी वहां मौजूद है, यद्यपि यह गणतन्त्र राज्य है। इस प्रकार उस राज्य के उत्तराधिकारी भी है, यद्यपि यह उत्तराधिकारी राष्ट्र के रूप मे है।

वस्तुत: यह अनुचित मालूम होता है कि कहानी का अन्त हम नीरस शब्दों में करे। जैसा कि शायद हर महापुरुष के जीवन में होता है, वाशिगटन के जीवन में भी उदासी की गाढ़ी गन्ध लगती है।

उनके व्यक्तित्व में एक प्रकार का तीखापन है, जो दूसरों में आत्मीयता और प्रेम उत्पन्न करने की बजाय भय-मिश्रित आदर की भावना को जन्म देता है और जो ऊष्ण मांस-मज्जा को भी संग-मरमर की तरह ठडा लगने लगता है। कारण यह था कि उनका मिजाज ही इस तरह का बना हुआ था। अमेरिका के लोग भी इस प्रकार की बर्फ की तरह की ठंडी उत्कृष्टता पर बल देते थे। जब आदमी वाशिंगटन के सदृश अपनी खामियों को पहचानने लगता है तो उसे बहुत बड़े दायित्वों को सम्भालना चिंताकुल कर देता है। एक अनन्त रूप से चलने वाले युद्ध, वाद-विवाद तथा संकटमय स्थिति में छलांग लगा देना और विपत्ति की चाकू जैसी तेज धार पर चलना भयोत्पादक बात है।

किन्तु वाशिंगटन के कार्यों का लेखा-जोखा देखने से हमें यह लगता है कि वह बहुत सन्तोषप्रद है। यहां हम एक ऐसे महानुभाव के दर्शन करते हैं, जिन्होंने वह सब कुछ किया जो उनसे करने को कहा गया और जिनकी गम्भीरता में ही उनकी दृढ़ता और शक्ति थी—जिस गम्भीरता को कुछ लोग घातक नीरसता समझते थे। वस्तुत वे ऐसे महानुभाव थे जिन्होने अपने व्यक्तित्व से यह सिद्ध किया कि अमेरिका मानसिक और बौद्धिक रूप से स्वस्थ एवं ठोस है। वे एक अत्युत्तम मानव थे, यद्यपि सन्त नहीं थे। एक सुयोग्य सैनिक थे, यद्यपि महान् सैनिक नहीं थे। एक विवेक-शील परिरक्षक थे, यद्यपि चतुर सुधारक नहीं थे। एक ईमानदार शासक थे, यद्यपि प्रतिभावान् राजनीतिज्ञ नही थे। किन्तु कुल मिलाकर एक अलौकिक व्यक्ति थे।

जहां तक उनके निजी जीवन का सम्बन्ध है, उनको यह जान कर सान्त्वना मिल रही थी कि अपने जीवन में अन्त तक उन्होंने सीधा और यशस्वी मार्ग अपनाया। उनको इस बात से भी तसल्ली थी कि उनकी ऐसे घर में मृत्यु हो रही है, जिसे वह संसार के सब स्थानों से अच्छा समझते है और जहां उनकी धर्म-पत्नि उनके पास हैं—जिसके साथ उन्होने वफादारी से चालीस वर्ष बिताए। उनके सार्वजनिक कार्य दूसरी प्रकार से उनके व्यक्तित्व के माप-दण्ड हैं। वह यह जानते हुए मरे कि अमेरिका सही-सलामत था; उन्होने उसके निर्माण में वैसा ही योग दिया, जैसा किसी और ने; और यद्यपि वह स्वयं संसार छोड रहे हैं, परिस्थितियां उनके देश के पक्ष में है। उनके इन महान् कार्यो ने इतिहास के अनेक अन्य महान् कार्यो की अपेक्षा अधिक स्थायी प्रभाव डाला।

उनके अकेले का, इन कामों के लिए, कितना श्रेय है—इसे कहना कठिन है। अन्तिम विश्लेषण में यह प्रश्न ही असंगत है। उन्होने अपने आप को अमेरिका में इतना विलीन कर दिया था कि उनका नाम सम्पूर्ण देश मे, वायु के कण-कण में व्याप्त है। वाशिंगटन के जीवनी-लेखक के लिए उन्हें, अनेक कल्पित कहानियों

और उन चित्रों से पृथक् करना बेकार है, जो उन्हें घेरे हुए हैं--उदाहरणार्थ, डाक-टिकटों तथा डालरबिल पर अंकित उनका मुख, जो इतना परिचित हो गया है कि कोई उसे देखता तक नहीं, प्रसंधान-मोहर पर अंकित घुड़-सवार, एण्ड्रयू-जैक्सन का राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के तौर पर (अपनी पुरानी आपत्तियों को भूलते हुए) 'दूसरे वाशिंगटन के रूप में' इधर-उधर भागना, चेरी पेड़, हल जोतने वाला सिनसिनेटस, डिलावेयर की कष्ट दायक बर्फ, मोनोनगहेला पर काल्पनिक इण्डियन सरदार, जिसने घोषणा की थी कि कोई मनुष्य जार्ज वाशिंगटन को अपनी गोली का निशाना नहीं बना सकता, इत्यादि। सचमुच उन्हें कोई मार नहीं सकता। कारण कि वह स्मारक हैं और वह स्मारक अमेरिका है।